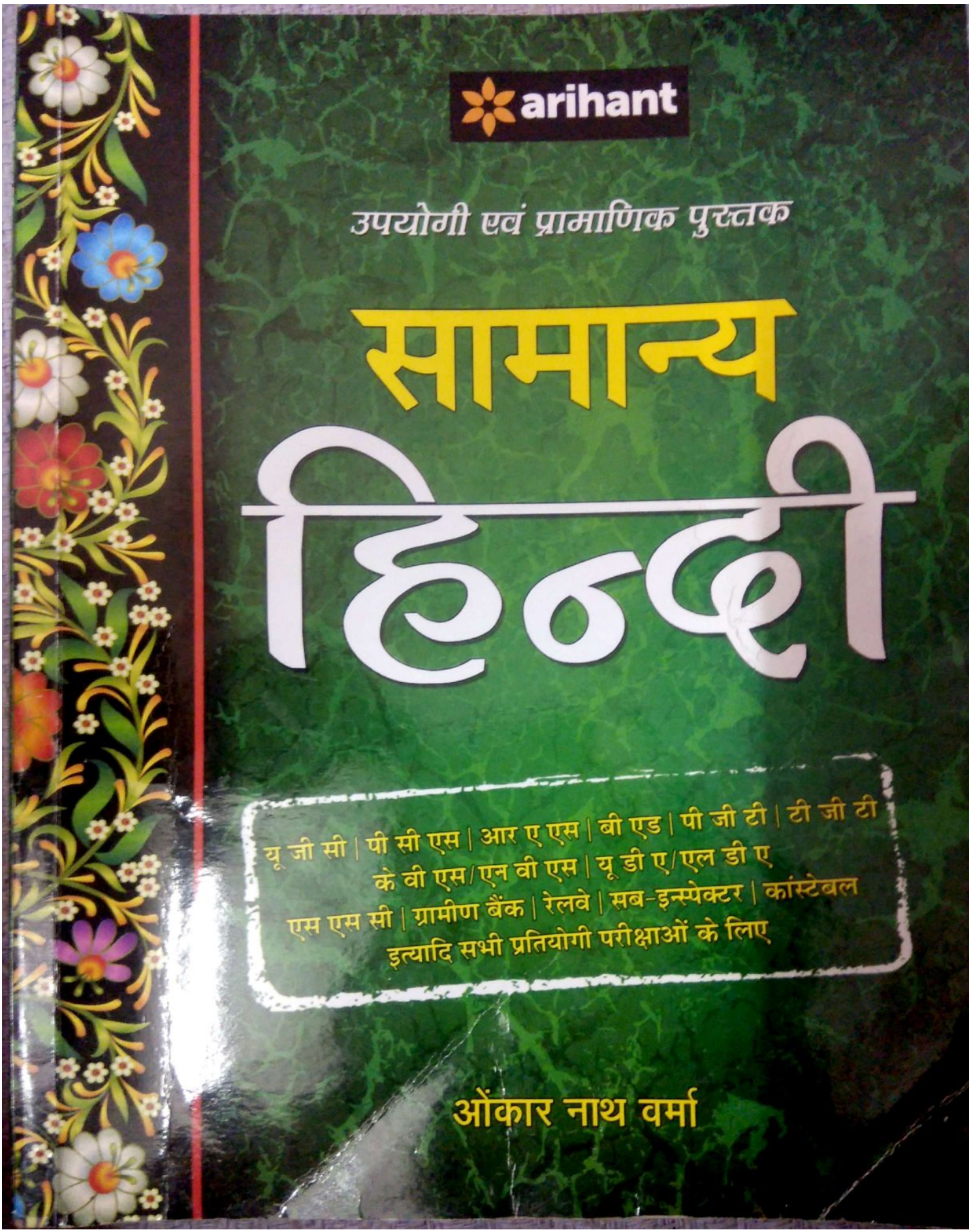


Download From: https://sarkaripot.in/
Scanned by CamScanner

उपयोगी एवं प्रामाणिक पुस्तक

# सामान्य हिन्दी

यू जी सी | पी सी एस | आर ए एस | बी एड | पी जी टी | टी जी टी
के वी एस/एन वी एस | यू डी ए/एल डी ए
एस एस सी | ग्रामीण बैंक | रेलवे | सब-इन्स्पेक्टर | कांस्टेबल
इत्यादि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

PANDEY BOOK SHOP
03 FEB 2017

ओंकार नाथ वर्मा

अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# विषय-सूची


1. हिन्दी भाषा का इतिहास एवं मुख्य तथ्य 1-8
   - हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति
   - हिन्दी भाषा का आविर्भाव
   - खड़ी बोली हिन्दी का विकास
   - राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास
   - अष्टम सूची में सन्निविष्ट 22 भाषाएँ
   - हिन्दी की उपभाषाएँ, बोलियाँ और उनके क्षेत्र
   - राजभाषा के विकास सम्बन्धी संस्थाएँ
   - हिन्दी भाषा की लिपि
   - हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप
   - विश्व हिन्दी सम्मेलन
   - वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

2. वर्ण, उच्चारण और वर्तनी 9-16
   - हिन्दी वर्णमाला
   - स्वर
   - स्वरों का उच्चारण
   - व्यंजन
   - व्यंजनों का उच्चारण
   - वर्तनी
   - स्वर-मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप
   - व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप
   - संयुक्त व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप
   - व्यंजन द्वित्व सम्बन्धी अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप
   - चन्द्रबिन्दु और अनुस्वार की अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप
   - शब्दकोश में प्रयुक्त वर्णानुक्रम सम्बन्धी नियम
   - वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

3. शब्द भेद 17-27
   - परिचय
   - स्रोत के आधार पर
   - तत्सम, तद्भव और अर्द्धतत्सम शब्द
   - देशज और विदेशज शब्द
   - रचना के आधार पर शब्द
   - वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

4. पर्यायवाची शब्द 28-40
   - परिचय
   - पर्यायवाची शब्दों की सूची
   - वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली
   - अभ्यासार्थ प्रश्नावली

5. विलोमार्थक शब्द 41-51
   - परिचय
   - विलोमार्थक शब्दों की सूची
   - वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली
   - अभ्यासार्थ प्रश्नावली

6. अनेकार्थक शब्द 52-55
   - परिचय
   - अनेकार्थक शब्दों की सूची
   - वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली
   - अभ्यासार्थ प्रश्नावली

7. समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द 56-61
   - परिचय
   - समोच्चरित भिन्नार्थक शब्दों की सूची
   - वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली
   - अभ्यासार्थ प्रश्नावली

8. वाक्यांशों के लिए एक शब्द 62-70
   - परिचय
   - वाक्यांशों के लिए एक शब्द की तालिका
   - वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली
   - अभ्यासार्थ प्रश्नावली

9. हिन्दी व्याकरण 71-87
   - परिचय
   - संज्ञा
   - लिंग
   - वचन
   - कारक


Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

- सर्वनाम
- विशेषण
- क्रिया
- काल
- अव्यय
- निपात
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**10. शब्द रचना** 88-102
- परिचय
- उपसर्ग
- प्रत्यय
- सन्धि
- स्वर सन्धि
- व्यंजन सन्धि
- विसर्ग सन्धि
- हिन्दी की कुछ विशेष सन्धियाँ
- समास
- द्वन्द्व समास
- द्विगु समास
- तत्पुरुष समास
- कर्मधारय समास
- अव्ययीभाव समास
- बहुव्रीहि समास
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली
- अभ्यासार्थ प्रश्नावली

**11. वाक्य** (वर्गीकरण और वाक्यान्तरण) 103-108
- वाक्य की परिभाषा
- वाक्य के तत्त्व
- वाक्य के अंग
- वाक्यों का वर्गीकरण
- उपवाक्य
- उपवाक्य के भेद
- वाक्यों का रूपान्तरण
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**12. वाक्यगत अशुद्धियाँ और उनका शोधन** 109-120
- परिचय
- वाक्य शुद्धिकरण के सामान्य नियम
- वर्तनीगत अशुद्धियाँ-स्वर सम्बन्धी अशुद्धियाँ और व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ
- शब्द निर्माण की अशुद्धियाँ
- शब्द चयन की अशुद्धियाँ
- अनावश्यक शब्द प्रयोग की अशुद्धियाँ
- व्याकरण की अशुद्धियाँ
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली
- अभ्यासार्थ प्रश्नावली

**13. रिक्त स्थानों की पूर्ति** 121-124
- परिचय
- रिक्त स्थानों की पूर्ति सम्बन्धित नियम
- वाक्य में रिक्त स्थानों की पूर्ति
- अनुच्छेद में रिक्त स्थानों की पूर्ति
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**14. क्रम व्यवस्थापन** 125-131
- परिचय
- वाक्य-क्रम व्यवस्थापन
- अनुच्छेद क्रम व्यवस्थापन
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**15. विराम चिह्न** 132-136
- परिचय
- हिन्दी के विभिन्न विराम चिह्न और उनके प्रयोग
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**16. मुहावरे और कहावतें** 137-169
- मुहावरा
- हिन्दी के महत्त्वपूर्ण मुहावरे उनके अर्थ और प्रयोग
- कहावतें
- हिन्दी की कुछ प्रचलित कहावतें उनके अर्थ और प्रयोग
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली
- अभ्यासार्थ प्रश्नावली


Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

17. रस, छन्द और अलंकार 170-184
- काव्यशास्त्र के सिद्धान्त (संस्कृत, हिन्दी और पाश्चात्य)
- रस-परिचय
- स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी भाव
- शृंगार रस
- हास्य रस
- करुण रस
- वीर रस
- रौद्र रस
- भयानक रस
- बीभत्स रस
- अद्भुत रस
- शान्त रस
- दो नए रस- वात्सल्य और भक्ति रस
- छन्द-परिचय
- छन्द के प्रकार
- छन्दों का विवेचन
- अलंकार
- अलंकार का विवेचन
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

18. पत्र-लेखन 185-193
- परिचय
- पत्र के प्रकार
- पत्र की विशेषताएँ
- पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें
- अनौपचारिक पत्र
- अनौपचारिक पत्र के भाग
- अनौपचारिक पत्रों के उदाहरण
- औपचारिक पत्र
- औपचारिक पत्र के भाग
- औपचारिक पत्रों के उदाहरण
- शिकायती पत्र
- व्यावसायिक पत्र
- सम्पादकीय पत्र
- आवेदन-पत्र
- अभ्यासार्थ प्रश्नावली

19. सरकारी कार्यालयों के पत्र, टिप्पण और आलेखन 194-210
- परिचय
- टिप्पण
- टिप्पण के लिए सामान्य निर्देश
- नमूने
- आलेखन परिचय
- आलेखन के लिए सामान्य निर्देश
- सरकारी-पत्र
- शासनादेश
- अर्द्ध-शासकीय पत्र
- गैर-सरकारी पत्र
- अनुस्मारक पत्र
- कार्यालय आदेश
- ज्ञापन
- परिपत्र या गश्ती पत्र
- आरोप पत्र
- संकल्प या प्रस्ताव
- अधिसूचना
- प्रेस विज्ञप्ति
- प्रतिवेदन
- ई-पत्र या-ई-मेल
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली
- अभ्यासार्थ प्रश्नावली

20. निबन्ध लेखन 211-216
- निबन्ध के अंग
- निबन्ध के प्रकार
- निबन्ध लेखन करने हेतु चरणबद्ध तरीका
- निबन्ध लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य आवश्यक बातें
- अभ्यासार्थ प्रश्नावली

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

21. मानक वाक्यांश, अभिव्यक्तियाँ एवं पारिभाषिक शब्दावली 217-233
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग भारत सरकार द्वारा निर्धारित मानक वाक्यांश एवं अभिव्यक्तियों की सूची
- पारिभाषिक शब्दावली
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

22. अपठित लेखांश 234-246
- परिचय
- अपठित लेखांश के लिए सामान्य निर्देश
- लेखांश एवं उनके प्रश्न-उत्तर
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

23. हिन्दी साहित्य के स्मरणीय तथ्य 247-280
- हिन्दी में सर्वप्रथम
- हिन्दी साहित्य के इतिहास व उनके लेखक
- अष्टछाप के कवि
- भक्ति सम्प्रदाय
- प्रमुख दर्शन
- प्रमुख गुरु-शिष्य
- रीतिकालीन कवियों का वर्गीकरण
- आधुनिक काव्य
- तारसप्तक के कवि
- साहित्य अकादमी पुरस्कार
- व्यास सम्मान
- ज्ञान पीठ पुरस्कार
- प्रमुख साहित्यिक सूक्तियाँ एवं कथन
- हिन्दी रचनाकार और उनकी रचनाएँ
- आदिकाल, भक्तिकाल (सूफी काव्य, राम काव्य, कृष्ण काव्य, रीतिकाव्य)
- रीतिकाल
- आधुनिक काल एवं रचनाएँ
- निबन्ध
- नाटक
- एकांकी नाटक
- उपन्यास
- कहानी
- आत्मकथा
- जीवनी
- रेखाचित्र
- संस्मरण
- यात्रा वृत्त
- रिपोर्ताज
- आलोचना
- प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ और सम्पादक
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

1

# हिन्दी भाषा का इतिहास एवं मुख्य तथ्य

*इतिहास अतीत को जानने का एक साधन है। किसी समाज या राष्ट्र के इतिहास के अध्ययन के द्वारा हम उस समाज या राष्ट्र के अतीत को जान सकते हैं। अतीत का तात्पर्य उस राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता से है। प्रत्येक देश अथवा राष्ट्र की अस्मिता की पहचान उसकी संस्कृति और सभ्यता से की जाती है।*

## हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति

- वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि किसी भी प्राचीन भारतीय भाषा में 'हिन्दी' शब्द उपलब्ध नहीं है।
- वस्तुतः हमारी भाषा का नाम—'हिन्दी' ईरानियों की देन है। संस्कृत की **स्** ध्वनि फ़ारसी में **ह्** बोली जाती है; जैसे—सप्ताह-हफ्ताह, असुर-अहुर, सिन्धु-हिन्दू आदि।
- भारतवर्ष की पश्चिमी सीमा के लगभग जो इतिहास प्रसिद्ध सिन्धु नदी बहती है, उसे ईरानी हिन्दू या हिन्द कहते थे। कालान्तर में सिन्धु नदी के पार का सम्पूर्ण भू-भाग **हिन्द** कहा जाने लगा और हिन्द की भाषा **हिन्दी** कहलाई।
- मध्यकालीन अरबी तथा फ़ारसी साहित्य में भारत की संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं के लिए **जबान-ए-हिन्दी** शब्द का प्रयोग मिलता है।
- भारत में साहित्यिक भाषाओं—संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश से भिन्न जनसामान्य की भाषा के लिए भाषा या भाखा शब्द का प्रयोग होता था; जैसे—"संसकीरत है कूप जल भाखा बहता नीर"—कबीर; "लिखि भाखा चौपाई कहै"—जायसी; "भाखा भनित मोरि मति थोरी"—तुलसी; "भाखा बोल न जानहीं जिनके कुल के दास"—केशव इत्यादि।
- कहा जाता है कि **अमीर खुसरो** (1253-1325 ई.) ने सबसे पहले भाषा या भाखा के स्थान पर हिन्दी या हिन्दवी शब्द का प्रयोग किया। खुसरो के ही समय में हिन्दी और हिन्दवी शब्द मध्यदेश की भाषा के अर्थ में प्रचलित हो गए।
- अमीर खुसरो ने ग्यासुद्दीन तुगलक के बेटे को हिन्दी या हिन्दवी की शिक्षा देने के लिए **खालिकबारी** नामक **फ़ारसी-हिन्दी कोश** की रचना की। इस ग्रन्थ में भाषा के अर्थ में **हिन्दवी** शब्द 30 बार और **हिन्दी** शब्द 5 बार आया है।
- भाषा के लिए **हिन्दी** शब्द का प्राचीनतम् प्रयोग शरफुद्दीन के **ज़फ़रनामा** (1424 ई.) में मिलता है।

## हिन्दी भाषा का प्रादुर्भाव

- प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का काल 1500 ई. पू. से 500 ई. पू. तक माना गया है। इस अवधि में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी।
- संस्कृत भाषा के दो रूप हैं—(i) **वैदिक संस्कृत** (ii) **लौकिक संस्कृत**।
- संस्कृतकालीन बोलचाल की भाषा कालान्तर में परिवर्तित होकर **पालि** के रूप में विकसित हुई। इसका समय 500 ई. पू. से पहली ई. तक है। पालि का मानक रूप बौद्ध साहित्य में उपलब्ध है।
- कालान्तर में पहली ई. तक आते-आते पालि की बोलचाल की भाषा विकसित होती हुई, **प्राकृत** के रूप में आई। इस अवधि में **शौरसेनी, पैशाची, ब्राचड़, महाराष्ट्री, मागधी** और **अर्द्धमागधी** नामक क्षेत्रीय बोलियाँ विकसित हुईं।

**हिन्दी का विकास क्रम**

संस्कृत — पालि — प्राकृत — अपभ्रंश — अवहट्ठ — हिन्दी

- वैदिक
- लौकिक

शौरसेनी, पैशाची, ब्राचड़, महाराष्ट्री, मागधी, अर्द्धमागधी

- आगे चलकर प्राकृत की विभिन्न बोलियाँ विकसित होती गईं, जो **अपभ्रंश** की बोलियों के रूप में प्रस्तुत हुईं। अपभ्रंश का समय 500 ई. से 1000 ई. तक माना गया है।
- अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी के मध्य का समय **संक्रान्ति काल** कहा गया है।
- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने राजा मुंज को पुरानी हिन्दी का प्रथम कवि माना है।
- अपभ्रंश को रामचन्द्र शुक्ल ने **प्राकृताभास** तथा चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने **पुरानी हिन्दी** कहा है।
- अपभ्रंश की उत्तरकालीन अवस्था 'अवहट्ठ' के नाम से जानी जाती है। अवहट्ठ में विद्यापति ने **कीर्तिलता** और **कीर्तिपताका** की रचना की है।
- 'दोहा' (दूहा) मूलतः अपभ्रंश भाषा का ही छन्द है।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

अपभ्रंश से आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास

| अपभ्रंश के भेद | आधुनिक भारतीय आर्यभाषा |
|---|---|
| शौरसेनी अपभ्रंश | पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पहाड़ी |
| पैशाची अपभ्रंश | लँहदा, पंजाबी |
| ब्राचड़ अपभ्रंश | सिन्धी |
| महाराष्ट्री अपभ्रंश | मराठी |
| मागधी अपभ्रंश | बिहारी, बांग्ला, उड़िया और असमिया |
| अर्द्धमागधी अपभ्रंश | पूर्वी हिन्दी (अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी) |

# खड़ी बोली हिन्दी का विकास

खड़ी बोली हिन्दी का विकास मुख्य रूप से निम्न युगों में हुआ है

## (i) भारतेन्दु पूर्व युग

- शुद्ध खड़ी बोली (हिन्दवी) के पुराने नमूने **अमीर खुसरो** और **बन्दा नवाज़ गेसूदराज** की रचनाओं में मिलते हैं।
- हिन्दी का वास्तविक आरम्भ 1000 ई. से माना जाता है, तब से आज तक के समय को तीन कालों में विभाजित किया गया है—**आदिकाल** (1000 से 1400 ई. तक), **मध्यकाल** (1400 से 1800 ई. तक) और **आधुनिक काल** (1800 से अब तक)।
- हिन्दी के विकास में सर्वप्रथम **फोर्ट विलियम कॉलेज** कलकत्ता का योगदान रहा है। इसके आचार्य **जॉन गिलक्राइस्ट** ने भारतीय भाषाओं का अध्ययन किया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रशासकों को हिन्दी सिखाने के लिए उन्होंने एक **व्याकरण** और एक **शब्द कोश** की रचना की।
- गिलक्राइस्ट की देख-रेख में अनेक पुस्तकों के अनुवाद और मौलिक रचनाएँ भी प्रकाशित हुईं। इसी सन्दर्भ में इंशा अल्ला खाँ, लल्लू लाल, सदल मिश्र और सदासुखलाल का योगदान अविस्मरणीय है।
- इंशा अल्ला खाँ ने **रानी केतकी की कहानी** ठेठ बोलचाल की भाषा में लिखी। लल्लू लाल की 14 रचनाएँ बताई जाती हैं। **प्रेमसागर** उनकी प्रसिद्ध कृति है। सदल मिश्र ने **नासिकेतोपाख्यान** (1803 ई.), **अध्यात्मरामायण** और **रामचरित्र** की रचना की। सदासुखलाल ने अपने सहयोगियों की तुलना में कम लिखा है, **सुखसागर** इनकी प्रसिद्ध रचना है।
- हिन्दी के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतेन्दु पूर्व काल में हिन्दी का पहला समाचार-पत्र **उदंत मार्तण्ड** (1826 ई.) कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। 1828 ई. में कलकत्ता से **बंगदूत** का प्रकाशन आरम्भ हुआ, जिसे 1829 ई. में सरकार ने बन्द करवा दिया।
- **राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द** ने **बनारस अखबार** (1844 ई.) का प्रकाशन आरम्भ किया, इसकी भाषा **हिन्दुस्तानी** थी। इसकी उर्दू शैली के विरोध में **सुधाकर** पत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसी क्रम में कलकत्ता से **समाचार सुधावर्षण** (1854 ई.) नामक दैनिक का प्रकाशन आरम्भ हुआ। पंजाब से नवीनचन्द्र राय ने **ज्ञान प्रकाशिनी** पत्रिका निकाली।
- राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' ने विद्यालयों के लिए अनेक पाठ्य-पुस्तकों की रचना करके हिन्दी के विकास और प्रचार में योगदान दिया।
- **राजा लक्ष्मण सिंह** ने 1861 ई. में आगरा से **प्रजाहितैषी** नामक समाचार-पत्र प्रकाशित किया। इन्होंने संस्कृत गर्भित शुद्ध हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया।
- 'राजा लक्ष्मण सिंह' ने 'शकुन्तला नाटक' का अनुवाद **संस्कृत** से **खड़ी बोली** में किया।
- ईसाई पादरियों ने अपने धर्म के प्रचार के लिए हिन्दी को माध्यम बनाया, इससे हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बड़ी सहायता मिली।
- 1817 ई. में **कलकत्ता बुक सोसायटी** और 1833 ई. के लगभग आगरा **स्कूल बुक सोसायटी** की स्थापना हुई। इससे विभिन्न विषयों की पुस्तकों का प्रकाशन हुआ।

## (ii) भारतेन्दु युग

- भारतेन्दु को **आधुनिकता का प्रवर्तक साहित्यकार** माना जाता है। इन्होंने हिन्दी की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन किया। 1850 ई. से 1900 ई. तक की अवधि को भारतेन्दु युग कहते हैं।
- भारतेन्दु ने राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' की अरबी, फ़ारसी प्रधान हिन्दी और राजा लक्ष्मण सिंह की संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के बीच का मार्ग निकाला। हिन्दी खड़ी बोली के विकास में भारतेन्दु जी का योगदान **हरिश्चन्द्र मैगज़ीन** (1873 ई.), **हरिश्चन्द्र चन्द्रिका** और **बालाबोधिनी** (1874 ई.) पत्रिकाओं के निबन्धों में द्रष्टव्य है।
- **भारतेन्दु मण्डल** के रचनाकारों का मूलस्वर **नवजागरण** है। इसके प्रमुख रचनाकार हैं—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पं. प्रताप नारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन', बालकृष्ण भट्ट, अम्बिका दत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, ठा. जगमोहन सिंह, लाला श्रीनिवास दास, सुधाकर द्विवेदी, राधाकृष्ण आदि।
- हिन्दी के विकास में **काशीनागरी प्रचारिणी सभा** (1893 ई.) और **इण्डियन प्रेस प्रयाग** का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।
- नागरी प्रचारिणी सभा की प्रेरणा से **इण्डियन प्रेस प्रयाग** द्वारा जून, 1900 में **सरस्वती पत्रिका** का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके प्रथम सम्पादक **चिन्तामणि घोष** थे।

## (iii) द्विवेदी युग

- पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी वर्ष 1903 में **सरस्वती पत्रिका** के सम्पादक नियुक्त हुए। सरस्वती पत्रिका को **बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक चरण का विश्वकोश** कहा गया है।
- वर्ष 1900 से 1920 तक की अवधि को द्विवेदी युग कहा जाता है। इस युग को **डॉ. नगेन्द्र** ने **जागरण सुधार काल** कहा है।
- पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरल और शुद्ध भाषा के प्रयोग पर विशेष बल दिया। वे लेखकों/कवियों की रचनाओं की वर्तनी और व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों को स्वयं संशोधित कर देते थे और उन्हें शुद्ध लिखने हेतु प्रेरित करते थे।
- द्विवेदी युग के प्रमुख कवि—मैथिलीशरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', नाथूराम शर्मा 'शंकर', सियारामशरण गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी, जगन्नाथ दास रत्नाकर, राय देवी प्रसाद पूर्ण, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' इत्यादि हैं।

## (iv) छायावाद युग

- छायावाद युग (वर्ष 1918 से 1936) को हिन्दी साहित्य में भक्ति काव्य के बाद स्थान दिया जाता है। छायावादी काव्य में **प्रसाद जी** ने यदि प्रकृति को मिलाया, **निराला** ने मुक्तक छन्द दिया, **पन्त जी** ने शब्दों को सरस बनाया, तो **महादेवी** ने उसमें प्राण डाले।
- छायावाद युग में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान, रामधारी सिंह 'दिनकर', सोहनलाल द्विवेदी, सियारामशरण गुप्त, श्यामनारायण पाण्डेय, गुरुभक्त सिंह इत्यादि ने अन्य काव्य प्रवृत्तियों में साहित्य सृजन करके हिन्दी को समृद्ध किया।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

### (v) प्रगतिवाद युग

- हिन्दी साहित्य में वर्ष 1936 से 1942 तक की अवधि को **प्रगतिवाद** के नाम से जाना जाता है। प्रगतिवाद के आदि प्रवर्तक कार्ल मार्क्स हैं। राजनीति में जो मार्क्सवाद है, साहित्य में वही प्रगतिवाद है।
- प्रगतिवादी कवियों में सुमित्रानन्दन पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, त्रिलोचन शास्त्री, रांगेय राघव, शिवमंगल सिंह सुमन, डॉ. रामविलास शर्मा आदि हैं।

### (vi) प्रयोगवाद युग

- प्रयोगवाद शब्द का प्रचलन अज्ञेय द्वारा सम्पादित **तारसप्तक** से माना जाता है। अज्ञेय ने तारसप्तक के कवियों को 'राहों का अन्वेषी' कहा है। प्रयोगवाद सबसे अधिक **अस्तित्ववाद** से प्रभावित है। समकालीन समीक्षा में **अज्ञेय को अस्तित्ववादी** घोषित किया गया है।
- नई कविता के प्रमुख तत्त्व अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि है। नई कविता पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 1954 में इलाहाबाद से हुआ। इसके सम्पादक **डॉ. जगदीश गुप्त** थे।
- हिन्दी हमारे देश की समृद्ध भाषा है। इसमें साहित्य की सभी विधाओं— नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज, यात्रा-साहित्य, पत्र-साहित्य इत्यादि में साहित्य सृजन हो रहा है।
- दक्षिण में राष्ट्रकूटों और यादवों का राज्य स्थापित होने पर वहाँ हिन्दी का खूब प्रचार-प्रसार हुआ। मुस्लिम साम्राज्य के विस्तार के साथ ही हिन्दी भाषा आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक आदि प्रदेशों में प्रसारित हुई। स्वाधीनता संग्राम आन्दोलन की भाषा हिन्दी होने से हिन्दी का पूरे देश में व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ।

### हिन्दी के विकास से सम्बन्धित संस्थाएँ

| संस्था का नाम | स्थापना वर्ष |
|---|---|
| फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता, (पश्चिम बंगाल) | 1800 ई. |
| हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि मध्य सभा प्रयाग, (उत्तर प्रदेश) | 1884 ई. |
| नागरी प्रचारिणी सभा काशी, (उत्तर प्रदेश) | 1893 ई. |
| हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, (उत्तर प्रदेश) | 1910 ई. |
| दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार संस्था मद्रास, (चेन्नई) | 1915 ई. |
| अखिल भारतीय संगीत परिषद् बम्बई, (महाराष्ट्र) | 1919 ई. |
| गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद, (गुजरात) | 1920 ई. |
| हिन्दी विद्यापीठ देवघर, (झारखण्ड) | 1929 ई. |
| नागरी लिपि सुधार समिति (गाँधीजी की अध्यक्षता में) इन्दौर, (मध्य प्रदेश) | 1935 ई. |
| प्रगतिशील लेखक संघ लखनऊ, (उत्तर प्रदेश) | 1936 ई. |
| राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, (महाराष्ट्र) | 1936 ई. |
| असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति गुवाहाटी, (असम) | 1938 ई. |
| बम्बई हिन्दी विद्यापीठ बम्बई, (महाराष्ट्र) | 1938 ई. |
| इण्डियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन बम्बई, (महाराष्ट्र) | 1942 ई. |
| राष्ट्रभाषा परिषद् पुणे, (महाराष्ट्र) | 1945 ई. |
| देवनागरी लिपि सुधार समिति (उत्तर प्रदेश) | 1947 ई. |
| बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, (बिहार) | 1951 ई. |
| हिन्दी साहित्य अकादमी (नई दिल्ली) | 1953 ई. |
| संगीत नाटक अकादमी (नई दिल्ली) | 1953 ई. |
| नेशनल बुक ट्रस्ट (नई दिल्ली) | 1957 ई. |
| राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (नई दिल्ली) | 1959 ई. |
| नागरी लिपि परिषद् (नई दिल्ली) | 1975 ई. |
| महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा, (महाराष्ट्र) | 1997 ई. |

## राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास

- जिस भाषा में शासन का कामकाज सम्पादित होता है, उसे **राजभाषा** कहते हैं। अशोक के समय में **पालि** राजभाषा थी।
- राजस्थान में ग्यारहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य पुरावलेखों से पता चलता है कि उस समय **हिन्दी मिश्रित संस्कृत** राजभाषा थी।
- मुहम्मद गोरी से लेकर अकबर तक **हिन्दी राजभाषा** थी। अकबर के शासनकाल में मन्त्री टोडरमल के आदेश से **फ़ारसी** राजभाषा घोषित की गई।
- ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने 1833 ई. तक फ़ारसी को राजभाषा बनाए रखा।
- ब्रिटिश शासन में **लॉर्ड मैकॉले** के प्रयास से **अंग्रेज़ी** राजभाषा के पद पर सुशोभित हुई।
- राष्ट्रीय चेतना के विकास के साथ ही हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा बनाने की जोरदार माँग उठी।
- पं. मदनमोहन मालवीय के सतत प्रयत्नों से वर्ष 1901 में संयुक्त प्रान्त की कचहरी की भाषा के रूप में हिन्दी को उर्दू के समान अधिकार मिला।
- भारतवर्ष के लिए हिन्दी भाषा का नाम सबसे पहले पं. मदनमोहन मालवीय ने सुझाया।
- संविधान सभा में हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव गोपाल स्वामी आयंगर ने प्रस्तुत किया। भारतीय संविधान में हिन्दी को 14 सितम्बर, 1949 को मान्यता प्रदान की गई।
- संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है। संविधान के अनुच्छेद 344 में राजभाषा सम्बन्धी आयोग और संसद की समिति का उल्लेख है।
- संविधान के अनुच्छेद 344(1) के अनुसार, राष्ट्रपति ने 7 जून, 1955 को **राजभाषा आयोग** के गठन का आदेश जारी किया।
- संविधान के अनुच्छेद 344(4) के अनुसार, राजभाषा आयोग की सिफारिशों की जाँच के लिए एक समिति गठित की गई, जिसमें लोकसभा के 20 तथा राज्यसभा के 10, इस प्रकार कुल 30 सदस्य थे।
- राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष **बाल गंगाधर खरे** थे। आयोग की प्रथम बैठक 15 जुलाई, 1955 को हुई थी।
- संविधान का अनुच्छेद 345 राज्य में प्रयुक्त होने वाली भाषाओं में किसी एक या अनेक या हिन्दी को शासकीय प्रयोजनों के लिए अंगीकृत करने से सम्बन्धित है।
- संविधान के अनुच्छेद 346 के अनुसार एक राज्य तथा दूसरे राज्य के मध्य तथा राज्य व संघ के मध्य संचार की भाषा वही होगी, जो उस समय संघ की राजभाषा होगी।
- संविधान के अनुच्छेद 347 में किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के सम्बन्ध में विशेष उपबन्ध उल्लिखित हैं।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

- संविधान के अनुच्छेद 348 में उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा का उल्लेख है।
- संविधान के अनुच्छेद 349 में भाषा सम्बन्धी विधियों के अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया का उल्लेख हुआ है।
- संविधान के अनुच्छेद 350 में शिकायतों को दूर करने के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा का उल्लेख हुआ है।
- संविधान के अनुच्छेद 350(क) में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाओं का उल्लेख हुआ है।
- संविधान के अनुच्छेद 350(ख) में भाषायी अल्पसंख्यक वर्गों के लिए राष्ट्रपति द्वारा विशेष अधिकारी की नियुक्ति का उल्लेख हुआ है।
- संविधान की अष्टम सूची [अनुच्छेद 344 (1) और 351] में 22 भाषाएँ सम्मिलित हैं।

### राजभाषा के विकास से सम्बन्धित संस्थाएँ

| संस्था का नाम | स्थापना वर्ष |
|---|---|
| प्रकाशन विभाग (सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय के अधीन), नई दिल्ली | 1944 ई. |
| फिल्म प्रभाग (सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय के अधीन), नई दिल्ली | 1948 ई. |
| साहित्य अकादमी, नई दिल्ली | 1954 ई. |
| पत्र सूचना कार्यालय (सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय के अधीन), नई दिल्ली | 1956 ई. |
| आकाशवाणी (सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय के अधीन), नई दिल्ली | 1957 ई. |
| नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली | 1957 ई. |
| केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली | 1960 ई. |
| वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली | 1961 ई. |
| राजभाषा विधायी आयोग (गृह मन्त्रालय के अधीन), नई दिल्ली | 1965-75 ई. |
| केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो (गृह मन्त्रालय के अधीन) (देश में अनुवाद की सबसे बड़ी संस्था), नई दिल्ली | 1971 ई. |
| राजभाषा विभाग (गृह मन्त्रालय के अधीन), नई दिल्ली | 1975 ई. |
| राजभाषा विधायी आयोग (कानून मन्त्रालय के अधीन), नई दिल्ली | 1975 ई. |
| दूरदर्शन (सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय के अधीन), नई दिल्ली | 1976 ई. |

## अष्टम सूची में सम्मिलित 22 भाषाएँ

- आरम्भ में 14 भाषाओं को इस सूची में सम्मिलित किया गया, जो निम्न हैं
  (1) असमिया (2) बांग्ला (3) गुजराती (4) हिन्दी (5) कन्नड़ (6) कश्मीरी (7) मलयालम (8) मराठी (9) उड़िया (10) पंजाबी (11) संस्कृत (12) तमिल (13) तेलुगू (14) उर्दू।
- **21वें संशोधन** के अन्तर्गत वर्ष 1967 में सिन्धी भाषा (15) को शामिल किया गया।

  **71वें संशोधन** के अन्तर्गत वर्ष 1992 में कोंकणी (16) मणिपुरी (17) नेपाली (18) भाषाओं को शामिल किया गया।

  **92वें संशोधन** के अन्तर्गत वर्ष 2003 में बोडो (19) डोगरी (20) मैथिली (21) संथाली (22) भाषाओं को शामिल किया गया।
- संविधान के **अनुच्छेद 351** में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेशों का उल्लेख है।
- भारत की राजभाषा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी दोनों हैं, क्योंकि संविधान के अनुच्छेद 120 की धारा 1 भाग 17 के अनुसार अनुच्छेद 348 के उपबन्धों के अधीन संसद का कार्य हिन्दी या अंग्रेज़ी में किया जाता है। संविधान में आश्वासन दिया गया था कि वर्ष 1965 से सारा कामकाज हिन्दी में होगा, परन्तु सरकारी नीतियों के कारण ऐसा न हो सका। वर्ष 1963 और वर्ष 1967 में राजभाषा अधिनियम द्वारा हिन्दी के साथ ही अंग्रेज़ी को सदा के लिए राजभाषा बना दिया गया।

## हिन्दी की उपभाषाएँ, बोलियाँ और उनके क्षेत्र

### पश्चिमी क्षेत्र में हिन्दी की पाँच बोलियाँ

पश्चिमी क्षेत्र में हिन्दी की पाँच बोलियाँ निम्नलिखित हैं

(i) **खड़ी बोली/कौरवी** का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से हुआ है। इसका क्षेत्र देहरादून का मैदानी भाग, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, दिल्ली का कुछ भाग, बिजनौर, रामपुर तथा मुरादाबाद हैं। खड़ी बोली के लिए सुनीतिकुमार चटर्जी ने जनपदीय हिन्दुस्तानी शब्द का प्रयोग किया है। खड़ी बोली **आकार बहुला** है।

(ii) **ब्रजभाषा** का विकास शौरसेनी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से हुआ है। यह आगरा, मथुरा, अलीगढ़, धौलपुर, मैनपुरी, एटा, बदायूँ, बरेली तथा उनके आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती हैं। ब्रजभाषा साहित्य और लोक साहित्य दोनों दृष्टियों से बहुत सम्पन्न है। यह कृष्ण भक्ति की एकमात्र भाषा है। लगभग सारा रीतिकालीन साहित्य ब्रजभाषा में लिखा गया है। साहित्यिक दृष्टि से यह हिन्दी भाषा की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बोली है।

साहित्यिक महत्त्व के कारण ही इसे ब्रजबोली नहीं, ब्रजभाषा कहा जाता है। सूरदास, नन्ददास, रहीम, रसखान, बिहारी, मतिराम, भूषण, देव, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' इत्यादि ब्रजभाषा के अमर कवि हैं। साथ ही, तुलसीदास जी ने भी अपनी कुछ रचनाएँ ब्रजभाषा में की हैं; जैसे—कवितावली, विनयपत्रिका आदि। ब्रजभाषा देश के बाहर ताज्जुबेकिस्तान में बोली जाती है, जिसे ताज्जुबेकी ब्रजभाषा कहा जाता है।

(iii) **बाँगरू** या **हरियाणी** का विकास उत्तरी शौरसेनी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से हुआ है। इसका क्षेत्र हरियाणा तथा दिल्ली का देहाती भाग है। हरियाणी भाषा **आकार बहुला** है।

(iv) **बुन्देली** का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। इसका क्षेत्र झाँसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, ओरछा, सागर, नरसिंहपुर, सिवनी, होशंगाबाद तथा उनके आस-पास के क्षेत्र हैं। बुन्देली भाषा **ओकार बहुला** है।

(v) **कन्नौजी** का भी विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। इसके क्षेत्र इटावा, फर्रूखाबाद, शाहजहाँपुर, कानपुर, हरदोई, पीलीभीत हैं। कन्नौजी भाषा **ओकार बहुला** है।

### पूर्वी क्षेत्र में हिन्दी की तीन बोलियाँ

पूर्वी क्षेत्र में हिन्दी की तीन बोलियाँ निम्नलिखित हैं

(i) **अवधी** का उद्भव अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। इसके क्षेत्र लखनऊ, इलाहाबाद, फतेहपुर, मिर्जापुर (अंशतः), उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, खीरी, फैजाबाद, गोण्डा, बस्ती, बहराइच, बाराबंकी, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़ आदि हैं।

अवधी में साहित्य तथा लोक साहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। प्रबन्ध काव्य परम्परा का विकास विशेष रूप से अवधी में ही हुआ है। सूफी काव्य तथा रामभक्ति काव्य की रचना अवधी में हुई है। मुल्ला दाऊद, कुतुबन, मंझन, जायसी, तुलसीदास, नारायणदास, जगजीवन साहब, रघुनाथ दास, राम सनेही आदि इसके सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। अवधी में लिखा गया सर्वप्रसिद्ध ग्रन्थ 'रामचरित मानस' है। भारत के बाहर **फिज़ी** में अवधी बोलने वालों की संख्या अच्छी खासी है।

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

(ii) **बघेली** का उद्‌भव अर्द्धमागधी अपभ्रंश के ही एक क्षेत्रीय रूप से हुआ है। इसके क्षेत्र रीवा, सतना, शहडोल, मैहर और उसके आस-पास हैं।

(iii) **छत्तीसगढ़ी** का उद्‌भव अर्द्धमागधी अपभ्रंश के दक्षिणी रूप से हुआ है। इसके क्षेत्र सरगुजा, कोरबा, बिलासपुर, रायगढ़, खैरागढ़, रायपुर, दुर्ग, राजनन्दगाँव, कांकेर आदि हैं।

## राजस्थानी क्षेत्र में हिन्दी की चार बोलियाँ

राजस्थानी क्षेत्र में हिन्दी की चार बोलियाँ निम्नलिखित हैं

(i) **पश्चिमी राजस्थानी** (मारवाड़ी) का उद्‌भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। इसके क्षेत्र जोधपुर, मेवाड़, सिरोही, जैसलमेर, बीकानेर आदि हैं।

(ii) **पूर्वी राजस्थानी** (जयपुरी या ढूँढाड़ी) इसके क्षेत्र जयपुर, अजमेर, किशनगढ़ आदि हैं।

(iii) **उत्तरी राजस्थानी** (मेवाती) यह अलवर, गुड़गाँव, भरतपुर तथा उसके आस-पास बोली जाती है। इसकी एक मिश्रित बोली **अहीरवाटी** है, जो गुड़गाँव, दिल्ली तथा करनाल के पश्चिमी क्षेत्रों में बोली जाती है।

(iv) **दक्षिणी राजस्थानी** (मालवी) यह इन्दौर, उज्जैन, देवास, रतलाम, भोपाल, होशंगाबाद तथा उसके आस-पास बोली जाती हैं।

## पहाड़ी क्षेत्र में हिन्दी की दो बोलियाँ

पहाड़ी क्षेत्र में हिन्दी की बोलियाँ निम्न दो भागों में विभाजित हैं

(i) **पश्चिमी पहाड़ी** जौनसार, सिरमौर, शिमला, मण्डी, चम्बा के आस-पास क्षेत्र में बोली जाती हैं,

(ii) **मध्यवर्ती पहाड़ी** कुमाऊँनी तथा गढ़वाली क्रमशः कुमाऊँ, गढ़वाल (उत्तराखण्ड) क्षेत्र में बोली जाती है।

## बिहार क्षेत्र में हिन्दी की तीन बोलियाँ

बिहार क्षेत्र में हिन्दी की तीन बोलियाँ निम्नलिखित हैं

(i) **मगही** मागधी अपभ्रंश से विकसित हुई है। यह पटना, गया, पलामू, हजारीबाग, मुंगेर, भागलपुर और इसके आस-पास बोली जाती हैं।

(ii) **भोजपुरी** मागधी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से विकसित हुई है। इसके क्षेत्र बनारस, जौनपुर, मिर्जापुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती, शाहाबाद, चम्पारण, सारन तथा उसके आस-पास हैं। हिन्दी क्षेत्र की बोलियों में **भोजपुरी** बोलने वाले सर्वाधिक हैं।

भोजपुरी हिन्दी की वह बोली है, जिसमें सर्वाधिक फिल्में बनी हैं। वर्तमान में दूरदर्शन द्वारा इसके अनेक धारावाहिक प्रसारित हो रहे हैं। भोजपुरी अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की बोली है, भारत के बाहर सूरीनाम, फिजी, मॉरिशस, गुयाना, त्रिनिदाद में इस बोली का प्रसार है। भोजपुरी में लिखित साहित्य नगण्य है। इसके रचनाकार भिखारी ठाकुर को **भोजपुरी का शेक्सपियर, भोजपुरी का भारतेन्दु** कहा जाता है।

(iii) **मैथिली** मागधी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप से विकसित हुई है। इसके क्षेत्र दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, मुंगेर और इसके आस-पास हैं।

मगही तथा मैथिली लोक साहित्य की दृष्टि से बहुत सम्पन्न भाषाएँ हैं। मैथिली में साहित्य रचना प्राचीनकाल से होती आई है। विद्यापति ने मैथिली को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया। इसके अतिरिक्त नागार्जुन, गोविन्द दास, रणजीत लाल, हरिमोहन झा, राजकमल चौधरी 'स्वरगंधा' मैथिली के प्रमुख साहित्यकार हैं।

# हिन्दी भाषा की लिपि

- भारत में लिपि की प्राचीनता का सबसे पुष्ट प्रमाण **सिन्धु घाटी की सभ्यता** में मिलता है। नागरी अथवा **देवनागरी** का सर्वप्रथम उल्लेख आठवीं सदी के गुजराती **राजा जयभट्ट** के लेख में मिलता है। देवनागरी हिन्दी भाषा की लिपि है।
- प्राचीन भारतीय लिपियों में **ब्राह्मी लिपि** सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। इसके प्राचीनतम नमूने **बस्ती** जिले के **पिपरावा** के स्तूप तथा **अजमेर** जिले के **बड़ली गाँव** में प्राप्त शिलालेखों में मिलते हैं। हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।
- डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी के स्थान पर **रोमन लिपि** का प्रस्ताव किया था। इसी प्रकार **अबुल कलाम आजाद** ने हिन्दी भाषा के लिए **रोमन लिपि** का समर्थन किया था। देवनागरी में सुधारों का आरम्भिक प्रयत्न **महादेव गोविन्द रानाडे** ने किया।

# हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप

- हिन्दी विश्व की महान् भाषाओं में से एक है। जनसंख्या की दृष्टि से **चीनी** और **अंग्रेज़ी** के बाद इस समय संसार में हिन्दी बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है।
- सोवियत संघ, अमेरिका, जापान, इंग्लैण्ड, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, रूमानिया, फ्रांस, अफ्रीका इत्यादि देशों में अन्य भाषा के रूप में हिन्दी अध्यापन के प्रति रुचि बढ़ रही है। मॉरिशस के अभिमन्यु अनन्त ने चौदह उपन्यास और लगभग दो सौ कहानियों की रचना की है। इनके उपन्यासों में **लाल पसीना** (1977) सर्वश्रेष्ठ है। अभिमन्यु अनन्त को मॉरिशस का **प्रेमचन्द** कहा जाता है।
- फिज़ी, मॉरिशस, नेपाल, सूरीनाम, त्रिनिदाद, म्यांमार आदि देशों में हिन्दी की अनेक पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। म्यांमार में **ब्रह्मदेश** नामक पत्रिका विगत कई वर्षों से प्रकाशित हो रही है। फिज़ी सरकार का सूचना विभाग **शंख** नामक पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है।
- फिज़ी में **जोगिन्दर सिंह कम्बल** को फिज़ी का **प्रेमचन्द** कहा जाता है। इन्होंने **सबेरा** (वर्ष 1976), **धरती मेरी माता** (वर्ष 1978), **करवट** (वर्ष 1979) आदि उपन्यास और **इन्सान जाग उठा** (वर्ष 1959), **देखो वे दीप** (वर्ष 1960), **आजादी की किरणें** (वर्ष 1970), **हीर राँझा** (वर्ष 1971) आदि श्रेष्ठ नाटकों की रचना की है।

## विश्व हिन्दी सम्मेलन

विश्व हिन्दी सम्मेलन का उद्‌देश्य संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) की भाषाओं में हिन्दी को स्थान दिलाना और हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है। अब तक निम्नलिखित सम्मेलन सम्पन्न हुए हैं

| क्रम | दिनांक | आयोजन-स्थल |
|---|---|---|
| पहला | 10-14 जनवरी, 1975 | नागपुर (भारत) |
| दूसरा | 28-30 अगस्त, 1976 | पोर्ट लुई (मॉरिशस) |
| तीसरा | 28-30 अक्टूबर, 1983 | नई दिल्ली (भारत) |
| चौथा | 02-04 दिसम्बर, 1993 | पोर्ट लुई (मॉरिशस) |
| पाँचवाँ | 04-08 अप्रैल, 1996 | पोर्ट ऑफ स्पेन (त्रिनिदाद) |
| छठा | 14-18 सितम्बर, 1999 | लन्दन (ब्रिटेन) |
| सातवाँ | 05-09 जून, 2003 | पारामारिबो (सूरीनाम) |
| आठवाँ | 13-15 जुलाई, 2007 | न्यूयॉर्क (अमेरिका) |
| नौवाँ | 22-24 सितम्बर, 2012 | जोहानसबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) |
| दसवाँ | 10-12 सितम्बर, 2015 | भोपाल (भारत) |
| ग्यारहवाँ | 2018 (प्रस्तावित) | मॉरिशस (प्रस्तावित) |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**1.** मध्यकालीन अरबी तथा फ़ारसी साहित्य में भारत की भाषाओं के लिए किस शब्द का प्रयोग मिलता है?
(a) रेख्ता (b) दूहा
(c) जबान-ए-हिन्द ✓ (d) हिन्दी

**2.** 'खालिकबारी' किसकी रचना है? (यू.जी.सी. नेट/जे. आर. एफ. जून 2009)
(a) खालिक खलक (b) रहीम
(c) अमीर खुसरो ✓ (d) अकबर

**3.** खड़ी बोली हिन्दी में सर्वप्रथम रचना करने वाले कवि का नाम है (टी.जी.टी. परीक्षा 2001)
(a) जायसी (b) अमीर खुसरो ✓
(c) विद्यापति (d) भारतेन्दु

**4.** हिन्दी के उद्भव का सही क्रम है
(a) पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ठ ✓
(b) प्राकृत, पालि, अवहट्ठ, अपभ्रंश
(c) अपभ्रंश, प्राकृत, अवहट्ठ, पालि
(d) अवहट्ठ, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश

**5.** अपभ्रंश को 'पुरानी हिन्दी' किसने कहा है?
(a) ग्रियर्सन (b) श्यामसुन्दर दास
(c) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ✓ (d) भारतेन्दु

**6.** साहित्यिक अपभ्रंश को पुरानी हिन्दी किसने कहा था? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2010)
(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ✓ (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) शिवसिंह सेंगर (d) राहुल सांकृत्यायन

**7.** अपभ्रंश की उत्तरकालीन अवस्था का नाम है
(a) पालि (b) प्राकृत
(c) संस्कृत (d) अवहट्ठ ✓

**8.** शौरसेनी अपभ्रंश से किस उपभाषा का विकास हुआ?
(a) बिहारी (b) राजस्थानी ✓
(c) बांग्ला (d) पंजाबी

**9.** अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी के मध्य का समय कहा जाता है
(a) उत्कर्ष काल (b) अवसान काल
(c) संक्रान्ति काल ✓ (d) प्राकृत काल

**10.** चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने किसको पुरानी हिन्दी का प्रथम कवि माना है?
(a) सरहपाद (b) स्वयंभू (टी.जी.टी. परीक्षा 2003)
(c) राजामुंज ✓ (d) पुष्पदन्त

**11.** अपभ्रंश को 'प्राकृताभास' हिन्दी किसने कहा है?
(a) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) रामचन्द्र शुक्ल ✓ (d) हजारीप्रसाद द्विवेदी

**12.** 'पंजाबी' का विकास अपभ्रंश के किस रूप से हुआ है?
(a) महाराष्ट्री (b) मागधी
(c) ब्राचड़ (d) पैशाची ✓

**13.** बिहारी, बांग्ला, उड़िया और असमिया भाषाओं का उद्भव किस अपभ्रंश से हुआ है?
(a) मागधी ✓ (b) अर्द्धमागधी (c) पैशाची (d) शौरसेनी

**14.** अर्द्धमागधी अपभ्रंश से किसका विकास हुआ है?
(a) पश्चिमी हिन्दी (b) पूर्वी हिन्दी ✓
(c) मराठी (d) गुजराती

**15.** सुमेलित कीजिए

| सूची I | सूची II |
|---|---|
| A. शौरसेनी | 1. पूर्वी हिन्दी |
| B. पैशाची | 2. असमिया |
| C. मागधी | 3. लँहदा |
| D. अर्द्धमागधी | 4. राजस्थानी |
| | 5. सिन्धी |

कूट

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 1 | 2 | 3 | 4 |
| (c) | 5 | 1 | 4 | 2 |

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (b) | 4 | 3 | 2 | 1 ✓ |
| (d) | 2 | 4 | 1 | 3 |

**16.** शौरसेनी अपभ्रंश से उत्पन्न भाषाएँ हैं
(a) ब्रजभाषा, अवधी, कुमाऊँनी और गढ़वाली
(b) पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी और गुजराती ✓
(c) बिहारी, बांग्ला, उड़िया और असमिया
(d) लँहदा, पंजाबी, गुजराती और मराठी

**17.** सिन्धी भाषा का उद्भव हुआ है (यू.जी.सी. नेट/ जे.आर.एफ.दिसम्बर 2013)
(a) ब्राचड़ अपभ्रंश से ✓ (b) पैशाची अपभ्रंश से
(c) मागधी अपभ्रंश से (d) शौरसेनी अपभ्रंश से

**18.** 'अवधी' का उद्भव किस अपभ्रंश से हुआ है? (यू.जी.सी. नेट 2014)
(a) शौरसेनी (b) पैशाची
(c) मागधी (d) अर्द्धमागधी ✓

**19.** कचहरियों में हिन्दी प्रवेश आन्दोलन का मुखपत्र किस पत्र को कहा जाता है? (टी.जी.टी. परीक्षा 2004)
(a) कविवचन सुधा (b) समाचार सुधावर्षण
(c) हिन्दी प्रदीप (d) भारत-मित्र ✓

**20.** नागरी प्रचारिणी सभा का स्थापना वर्ष है (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2009)
(a) 1893 ई. ✓ (b) 1857 ई.
(c) 1902 ई. (d) 1917 ई.

**21.** नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापकों में थे (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2008)
(a) शिवकुमार सिंह और बाबू श्यामसुन्दर दास ✓
(b) रामचन्द्र शुक्ल और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(c) पं. प्रतापनारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट
(d) जगन्नाथ दास रत्नाकर और शिवप्रसाद गुप्त

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**22.** काशीनागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापकों में कौन नहीं है? (टी.जी.टी. परीक्षा 2004)
(a) बाबू श्यामसुन्दर दास (b) ठा. शिवकुमार सिंह
(c) रामनारायण मिश्र (d) रामचन्द्र शुक्ल

**23.** फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना कब हुई? (यू.जी.सी. नेट 2014)
(a) 1801 ई. (b) 1810 ई. (c) 1800 ई. (d) 1802 ई.

**24.** फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना कहाँ हुई?
(a) लखनऊ (b) हैदराबाद
(c) दिल्ली (d) कलकत्ता

**25.** महावीर प्रसाद द्विवेदी को किस वर्ष 'सरस्वती पत्रिका' के सम्पादक के रूप में नियुक्त किया गया?
(a) वर्ष 1900 (b) वर्ष 1903
(c) वर्ष 1906 (d) वर्ष 1909

**26.** संविधान सभा में हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव किसने रखा?
(a) गोपाल स्वामी आयंगर (b) सरदार वल्लभ भाई पटेल
(c) डॉ. भीमराव अम्बेडकर (d) पं. जवाहरलाल नेहरू

**27.** भारतीय संविधान में हिन्दी को मान्यता कब मिली? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2007)
(a) 26 जनवरी, 1950 (b) 14 सितम्बर, 1949
(c) 15 अगस्त, 1947 (d) 14 सितम्बर, 1955

**28.** भारतवर्ष के लिए हिन्दी भाषा का नाम सबसे पहले किसने सुझाया? (यू.पी.एस.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) राजा राममोहन राय (b) महात्मा गाँधी
(c) रवीन्द्रनाथ ठाकुर (d) मदनमोहन मालवीय

**29.** भारतीय भाषाओं को भारतीय संविधान की किस अनुसूची में शामिल किया गया है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2006)
(a) सप्तम (b) अष्टम
(c) नवम (d) दशम

**30.** संविधान के किस अनुच्छेद में कहा गया है कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी? (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर 2015)
(a) 343 (b) 344
(c) 345 (d) 346

**31.** इनमें से किसको संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित नहीं किया गया?
(a) डोगरी (b) मैथिली (c) ब्रज (d) असमिया

**32.** 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' की स्थापना किस वर्ष हुई?
(a) वर्ष 1961 (b) वर्ष 1960
(c) वर्ष 1965 (d) वर्ष 1963

**33.** हिन्दी की 'उपभाषाएँ' कितनी हैं?
(a) तीन (b) चार
(c) पाँच (d) छः

**34.** इनमें कौन-सी बोली पूर्वी हिन्दी की नहीं है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2009)
(a) अवधी (b) बिहारी
(c) बघेली (d) छत्तीसगढ़

**35.** पश्चिमी हिन्दी की बोली नहीं है
(a) कौरवी (b) हरियाणी (c) अवधी (d) बुन्देली

**36.** पश्चिमी हिन्दी की बोलियों की संख्या है
(a) दो (b) तीन
(c) चार (d) पाँच

**37.** पूर्वी हिन्दी की बोलियाँ हैं
(a) अवधी, बघेली एवं छत्तीसगढ़ी
(b) ब्रज, अवधी और कन्नौजी
(c) भोजपुरी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
(d) मैथिली, ब्रज और कन्नौजी

**38.** भोजपुरी, मगही और मैथिली बोलियाँ किससे सम्बन्धित हैं?
(a) पश्चिमी हिन्दी (b) पूर्वी हिन्दी
(c) बिहारी हिन्दी (d) राजस्थानी हिन्दी

**39.** गुड़गाँव, दिल्ली तथा करनाल के पश्चिमी क्षेत्रों में बोली जाने वाली 'अहीरवाटी' का सम्बन्ध किससे है?
(a) पूर्वी राजस्थानी (b) पश्चिमी राजस्थानी
(c) उत्तरी राजस्थानी (d) दक्षिणी राजस्थानी

**40.** 'मैथिली' में साहित्य सृजन करने वाला रचनाकार कौन है?
(a) विद्यापति (b) भारतेन्दु
(c) सरहपाद (d) अज्ञेय

**41.** पूर्वी राजस्थानी का एक अन्य नाम है
(a) मेवाती (b) ढूँढाड़ी
(c) मारवाड़ी (d) मालवी

**42.** निम्नलिखित में से किस बोली में कृष्ण काव्य और रीतिकालीन साहित्य का सृजन हुआ?
(a) अवधी (b) भोजपुरी
(c) ब्रजभाषा (d) कौरवी

**43.** गोस्वामी तुलसीदास की रचना 'कवितावली' किस भाषा की रचना है?
(a) अवधी (b) ब्रजभाषा (यू.जी.सी. नेट 2012)
(c) मैथिली (d) बुन्देली

**44.** शकुन्तला नाटक का खड़ी बोली में अनुवाद किसने किया? (टी.जी.टी. परीक्षा 2004)
(a) राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' (b) राजा लक्ष्मण सिंह
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) गिरिधर दास

**45.** खड़ी बोली कहाँ बोली जाती है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2006)
(a) झाँसी (b) कानपुर
(c) मेरठ (d) अलीगढ़

**46.** खड़ी बोली के लिए सुनीति कुमार चटर्जी ने किस शब्द का प्रयोग किया है?
(a) जनपदीय हिन्दुस्तानी (b) वर्नाक्युलर हिन्दुस्तानी
(c) कौरवी (d) रेख्ता

**47.** किस क्षेत्र की बोली को 'काशिका' कहा गया है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2010)
(a) बाँसवाड़ा (b) आरा-भोजपुर
(c) बनारस (d) मगध

**48.** पश्चिमी हिन्दी किस अपभ्रंश से विकसित है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. 2005)
(a) प्राकृत (b) मागधी
(c) शौरसेनी (d) अर्द्धमागधी

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**49.** निम्नलिखित में से कौन-सी द्रविड़ परिवार की भाषा है?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2010)
(a) उड़िया (b) बांग्ला
(c) असमिया (d) कन्नड़ ✓

**50.** पश्चिमी हिन्दी की सर्वाधिक प्रमुख बोली इनमें से कौन-सी है?
(टी.जी.टी. परीक्षा 2003)
(a) ब्रजभाषा ✓ (b) खड़ी बोली
(c) बुन्देली (d) बाँगरू

**51.** ब्रजभाषा किस अपभ्रंश से विकसित है?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2010)
(a) शौरसेनी ✓ (b) मागधी
(c) अर्द्धमागधी (d) पैशाची

**52.** खड़ी बोली का प्रयोग सबसे पहले किस पुस्तक में हुआ?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2006)
(a) भक्तिसागर (b) सुखसागर
(c) काव्यसागर (d) प्रेमसागर ✓

**53.** 'खड़ी बोली' का दूसरा नाम है
(केन्द्रीय विद्यालय संगठन अध्यापक भर्ती परीक्षा 2003)
(a) मगही (b) कौरवी ✓
(c) हिन्दुस्तानी (d) बघेली

**54.** 'रामचरितमानस' किस भाषा में लिखी गई?
(केन्द्रीय विद्यालय संगठन अध्यापक भर्ती परीक्षा 2003)
(a) ब्रज (b) भोजपुरी
(c) अवधी ✓ (d) मागधी

**55.** हिन्दी भाषा की बोलियों के वर्गीकरण के आधार पर छत्तीसगढ़ी बोली है
(टी.जी.टी. परीक्षा 2004)
(a) पूर्वी हिन्दी ✓ (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) पहाड़ी हिन्दी (d) राजस्थानी हिन्दी

**56.** 'मैथिली' का विकास किस अपभ्रंश से माना जाता है?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2004)
(a) शौरसेनी अपभ्रंश (b) मागधी अपभ्रंश ✓
(c) अर्द्धमागधी अपभ्रंश (d) महाराष्ट्री अपभ्रंश

**57.** तुलसी कृत 'विनय पत्रिका' की भाषा है
(a) अवधी (b) ब्रज ✓
(c) कन्नौजी (d) कौरवी

**58.** निम्नलिखित बोलियों में से कौन-सी बोली उत्तर प्रदेश में नहीं बोली जाती है?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2007)
(a) अवधी (b) ब्रज (c) खड़ी बोली (d) मैथिली ✓

**59.** देवनागरी लिपि की उत्पत्ति किससे हुई?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2010)
(a) खरोष्ठी (b) ब्राह्मी ✓ (c) पैशाची (d) कैथी

**60.** अधिकतर भारतीय भाषाओं का विकास किस लिपि से हुआ?
(a) शारदा लिपि (b) खरोष्ठी लिपि
(c) कुटिल लिपि (d) ब्राह्मी लिपि ✓

**61.** हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है?
(a) देवनागरी ✓ (b) गुरुमुखी
(c) ब्राह्मी (d) सौराष्ट्री

**62.** 'मॉरिशस का प्रेमचन्द' किसे कहा जाता है?
(a) हरिशंकर आदेश (b) रामदेव रघुवीर
(c) अभिमन्यु अनन्त ✓ (d) हरिमानक

**63.** दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन (World Hindi Conference) वर्ष 2015 का आयोजन स्थल था
(a) न्यूयॉर्क (अमेरिका) (b) जोहानसबर्ग (दक्षिण अफ्रीका)
(c) लन्दन (ब्रिटेन) (d) भोपाल (भारत) ✓

**64.** 'लाल पसीना' उपन्यास के लेखक कौन हैं?
(a) रामदेव रघुवीर (b) अभिमन्यु अनन्त ✓
(c) सूर्य प्रसाद वीरे (d) सहोदरा शिव

**65.** इनमें से किस बोली का बिहारी हिन्दी से सम्बन्ध नहीं है?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2015)
(a) अवधी ✓ (b) मगही (c) भोजपुरी (d) मैथिली

**66.** निम्नलिखित में से कौन-सा लेखक भारतेन्दु-मण्डल का नहीं है?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2015)
(a) प्रताप नारायण मिश्र
(b) बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
(c) बालकृष्ण भट्ट
(d) राजा लक्ष्मण सिंह ✓

**67.** 'दोहा' (दूहा) मूलत: किस भाषा का छन्द है?
(यू.जी.सी.नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2015)
(a) प्राकृत (b) अपभ्रंश ✓ (c) हिन्दी (d) संस्कृत

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. (c) | 2. (c) | 3. (b) | 4. (a) | 5. (c) | 6. (a) | 7. (d) | 8. (b) | 9. (c) | 10. (c) |
| 11. (c) | 12. (d) | 13. (a) | 14. (b) | 15. (b) | 16. (b) | 17. (a) | 18. (d) | 19. (d) | 20. (a) |
| 21. (a) | 22. (d) | 23. (c) | 24. (d) | 25. (b) | 26. (a) | 27. (b) | 28. (d) | 29. (b) | 30. (a) |
| 31. (c) | 32. (a) | 33. (c) | 34. (b) | 35. (c) | 36. (d) | 37. (a) | 38. (c) | 39. (c) | 40. (a) |
| 41. (b) | 42. (c) | 43. (b) | 44. (b) | 45. (c) | 46. (a) | 47. (c) | 48. (c) | 49. (d) | 50. (a) |
| 51. (a) | 52. (d) | 53. (b) | 54. (c) | 55. (a) | 56. (b) | 57. (b) | 58. (d) | 59. (b) | 60. (d) |
| 61. (a) | 62. (c) | 63. (d) | 64. (b) | 65. (a) | 66. (d) | 67. (b) | | | |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# 2

# वर्ण, उच्चारण और वर्तनी

*भाषा के द्वारा मनुष्य अपने भावों-विचारों को दूसरों के समक्ष प्रकट करता है तथा दूसरों के भावों-विचारों को समझता है। अपनी भाषा को सुरक्षित रखने और काल की सीमा से निकालकर अमर बनाने की ओर मनीषियों का ध्यान गया। वर्षों बाद मनीषियों ने यह अनुभव किया कि उनकी भाषा में जो ध्वनियाँ प्रयुक्त हो रही हैं, उनकी संख्या निश्चित है और इन ध्वनियों के योग से शब्दों का निर्माण हो सकता है। बाद में इन्हीं उच्चारित ध्वनियों के लिए लिपि में अलग-अलग चिह्न बना लिए गए, जिन्हें वर्ण कहते हैं।*

## हिन्दी वर्णमाला

वर्णों के समूह या समुदाय को **वर्णमाला** कहते हैं। हिन्दी में वर्णों की संख्या 45 है

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ |
| ए | ऐ | ओ | औ | अं | अः |
| क | ख | ग | घ | ङ | |
| च | छ | ज | झ | ञ | |
| ट | ठ | ड | ढ | ण | |
| त | थ | द | ध | न | |
| प | फ | ब | भ | म | |
| य | र | ल | व | | |
| श | ष | स | ह | | |

संस्कृत वर्णमाला में एक और स्वर ऋ है। इसे भी सम्मिलित कर लेने पर वर्णों की संख्या 46 हो जाती है।

इसके अतिरिक्त, हिन्दी में अँ, ड़, ढ़ और अंग्रेज़ी से आगत ऑ ध्वनियाँ प्रचलित हैं। **अँ अं** से भिन्न है, ड़ ड से, ढ़ ढ से भिन्न है, इसी प्रकार ऑ आ से भिन्न ध्वनि है। वास्तव में इन ध्वनियों (अँ, ड़, ढ़, ऑ) को भी हिन्दी वर्णमाला में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इनको भी सम्मिलित कर लेने पर हिन्दी में वर्णों की संख्या 50 हो जाती है। हिन्दी वर्णमाला दो भागों में विभक्त है— **स्वर** और **व्यंजन**।

### स्वर

जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा मुख-विवर से अबाध गति से निकलती है, उन्हें स्वर कहते हैं।

स्वर तीन प्रकार के होते हैं, जो निम्न हैं

1. **मूल स्वर** वे स्वर जिनके उच्चारण में कम-से-कम समय लगता है, अर्थात् जिनके उच्चारण में अन्य स्वरों की सहायता नहीं लेनी पड़ती है, मूल स्वर या ह्रस्व स्वर कहलाते हैं; जैसे—अ, इ, उ, ऋ।
2. **सन्धि स्वर** वे स्वर जिनके उच्चारण में मूल स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, सन्धि स्वर कहलाते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं
   (*i*) **दीर्घ स्वर** वे स्वर जो सजातीय स्वरों (एक ही स्थान से बोले जाने वाले स्वर) के संयोग से निर्मित हुए हैं, दीर्घ स्वर कहलाते हैं; जैसे—
   अ + अ = आ
   इ + इ = ई
   उ + उ = ऊ

   (*ii*) **संयुक्त स्वर** वे स्वर जो विजातीय स्वरों (विभिन्न स्थानों से बोले जाने वाले स्वर) के संयोग से निर्मित हुए हैं, संयुक्त स्वर कहलाते हैं; जैसे—
   अ + इ = ए
   अ + ए = ऐ
   अ + उ = ओ
   अ + ओ = औ
3. **प्लुत स्वर** वे स्वर जिनके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, प्लुत स्वर कहलाते हैं; जैसे— 'ऽ'
   किसी को पुकारने या नाटक के संवादों में इसका प्रयोग करते हैं; जैसे— राऽऽऽम

### स्वरों का उच्चारण

उच्चारण स्थान की दृष्टि से स्वरों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, जो निम्न हैं

1. **अग्र स्वर** जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग ऊपर उठता है, अग्र स्वर कहलाते हैं;
   जैसे—इ, ई, ए, ऐ।
2. **मध्य स्वर** जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा समान अवस्था में रहती है, मध्य स्वर कहलाते हैं;
   जैसे—'अ'
3. **पश्च स्वर** जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का पश्च भाग ऊपर उठता है, पश्च स्वर कहलाते हैं;
   जैसे—आ, उ, ओ, औ।

इसके अतिरिक्त अँ (ँ), अं (ं), और अः (ः) ध्वनियाँ हैं। ये न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन। आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने इन्हें **अयोगवाह** कहा है, क्योंकि ये बिना किसी से योग किए ही अर्थ वहन करते हैं। हिन्दी वर्णमाला में इनका स्थान स्वरों के बाद और व्यंजनों से पहले निर्धारित किया गया है।

### व्यंजन

जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा मुख-विवर से अबाध गति से नहीं निकलती, वरन् उसमें पूर्ण या अपूर्ण अवरोध होता है, व्यंजन कहलाती हैं। दूसरे शब्दों में, वे ध्वनियाँ जो बिना स्वरों की सहायता लिए उच्चारित नहीं हो सकती हैं, व्यंजन कहलाती हैं; जैसे—**क** = क् + अ।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

सामान्यतया व्यंजन छः प्रकार के होते हैं, जो निम्न हैं

1. **स्पर्श व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा का कोई-न-कोई भाग मुख के किसी-न-किसी भाग को स्पर्श करता है, **स्पर्श व्यंजन** कहलाते हैं। **क** से लेकर **म** तक 25 व्यंजन स्पर्श हैं। इन्हें पाँच-पाँच के वर्गों में विभाजित किया गया है। अत: इन्हें **वर्गीय व्यंजन** भी कहते हैं; जैसे—**क** से **ङ** तक **क वर्ग**, **च** से **ञ** तक **च वर्ग**, **ट** से **ण** तक **ट वर्ग**, **त** से **न** तक **त वर्ग**, और **प** से **म** तक **प वर्ग**।
2. **अनुनासिक व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु नासिका मार्ग से निकलती है, अनुनासिक व्यंजन कहलाते हैं। **ङ, ञ, ण, न** और **म** अनुनासिक व्यंजन हैं।
3. **अन्त:स्थ व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख बहुत संकुचित हो जाता है फिर भी वायु स्वरों की भाँति बीच से निकल जाती है, उस समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि **अन्त:स्थ व्यंजन** कहलाती है। य, र, ल, व अन्त:स्थ व्यंजन हैं।
4. **ऊष्म व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में एक प्रकार की गरमाहट या सुरसुराहट-सी प्रतीत होती है, **ऊष्म व्यंजन** कहलाते हैं। श, ष, स और ह ऊष्म व्यंजन हैं।
5. **उत्क्षिप्त व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की उल्टी हुई नोंक तालु को छूकर झटके से हट जाती है, उन्हें **उत्क्षिप्त व्यंजन** कहते हैं। ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।
6. **संयुक्त व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में अन्य व्यंजनों की सहायता लेनी पड़ती है, संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—

   क् + ष = क्ष (उच्चारण की दृष्टि से क् + छ = क्ष)
   त् + र = त्र
   ज् + ञ = ज्ञ (उच्चारण की दृष्टि से ग् + य = ज्ञ)
   श् + र = श्र

## व्यंजनों का उच्चारण

उच्चारण स्थान की दृष्टि से हिन्दी-व्यंजनों को आठ वर्गों में विभाजित किया जा सकता है

1. **कण्ठ्य व्यंजन** जिन व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा के पिछले भाग से कोमल तालु का स्पर्श होता है, कण्ठ्य ध्वनियाँ (व्यंजन) कहलाते हैं। क, ख, ग, घ, ङ कण्ठ्य व्यंजन हैं।
2. **तालव्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग कठोर तालु को स्पर्श करता है, तालव्य व्यंजन कहलाते हैं। च, छ, ज, झ, ञ और श, य तालव्य व्यंजन हैं।
3. **मूर्धन्य व्यंजन** कठोर तालु के मध्य का भाग मूर्धा कहलाता है। जब जिह्वा की उल्टी हुई नोंक का निचला भाग मूर्धा से स्पर्श करता है, ऐसी स्थिति में उत्पन्न ध्वनि को मूर्धन्य व्यंजन कहते हैं। ट, ठ, ड, ढ, ण मूर्धन्य व्यंजन हैं।
4. **दन्त्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की नोंक ऊपरी दाँतों को स्पर्श करती है, दन्त्य व्यंजन कहलाते हैं। त, थ, द, ध, स दन्त्य व्यंजन हैं।
5. **ओष्ठ्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में दोनों ओष्ठों द्वारा श्वास का अवरोध होता है, ओष्ठ्य व्यंजन कहलाते हैं। प, फ, ब, भ, म ओष्ठ्य व्यंजन हैं।
6. **दन्त्योष्ठ्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में निचला ओष्ठ दाँतों को स्पर्श करता है, दन्त्योष्ठ्य व्यंजन कहलाते हैं। 'व' दन्त्योष्ठ्य व्यंजन है।
7. **वर्त्स्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा ऊपरी मसूढ़ों (वर्त्स) का स्पर्श करती है, वर्त्स्य व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—न, र, ल।
8. **स्वरयन्त्रमुखी या काकल्य व्यंजन** जिन व्यंजनों के उच्चारण में अन्दर से आती हुई श्वास, तीव्र वेग से स्वर यन्त्र मुख पर संघर्ष उत्पन्न करती है, स्वरयन्त्रमुखी व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—ह।

उपरोक्त आठ वर्गों के विभाजन के अतिरिक्त व्यंजनों के उच्चारण हेतु उल्लेखनीय बिन्दु निम्नलिखित हैं

1. **घोषत्व के आधार पर** घोष का अर्थ **स्वरतन्त्रियों** में ध्वनि का कम्पन है।
   (i) **अघोष** जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वरतन्त्रियों में कम्पन न हो, अघोष व्यंजन कहलाते हैं। प्रत्येक 'वर्ग' का पहला और दूसरा व्यंजन वर्ण अघोष ध्वनि होता है; जैसे—क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ।
   (ii) **घोष** जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वरतन्त्रियों में कम्पन हो, वह घोष व्यंजन कहलाते हैं। प्रत्येक 'वर्ग' का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ व्यंजन वर्ण घोष ध्वनि होता है; जैसे—ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण।
2. **प्राणत्व के आधार पर** यहाँ 'प्राण' का अर्थ हवा से है।
   (i) **अल्पप्राण** जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से कम हवा निकले, अल्पप्राण व्यंजन होते हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ व्यंजन वर्ण अल्पप्राण ध्वनि होता है जैसे—क, ग, ड़, च, ज, ञ आदि।
   (ii) **महाप्राण** जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से अधिक हवा निकले महाप्राण व्यंजन होते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा व्यंजन वर्ण महाप्राण ध्वनि होता है; जैसे—ख, घ, छ, झ, ठ, ढ आदि।
3. **उच्चारण की दृष्टि से ध्वनि** (व्यंजन) को तीन वर्गों में बाँटा गया है
   (i) **संयुक्त ध्वनि** दो-या-दो से अधिक व्यंजन ध्वनियाँ परस्पर संयुक्त होकर 'संयुक्त ध्वनियाँ' कहलाती हैं; जैसे—प्राण, घ्राण, क्लान्त, क्लान, प्रकर्ष इत्यादि। संयुक्त ध्वनियाँ अधिकतर तत्सम शब्दों में पाई जाती हैं।
   (ii) **सम्पृक्त ध्वनि** एक ध्वनि जब दो ध्वनियों से जुड़ी होती है, तब यह 'सम्पृक्त ध्वनि' कहलाती है; जैसे—'कम्बल'। यहाँ 'क' और 'ब' ध्वनियों के साथ म् ध्वनि संयुक्त (जुड़ी) है।
   (iii) **युग्मक ध्वनि** जब एक ही ध्वनि द्वित्व हो जाए, तब यह 'युग्मक ध्वनि' कहलाती है; जैसे—अक्षुण्ण, उत्फुल्ल, दिक्कत, प्रसन्नता आदि।

# वर्तनी

किसी भी भाषा में शब्दों की ध्वनियों को जिस क्रम और जिस रूप से उच्चारित किया जाता है, उसी क्रम और उसी रूप से लेखन की रीति को वर्तनी (Spelling) कहते हैं। जो जैसा उच्चारण करता है, वैसा ही लिखना चाहता है। अत: उच्चारण और वर्तनी में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस प्रकार शुद्ध वर्तनी के लिए शुद्ध उच्चारण भी आवश्यक है।

शब्दों की वर्तनी में अशुद्धि दो प्रकार की होती है

1. वर्ण सम्बन्धी 2. शब्द रचना सम्बन्धी

वर्ण सम्बन्धी अशुद्धियाँ पुन: दो प्रकार की होती हैं

(i) स्वर-मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ।
(ii) व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## स्वर-मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| | (अं) | | |
| अगूंर | अंगूर | सिन्ह | सिंह |
| अंलकार | अलंकार | कन्ठ | कंठ/कण्ठ |
| अन्जलि | अंजलि | कन्घा | कंघा |
| अन्श | अंश | | |
| | (अ) | | |
| आधीन | अधीन | बांगला | बँगला |
| आधिकारी | अधिकारी | हस्पताल | अस्पताल |
| आनाधिकार | अनधिकार | बारात | बरात |
| आविस्मरणीय | अविस्मरणीय | आलावा | अलावा |
| | ('अ' नहीं होना चाहिए) | | |
| अस्थान (जगह) | स्थान | अस्थापना (प्रतिष्ठा) | स्थापना |
| अस्नान (नहाना) | स्नान | असपष्ट (साफ) | स्पष्ट |
| | (आ) | | |
| अगामी | आगामी | चहिए | चाहिए |
| अजमाइश | आजमाइश | तत्कालिक | तात्कालिक |
| अहार | आहार | तलाब | तालाब |
| अशीर्वाद | आशीर्वाद | नदान | नादान |
| अवश्यकता | आवश्यकता | रमायण | रामायण |
| अकाश | आकाश | नराज | नाराज |
| अन्त्यक्षरी | अन्त्याक्षरी | ललायित | लालायित |
| नरायण | नारायण | परलौकिक | पारलौकिक |
| भगीरथी | भागीरथी | व्यवहारिक | व्यावहारिक |
| मतन्तर | मतान्तर | व्यवसायिक | व्यावसायिक |
| चहरदीवारी | चहारदीवारी | संसारिक | सांसारिक |
| जमाता | जामाता | कल्यण | कल्याण |
| | (इ) | | |
| अतिथी | अतिथि | प्रतीज्ञा | प्रतिज्ञा |
| अभीनेता | अभिनेता | ब्रिटीश | ब्रिटिश |
| अभीमान | अभिमान | अशुद्धी | अशुद्धि |
| परिणती | परिणति | स्थायीत्व | स्थायित्व |
| बहीरंग | बहिरंग | पतीव्रता | पतिव्रता |
| अन्तीम | अन्तिम | कवीता | कविता |
| तिथी | तिथि | उत्पत्ती | उत्पत्ति |
| जलांजली | जलांजलि | विद्यार्थीयों | विद्यार्थियों |
| वाल्मीकी | वाल्मीकि | नीती | नीति |
| परीचय | परिचय | कालीदास | कालिदास |
| समिती | समिति | अनीवार्य | अनिवार्य |
| अभीलाषा | अभिलाषा | आखीर | आखिर |
| कोशीश | कोशिश | कोटी-कोटी | कोटि-कोटि |
| क्योंकी | क्योंकि | क्षत्रीय | क्षत्रिय |
| परीवार | परिवार | पुष्टी | पुष्टि |
| कृषी | कृषि | पूर्ती | पूर्ति |
| चरीतार्थ | चरितार्थ | सम्पत्ती | सम्पत्ति |
| स्थिती | स्थिति | | |

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| | ('इ' की मात्रा होनी चाहिए) | | |
| आजीवका | आजीविका | आध्यात्मक | आध्यात्मिक |
| अध्यापका | अध्यापिका | मट्टी | मिट्टी |
| कठनाई | कठिनाई | क्षणक | क्षणिक |
| कुमुदनी | कुमुदिनी | जीवत | जीवित |
| गृहणी | गृहिणी | वाहनी | वाहिनी |
| नायका | नायिका | मालन | मालिन |
| मानसक | मानसिक | साहित्यक | साहित्यिक |
| सरोजनी | सरोजिनी | परिचत | परिचित |
| नीत | नीति | परिस्थित | परिस्थिति |
| परिमार्जत | परिमार्जित | प्रतिनिध | प्रतिनिधि |
| पाकस्तान | पाकिस्तान | युधिष्ठर | युधिष्ठिर |
| माचस | माचिस | मैथली | मैथिली |
| लेकन | लेकिन | रचियता | रचयिता |
| विरहणी | विरहिणी | लिखत | लिखित |
| उजयाला | उजियाला | शिवर | शिविर |
| अनुभूत | अनुभूति | मालकन | मालकिन |
| | ('इ' की मात्रा नहीं होनी चाहिए) | | |
| कौशिल्या | कौशल्या | अहिल्या | अहल्या |
| द्वारिका | द्वारका | कवियित्री | कवयित्री |
| छिपकिली | छिपकली | प्रदर्शिनी | प्रदर्शनी |
| फ़िजूल | फ़जूल | वापिस | वापस |
| चाहिता | चाहता | संस्कृति-भाषा | संस्कृत-भाषा |
| सम्पादिक | सम्पादक | सामिग्री | सामग्री |
| हास्यात्मिक | हास्यात्मक | तिरिस्कार | तिरस्कार |
| पहिला | पहला | झिल्लाया | झल्लाया |
| रचनात्मिक | रचनात्मक | व्यवस्थापिक | व्यवस्थापक |
| शिखिर | शिखर | सन्तुलिन | सन्तुलन |
| स्त्रि | स्त्री | | |
| | ('ई' की मात्रा होनी चाहिए) | | |
| अद्वितिय | अद्वितीय | निरिह | निरीह |
| निरसता | नीरसता | द्रविभूत | द्रवीभूत |
| आशिर्वाद | आशीर्वाद | दधिचि | दधीचि |
| तरिका | तरीका | बिमारी | बीमारी |
| पत्नि | पत्नी | महाबलि | महाबली |
| परिक्षा | परीक्षा | रितिकाल | रीतिकाल |
| संगृहित | संगृहीत | समिक्षा | समीक्षा |
| सूचिपत्र | सूचीपत्र | सलिका | सलीका |
| स्वर्गिय | स्वर्गीय | महादेवि | महादेवी |
| श्रिमान् | श्रीमान् | निमिलित | निमीलित |
| दिवाली | दीवाली | दिपिका | दीपिका |
| परिक्षण | परीक्षण | पिताम्बर | पीताम्बर |
| भागिरथी | भागीरथी | भस्मिभूत | भस्मीभूत |
| महिना | महीना | विभिषिका | विभीषिका |
| लिजिए | लीजिए | शारिरिक | शारीरिक |
| शताब्दि | शताब्दी | शुद्धिकरण | शुद्धीकरण |
| श्रीमति | श्रीमती | सुशिल | सुशील |
| खैंचना | खींचना | वर्तनि | वर्तनी |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| | **('ई' की मात्रा नहीं होनी चाहिए)** | | |
| कृतघ्नी | कृतघ्न | निरपराधी | निरपराध |
| निर्दयी | निर्दय | निष्कपटी | निष्कपट |
| | **(उ)** | | |
| ऊत्पात | उत्पात | ऊत्थान | उत्थान |
| दूबारा | दुबारा | पूण्य | पुण्य |
| रेणू | रेणु | पुरूष | पुरुष |
| भानू | भानु | रूष्ठ | रुष्ठ |
| हिन्दोस्तान | हिन्दुस्तान | साधूवाद | साधुवाद |
| ऊपद्रव | उपद्रव | कूआँ | कुआँ |
| गोलामी | गुलामी | आधूनिक | आधुनिक |
| | **(ऊ)** | | |
| अनुदित | अनूदित | उधम | ऊधम |
| अनूकुल | अनुकूल | तुफान | तूफान |
| उँचाई | ऊँचाई | कौतुहल | कौतूहल |
| पुर्व | पूर्व | नुपुर | नूपुर |
| पुज्य | पूज्य | दुसरा | दूसरा |
| बुढा | बूढ़ा | सुरज | सूरज |
| हिन्दु | हिन्दू | सिन्दुर | सिन्दूर |
| चित्रकुट | चित्रकूट | उर्ध्व | ऊर्ध्व |
| | **('ऋ')** | | |
| अनुग्रहीत | अनुगृहीत | उरिण | उऋण |
| क्रित्रिम | कृत्रिम | त्रितीय | तृतीय |
| प्रक्रिति | प्रकृति | व्रक्ष | वृक्ष |
| प्रथक् | पृथक् | ग्रहीत | गृहीत |
| पैत्रिक | पैतृक | श्रिंगार | शृंगार |
| संग्रहीत | संगृहीत | द्रश्य | दृश्य |
| पृथा | प्रथा | कृया | क्रिया |
| तृकोण | त्रिकोण | दृष्टा | द्रष्टा |
| वज्ृ | वज्र | स्त्रष्टा | सृष्टा |
| गृाहक | ग्राहक | जाग्रत | जागृत |
| भृष्ट | भ्रष्ट | रिग्वेद | ऋग्वेद |
| | **('ए' 'ऐ')** | | |
| चाहिऐ | चाहिए | ऐक | एक |
| ऐकान्त | एकान्त | ऐषणा | एषणा |
| एसा | ऐसा | एतिहासिक | ऐतिहासिक |
| ऐकान्तिक | एकान्तिक | एश्वर्य | ऐश्वर्य |
| | **('ओ', 'औ')** | | |
| सरवर | सरोवर | भूगोलिक | भौगोलिक |
| अनेकों | अनेक | ओलाद | औलाद |
| मोलवी | मौलवी | प्रत्येकों | प्रत्येक |
| ओषधालय | औषधालय | ओरत | औरत |

## व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| अंस | अंश | सीड़ी | सीढ़ी |
| अबिराम | अभिराम | बीना | वीणा |
| इष्ठ | इष्ट | परिनाम | परिणाम |
| छात् | छात्र | परिमान | परिमाण |
| धोका | धोखा | गनित | गणित |
| उश्रृंखल | उच्छृंखल | प्रनाली | प्रणाली |
| खीजना | खीझना | पुन्य | पुण्य |
| खाड | खांड | पौदा | पौधा |
| साढ़ी | साड़ी | सीदा | सीधा |
| कारन | कारण | चिन्ह | चिह्न |
| कंकन | कंकण | मूर्धण्य | मूर्धन्य |
| मरन | मरण | गोबी | गोभी |
| प्रान | प्राण | किआ | किया |
| चरन | चरण | सदृश्य | सदृश |
| नारायन | नारायण | पिंजड़ा | पिंजरा |
| भरथ | भरत | घबड़ाना | घबराना |
| धुरंदर | धुरंधर | भाग्यमान | भाग्यवान |
| धंदा | धंधा | बिधि | विधि |
| आफिस | ऑफिस | बिशय | विषय |
| बहिस्कार | बहिष्कार | बिद्या | विद्या |
| भाबी | भाभी | कलस | कलश |
| अध्यन | अध्ययन | आमिश | आमिष |
| स्थाई | स्थायी | प्रत्यूस | प्रत्यूष |
| केन्द्रीयकरण | केन्द्रीकरण | सुसमा | सुषमा |
| राज्यमहल | राजमहल | कैलाश | कैलास |
| भूक | भूख | कुम्भार | कुम्हार |
| क्षत्र | छत्र | नछत्र | नक्षत्र |
| कच्छा | कक्षा | छमा | क्षमा |
| आकांछा | आकांक्षा | लच्छन | लक्षण |
| प्रशाद | प्रसाद | परीच्छा | परीक्षा |
| बसन्त | वसन्त | हितैशी | हितैषी |
| श्राप | शाप | सिंघ | सिंह |

## संयुक्त व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| कार्यकर्म | कार्यक्रम | नमरता | नम्रता |
| रक्खा | रखा | शन्ख | शंख |
| लिक्खा | लिखा | व्यापित | व्याप्त |
| कुच्छ | कुछ | मान्सिक | मानसिक |
| यथेष्ठ | यथेष्ट | परसपर | परस्पर |
| सन्तुष्ठ | सन्तुष्ट | ग्रहस्थ्य | गृहस्थ |
| अनिष्ठ | अनिष्ट | कियारी | क्यारी |
| सर्राफ | सराफ | जादा | ज्यादा |
| गरिष्ट | गरिष्ठ | राधेशाम | राधेश्याम |
| घनिष्ट | घनिष्ठ | स्वास्थ | स्वास्थ्य |
| कुन्डली | कुण्डली | राजपाल | राज्यपाल (गवर्नर) |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| घन्टा | घण्टा | व्योपार | व्यापार |
| गिरस्ती | गृहस्थी | महात्म | माहात्म्य |
| योधा | योद्धा | मरयादा | मर्यादा |
| इंकार | इनकार | नर्क | नरक |
| तात्पर्य | तात्पर्य | स्मशान | श्मशान |
| वेस्त | व्यस्त | भीस्म | भीष्म |
| अर्च्यना | अर्चना | टकर | टक्कर |
| त्याज | त्याज्य | प्रसन | प्रसन्न |
| ईरसा | ईर्ष्या | सलज | सलज्ज |
| दुरगति | दुर्गति | अला | अल्ला |
| योज्ञ | योग्य | पचीस | पच्चीस |
| अरोज्ञ | अरोग्य | इकीस | इक्कीस |
| यग्य | यज्ञ | समेलन | सम्मेलन |
| ग्यान | ज्ञान | प्रफुलित | प्रफुल्लित |
| व्याकरण | व्याकरण | चौकना | चौकन्ना |

## व्यंजन द्वित्व सम्बन्धी अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| अवन्नति | अवनति | उज्वल | उज्ज्वल |
| उतेजना | उत्तेजना | उदंड | उद्दंड |
| प्रज्जवलित | प्रज्वलित | कन्हय्या | कन्हैया |
| उनति | उन्नति | उचारण | उच्चारण |
| उलेख | उल्लेख | खचर | खच्चर |
| सम्पन्न | सम्पन्न | भवनिष्ठ | भवन्निष्ठ |
| जलाद | जल्लाद | वचा | बच्चा |
| उतम | उत्तम | उत्पति | उत्पत्ति |
| उतीर्ण | उत्तीर्ण | मुका | मुक्का |
| अइसा | ऐसा | इनसान | इन्सान |
| जिकर | ज़िक्र | दुशमन | दुश्मन |
| फिकिर | फ़िक्र | बृजभाषा | ब्रजभाषा |
| इसलाम | इस्लाम | उधारण | उदाहरण |
| किसमत | किस्मत | त्यौहार | त्योहार |
| परभाव | प्रभाव | पैत्रिक | पैतृक |
| फिलम | फिल्म | मुशकिल | मुश्किल |
| मुलक | मुल्क | विषेश | विशेष |
| वेवहार | व्यवहार | सिरफ | सिर्फ |
| क्यूंकि | क्योंकि | मात्रभूमि | मातृभूमि |
| श्रंगार | शृंगार | प्रतेक | प्रत्येक |

## चन्द्रबिन्दु और अनुस्वार की अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| अंगरखा | अँगरखा | चांद | चाँद |
| आंगन | आँगन | छटांक | छटाँक |
| आंख | आँख | जहां | जहाँ |
| अंधेरा | अँधेरा | वहां | वहाँ |
| उंगली | उँगली | जाऊंगा | जाऊँगा |

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ऊंचा | ऊँचा | डांट | डाँट |
| ऊंट | ऊँट | तांता | ताँता |
| कंगना | कँगना | दूंगा | दूँगा |
| कुंवर | कुँवर | पहुंचना | पहुँचना |
| गूंगा | गूँगा | बंगला | बँगला |
| बांस | बाँस | मुंह | मुँह |
| सांकल | साँकल | | |

## हल् सम्बन्धी अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप

### (हल् होना चाहिए)

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| अर्थात | अर्थात् | पश्चात | पश्चात् |
| बुद्धिमान | बुद्धिमान् | भगवान | भगवान् |
| वणिक | वणिक् | सत | सत् |
| विधिवत | विधिवत् | शक्तिमान | शक्तिमान् |
| श्रीमान | श्रीमान् | महान | महान् |
| विद्वान | विद्वान् | श्रद्धावान | श्रद्धावान् |
| परिषद | परिषद् | हनुमान | हनुमान् |

### (हल् नहीं होना चाहिए)

| | | | |
|---|---|---|---|
| च्युत् | च्युत | अष्टम् | अष्टम |
| भागवत् | भागवत | दशम् | दशम |
| पंचम् | पंचम | प्राचीनतम् | प्राचीनतम |

## शब्दकोश में प्रयुक्त वर्णानुक्रम सम्बन्धी नियम

शब्दकोश में प्रयुक्त वर्णानुक्रम सम्बन्धी नियम निम्न प्रकार हैं

- शब्दकोश में पहले स्वर उसके पश्चात् व्यंजन का क्रम आता है।
- शब्दकोश में अनुस्वार (ं) और विसर्ग (ः) का स्वतन्त्र वर्ण के रूप में प्रयोग नहीं होता, लेकिन संयुक्त वर्णों के रूप में इन्हें अ, आ, इ, ई, उ, ऊ आदि से पहले स्थान प्रदान किया जाता है; जैसे—
  कं, कः, क, का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ।
  - शब्दकोश में पूर्ण वर्ण के पश्चात् संयुक्ताक्षर का क्रम आता है; जैसे—
    कं, कः ..... को, कौ के पश्चात् क्य, क्र, क्ल, क्व, क्ष।
  - शब्दकोश में 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' का कोई पृथक् शब्द संग्रह नहीं मिलता, क्योंकि ये संयुक्ताक्षर होते हैं। इनसे सम्बन्धित शब्दों को ढूँढने हेतु इन संयुक्ताक्षरों के पहले वर्ण वाले खाने में देखना होता है; जैसे—यदि हमें 'क्ष' (क् + ष) से सम्बन्धित शब्द को ढूँढना है, तो हमें 'क' वाले खाने में जाना होगा। इसी तरह 'त्र' (त् + र), 'ज्ञ' (ज् + ञ), श्र (श् + र) के लिए क्रमशः 'त', 'ज' और 'श' वाले खाने में जाना पड़ेगा।
  - ङ, ञ, ण, ड़, ढ़ से कोई शब्द आरम्भ नहीं होता, इसलिए ये स्वतन्त्र रूप से शब्दकोष में नहीं मिलते।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**1.** भाषा की सबसे छोटी इकाई है
(उत्तराखण्ड पुलिस उपनिरीक्षक परीक्षा 2014)
(a) शब्द (b) व्यंजन (c) स्वर (d) वर्ण ✓

**2.** हिन्दी में मूलत: कितने वर्ण हैं?
(a) 52 (b) 50 (c) 40 (d) 46 ✓

**3.** हिन्दी भाषा में वे कौन-सी ध्वनियाँ हैं जो स्वतन्त्र रूप से बोली या लिखी जाती हैं? (उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) स्वर ✓ (b) व्यंजन (c) वर्ण (d) अक्षर

**4.** संयुक्त को छोड़कर हिन्दी में मूल वर्णों की संख्या है।
(a) 36 (b) 44 ✓ (c) 48 (d) 53

**5.** स्वर कहते हैं
(a) जिनका उच्चारण 'लघु' और 'गुरु' में होता है
(b) जिनका उच्चारण बिना अवरोध अथवा विघ्न-बाधा के होता है ✓
(c) जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है
(d) जिनका उच्चारण नाक और मुँह से होता है

**6.** निम्नलिखित में से अग्र स्वर नहीं है
(a) अ ✓ (b) इ (c) ए (d) ऐ

**7.** हिन्दी में स्वरों के कितने प्रकार हैं?
(a) 1 (b) 2 (c) 3 ✓ (d) 4

**8.** हिन्दी वर्णमाला में 'अं' और 'अ:' क्या है?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2012)
(a) स्वर (b) व्यंजन
(c) अयोगवाह ✓ (d) संयुक्ताक्षर

**9.** जिनके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, वे कहलाते हैं
(a) मूल स्वर (b) प्लुत स्वर ✓
(c) संयुक्त स्वर (d) अयोगवाह

**10.** निम्नलिखित में से कौन स्वर नहीं है?
(उत्तराखण्ड पुलिस उपनिरीक्षक परीक्षा 2014)
(a) अ (b) उ
(c) ए (d) ञ ✓

**11.** उच्चारण के समय जीभ की स्थिति के अनुसार स्वरों के कितने भेद किए गए हैं? (टी.जी.टी. परीक्षा 2003)
(a) दो (b) तीन ✓
(c) पाँच (d) सात

**12.** वे ध्वनियाँ जो स्वरों की सहायता के बिना उच्चारित नहीं हो सकतीं; वह क्या कहलाती हैं?
(a) स्वर (b) शब्द
(c) व्यंजन ✓ (d) संयुक्ताक्षर

**13.** निम्नलिखित में एक स्पर्श व्यंजन है
(हरियाणा प्राथमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा 2009)
(a) श (b) छ ✓ (c) ल (d) ह

**14.** हिन्दी वर्णमाला के अन्तिम पंचमाक्षरों का उच्चारण स्थान क्या है?
(हिमाचल प्रदेश (इलेक्शन कानूनगो) परीक्षा 2010)
(a) अनुनासिक (b) कण्ठ्य
(c) तालव्य (d) मूर्धन्य

**15.** अन्त:स्थ व्यंजन हैं
(a) श, स, ह (b) क्ष, त्र, ज्ञ
(c) अं, अँ, अ: (d) य, र, ल, व ✓

**16.** श, ष, स और ह व्यंजन है
(a) उत्क्षिप्त (b) ऊष्म ✓
(c) स्पर्श (d) संयुक्त

**17.** उत्क्षिप्त व्यंजन है
(a) श, ष, स (b) य, र, ल
(c) क्ष, त्र, ज्ञ (d) ड़, ढ़ ✓

**18.** उत्क्षिप्त ध्वनि का प्रयोग हुआ है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) आरजू में (b) खसरा में
(c) पढ़ाई में ✓ (d) जफ़र में

**19.** 'ज्ञ' वर्ण किन वर्णों के संयोग से बना है?
(a) ज + ञ (b) ज् + ञ ✓
(c) ज + ज् (d) ज् + ज्

**20.** क्ष, त्र और ज्ञ की गणना स्वतन्त्र वर्णों में नहीं होती, क्योंकि
(a) ये संयुक्त व्यंजन हैं ✓
(b) इनका प्रयोग केवल तत्सम शब्दों में ही होता है
(c) ये व्यंजन 'अर्द्धस्वर' माने गए हैं
(d) ये पूर्णतः स्वतन्त्र व्यंजन हैं

**21.** हिन्दी में व्यंजन वर्णों की संख्या है
(a) 28 (b) 30
(c) 33 ✓ (d) 35

**22.** कण्ठ्य ध्वनियाँ (व्यंजन) कौन-सी हैं?
(a) च, छ, ज, झ (b) ट, ठ, ड, ढ
(c) क, ख, ग, घ ✓ (d) प, फ, ब, भ, म

**23.** 'श' ध्वनि का उच्चारण स्थान है
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2012)
(a) मूर्धन्य (b) तालव्य (c) दन्त्य (d) ओष्ठ्य

**24.** मूर्धन्य ध्वनियाँ कौन-सी हैं?
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) च, छ, ज, झ (b) ट, ठ, ड, ढ ✓
(c) त, थ, द, ध (d) प, फ, ब, भ, म

**25.** त, थ, द, ध, स आदि का उच्चारण स्थान है
(a) तालव्य ✓ (b) दन्त्य
(c) मूर्धन्य (d) दन्त्योष्ठ्य

**26.** जिन व्यंजनों के उच्चारण में दोनों ओष्ठों द्वारा श्वास का अवरोध होता है, वे क्या कहलाते हैं?
(a) मूर्धन्य व्यंजन (b) ओष्ठ्य व्यंजन ✓
(c) तालव्य व्यंजन (d) कण्ठ्य व्यंजन

**27.** यदि नीचे का होंठ पूरी तरह काट दिया जाए, तो किस ध्वनि के उच्चारण में कठिनाई होगी?
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) 'ल' (b) 'ब' ✓
(c) 'ध' (d) 'ख'

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**28.** 'व' व्यंजन का उच्चारण स्थान है
(a) दन्त्य (b) ओष्ठ्य (c) मूर्धन्य (d) दन्तोष्ठ्य

**29.** वर्त्स्य व्यंजन कौन-सा है?
(a) न् (b) त
(c) स (d) ह

**30.** स्वर रहित 'र' का प्रयोग हुआ है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) ट्रक में (b) पुनर्निर्माण में
(c) त्राटक में (d) शत्रु में

**31.** निम्न में से अल्पप्राण वर्ण कौन-से हैं?
(a) अ, आ (b) क, ग
(c) य, ध (d) फ, भ

**32.** निम्नलिखित में से कौन-सी बात गलत है?
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) 'ध' सघोष, महाप्राण दन्त्य है (b) 'ब' सघोष, ओष्ठ्य महाप्राण है
(c) 'च' अघोष, तालव्य अल्पप्राण है (d) 'ख' कण्ठ्य महाप्राण अघोष है

**33.** जिनके उच्चारण में स्वरतन्त्रियों में कम्पन न हो, वे कहलाते हैं
(a) घोष ध्वनियाँ (b) महाप्राण ध्वनियाँ
(c) अघोष ध्वनियाँ (d) अल्पप्राण ध्वनियाँ

**34.** 'प्रसन्नता' में कौन-सी ध्वनि है? (टी.जी.टी. परीक्षा 2006)
(a) संयुक्त ध्वनि (b) सम्पृक्त ध्वनि
(c) युग्मक ध्वनि (d) इनमें से कोई नहीं

**35.** निम्न में से महाप्राण ध्वनि नहीं है
(a) क (b) घ
(c) झ (d) य

**36.** अघोष वर्ण कौन-सा है? (राजस्व विभाग उ.प्र. लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) अ (b) ज
(c) ह (d) स

**37.** 'सम्बल' में कौन-सी ध्वनि है? (मालवा ग्रामीण बैंक (क्लर्क) परीक्षा 2010)
(a) सम्पृक्त (b) संयुक्त
(c) युग्मक (d) इनमें से कोई नहीं

**38.** अधोलिखित शब्द का कौन-सा रूप वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध है?
(a) प्रमात्मा (b) परमात्मा
(c) प्ररमात्मा (d) प्रमात्म

**39.** इनमें से शुद्ध वर्तनी वाला शब्द कौन-सा है?
(म. प्र. पुलिस विभाग स्टेनोग्राफर परीक्षा 2014)
(a) घनिष्ट (b) गनिष्ट
(c) घनिष्ठ (d) घनिश्ट

**40.** इनमें से कौन-सा शब्द रूप शुद्ध है?
(a) आर्शीवाद (b) अशीवाद
(c) आशीव्राद (d) आशीर्वाद

**निर्देश** (प्र.सं. 41-47) *दिए गए शब्दों की शुद्ध वर्तनी पर (✓) का चिह्न लगाइए।*

**41.** (a) जानहवी (b) जाहनवी
(c) जाह्नवी (d) इनमें से कोई नहीं

**42.** (a) दीर्घायु (b) दीरघायु
(c) दीघायु (d) दीघार्यु
(उत्तराखण्ड पुलिस उपनिरीक्षक परीक्षा 2014)

**43.** (a) श्रंगार (b) शृंगार
(c) सिंगार (d) शिंगार

**44.** (a) उज्वल (b) उजज्वल
(c) उज्जवल (d) उज्ज्वल

**45.** (a) अन्ताशाक्षिय (b) अन्तरशाक्ष्य
(c) अन्तःसाक्ष्य (d) इनमें से कोई नहीं

**46.** (a) लीपी (b) लीपि
(c) लिपि (d) लिपी
(केन्द्रीय विद्यालय एल.डी.सी. परीक्षा 2016)

**47.** (a) वरचस्व (b) वर्चस्व (c) व्रचस्व (d) वर्चश्व

**48.** शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2016)
(a) दर्शनाभिलासी (b) दर्शनाभिलाषी
(c) दर्शनभिलाशी (d) दर्शनभिलाषी

**49.** शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है
(a) अतिश्योक्ति (b) अतिशयोक्ति
(c) अतिश्योक्ती (d) अतिषयोक्ति

**50.** शब्द का शुद्ध रूप है
(a) अगामी (b) आगमी (c) आगामी (d) अगमी

**51.** शुद्ध रूप है (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) पैत्रिक (b) पैत्रक
(c) पैतृक (d) पैर्तक

**52.** सही रूप है
(a) इतिहासिक (b) ऐतिहासिक (c) एतिहासिक (d) ऐतिहसिक

**53.** निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध है?
(राजस्व विभाग उ.प्र. लेखपाल 2015)
(a) प्रतिनीधी (b) प्रतिनीधि (c) प्रतिनिधी (d) प्रतिनिधि

**निर्देश** (प्र.सं. 54-55) *इन प्रश्नों में एक शब्द के लिए चार वर्तनी दी गई हैं, जिनमें से केवल एक शुद्ध है। उस शुद्ध वर्तनी वाले विकल्प का चयन कीजिए।*

**54.** (a) अभीव्यक्ति (b) अभिव्यक्ति (c) अभिव्यक्ती (d) अभिवयक्ति

**55.** (a) अवसिष्ट (b) अवशिष्ट (c) अवशीष्ट (d) अवषिश्ट

**56.** कौन-सा शब्द सही है? (हिमाचल प्रदेश (इलेक्शन कानूनगो) परीक्षा 2010)
(a) पूज्यनीय (b) पूजनीय (c) पुजनीय (d) पूजनिय

**57.** निम्नलिखित में से किसकी वर्तनी शुद्ध है?
(इग्नू बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010)
(a) प्राथ्र्य (b) चर्ण (c) पूज्यनीय (d) अनुगृहीत

**58.** इनमें से किस शब्द की वर्तनी शुद्ध है? (इग्नू बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010)
(a) उपरोक्त (b) उपर्युक्त (c) उपरियुक्त (d) ऊपरियुक्त

**59.** 'औदार्य' की तरह 'व्यवहार' शब्द से कौन-सा शब्द ठीक है?
(इग्नू बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2009)
(a) व्यवहार्य (b) व्यावहार्य
(c) व्यवहारी (d) व्यावहारिक

**60.** निम्नलिखित में से किस शब्द की वर्तनी अशुद्ध है?
(छत्तीसगढ़ प्री.डी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010)
(a) अनंग (b) परिहास
(c) व्यंग (d) हास्य

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**61.** शुद्ध वर्तनी पहचानिए (उत्तराखण्ड बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010/ यू.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) कवयित्री ✓ (b) कवियत्री
(c) कवियित्री (d) ये सभी अशुद्ध हैं

**62.** शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है (यू.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) शुश्रूषा ✓ (b) सुश्रूषा (c) शुश्रुषा (d) श्रुशूषा

**63.** शुद्ध शब्द रूप है (यू.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) दुरनिवार (b) दुर्नीवार
(c) दु:निवार (d) दुर्निवार ✓

**निर्देश** (प्र.सं. 64-65) *प्रत्येक प्रश्न में चार शब्द दिए गए हैं, जिनमें एक शब्द की वर्तनी अशुद्ध है। अशुद्ध वर्तनी वाला शब्द चुनिए।*

**64.** (a) अन्यथ: ✓ (b) विशेषत:
(c) सामान्यत: (d) परिणामत:
(एस.एस.सी. स्टेनोग्राफर परीक्षा 2010)

**65.** (a) भाग्याधीन ✓ (b) भामनी
(c) भावना (d) भारोत्तोलन
(टी.जी.टी. चयन परीक्षा 2010)

**66.** 'पंचांग' शब्द में उच्चारित ध्वनियों का लेखन निम्नलिखित में से किसमें हुआ है? (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) पन्चाङ्ग (b) पञ्चान्ग (c) पुञ्चाङ्ग (d) पङ्चाङ्ग

**67.** शुद्ध शब्द का चयन कीजिए (उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा 2011)
(a) क्लेष (b) क्लेश ✓ (c) क्लेस (d) कलेस

**68.** द्वित्व का प्रयोग किस शब्द में नहीं हुआ है? (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) सच्चा (b) कुत्ता (c) वल्गा ✓ (d) बग्गा

**69.** निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध रूप है (उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा 2011)
(a) प्रज्वलित ✓ (b) प्रज्ज्वलित
(c) प्रजलित (d) प्रजवलित

**70.** शुद्ध शब्द छाँटिए (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) अर्न्तद्वन्द्व (b) अर्न्तदेशीय
(c) अन्तर्राष्ट्रिय (d) अन्तर्भाव ✓

**71.** अशुद्ध शब्द छाँटिए (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) वाङ्मय (b) उन्नीसवीं
(c) जयोत्सना ✓ (d) पाँचवाँ

**72.** हिन्दी शब्दकोश में 'क्ष' का क्रम किस वर्ण के बाद आता है? (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) क ✓ (b) छ (c) त्र (d) ज्ञ

**73.** शब्दकोश में 'श्रद्धा' शब्द किस शब्द के पहले आएगा? (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) शासन (b) शौर्य
(c) श्याम (d) श्रमिक ✓

**74.** निम्न में से कौन-सा शब्दकोश में सबसे बाद में आएगा? (उत्तराखण्ड समूह-ग परीक्षा 2014)
(a) हास ✓ (b) हार्दिक
(c) हृदय (d) इनमें से कोई नहीं

**75.** निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द शब्दकोश में सबसे पहले आएगा?
(a) अंकुर ✓ (b) आकार (c) अनिरुद्ध (d) आँकना

**76.** इनमें से कौन-सा युग्म अघोष ध्वनि है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2015)
(a) ग, घ (b) ड, ढ (c) प, फ ✓ (d) द, ध

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** (d) | **2.** (d) | **3.** (a) | **4.** (b) | **5.** (b) | **6.** (a) | **7.** (c) | **8.** (c) | **9.** (b) | **10.** (d) |
| **11.** (b) | **12.** (c) | **13.** (b) | **14.** (a) | **15.** (d) | **16.** (b) | **17.** (d) | **18.** (c) | **19.** (b) | **20.** (a) |
| **21.** (c) | **22.** (c) | **23.** (b) | **24.** (a) | **25.** (b) | **26.** (b) | **27.** (b) | **28.** (d) | **29.** (a) | **30.** (b) |
| **31.** (b) | **32.** (b) | **33.** (c) | **34.** (c) | **35.** (a) | **36.** (a) | **37.** (a) | **38.** (b) | **39.** (c) | **40.** (d) |
| **41.** (c) | **42.** (a) | **43.** (b) | **44.** (d) | **45.** (c) | **46.** (c) | **47.** (b) | **48.** (b) | **49.** (b) | **50.** (c) |
| **51.** (c) | **52.** (b) | **53.** (d) | **54.** (b) | **55.** (b) | **56.** (b) | **57.** (d) | **58.** (b) | **59.** (b) | **60.** (c) |
| **61.** (a) | **62.** (a) | **63.** (d) | **64.** (a) | **65.** (a) | **66.** (c) | **67.** (b) | **68.** (c) | **69.** (a) | **70.** (d) |
| **71.** (c) | **72.** (a) | **73.** (d) | **74.** (a) | **75.** (a) | **76.** (c) | | | | |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

3

# शब्द-भेद

*एक या अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतन्त्र एवं सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं। शब्दों की प्रकृति भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। इन्हीं भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रकृति के भेद को समझने हेतु शब्द-भेद का अध्ययन आवश्यक है।*

प्रयोग के आधार पर शब्दों की भिन्न-भिन्न जातियाँ होती हैं, जिन्हें शब्द-भेद कहा जाता है। शब्द-भेद को मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त किया जाता है, जिसे नीचे दी गई चित्र से स्पष्ट किया गया है।

शब्द-भेद

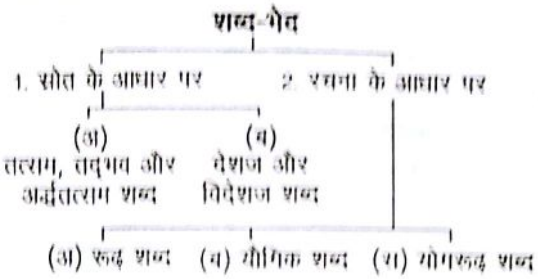

1. स्रोत के आधार पर
   - (अ) तत्सम, तद्भव और अर्द्धतत्सम शब्द
   - (ब) देशज और विदेशज शब्द
2. रचना के आधार पर
   - (अ) रूढ़ शब्द
   - (ब) यौगिक शब्द
   - (स) योगरूढ़ शब्द

## 1. स्रोत के आधार पर

पुर्तगाली, अरबी, फ़ारसी, अंग्रेजी आदि आगत (विदेशी) भाषा के शब्दों के अतिरिक्त अन्य शब्द जो हिन्दी भाषा में प्रचलित हैं। उन्हें स्रोत के आधार पर निम्न प्रकार से बाँटा गया है

### (अ) तत्सम, तद्भव और अर्द्धतत्सम शब्द

(i) **तत्सम शब्द** 'तत्सम' शब्द 'तत + सम' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है—उसके समान अर्थात् संस्कृत के समान, जो शब्द संस्कृत भाषा से हिन्दी में आए हैं और ज्यों के त्यों प्रयुक्त हो रहे हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे—"राजा, पुष्प, कवि, आज्ञा, अग्नि, वायु, वत्स, भ्राता इत्यादि।"

(ii) **तद्भव शब्द** 'तद्भव' शब्द 'तत + भव' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है—'उससे उत्पन्न या विकसित' अर्थात् वे शब्द जो संस्कृत से उत्पन्न या विकसित हुए हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे—मोर, चार, बच्चा, फूल इत्यादि।

(iii) **अर्द्धतत्सम शब्द** अर्द्धतत्सम शब्द उन संस्कृत शब्दों को कहते हैं, जो प्राकृत भाषा बोलने वालों के उच्चारण से बिगड़ते-बिगड़ते कुछ और ही रूप के हो गए हैं; जैसे—बच्छ, अग्याँ, मुँह, बंस इत्यादि।

इन तीनों प्रकार के शब्दों (तत्सम, तद्भव और अर्द्धतत्सम) के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार से दिए गए हैं। इन उदाहरणों से तीनों शब्दों के भेद स्पष्ट हो जाएँगे

| तत्सम | अर्द्धतत्सम | तद्भव |
|---|---|---|
| आज्ञा | अग्याँ | आन |
| वत्स | बच्छ | बच्चा |
| अग्नि | अग्नि | आग |
| कार्य | कारज | काज |
| अक्षर | अच्छर | अक्खर/आखर |

विभिन्न परीक्षाओं में तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखने के लिए आते हैं। अतः छात्रों की सुविधा हेतु तद्भव और तत्सम शब्दों की सूची यहाँ प्रयुक्त है

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|
| | | **(अ)** | |
| अंगरखा | अंगरक्षक | अढ़ाई | अर्द्धतृतीय |
| अंगीठी | अग्निष्ठिका | अदरक | आर्द्रक |
| अँगुरी | अंगुली | अधूरा | अर्द्धपूरक |
| अँगूठा | अंगुष्ठ | अनाड़ी | अनार्य |
| अंगूठी | अंगुलीय | अनी | अणि |
| अंगोछा | अंगप्रोंछ | अनूठा | अनुत्थ |
| अंतड़ी | अंत्र | अपना | आत्मनः |
| अजान | अज्ञान | अनाज | अन्न |
| अमावस | अमावस्या | अलखैली | अष्ट |
| अंडी | एरंडी | अपाहज | अपादहस्त |
| अन्धा | अंध | अमचूर | आम्रचूर्ण |
| अंधेरा | अंधकार | अमी/अमिय | अमृत |
| अकड़ना | आकड़न | अरग | अर्क |
| अकाज | अकार्य | अलग | अलग्न |
| अकेला | एकल | अलोना | अलवण |
| अखरोट | अक्षोट | असाढ़ | आषाढ़ |
| अखाड़ा | अक्षवाट | असीस | आशीष |
| अगहन | अग्रहायन | अस्सी | आशीति |
| अगम | अगम्य | अस्तुति | स्तुति |
| अगार | आगार | अहीर | आभीर |
| अटारी | अट्टालिका | अहेर | आखेट |
| अचरज | आश्चर्य | अट्ठावन | अष्टपंचाशन |
| अच्छर/आखर | अक्षर | अड़सठ | अष्टषष्टि |
| अट्ठाईस | अष्टाविंशति | अट्ठारह | अष्टादश |
| अट्ठानवे | अष्टानवति | अनत | अन्यत्र |
| | | **(आ)** | |
| आँख | अक्षि | आधा | अर्ध/अर्द्ध |
| आँच | अर्चि | आधीन | अधीन |
| आँत | आंत्र | आप | आत्मा |
| आँब | आम्र | आम | आम्र |
| आँवला | आमलक | आयसु | आदेश |
| आँसू | अश्रु | आरसी | आदर्शिका |

Download From: https://sarkaripot.in/
Scanned by CamScanner

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|
| आग | अग्नि | आलस | आलस्य |
| आज | अद्य | आवाँ | आपाक |
| आठ | अष्ट | आस | आशा |
| आदत | आदत्य | आसरा | आश्रय |
| आसोज | आश्विन | आखा | अखिल |
| आक | अर्क | आखा/तीज | अर्क |

**(इ)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| इकट्ठा | एकत्र | इक्यासी | एकाशीति |
| इकतीस | एकत्रिंशत् | इतना | इयत |
| इकतालीस | एकचत्वारिंशत | इतवार | आदित्यवार |
| इकराठ | एकषष्ठि | इलायची | एला |
| इक्कीस | एकविंशति | इस | एतस्य |
| इक्यावन | एकपंचाशत् | इमली | अम्लिका |

**(ई)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ईंट | इसिका | ईख | इक्षु |
| ईंधन | इन्धन | ईर्षा | ईर्ष्या |

**(उ)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उड़ | उड्ड | उनतालीस | ऊनचत्वारिंशत् |
| उजड्ड | उज्जड | उनतीस | ऊनत्रिंशत् |
| उँगली | अँगुलि | उन्नीस | ऊनविंशति |
| उगना | उद्गत | उपजना | उत्पद्यते |
| उगलना | उद्गलन | उबटन | उद्वर्तन |
| उछाह | उत्साह | उबालना | उद्वालन |
| उघाड़ना | उद्घाटन | उलाहना | उपालंभ |
| उजाला | उज्ज्वल | उल्लू | उलूक |
| उठ | उत्तिष्ठ | उस | अमुष्य |
| उनचास | ऊनपंचाशत् | | |

**(ऊ)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ऊँचा | उच्च | ऊँट | उष्ट्र |
| ऊखल | उद्खल | ऊन | ऊर्णा |
| ऊसर | ऊषर | | |

**(ए/ऐ)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| एकलौता | एकल पुत्रः | ऐसा | ईदृश |
| एका | ऐक्य | | |

**(ओ)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ओंठ | ओष्ठ | ओर | अवर |
| ओखल | उद्खल | ओस | अवश्याय |
| ओझा | उपाध्याय | ओला | उपल |

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|
| | | **(औ)** | |
| औगुन | अवगुन | और | अपर |
| औंधा | अवमूर्ध | औचक | अकस्मात |
| | | **(क)** | |
| कंगन | कंकण | किस | कसम |
| कंचन | काँचन | किसान | कृषक |
| कंघी | कंकती | किवाड़ | कपाट |
| कँवल | कमल | कीड़ा | कीटक |
| कई | कति | कुंजी | कुञ्जिका |
| कचहरी | कृत्यगृह | किसन | कृष्ण |
| कन्धा | स्कंध | काजल | कज्जल |
| किरन | किरण | कुअर | कुमार |
| कातिक | कार्तिक | कीरति | कीर्ति |
| कैंची | कर्त्तरी | कछुआ | कच्छप |
| कुछ | किंचित् | कटहरा | काष्ठगृह |
| कुँवारा | कुमारकः | कटहल | कंटफल |
| कुआँ | कूप | कुत्ता | कुक्कुर |
| कठपुतली | काष्ठपुत्तलिका | कुम्हड़ा | कूष्माण्ड |
| कड़ाह | कटाह | कुम्हार | कुम्भकार |
| कड़ुआ | कटुक | कुल्हाड़ा | कुठार |
| कपड़ा | कर्पट | कूची | कूर्चिका |
| कपास | कर्पास | कूड़ा | कूट |
| कपूत | कुपुत्र | कूदना | कूर्दन |
| कपूर | कर्पूर | कूर | क्रूर |
| कन | कण | ककड़ा | कर्कट |
| कलोल | कल्लोल | के | कृते/कार्ये |
| कलेश | क्लेश | केला | कदली |
| करम | कर्म | केवट | कैवर्त्त |
| कर्तव | कर्त्तव्य | कैथा | कपित्थ |
| करोड़ | कोटि | कल | कल्य |
| कोई | कोऽपि | कसेरा | कांस्यकार |
| कोख | कुक्षि | कसौटी | कर्षपट्टिका |
| कोठा | कोष्ठक | कहाँ | कुत्रस्थ |
| कहानी | कथानिका | कोठी | कोष्ठिका |
| कहार | स्कन्धभार | कोढ़ | कुष्ठ |
| काँच | काच | कोढ़ी | कुष्ठी |
| काँटा | कण्टक | कोना | कोण |
| का | कृत | कोयल | कोकिल |
| काज | कार्य | कोस | क्रोश |
| काट | कर्त | कोहनी | कफोणी |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|
| काटना | कर्तन | कौड़ी | कपर्दिका |
| काठ | काष्ठ | कौआ | काकः |
| काढ़ा | क्वाथ | कौर | कवल |
| कान | कर्ण | क्या | किम् |
| कान्ह | कृष्ण | काम | कर्म |

**(ख)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| खण्डहर | खंडगृह | खाना | खादन |
| खजूर | खर्जूर | खार | क्षार |
| खत्री | क्षत्रिय | खीर | क्षीर |
| खप्पर | खर्पर | खुजली | खर्जू |
| खम्भा | स्तम्भ | खुर | क्षुर |
| खाँसी | कास | खेत | क्षेत्र |
| खाई | खाति | खेती | क्षेत्रित |
| खाट | खट्वा | खेल | खेला |
| खान | खनि | खोदना | क्षोदन |

**(ग)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| गँवार | ग्रामीण | गुफा | गुहा |
| गड्ढा | गर्त | गुसाई | गोस्वामी |
| गधा | गर्दभ | गूँजना | गुञ्जन |
| गनेश | गणेश | गेंद | कंदुक |
| गहरा | गभीर | गेहूँ | गोधूम |
| गाँठ | ग्रन्थि | गोबर | गोमय |
| गाँव | ग्राम | गोत | गोत्र |
| गागर | गर्गर | गोद | क्रोड |
| गात | गात्र | गोरा | गौर |
| गाभिन | गर्भिणी | गोह | गोधा |
| गाय | गो | गौना | गमन |
| गाहक | ग्राहक | ग्यारह | एकादश |
| गिनना | गणन | ग्वाल | गोपाल |

**(घ)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| घड़ा | घट | घिसना | घृषण |
| घड़ी | घटिका | घी | घृत |
| घाम | घर्म | घुँघची | गुञ्जा |
| घाव | घात | घूँघट | गुंठन |
| घिन | घृणा | घोड़ा | घोटक |

**(च)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| चख | चक्षु | चूना | चूर्ण |
| चकवा | चक्रवाक | चूमना | चुम्बन |
| चक्का | चक्र | चैत | चैत्र |
| चना | चणक | चोंच | चञ्चु |
| चबाना | चर्वण | चोरी | चौरिका |
| चमार | चर्मकार | चौ | चतुः |
| चाँद | चंद्र | चौक | चतुष्क |
| चाँदनी | चन्द्रिका | चौखट | चतुष्काठ |

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|
| चाम | चर्म | चौथा | चतुर्थ |
| चार | चत्वारि | चौथाई | चतुर्थ भागिक |
| चाहे | चक्षते | चौदह | चतुर्दश |
| चिकना | चिक्कण | चौधाया | चतुष्पद |
| चिड़िया | चटिका | चौरासी | चतुरशीति |
| चितेरा | चित्रकार | चौरी | चमरी |
| चीता | चित्रक | चुनना | निनीति |

**(छ)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| छत | छत्र | छौंह | छाया |
| छः | षष् | छाजन | छादा/छादन |
| छकड़ा | शकट | छाता | छत्रक |
| छक्का | षट्क | छिन | क्षण |
| छठा | षष्ठ | छिमा | क्षमा |
| छति | क्षति | छिलका | शकल |
| छत्तीस | षट्त्रिंशत | छुरी | क्षुरिका |
| छत्री | क्षत्रिय | छेद | छिद्र |
| छब्बीस | षट्विंशति | छेनी | छेदनी |
| छाता | छत्र | छोड़ना | क्षोडन |

**(ज)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| जग | जगत | जानना | ज्ञान |
| जड़ | जटा | जिजमान | यजमान |
| जत्था | यूथ | जनेऊ | यज्ञोपवीत |
| जब | यदा | जिस | यस्य |
| जम | यम | जीभ | जिह्वा |
| जमाई | जामातृ | जीरन | जीर्ण |
| जम्हाई | जृम्भिका | जूआ | युक्त |
| जमुना | यमुना | जेठ | ज्येष्ठ |
| जलना | ज्वलन | जैसा | यादृश |
| जवान | युवा | जो | यः |
| जहाँ | यत्र | जोग | योग |
| जाँघ | जंघा | जोगी | योगी |
| जागना | जाग्रण | जोड़ा | युक्त |
| जाड़ा | जाड्य | जौ | यव |
| जनम | जन्म | | |

**(झ)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| झट | झटिति | झीना | जीर्ण |
| झरना | निर्झर | जूठा | जुष्ट |

**(ट)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| टकसाल | टंकशाला | टूटना | त्रुट्यते |
| टिटिहरी | टिट्टिभी | | |

**(ठ)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ठण्डा | स्तब्ध/शीत | ठाँव | स्थान |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|
| | | (ड) | |
| डंक/डंका | दंश | डाँड़ | दण्ड |
| डर | दर | डाइन | डाकिनी |
| डसना | दंशन | डाढ़ | दंष्ट्रा |
| डण्डा | दंड | डाह | दाह |
| | | (ढ) | |
| ढाई | अर्द्धतृतीय | ढीठ | धृष्ट |
| ढीला | शिथिल | ढौंचा | अर्द्धपंच |
| | | (त) | |
| तब | तदा | तीता | तिक्त |
| तपसी | तपस्वी | तीसरा | त्रिसृत |
| तन्दुल | तन्दुल | तुम | तुष्मे |
| तमोली | ताम्बूलिक | तुरत | त्वरित |
| तमचुर | ताम्रचूड़ | तू | त्वं/वैदिक/तु |
| तलवार | तरवारि | तैंतीस | त्रित्रिंशत् |
| ताँबा | ताम्र | तेईस | त्रिविंशत् |
| ताकना | तर्कन | तेरह | त्रयोदश |
| ताव | ताप | तेल | तैल |
| तिगुना | त्रिगुण | तोंद | तुन्द |
| तिनका | तृण | तोल | तुल्य |
| तिरछा | तिरश्च | तोड़ना | त्रोटन |
| तिहाई | त्रिभागिका | त्योहार | तिथिवार |
| | | (थ) | |
| थम्भ | स्तम्भ | थल | स्थल |
| थन | स्तन | था | स्थित |
| थान | स्थान | थोड़ा | स्तोक |
| | | (द) | |
| दबना | दमन | दीवाली | दीपावली |
| दठी | दृष्टि | दुबला | दुर्बल |
| दस | दश | दूज | द्वितीय |
| दसवाँ | दशम | दूजा | द्वितीय |
| दही | दधि | दूध | दुग्ध |
| दाँत | दन्त | दूना | द्विगुण |
| दाई | धात्री/धाया | दूब | दुर्वा |
| दाख | द्राक्षा | दूल्हा | दुर्लभ |
| दाढ़ | दंष्ट्रा | दूसरा | द्वितीय |
| दाद | दद्रु | देवर | द्विवर |
| दामाद | जामाता | दो | द्वौ |
| दाहिना | दक्षिण | दोना | द्रोण |
| दीया | दीपक | दृग | दृक् |

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|
| | | (ध) | |
| धरम | धर्म | धीरज | धैर्य |
| धरती | धरित्री | धुआँ | धूम |
| धनिया | धनिका | धूल | धूलि |
| धान | धान्य | धोना | धावन |
| | | (न) | |
| नंगा | नग्न | नीचे | नीचैः |
| नखत | नक्षत्र | निठुर | निष्ठुर |
| नन्दोई | ननांदृपति | निडर | निर्दर |
| नया | नव | निभाना | निर्वहण |
| नब्बे | नवति | निहाई | निघाति |
| नरसों | अन्यपरश्व | नीचा | नीच्य |
| नस | नस्या | नीबू | निम्बक |
| नहना | नखहरण | नीम | निम्ब |
| नहीं | न हि | नेउता | निमन्त्रण |
| नाई | नापित | नेम | नियम |
| लाँघना | लंघन | नेवला | नकुल |
| नाक | नक्र | नैन | नयन |
| नाथ | नस्ता | नैहर | ज्ञातिगृह |
| निगलना | निर्गलन | नोचना | लुंचन |
| नारियल | नारिकेल | नेह | स्नेह |
| | | (प) | |
| पंख | पक्ष | पीपल | पिप्पल |
| पंगत | पंक्ति | पाँव/पैर | पाद |
| पँछी | पक्षी | पाती | पत्रिका |
| पंदरह | पंचदश | पान | पर्ण |
| पकवान | पक्वान्न | पाना | प्रापण |
| पक्का | पक्व | पानी | पानीय |
| पचपन | पंचपंचाशत् | पापड़ | पर्पट |
| पछतावा | पश्चात्ताप | पास | पार्श्व |
| पड़ना | पतन | पाहन | पाषाण |
| पड़िवा | प्रतिपदा | पाहुना | ण्घूर्ण |
| पड़ोस | प्रतिवेश | पिटारा | ापेटक |
| पड़ोसी | प्रतिवेशी | पिसन | पिषण |
| पढ़ | पठ | पीठ | पृष्ठ |
| पीठी | पिष्टिका | पीढ़ा | पीठ |
| पत्ता | पत्र | पीढ़ी | पीठिका |
| पत्थर | प्रस्तर | पीला | पीत |
| पनसारी | पण्यशालिक | पिय | प्रिय |
| पर | उपरि | पुजारी | पूजाकारी |
| परकोटा | परिकूट | पतोहू | पुत्रवधु |
| परछाई | प्रतिच्छाया | पुराना | पुरातन |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|
| परनाला | प्रणाल | पूँछ | पुच्छ |
| परपोता | परपौत्र | पूँजी | पुंज |
| परपोती | परपौत्री | पूछना | प्रच्छन |
| परमारथ | परमार्थ | प्यास | पिपासा |
| परस | स्पर्श | पूरब | पूर्व |
| परिच्छा | परीक्षा | पूरा | पूरक |
| परसों | परश्व | पूस | पुष्य |
| पराठा | पर्पट | | |
| पलंग | पर्यंक | पैंतालीस | पंचचत्वारिंशत् |
| पलड़ा | पटल | पैंतीस | पंचत्रिंशत् |
| पल्ला | पल्लव | पोखरा | पुष्कर |
| पसीना | प्रस्विन्न/स्वेद | पोता | पौत्र |
| पहचान | प्रत्यभिज्ञान | पोती | पौत्री |
| पहनना | परिधान | पन्ना | पर्ण |
| पहर | प्रहर | पोथी | पुस्तिका |
| पहला | प्रथिल | पौना | पादोन |
| पहरुआ | प्रहरी | पहुँच | प्रभुत्व |

**(फ)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| फटिक | स्फटिकी | फूटना | स्फुटन |
| फिटकरी | स्फटिकी | फुल्का | फुल्ल |
| फरुआ | परशु | फूलना | फुल्लन |
| फाँसी | पाशिका | फोड़ा | स्फोट |
| फागुन | फाल्गुन | फरसा | परशु |

**(ब)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| बँटना | बंटन | बत्ती | वर्तिका |
| बन्दर | वानर | बात | वार्ता |
| बकरा | बर्कर | बादल | वारिद |
| बखान | व्याख्यान | बानवे | द्विनवति |
| बगुला | बक | बायाँ | वाम |
| बच्चा | वत्स | बार | वार |
| बछड़ा | वत्स | बार | द्वार |
| बजरंग | वज्रांग | बारह | द्वादश |
| बड़/बरगद | वट | बालू | बालुका |
| बड़ा | वृतक | बावन | द्विपंचाशत् |
| बढ़ई | वर्द्धकि | बावला | वातुल |
| बढ़ना | वर्धन | बासठ | द्विषष्ठि |
| बत्तीस | द्वात्रिंशत् | बिकना | विक्रयण |
| बनारस | वाराणसी | बिगाड़ | विकार |
| बनिया | वणिक | बिच्छू | वृश्चिक |
| बयालीस | द्वाचत्वारिंशत् | बिजली | विद्युत |
| बरसना | वर्षण | बिदेश | विदेश |
| बरस | वर्ष | बिनती | विनति |
| बरात | वरयात्रा | बींधना | वेधन |
| बसेरा | वासगृह | बीघा | विग्रह |
| बहन | भगिनी | बीच | वर्त्म |

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|
| बहनोई | भगिनीपति | बीत | व्यतीत |
| बहिरा | बधिर | बुआ | पितृश्वसा |
| बहुत | बहुत्व | बुरा | विरूप |
| बहेड़ा | विभीतिक | बूँद | बिन्दु |
| बाट | वर्त्म | बूझना | बुध्यते |
| बाजा | वाद्य | बूटी | वृत्तिक |
| बाँका | वक्र | बेर | बदरी |
| बाँध | बंध | बैस | उपविष्ठ |
| बाँधना | बन्धन | बैन | वचन |
| बाँस | वंश | बेल | बलीवर्द |
| बाँह | बाहु | बोना | वपन |
| बाग | वल्गा | बौना | वामन |
| बाघ | व्याघ्र | बाड़ी | वाटिका |
| बाहर | बहिर | बैयरबानी | बीर बनिता |

**(भ)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| भण्डार | भाण्डागार | भावज | भ्रातृजाया |
| भट्ठी | भ्राष्ट्रिका | भिखारी | भिक्षाकारी |
| भतीज | भ्रातृव्य | भी | अपि |
| भतीजी | भ्रातृजा | भीख | भिक्षा |
| भत्ता | भक्त | भीतर | अभ्यन्तर |
| भभूत | विभूति | भीसम | भीष्म |
| भरोसा | परवश्यता | भूख | बुभुक्षा |
| भला | भद्रक | भूखा | बुभुक्षित |
| भांजा | भागिनेय | भूसा | बुष |
| भांड | भंड/भट्ट | भूषन | भूषण |
| भाई | भ्रातृ | भेस | वेष |
| भाड़ा | भाटक | भौंरा | भ्रमर |
| भात | भक्त | भौंह | भ्रू |
| भादों | भाद्रपद | भस्मि | भस्म |
| भालू | भल्लुक | भौ/भौंह | भ्रू |
| भाभी | भ्रातृभार्या | | |

**(म)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| मण्डुआ | मण्डप | मूसल | मुषल |
| मक्खी | मक्षिका | मुँह | मुख |
| मच्छर | मत्सर | मुआ | मृत |
| मछली | मत्स्य | मुखिया | मुख्य |
| मजीठ | मञ्जिष्ठ | मुझे | मह्यम |
| मिट्टी | मृत्तिका | मुट्ठी | मुष्टि |
| मढ़ना | मंडन | मूँग | मुद्ग |
| मदारी | मन्त्रकारी | मूँछ | श्मश्रु |
| मसान | श्मशान | मूड़ | मुंड |
| महँगा | महार्घ | मूंदना | मुद्रण |
| महावत | महापात्र | मूठ | मुष्टि |
| महुआ | मधूक | मेंढक | मंडूक |
| माँग | मार्ग | मेह | मेघ |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|
| माँगना | मार्गण | मैल | मल |
| माई | मातृ | मोती | मौक्तिक |
| माखन | म्रक्षण | मोर | मयूर |
| मानुस | मनुष्य | मौर | मुकुट |
| मिट्टी | मृत्तिका | मौसी | मातृश्वसा |
| मिठाई | मिष्टि | मौत | मृत्यु |
| मीत | मित्र | मकड़ी | मर्कटी |
| मिर्च | मरीच | मनिहार | मणिकार |

**(य)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| यह | एष | यों | एवम् |
| यहाँ | अत्र | | |

**(र)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| रखना | रक्षण | रीठा | अरिष्ठ |
| रत्ती | रक्तिका | रीता | रिक्त |
| रस्सी | रश्मि | रीस | ईर्ष्या |
| रहट | अरघट्ट | रूखा | रुक्ष |
| राख | क्षार | रूठा | रुष्ट |
| राखी | रक्षासूत | रैन | रजनी |
| राजपूत | राजपुत्र | रोआँ | रोम |
| रात | रात्रि | राच्छस/राकस | राक्षस |
| रानी | राज्ञी | राज्य | राष्ट्र |
| रोना | रुदन | रास | राशि |
| रीछ | ऋक्ष | रूख | वृक्ष |

**(ल)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| लँगड़ा | लंग | लाज | लज्जा |
| लंगोट | लिंगपट्ट | लिपटना | लिप्त |
| लकड़ी | लगुड़ | लीख | लिक्षा |
| लखपति | लक्षपति | लेई | लेपिका |
| लगना | लगन | लोथ | लोष्ट |
| लच्छा | लवगुच्छ | लोयन | लोचन |
| लटकना | लटन | लोहा | लौह |
| लड़ना | रणन | लोहार | लौहकार |
| लहसुन | लशुन | लौंग | लवंग |
| लाख | लक्ष/लाक्षा | लोमड़ी | लोमश |

**(व)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| वह | असौ | विछोह | विक्षोभ |
| वैयरबानी | वीर वनिता | | |

**(श)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| शक्कर | शर्करा | शाम | सायं |
| शिस्य | शिष्य | शीशम | शिंशपा |

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|

**(स)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| संडसी | संदंशिका | सूंड | शुण्डा |
| संभल | सफल | सूअर | शूकर |
| सकना | शक्यते | सूई | सूचिका |
| सगा | स्वक | सूखा | शुष्क |
| सच | सत्य | सूत | सूत्र |
| सजाना | सज्जापन | सून/सुन्न | शून्य |
| सतसई | सप्तशती | सूय | शूर्य |
| सतहत्तर | सप्तसप्तति | सूरज | सूर्य |
| सताना | संतापन | सोंठ | शुंठी |
| सत्त | सत्व | सोंध | सुगन्ध |
| सत्रह | सप्रदश | सोता | स्रोत |
| सनीचर | शनैश्चर | सेंध | सन्धि |
| सत्तासी | सप्तपंचाशत् | सेम | शिम्बा |
| सत्तू | सक्तु | सैंतालीस | सप्तचत्वारिंशत् |
| सपना | स्वप्न | सैंतीस | सप्तत्रिंशत् |
| सपूत | सुपुत्र | सोना | स्वर्ण |
| समझ | संबुद्धि | साहू | साधु |
| समेटना | समावर्तन | सिंगार | शृंगार |
| सयाना | सज्ञान | सिंघाड़ा | शृंगाटक |
| सलाई | शलाका | सिकड़ी | शृंखला |
| साँचा | सच्चक | सिकड़ी | शृंखल |
| सलोना | सलावण्य | सिक्ख | शिष्य |
| सवा | सपाद | सितार | सप्ततार |
| ससुर | श्वसुर | सियार | शृगाल |
| ससुराल | स्वशुरालय | सौरी | प्रसूतिगृह |
| सहिजन | शोभांजन | सिल | शिला |
| सहेली | सह हेलनी | सींग | शृंग |
| साँई | स्वामी | सीख | शिक्षा |
| सांकल | शृंखला | सीढ़ी | श्रेढ़ी/श्रेणी |
| सांड | षण्ड | सीतल | शीतल |
| साँवला | श्यामल | सीधा | सिद्ध |
| साँस | श्वास | सीला | शीतल |
| साग | शाक | सीस | शीर्ष |
| सात | सप्त | सुघड़ | सुघट |
| सातवाँ | सप्तम | सुथरा | सुस्थिर |
| साझा | सांश | सुन | श्रृणु |
| साठ | षष्ठि | सुनार | स्वर्णकार |
| साड़ी | शाटी | सुवरन | स्वर्ण |
| साढ़े | सार्द्ध | सुहाग | सौभाग्य |
| साथ | सार्थ | सोलह | षोडश |
| साला | श्याल | सोहन | शोभन |
| सावन | श्रावण | सौंप | समर्पय |
| सास | श्वश्रू | सौ | शत |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| तद्भव | तत्सम | तद्भव | तत्सम |
|---|---|---|---|
| साही | शल्यकी | सौत | सपत्नी |

**(ह)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| हँसी | हास्य | हार | हारि |
| हड्डी | अस्थि | हीरा | हीरक |
| हथौड़ा | हस्त | हेठी | अधःस्थिति |
| हरड़ | हरीतकी | हिया | हृदय |
| हरा | हरित | हिलना | हिल्लन |
| हलका | लघुक | हींग | हिंगु |
| हल्दी | हरिद्रा | होंठ | ओष्ठ |
| हाथ | हस्त | हाट | हट्ट |
| हाथी | हस्ती | हितैषी | हितेच्छु |

## मध्यान्तर प्रश्नावली

1. संस्कृत के ऐसे शब्द जिन्हें हम ज्यों-का-त्यों प्रयोग में लाते हैं, कहलाते हैं
   (a) तत्सम ✓ (b) तद्भव (c) देशज (d) विदेशज
2. नीचे दिए गए विकल्पों में से तत्सम शब्द का चयन कीजिए
   (a) पड़ोसी (b) गोधूम ✓ (c) बहू (d) शहीद
3. नीचे दिए गए विकल्पों में से तद्भव शब्द का चयन कीजिए
   (a) बैंक (b) गुँह ✓ (c) मर्म (d) प्रलाप
4. 'वानर' का तद्भव रूप है
   (a) बानर (b) बन्दर ✓ (c) बाँदर (d) बान्दर
5. 'दर्शन' का तद्भव रूप है
   (a) दर्सन (b) दरसन ✓ (c) दर्स (d) दर्स्न
6. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द तत्सम है?
   (a) उद्गम ✓ (b) खेत (c) कोर्ट (d) अजीब
7. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द तद्भव है?
   (a) बिच्छू ✓ (b) षड्पद (c) बर्र (d) भ्रमर
8. निम्नलिखित तत्सम-तद्भव में से कौन-सा विकल्प अशुद्ध है?
   (a) नृत्य-नाच (b) शृंगार-सिंगार (c) चक्षु-आँख ✓ (d) दधि-दही
9. 'पहचान' का तत्सम शब्द है
   (a) प्रत्यभिज्ञान (b) प्रज्ञान (c) अभिधान (d) अवधान
10. निम्न में से कौन-सा शब्द तत्सम नहीं है?
    (a) घृत (b) अतिन (c) दुग्ध (d) आँसू ✓

**उत्तरमाला**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. (a) | 2. (b) | 3. (b) | 4. (b) | 5. (b) |
| 6. (a) | 7. (a) | 8. (c) | 9. (a) | 10. (d) |

## (ब) देशज और विदेशज शब्द

(i) **देशज शब्द** (देशी) 'देशज' शब्द की उत्पत्ति 'देश + ज' के योग से हुई है, जिसका अर्थ है—'देश में जन्मा'। देशज उन शब्दों को कहते हैं, जो बोलचाल तथा देश की अन्य भाषाओं से गृहीत हैं;

जैसे— कटोरा, कौड़ी, खिड़की, डिबिया, लोटा आदि।

नीचे कुछ मुख्य देशज (देशी) शब्दों की सूची दी जा रही है, जो विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे जाते हैं

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लकड़ी | खिड़की | थैला | घरौंदा | पगड़ी |
| लुटिया | डिबिया | जूता | चिड़िया | तेंदुआ |
| कपास | पिल्ला | चूड़ी | रोटी | दाल |
| बेटा | पड़ोसी | कौड़ी | बाप | पेट |
| ठुमरी | डोंगी | गड़बड़ी | चालू | कसरत |
| खड़खड़ाना | भीड़-भाड़ | लथपथ | पैसा | ढेर |
| खुरपा | रोड़ा | ढाँचा | गाड़ी | पेटी |
| फावड़ा | खलिहान | झाड़ू | मास | समय |
| काया | चेला | गन्ना | हुक्का | दारू |
| टाँग | बुलबुल | लात | हलचल | औज़ार |
| लोटा | भात | खड़ाऊँ | ठेस | धुआँ |

(ii) **विदेशज शब्द** (विदेशी/आगत) 'विदेशज' शब्द की उत्पत्ति 'विदेश + ज' के योग से हुई है, जिसका अर्थ है—'विदेश में जन्मा'। विदेशज उन शब्दों को कहते हैं, जो किसी विदेशी भाषा से आए हैं। विदेशी भाषा से आने के कारण ही इन्हें **आगत** शब्द की संज्ञा दी जाती है।

हिन्दी भाषा में अनेक शब्द ऐसे भी हैं जो हैं तो विदेशी मूल के, किन्तु परस्पर सम्पर्क के कारण यहाँ (हिन्दी भाषा में) प्रचलित हो गए हैं।

'फ़ारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं से जो शब्द हिन्दी में आए हैं, वे विदेशी (विदेशज) कहलाते हैं;

जैसे— ऑर्डर, कम्पनी, कैम्प, क्रिकेट आदि।

**हिन्दी में विदेशज शब्द**

| मुस्लिम शासन के प्रभाव से आए (अरबी-फ़ारसी के शब्द) | ब्रिटिश शासन के प्रभाव से आए (अंग्रेज़ी आदि के शब्द) |
|---|---|

नीचे कुछ महत्त्वपूर्ण विदेशी शब्दों (अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी) की सूची दी गई है, जो विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से उपयोगी हैं

**अरबी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| अज़ब | अज़ीब | अदालत | अक़्ल |
| अल्लाह | आदमी | इज़्ज़त | इलाज |
| ईमान | उम्र | एहसान | औरत |
| कमाल | कर्ज़ | किस्मत | किताब |
| कुर्सी | ख़्याल | जिस्म | जुलूस |
| जलसा | जवाब | जहाज़ | ज़िक्र |
| तमाम | तकदीर | तारीख़ | तकिया |
| तरक्की | दवा | दिमाग | दुनिया |
| नतीजा | नहर | नकल | फ़िक्र |
| फ़ैसला | बहस | मुहावरा | मजबूर |
| मुकदमा | मुश्किल | मौसम | मुसाफ़िर |
| राय | लिफ़ाफ़ा | बारिश | शराब |
| हक | हज़म | हिम्मत | हुक्म |
| हैज़ा | हकीम | हौंसला | शाम |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## फ़ारसी

| | | | |
|---|---|---|---|
| आबरू | आतिशबाज़ी | आफ़त | आराम |
| आमदनी | आवारा | आवाज़ | उम्मीद |
| उस्ताद | कमीना | कारीगर | किशमिश |
| कुश्ती | खाक | खुद | खुदा |
| खामोश | ख़ुराक | गरम | गवाह |
| गिरफ़्तार | गुलाब | चादर | चालाक |
| चश्मा | चेहरा | जलेबी | ज़हर |
| ज़ोर | ज़िन्दगी | जागीर | ज़ादू |
| जुरमाना | तबाह | तमाशा | तनख़ाह |
| तेज़ | दंगल | दफ़्तर | दिल |
| दीवार | नापसंद | नापाक | पाजामा |
| पैदा | पुल | पेश | बारिश |
| बुखार | बर्फ़ी | लगाम | लेकिन |
| वापिस | शादी | सितार | सरदार |
| सरकार | हज़ार | फ़रेब | फ़रिश्ता |

## अंग्रेज़ी

| | | | |
|---|---|---|---|
| अपील | कोर्ट | मजिस्ट्रेट | जज़ |
| पुलिस | टैक्स | कलेक्टर | डिप्टी |
| वोट | पेंशन | कॉपी | पेंसिल |
| पेन | पिन | पेपर | लाइब्रेरी |
| स्कूल | कॉलेज़ | रॉकेट | डॉक्टर |
| कम्पाउण्डर | नर्स | ऑपरेशन | वार्ड |
| प्लेग | मलेरिया | कॉलरा | हार्निया |
| कैंसर | कालर | पैंट | हैट |
| बुशर्ट | स्वेटर | बूट | जम्पर |
| ब्लाउज | कप | प्लेट | जग |
| लैम्प | गैस | माचिस | केक |
| टॉफी | बिस्कुट | टोस्ट | चॉकलेट |
| ज़ैम | ज़ैली | ट्रेन | बस |
| कार | स्कूटर | साइकिल | टिकट |
| पार्सल | पोस्टकार्ड | मनी ऑर्डर | आफ़िस |
| क्लर्क | गार्ड | सिनेमा | स्टेशन |

अंग्रेज़ी, अरबी, फ़ारसी विदेशी शब्दों के अतिरिक्त तुर्की, पश्तो, पुर्तगाली, फ्रेंच, डच, रूसी, चीनी और जापानी भी ऐसी विदेशी भाषाएँ हैं, जिनके शब्द हिन्दी भाषा में प्रचलित हैं। ऐसे प्रमुख शब्दों की सूची नीचे दी जा रही है

## तुर्की

| | | | |
|---|---|---|---|
| उर्दू | बहादुर | कुरता | कलगी |
| कैंची | चाकू | ताश | दरोगा |
| बेगम | चम्मच | बारुद | लाश |
| खच्चर | सराय | गनीमत | तोप |

## पश्तो

| | | | |
|---|---|---|---|
| पठान | गुण्डा | खर्राटा | तहस-नहस |
| अखरोट | पटाखा | डेरा | गटागट |
| हड़बड़ी | बाड़ | भड़ास | |

## पुर्तगाली

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनन्नास | अलमारी | आलपिन | आया |
| इस्त्री | इस्पात | कमीज | कमरा |
| कर्नल | काफ़ी | काजू | गमला |
| गोभी | गोदाम | तौलिया | पपीता |
| पादरी | फ़ीता | बाल्टी | मिस्त्री |
| संतरा | परात | पिस्तौल | तम्बाकू |

**फ्रेंच** कारतूस, कर्फ़्यू, कूपन, अंग्रेज़, लाम, बिगुल आदि।
**डच** तुरूप, बम (टाँगे का) आदि।
**रूसी** रूबल, ज़ार, मिग, वोदका, सोवियत आदि।
**चीनी** चाय, लीची, चीनी, चीकू आदि।
**जापानी** रिक्शा, सूनामी आदि।

**नोट** तुर्की, पश्तो, पुर्तगाली, फ्रेंच, डच, रूसी, चीनी और जापानी विदेशी भाषा के शब्द हिन्दी भाषा में कम प्रचलित वर्ग के अन्तर्गत समाहित किए जाते हैं। इनका प्रचलन अंग्रेज़ी, अरबी-फ़ारसी की अपेक्षा कम है।

## मध्यान्तर प्रश्नावली

**1.** 'देश में जन्मा' शब्द कहलाता है
(a) विदेशी (b) आगत (c) देशज (d) इनमें से कोई नहीं

**2.** 'गाड़ी' शब्द है
(a) विदेशी (b) देशी (c) आगत (d) विदेशज

**3.** विदेशी भाषा से आए शब्दों को क्या कहते हैं?
(a) देशी (b) देशज (c) आगत (d) यौगिक

**4.** निम्न में मुस्लिम शासन के प्रभाव से आया शब्द है
(a) हवालात (b) रेल (c) बाड़ा (d) गिलास

**5.** निम्नलिखित शब्द-समूहों में से देशज शब्द का उदाहरण है
(a) डोंगी, चेला (b) भात, अनन्नास
(c) पैसा, वोट (d) समय, मलेरिया

**6.** निम्नलिखित शब्द-समूहों में से विदेशज शब्द का उदाहरण है
(a) औज़ार, चिड़िया (b) तेंदुआ, जूता
(c) रोड़ा, बुलबुल (d) एहसान, कमाल

**7.** निम्नलिखित शब्दों में से फ़ारसी शब्द का उदाहरण है
(a) औरत (b) अल्लाह (c) अक्ल (d) आवाज़

**8.** 'अलमारी' शब्द है
(a) अरबी (b) फ़ारसी (c) पुर्तगाली (d) पश्तो

**9.** फ्रेंच भाषा का शब्द है
(a) अंग्रेज़ (b) रूबल
(c) पठान (d) बहादुर

**10.** उर्दू, कलगी, ताश किस भाषा के शब्द हैं?
(a) अरबी (b) फ़ारसी
(c) तुर्की (d) जापानी

### उत्तरमाला

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. (c) | 2. (b) | 3. (c) | 4. (a) | 5. (a) |
| 6. (d) | 7. (d) | 8. (c) | 9. (a) | 10. (c) |

Download From: https://sarkaripot.in/
Scanned by CamScanner

## 2. रचना के आधार पर

हिन्दी एक रचनात्मक भाषा है। रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं

### (अ) रूढ़

रूढ़ शब्द वे हैं, जिनका कोई भी खण्ड सार्थक नहीं होता और जो परम्परा से किसी विशिष्ट अर्थ में चले आ रहे हैं; जैसे—नाक, जल, आग आदि।

'नाक' में 'ना' और 'क' खण्डों का कोई अर्थ नहीं। इसी प्रकार जल शब्द में 'ज' और 'ल' खण्डों का पृथक्-पृथक् कोई अर्थ नहीं होता। रूढ़ शब्दों को मूल या अयौगिक शब्द भी कहते हैं।

### (ब) यौगिक

वे शब्द, जो दो या दो से अधिक सार्थक शब्द-खण्डों के योग से निर्मित होते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे—

पाठशाला = पाठ और शाला
विज्ञान = वि + ज्ञान
राजपुत्र = राजा का पुत्र

### (स) योगरूढ़

वे शब्द जो यौगिक तो होते हैं, परन्तु जिनका अर्थ रूढ़ (विशेष अर्थ) हो जाता है, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। ये सामान्य अर्थ को प्रकट न कर किसी विशेष अर्थ का प्रकटीकरण करते हैं; जैसे—लम्बोदर, जलज, चारपाई, चौपाई आदि।

'लम्बोदर' शब्द का अर्थ है—लम्बे उदर (पेट) वाला। इस प्रकार लम्बे उदर वाले जितने भी जीव हैं, लम्बोदर हुए। लेकिन लम्बोदर शब्द का प्रयोग केवल गणेशजी के लिए ही किया जाता है। इसी प्रकार 'जलज' का सामान्य अर्थ है 'जल में जन्मा'; किन्तु यह विशेष अर्थ में केवल 'कमल' के लिए प्रयुक्त होता है। जल में जन्मे और किसी वस्तु को हम 'जलज' नहीं कह सकते।

नीचे दी गई तालिका में रूढ़, यौगिक और योगरूढ़ शब्दों को वर्गीकृत किया गया है। जो निम्नलिखित हैं—

**रूढ़**

| | | | |
|---|---|---|---|
| लाल | दीमक | कलम | चींटी |
| कमल | धन | रात | दिन |
| जग | सरल | मत | |

**यौगिक**

| | | | |
|---|---|---|---|
| गंगाजल | रेलगाड़ी | गणनायक | विद्यालय |
| राजनेता | रसोई घर | गौशाला | दुर्जन |
| बुद्धिमान | राजकुमार | सामाजिक | |

**योगरूढ़**

| | | | |
|---|---|---|---|
| लम्बोदर | चंद्रशेखर | दशानन | नीलकण्ठ |
| गिरधारी | दशरथ | महावीर | त्रिलोचन |
| घनश्याम | मृत्युंजय | पंकज | चतुर्भुज |

## मध्यान्तर प्रश्नावली

**1.** रचना के आधार पर शब्द कितने प्रकार के हैं?
(a) दो (b) तीन (c) चार (d) पाँच

**2.** जिन शब्दों का कोई भी खण्ड सार्थक नहीं होता, वे कहलाते हैं
(a) रूढ़ शब्द (b) यौगिक शब्द (c) योगरूढ़ शब्द (d) उपसर्ग

**3.** 'वैद्यशाला' शब्द है
(a) योगरूढ़ (b) यौगिक (c) अयौगिक (d) रूढ़

**4.** जो शब्द किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें कहते हैं
(a) रूढ़ (b) यौगिक (c) योगरूढ़ (d) ये सभी

**5.** 'रूढ़' शब्द का चयन कीजिए
(a) राजनैतिक (b) चक्रपाणि (c) त्रिकोण (d) गरल

**6.** निम्नलिखित शब्दों में से सही यौगिक शब्द को चुनिए
(a) मेज़ (b) सहपाठी (c) चारपाई (d) घर

**7.** दो या दो से अधिक सार्थक शब्द-खण्डों के योग से निर्मित होने वाले शब्द ..... शब्द कहलाते हैं।
(a) यौगिक (b) रूढ़ (c) योगरूढ़ (d) अयौगिक

**8.** रूढ़ शब्दों को अन्य किस नाम से जाना जाता है?
(a) अमूल शब्द (b) जड़ शब्द (c) मूल शब्द (d) अयोगरूढ़ शब्द

**9.** पीताम्बर, लालफीताशाही और चारपाई शब्द निम्न में से किसके उदाहरण हैं?
(a) रूढ़ (b) यौगिक
(c) योगरूढ़ (d) इनमें से कोई नहीं

**10.** निम्नलिखित शब्दों में से किस शब्द का सार्थक खण्ड नहीं हो सकता?
(a) प्रधानमन्त्री (b) घोड़ा
(c) राजसैनिक (d) प्रसूतिगृह

### उत्तरमाला

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **1.** (b) | **2.** (a) | **3.** (b) | **4.** (c) | **5.** (d) |
| **6.** (b) | **7.** (a) | **8.** (c) | **9.** (c) | **10.** (b) |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**1.** निम्नलिखित विकल्पों में से तत्सम शब्द का चयन कीजिए (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) गहरा (b) तीखा (c) अटारी (d) निकृष्ट

**2.** निम्नलिखित शब्दों में से तद्भव शब्द का चयन कीजिए (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) आश्रम (b) प्यास (c) प्रांगण (d) उद्वेग

**3.** शब्द-रचना के आधार पर अधोलिखित में से योगरूढ़ शब्द का चयन कीजिए (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) पवित्र (b) कुशल (c) विनिमय (d) जलज

**4.** निम्नलिखित में कौन-सा शब्द देशज नहीं है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) डिबरी (b) पगड़ी (c) पुष्कर (d) ढोर

**5.** अधोलिखित में 'रूढ़' शब्द कौन-सा है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) मलयज (b) पंकज (c) जलज (d) वैभव

**6.** इलायची का तत्सम शब्द है (असिस्टेंट टीचर प्राइमरी परीक्षा 2015)
(a) एला (b) इला (c) अला (d) अल्ला

**7.** प्रस्तर का तद्भव शब्द है (असिस्टेंट टीचर प्राइमरी परीक्षा 2015)
(a) पाथर (b) पत्थर (c) पत्तर (d) फत्थर

**8.** हिन्दी में प्रयुक्त 'तुरूप' शब्द ..... है। (असिस्टेंट टीचर प्राइमरी परीक्षा 2015)
(a) अंग्रेजी (b) डच (c) रूसी (d) फ्रेंच

**9.** निम्नलिखित में कौन-सा शब्द तत्सम है? (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) आँख (b) अग्र (c) आग (d) आज

**10.** निम्नलिखित में रूढ़ शब्द कौन-सा है?
(a) वाचनालय (b) समतल (c) विद्यालय (d) पशु

**11.** निम्नलिखित में तत्सम शब्द का चयन कीजिए
(a) बारात (b) वर्षा
(c) हाथी (d) आँसू

**12.** स्वतन्त्र सत्ता धारण न करने वाले शब्द क्या कहलाते हैं?
(a) रूढ़ (b) यौगिक
(c) योगरूढ़ (d) इनमें से कोई नहीं

**13.** निम्नलिखित में कौन 'यौगिक' शब्द है? (एस.एस.सी. स्टेनोग्राफर परीक्षा 2011)
(a) लेखक (b) पुस्तक
(c) विद्यालय (d) योगी

**14.** 'यौगिक' शब्द कौन-सा है? (बैंक परीक्षा 2012)
(a) पंकज (b) पाठशाला
(c) दिन (d) जलज

**15.** 'योगरूढ़' शब्द कौन-सा है? (बैंक परीक्षा 2003)
(a) पीला (b) घुड़सवार (c) लम्बोदर (d) नाक

**16.** जिस शब्द का कोई सार्थक खण्ड हो सके, उन्हें क्या कहते हैं? (बी.एड. 2004)
(a) रूढ़ (b) यौगिक
(c) योगरूढ़ (d) मिश्रित

**17.** 'अंगीठी' का तत्सम शब्द है (यू.पी.पी.एस.सी.समीक्षा अधिकारी परीक्षा 20
(a) अग्निका
(b) अनिष्ठका
(c) अग्निष्ठिका
(d) अग्निष्ठकी

**18.** 'अगम' शब्द है (उत्तराखण्ड बी.एड. प्रवेश परीक्षा 20
(a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) विदेशी

**19.** 'गँवार' का तत्सम शब्द है
(a) मूर्ख (b) गम्भीर (c) ग्राहक (d) ग्रामीण

**20.** 'चोंच' का तत्सम शब्द कौन-सा है?
(a) चूँचूँ (b) चूँचुः
(c) चंचु (d) इनमें से कोई नहीं

**21.** मजिस्ट्रेट शब्द है
(a) तत्सम (b) तद्भव (c) देशज (d) विदेशज

**22.** निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'देशज' है?
(a) अग्नि (b) प्रार्थना (c) खेत (d) लोटा

**23.** निम्नलिखित में से कौन 'यौगिक' शब्द है?
(a) कवि (b) पत्र (c) छात्रावास (d) गायक

**24.** 'योगरूढ़' शब्द कौन-सा है?
(a) नीला (b) धैर्यवान (c) पीताम्बर (d) आँख

**25.** नीचे दिए गए विकल्पों में से तत्सम शब्द का चयन कीजिए
(a) पड़ोसी (b) गोधूम (c) बहू (d) शहीद

**26.** कौन-सा शब्द 'देशज' नहीं है?
(a) अण्टा (b) कलाई (c) जूता (d) चमड़ा

**27.** जिन शब्दों की उत्पत्ति का पता नहीं चलता, उन्हें कहा जाता है
(a) तत्सम (b) तद्भव (c) देशज (d) यौगिक

**28.** निम्नलिखित में कौन-सा शब्द तत्सम नहीं है? (यू.पी.पी.एस.सी.समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2
(a) आँख (b) नयन (c) नेय (d) दृग

**29.** 'आज' का तत्सम शब्द है
(a) अजः (b) आजः (c) अद्य (d) इदम्

**30.** 'किवाड़' शब्द है
(a) तद्भव (b) तत्सम
(c) देशज (d) इनमें से कोई नहीं

**31.** केला का तत्सम शब्द है
(a) केलकः (b) कदली
(c) कदलिकः (d) कदर्लिकः

**32.** 'हल्दी' शब्द का तत्सम है (यू.पी.पी.एस.सी.समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2
(a) हरदी (b) हरिद्रा
(c) हल्दिका (d) हरद्रिका

**33.** स्रोत के आधार पर शब्द के कितने भेद हैं?
(a) तीन (b) दो
(c) छः (d) पाँच

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**34.** 'चाय' किस भाषा का शब्द है?
(a) चीनी (b) जापानी
(c) अंग्रेज़ी (d) फ्रेंच

**35.** 'वकील' किस भाषा का शब्द है?
(a) फ़ारसी (b) अरबी
(c) तुर्की (d) पुर्तगाली

**36.** कमल किस प्रकार का शब्द है?
(a) रूढ़ (b) यौगिक
(c) योगरूढ़ (d) इनमें से कोई नहीं

**37.** निम्न में से कौन-सा शब्द तुर्की भाषा का है?
(a) चाय (b) रिक्शा
(c) कमरा (d) कैंची

**38.** निम्न में से एक तत्सम शब्द छाँटकर बताइए
(a) अनजान (b) सच
(c) पत्ता (d) घोटक

**39.** 'स्टेशन' किस भाषा का शब्द है?
(a) फ्रेंच (b) अंग्रेज़ी (c) डच (d) चीनी

**40.** निम्नलिखित में तत्सम शब्द का चयन कीजिए
(a) बारात (b) वर्षा (c) हाथी (d) आँसू

**41.** निम्न में से कौन-सा शब्द तुर्की भाषा का नहीं है
(a) बन्दूक (b) बारूद (c) रिक्शा (d) तोप

**42.** 'तोता' शब्द किस शब्द-भेद का रूप है?
(a) देशज (b) तद्भव (c) तत्सम (d) विदेशज

**43.** 'रज्जु' शब्द का तद्भव रूप है?
(a) रस्सी (b) राजा (c) राजपुत्र (d) रानी

**44.** 'शक्कर' शब्द का तत्सम रूप है?
(a) शकट (b) सूगर (c) शर्करा (d) चीनी

**45.** निम्न में से कौन-सा शब्द 'फ़ारसी' भाषा का है?
(a) लिफ़ाफ़ा (b) हज़म (c) फ़िक्र (d) ज़िन्दगी

**46.** 'साखी' का मूल तत्सम शब्द क्या है?
**(उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा 2015)**
(a) शिक्षा (b) साक्षी
(c) सखी (d) इनमें से कोई नहीं

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** (d) | **2.** (b) | **3.** (d) | **4.** (c) | **5.** (d) | **6.** (a) | **7.** (b) | **8.** (b) | **9.** (b) | **10.** (d) |
| **11.** (b) | **12.** (b) | **13.** (c) | **14.** (b) | **15.** (c) | **16.** (b) | **17.** (c) | **18.** (c) | **19.** (d) | **20.** (c) |
| **21.** (d) | **22.** (d) | **23.** (c) | **24.** (c) | **25.** (b) | **26.** (d) | **27.** (c) | **28.** (a) | **29.** (c) | **30.** (a) |
| **31.** (b) | **32.** (b) | **33.** (d) | **34.** (a) | **35.** (b) | **36.** (a) | **37.** (d) | **38.** (d) | **39.** (b) | **40.** (b) |
| **41.** (c) | **42.** (d) | **43.** (a) | **44.** (c) | **45.** (d) | **46.** (b) | | | | |

# अभ्यासार्थ प्रश्नावली

**1.** निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम और तद्भव शब्दों को छाँटकर अलग-अलग स्थान पर लिखिए।
अर्द्धपूरक, आज, ओखल, आस, आम, कथानिका, काष्ठ, कृष्ण, काम, गोबर, कोटि, कटुक, पौत्र, नापित, ज्ञातिगृह, नेउता, निष्ठुर, नेह

**2.** निम्नलिखित तत्सम शब्दों को उनके तद्भव रूप से मिलाइए।

| तत्सम | तद्भव |
|---|---|
| (i) अक्षोर | (a) अखाड़ा |
| (ii) अक्षवाट | (b) आँवला |
| (iii) अर्द्धतृतीय | (c) अखरोट |
| (iv) आमलक | (d) अढ़ाई |

**3.** नीचे दिए गए शब्द किस-किस विदेशी भाषा से सम्बन्धित हैं? उनके सामने लिखिए।
(i) खामोश .....
(ii) किस्मत .....
(iii) प्लेग .....
(iv) कैंसर .....
(v) गुण्डा .....
(vi) कूपन .....
(vii) चीकू .....
(viii) अनन्नास .....
(ix) तुरूप .....
(x) अखरोट .....

**4.** नीचे दिए गए शब्दों में से देशज और विदेशज शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए।
पेपर, समय, पेटी, आदमी, उम्र, खुरपा, ढेर, इलाज, कपास, कुश्ती, झाड़ू, माचिस, काया, बुखार, खिड़की, काजू

**5.** नीचे दिए गए शब्दों में से यौगिक, रूढ़ और योगरूढ़ शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए।
कम, डाकघर, पीताम्बर, मोर, गजानन, पाठशाला, पुस्तक, घोड़ा, त्रिलोचन, चतुरानन, दवाखाना, पवनपुत्र, कमल, सरोज, शीतल

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# 4

# पर्यायवाची शब्द

*पर्यायवाची शब्द का अर्थ है—समान अर्थ वाले शब्द। पर्यायवाची शब्द किसी भी भाषा की सबलता की बहुता को दर्शाता है। जिस भाषा में जितने अधिक पर्यायवाची शब्द होंगे, वह उतनी ही सबल व सशक्त भाषा होगी। इस दृष्टि से संस्कृत सर्वाधिक सम्पन्न भाषा है। भाषा में पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग से पूर्ण अभिव्यक्ति की क्षमता आती है।*

पर्याय का अर्थ है—समान। अत: समान अर्थ व्यक्त करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द (Synonym Words) कहते हैं। इन्हें प्रतिशब्द या समानार्थक शब्द भी कहा जाता है। व्यवहार में पर्याय या पर्यायवाची शब्द ही अधिक प्रचलित हैं। विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु पर्यायवाची शब्दों की सूची प्रस्तुत है

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| | **(अ)** |
| अंक | संख्या, गिनती, क्रमांक, निशान, चिह्न, छाप। |
| अंकुर | कोंपल, अँखुवा, कल्ला, नवोद्भिद्, कलिका, गाभ। |
| अंकुश | प्रतिबन्ध, रोक, दबाव, रुकावट, नियन्त्रण। |
| अंग | अवयव, अंश, काया, हिस्सा, भाग, खण्ड, उपांश, घटक, टुकड़ा, तन, कलेवर, शरीर, देह। |
| अग्नि | आग, अनल, पावक, जातवेद, कृशानु, वैश्वानर, हुताशन, रोहिताश्व, वायुसखा, हव्यवाहन, दहन, अरुण। |
| अंचल | पल्लू, छोर, क्षेत्र, अंत, प्रदेश, आँचल, किनारा। |
| अचानक | अकस्मात, अनायास, एकाएक, दैवयोग। |
| अटल | अडिग, स्थिर, पक्का, दृढ़, अचल, निश्चल, गिरि, शैल, नग। |
| अठखेली | कौतुक, क्रीड़ा, खेल-कूद, चुलबुलापन, उछल-कूद, हँसी-मज़ाक। |
| अमृत | अमिय, पीयूष, अमी, मधु, सोम, सुधा, सुरभोग, जीवनोदक, शुभा। |
| अयोग्य | अनर्ह, योग्यताहीन, नालायक, नाकाबिल। |
| अभिप्राय | प्रयोजन, आशय, तात्पर्य, मतलब, अर्थ, मंतव्य, मंशा, उद्देश्य, विचार। |
| अर्जुन | भारत, गुडाकेश, पार्थ, सहस्रार्जुन, धनंजय। |
| अवज्ञा | अनादर, तिरस्कार, अवमानना, अपमान, अवहेलना, तौहीन। |
| अश्व | घोड़ा, तुरंग, हय, वाजि, सैन्धव, घोटक, बछेड़ा, रविसुत, अर्दा। |
| असुर | रजनीचर, निशाचर, दानव, दैत्य, राक्षस, दनुज, यातुधान, तमीचर। |
| अवरोध | रुकावट, विघ्न, व्यवधान, अड़ंगा। |
| अतिथि | मेहमान, पहुना, अभ्यागत, रिश्तेदार, नातेदार, आगन्तुक। |
| अतीत | पूर्वकाल, भूतकाल, विगत, गत। |

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| अनाज | अन्न, शस्य, धान्य, गल्ला, खाद्यान्न। |
| अनाड़ी | अनजान, अनभिज्ञ, अज्ञानी, अकुशल, अदक्ष, अपटु, मूर्ख, अल्पज्ञ, नौसिखिया। |
| अनार | सुनील, वल्कफल, मणिबीज, बीदाना, दाड़िम, रामबीज, शुकप्रिय। |
| अनिष्ट | बुरा, अपकार, अहित, नुकसान, हानि, अमंगल। |
| अनुकम्पा | दया, कृपा, करम, मेहरबानी। |
| अनुपम | सुन्दर, अतुल, अपूर्व, अद्वितीय, अनोखा, अप्रतिम, अद्भुत, अनूठा, विलक्षण, विचित्र। |
| अनुसरण | नकल, अनुकृत, अनुगमन। |
| अपमान | अनादर, उपेक्षा, निरादर, बेइज़्ज़ती, अवज्ञा, तिरस्कार, अवमान। |
| अप्सरा | परी, देवकन्या, अरुणप्रिया, सुखवनिता, देवांगना, दिव्यांगना, देवबाला। |
| अभय | निडर, साहसी, निर्भीक, निर्भय, निश्चिन्त। |
| अभिजात | कुलीन, सुजात, खानदानी, उच्च, पूज्य, श्रेष्ठ। |
| अभिज्ञ | जानकार, विज्ञ, परिचित, ज्ञाता। |
| अभिमान | गौरव, गर्व, नाज, घमंड, दर्प, स्वाभिमान, अस्मिता, अहं, अहंकार, अहमिका, मान, मिथ्याभिमान, दंभ। |
| अभियोग | दोषारोपण, कसूर, अपराध, गलती, आक्षेप, आरोप, दोषारोपण, इल्ज़ाम। |
| अभिलाषा | कामना, मनोरथ, इच्छा, आकांक्षा, ईहा, ईप्सा, चाह, लालसा, मनोकामना। |
| अभ्यास | रियाज़, पुनरावृत्ति, दोहराना, मश्क। |
| अमर | मृत्युंजय, अविनाशी, अनश्वर, अक्षर, अक्षय। |
| अमीर | धनी, धनाढ्य, सम्पन्न, धनवान, पैसेवाला। |
| अनन्त | असंख्य, अपरिमित, अगणित, बेशुमार। |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| अनभिज्ञ | अज्ञानी, मूर्ख, मूढ़, अबोध, नासमझ, अल्पज्ञ, अदक्ष, अपटु, अकुशल, अनजान। |
| अगुआ | अग्रणी, सरदार, मुखिया, प्रधान, नायक। |
| अधर | रदच्छद, रदपुट, होंठ, ओष्ठ, लब। |
| अध्यापक | आचार्य, शिक्षक, गुरु, व्याख्याता, अवबोधक, अनुदेशक। |
| अंधकार | तम, तिमिर, ध्वान्त, अँधियारा, तिमिस्रा। |
| अनुरूप | अनुकूल, संगत, अनुसार, मुआफ़िक। |
| अन्तःपुर | रनिवास, भोगपुर, जनानखाना। |
| अदृश्य | अन्तर्ध्यान, तिरोहित, ओझल, लुप्त, गायब। |
| अकाल | भुखमरी, कुकाल, दुष्काल, दुर्भिक्ष। |
| अशुद्ध | दूषित, गंदा, अपवित्र, अशुचि, नापाक। |
| असभ्य | अभद्र, अविनीत, अशिष्ट, गँवार, उजड्ड। |
| अधम | नीच, निकृष्ट, पतित। |
| अपकीर्ति | अपयश, बदनामी, निंदा, अकीर्ति। |
| अध्ययन | अनुशीलन, पारायण, पठनपाठन, पढ़ना। |
| अनुरोध | अभ्यर्थना, प्रार्थना, विनती, याचना, निवेदन। |
| अखण्ड | पूर्ण, समस्त, सम्पूर्ण, अविभक्त, समूचा, पूरा। |
| अपराधी | मुजरिम, दोषी, कसूरवार, सदोष। |
| अधीन | आश्रित, मातहत, निर्भर, पराश्रित, पराधीन। |
| अनुचित | नाजायज़, गैरवाजिब, बेजा, अनुपयुक्त, अयुत। |
| अन्वेषण | अनुसन्धान, गवेषण, खोज, जाँच, शोध। |
| अमूल्य | अनमोल, बहुमूल्य, मूल्यवान, बेशकीमती। |
| अज | ब्रह्मा, ईश्वर, दशरथ के जनक, बकरा। |
| अंधा | नेत्रहीन, सूरदास, अंध, चक्षुविहीन, प्रज्ञाचक्षु। |
| अनुवाद | भाषांतर, उल्था, तर्जुमा। |
| अरण्य | जंगल, कान्तार, विपिन, वन, कानन। |
| अवनति | अपकर्ष, गिराव, गिरावट, घटाव, ह्रास। |
| अश्लील | अभद्र, अधिभ्रष्ट, निर्लज्ज बेशर्म, असभ्य। |

## (आ)

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| आकुल | व्यग्र, बेचैन, क्षुब्ध, बेकल। |
| आकृति | आकार, चेहरा-मोहरा, नैन-नक्श, डील-डौल। |
| आदर्श | प्रतिरूप, प्रतिमान, मानक, नमूना। |
| आलसी | निठल्ला, बैठा-ठाला, ठलुआ, सुस्त, निकम्मा, काहिल। |
| आयुष्मान् | चिरायु, दीर्घायु, शतायु, दीर्घजीवी, चिरंजीव। |
| आज्ञा | आदेश, निदेश, फ़रमान, हुक्म, अनुमति, मंजूरी, स्वीकृति, सहमति, इजाज़त। |
| आश्रय | सहारा, आधार, भरोसा, अवलम्ब, प्रश्रय। |
| आख्यान | कहानी, वृत्तांत, कथा, किस्सा, इतिवृत्त। |
| आधुनिक | अर्वाचीन, नूतन, नव्य, वर्तमानकालीन, नवीन, अधुनातन। |
| आवेग | तेज़ी, स्फूर्ति, जोश, त्वरा, तीव्र, फुरती, चपलता। |
| आलोचना | समीक्षा, टीका, टिप्पणी, नुक्ताचीनी, समालोचना। |
| आरम्भ | श्रीगणेश, शुरुआत, सूत्रपात, प्रारम्भ, उपक्रम। |
| आवश्यक | अनिवार्य, अपरिहार्य, ज़रूरी, बाध्यकारी। |
| आदि | पहला, प्रथम, आरम्भिक, आदिम। |
| आपत्ति | विपदा, मुसीबत, आपदा, विपत्ति। |
| आकाश | नभ, अम्बर, अन्तरिक्ष, आसमान, व्योम, गगन, दिव, द्यौ, पुष्कर, शून्य। |
| आचरण | चाल-चलन, चरित्र, व्यवहार, आदत, बर्ताव, सदाचार, शिष्टाचार। |
| आडम्बर | पाखण्ड, ढकोसला, ढोंग, प्रपंच, दिखावा। |
| आँख | अक्षि, नैन, नेत्र, लोचन, दृग, चक्षु, ईक्षण, विलोचन, प्रेक्षण, दृष्टि। |
| आँगन | प्रांगण, बगड़, बाखर, अजिर, अँगना, सहन। |
| आम | रसाल, आम्र, फलराज, पिकबन्धु, सहकार, अमृतफल, मधुरासव, अंब। |
| आनन्द | आमोद, प्रमोद, विनोद, उल्लास, प्रसन्नता, सुख, हर्ष, आह्लाद। |
| आशा | उम्मीद, तवक्को, आस। |
| आशीर्वाद | आशीष, दुआ, शुभाशीष, शुभकामना, आशीर्वचन, मंगलकामना। |
| आश्चर्य | अचम्भा, अचरज, विस्मय, हैरानी, ताज्जुब। |
| आहार | भोजन, खुराक, खाना, भक्ष्य, भोज्य। |
| आस्था | विश्वास, श्रद्धा, मान, कदर, महत्त्व, आदर। |
| आँसू | अश्रु, नेत्रनीर, नयनजल, नेत्रवारि, नयननीर। |

## (इ)

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| इन्दिरा | लक्ष्मी, रमा, श्री, कमला। |
| इच्छा | लालसा, कामना, चाह, मनोरथ, ईहा, ईप्सा, आकांक्षा, अभिलाषा, मनोकामना। |
| इन्द्र | महेन्द्र, सुरेन्द्र, सुरेश, पुरन्दर, देवराज, मघवा, पाकरिपु, पाकशासन, पुरहूत। |
| इन्द्राणी | शची, इन्द्रवधू, महेन्द्री, इन्द्रा, पौलोमी, शतावरी, पुलोमजा। |
| इनकार | अस्वीकृति, निषेध, मनाही, प्रत्याख्यान। |
| इच्छुक | अभिलाषी, लालायित, उत्कण्ठित, आतुर। |
| इशारा | संकेत, इंगित, निर्देश। |
| इन्द्रधनुष | सुरचाप, इन्द्रधनु, शक्रचाप, सप्तवर्णधनु। |
| इन्द्रपुरी | देवलोक, अमरावती, इन्द्रलोक, देवेन्द्रपुरी, सुरपुर। |

## (ई)

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| ईख | गन्ना, ऊख, रसडंड, रसाल, पेंड़ी, रसद। |
| ईमानदार | सच्चा, निष्कपट, सत्यनिष्ठ, सत्यपरायण। |
| ईश्वर | परमात्मा, परमेश्वर, ईश, ओम, ब्रह्म, अलख, अनादि, अज, अगोचर, जगदीश। |
| ईर्ष्या | मत्सर, डाह, जलन, कुढ़न, द्वेष, स्पर्द्धा। |

Download From: https://sarkaripot.in/
Scanned by CamScanner

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| | **(उ)** |
| उचित | ठीक, सम्यक्, सही, उपयुक्त, वाजिब। |
| उत्कर्ष | उन्नति, उत्थान, अभ्युदय, उन्मेष। |
| उत्पात | दंगा, उपद्रव, फ़साद, हुड़दंग, गड़बड़, छल। |
| उत्सव | समारोह, आयोजन, पर्व, त्योहार, मंगलकार्य, जलसा। |
| उत्साह | जोश, उमंग, हौसला, उत्तेजना। |
| उत्सुक | आतुर, उत्कण्ठित, व्यग्र, उत्कर्ण, रुचि, रुझान। |
| उदार | उदात्त, सहृदय, महामना, महाशय, दरियादिल। |
| उदाहरण | मिसाल, नमूना, दृष्टान्त, निदर्शन, उद्धरण। |
| उद्देश्य | प्रयोजन, ध्येय, लक्ष्य, निमित्त, मकसद, हेतु। |
| उद्यत | तैयार, प्रस्तुत, तत्पर। |
| उन्मूलन | निरसन, अन्त, उत्पादन। |
| उपकार | (i) परोपकार, अच्छाई, भलाई, नेकी। (ii) हित, उद्धार, कल्याण। |
| उपस्थित | विद्यमान, हाज़िर, प्रस्तुत। |
| उत्कृष्ट | उत्तम, श्रेष्ठ, प्रकृष्ट, प्रवर। |
| उपमा | तुलना, मिलान, सादृश्य, समानता। |
| उपासना | पूजा, आराधना, अर्चना, सेवा। |
| उद्यम | परिश्रम, पुरुषार्थ, श्रम, मेहनत। |
| उजाला | प्रकाश, आलोक, प्रभा, ज्योति। |
| उपाय | युक्ति, ढंग, तरकीब, तरीका, यत्न, जुगत। |
| उपयुक्त | उचित, ठीक, वाजिब, मुनासिब, वाँछनीय। |
| उल्टा | प्रतिकूल, विलोम, विपरीत, विरुद्ध। |
| उजाड़ | निर्जन, वीरान, सुनसान, बियाबान। |
| उग्र | तेज़, प्रबल, प्रचण्ड। |
| उन्नति | प्रगति, तरक्की, विकास, उत्थान, बढ़ोतरी, उठान, उत्क्रमण, चढ़ाव, आरोह। |
| उपवास | निराहार, व्रत, अनशन, फाँका, लंघन। |
| उपेक्षा | उदासीनता, विरक्ति, अनासक्ति, विराग, उदासीन, उल्लंघन। |
| उपहार | भेंट, सौगात, तोहफ़ा। |
| उपालम्भ | उलाहना, शिकवा, शिकायत, गिला। |
| उल्लू | उलूक, लक्ष्मीवाहन, कौशिक। |
| | **(ऊ)** |
| ऊँचा | उच्च, शीर्षस्थ, उन्नत, उत्तुंग। |
| ऊर्जा | ओज, स्फूर्ति, शक्ति। |
| ऊसर | अनुर्वर, सारहीन, अनुपजाऊ, बंजर, रेत, रेह। |
| ऊष्मा | उष्णता, तपन, ताप, गर्मी। |
| ऊँट | लम्बोष्ठ, महाग्रीव, क्रमेलक, उष्ट्र। |
| ऊँघ | तंद्रा, ऊँचाई, झपकी, अर्द्धनिद्रा, अलसाई। |
| | **(ऋ)** |
| ऋषि | मुनि, मनीषी, महात्मा, साधु, सन्त, संन्यासी, मन्त्रदृष्टा। |
| ऋद्धि | बढ़ती, बढ़ोतरी, वृद्धि, सम्पन्नता, समृद्धि। |

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| | **(ए)** |
| एकता | एका, सहमति, एकत्व, मेल-जोल, समानता, एकरूपता, एकसूत्रता, ऐक्य, अभिन्नता। |
| एहसान | आभार, कृतज्ञता, अनुग्रह। |
| एकांत | सुनसान, शून्य, सूना, निर्जन, विजन। |
| एकाएक | अकस्मात, अचानक, सहसा, एकदम। |
| | **(ऐ)** |
| ऐश | विलास, ऐयाशी, सुख-चैन। |
| ऐश्वर्य | वैभव, प्रभुता, सम्पन्नता, समृद्धि, सम्पदा। |
| ऐच्छिक | स्वेच्छाकृत, वैकल्पिक, अख्तियारी। |
| ऐब | खोट, दोष, बुराई, अवगुण, कलंक, खामी, कमी, त्रुटि। |
| | **(ओ)** |
| ओज | दम, ज़ोर, पराक्रम, बल, शक्ति, ताकत। |
| ओझल | अन्तर्धान, तिरोहित, अदृश्य, लुप्त, गायब। |
| ओस | तुषार, हिमकण, हिमशीकर, हिमबिन्दु, तुहिनकण। |
| ओंठ | होंठ, अधर, ओष्ठ, दन्तच्छद, रदनच्छद, लब। |
| | **(औ)** |
| और | (i) अन्य, दूसरा, इतर, भिन्न<br>(ii) अधिक, ज़्यादा<br>(iii) एवं, तथा। |
| औषधि | दवा, दवाई, भेषज, औषध। |
| | **(क)** |
| कपड़ा | चीर, वस्त्र, वसन, अम्बर, पट, पोशाक चैल, दुकूल। |
| कमल | सरोज, सरोरुह, जलज, पंकज, नीरज, वारिज, अम्बुज, अम्भोज, अब्ज, शतदल, अरविन्द, कुवलय, अम्भोरुह, राजीव, नलिन, पद्म, तामरस, पुण्डरीक, सरसिज, कंज। |
| कर्ण | अंगराज, सूर्यसुत, अर्कनन्दन, राधेय, सूतपुत्र, रविसुत, आदित्यनन्दन। |
| कली | मुकुल, जालक, ताम्रपल्लव, कलिका, कुडमल, कोरक, नवपल्लव, अँखुआ, कोंपल, गुंचा। |
| कल्पवृक्ष | कल्पतरु, कल्पशाल, कल्पद्रुम, कल्पपादप, कल्पविटप। |
| कन्या | कुमारिका, बालिका, किशोरी, बाला। |
| कठिन | दुर्बोध, जटिल, दुरूह। |
| कंगाल | निर्धन, गरीब, अकिंचन, दरिद्र। |
| कमज़ोर | दुर्बल, निर्बल, अशक्त, क्षीण। |
| कुटिल | छली, कपटी, धोखेबाज़, चालबाज़। |
| काक | काग, काण, वायस, पिशुन, करठ, कौआ। |
| कुत्ता | कुक्कर, श्वान, शुनक, कुक्कुर। |
| कबूतर | कपोत, रक्तलोचन, हारीत, पारावत। |
| कृत्रिम | अवास्तविक, नकली, झूठा, दिखावटी, बनावटी। |
| कल्याण | मंगल, योगक्षेम, शुभ, हित, भलाई, उपकार। |
| कूल | किनारा, तट, तीर। |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| कृषक | किसान, काश्तकार, हलधर, जोतकार, खेतिहर। |
| क्लिष्ट | दुरूह, संकुल, कठिन, दुःसाध्य। |
| कौशल | कला, हुनर, फ़न, योग्यता, कुशलता। |
| कर्म | कार्य, कृत्य, क्रिया, काम, काज। |
| कंदरा | गुहा, गुफा, खोह, दरी। |
| कथन | विचार, वक्तव्य, मत, बयान। |
| कटाक्ष | आक्षेप, व्यंग्य, ताना, छींटाकशी। |
| कुरूप | भद्दा, बेडौल, बदसूरत, असुन्दर। |
| कलंक | दोष, दाग, धब्बा, लांछन, कलुषता। |
| कोमल | मृदुल, सुकुमार, नाजुक, नरम, सौम्य, मुलायम। |
| किरण | रश्मि, केतु, अंशु, कर, मरीचि, मखूख, प्रभा, अर्चि, पुंज। |
| कसक | पीड़ा, दर्द, टीस, दुःख। |
| कोयल | कोकिल, श्यामा, पिक, मदनशलाका। |
| कायरता | भीरुता, अपौरुष, पामरता, साहसहीनता। |
| कंटक | काँटा, शूल, खार। |
| कामदेव | मनोज, कन्दर्प, आत्मभू, अनंग, अतनु, काम, मकरकेतु, पुष्पचाप, स्मर, मन्मथ। |
| कार्तिकेय | कुमार, पार्वतीनन्दन, शरभव, स्कन्ध, षडानन, गुह, मयूरवाहन, शिवसुत, षड्वदन। |
| कटु | कठोर, कड़वा, तीखा, तेज़, तीक्ष्ण, चरपरा, कर्कश, रूखा, रुक्ष, परुष, कड़ा, सख्त। |
| किला | दुर्ग, कोट, गढ़, शिविर। |
| किंचित | (i) कतिपय, कुछ एक, कई एक<br>(ii) कुछ, अल्प, ज़रा। |
| किताब | पुस्तक, ग्रंथ, पोथी। |
| किनारा | (i) तट, मुहाना, तीर, पुलिन, कूल।<br>(ii) अंचल, छोर, सिरा, पर्यन्त। |
| कीमत | मूल्य, दाम, लागत। |
| कुबेर | राजराज, किन्नरेश, धनाधिप, धनेश, यक्षराज, धनद। |
| कुमुदनी | नलिनी, कैरव, कुमुद, इन्दुकमल, चन्द्रप्रिया। |
| कृष्ण | नन्दनन्दन, मधुसूदन, जनार्दन, माधव, मुरारि, कन्हैया, द्वारकाधीश, गोपाल, केशव, नन्दकुमार, नन्दकिशोर, बिहारी। |
| कृतज्ञ | आभारी, उपकृत, अनुगृहीत, ऋणी, कृतार्थ, एहसानमंद। |
| केला | रम्भा, कदली, वारण, अशुमत्फला, भानुफल, काष्ठीला। |
| क्रोध | गुस्सा, अमर्ष, रोष, कोप, आक्रोश, ताव। |
| करुणा | दया, तरस, रहम, आत्मीयभाव। |

### (ख)

| | |
|---|---|
| खग | पक्षी, चिड़िया, पखेरू, द्विज, पंछी, विहंग, शकुनि। |
| खंजन | नीलकण्ठ, सारंग, कलकण्ठ। |
| खंड | अंश, भाग, हिस्सा, टुकड़ा। |
| खल | शठ, दुष्ट, धूर्त, दुर्जन, कुटिल, नालायक, अधम। |
| खूबसूरत | सुन्दर, सुरम्य, मनोज्ञ, रूपवान, सौरम्य, रमणीक। |
| खून | रुधिर, लहू, रक्त, शोणित। |
| खम्भा | खम्भ, स्तूप, स्तम्भ। |
| खतरा | अंदेशा, भय, डर, आशंका। |
| खत | चिट्ठी, पत्र, पत्री, पाती। |
| खामोश | नीरव, शान्त, चुप, मौन। |
| खीझ | झुँझलाहट, झल्लाहट, खीझना, चिढ़ना। |

### (ग)

| | |
|---|---|
| गरुड़ | खगेश्वर, सुपर्ण, वैतनेय, नागान्तक। |
| गौरव | मान, सम्मान, महत्त्व, बड़प्पन। |
| गम्भीर | गहरा, अथाह, अतल। |
| गाँव | ग्राम, मौजा, पुरवा, बस्ती, देहात। |
| गृह | घर, सदन, भवन, धाम, निकेतन, आलय, मकान, गेह, शाला। |
| गुफा | गुहा, कन्दरा, विवर, गह्वर। |
| गीदड़ | शृगाल, सियार, जम्बुक। |
| गुप्त | निभृत, अप्रकट, गूढ़, अज्ञात, परोक्ष। |
| गति | हाल, दशा, अवस्था, स्थिति, चाल, रफ़्तार। |
| गंगा | भागीरथी, देवसरिता, मंदाकिनी, विष्णुपदी, त्रिपथगा, देवापगा, जाह्नवी, देवनदी, ध्रुवनन्दा, सुरसरि, पापछालिका। |
| गणेश | लम्बोदर, मूषकवाहन, भवानीनन्दन, विनायक, गजानन, मोदकप्रिय, जगवन्द्य, हेरम्ब, एकदन्त, गजवदन, विघ्ननाशक। |
| गज | हस्ती, सिंधुर, मातंग, कुम्भी, नाग, हाथी, वितुण्ड, कुंजर, करी, द्विप। |
| गधा | गदहा, खर, धूसर, गर्दभ, चक्रीवाहन, रासभ, लम्बकर्ण, बैशाखनन्दन, बेसर। |
| गाय | धेनु, सुरभि, माता, कल्याणी, पयस्विनी, गौ। |
| गुलाब | सुमना, शतपत्र, स्थलकमल, पाटल, वृन्तपुष्प। |
| गुनाह | गलती, अधर्म, पाप, अपराध, खता, त्रुटि, कुकर्म। |

### (घ)

| | |
|---|---|
| घड़ा | कलश, घट, कुम्भ, गागर, निप, गगरी, कुट। |
| घी | घृत, हवि, अमृतसार। |
| घाटा | हानि, नुकसान, टोटा। |
| घन | जलधर, वारिद, अंबुधर, बादल, मेघ, अम्बुद, पयोद, नीरद। |
| घृणा | जुगुप्सा, अरुचि, घिन, बीभत्स। |
| घुमक्कड़ | रमता, सैलानी, पर्यटक, घुमन्तू, विचरण शील, यायावर। |
| घिनौना | घृण्य, घृणास्पद, बीभत्स, गंदा, घृणित। |

### (च)

| | |
|---|---|
| चंदन | मंगल्य, मलयज, श्रीखण्ड। |
| चाँदी | रजत, रूपा, रौप्य, रूपक। |
| चरित्र | आचार, सदाचार, शील, आचरण। |
| चिन्ता | फ़िक्र, सोच, ऊहापोह। |
| चौकीदार | आरक्षी, पहरेदार, प्रहरी, गारद, गश्तकार। |
| चोटी | शृंग, तुंग, शिखर, परकोटि। |
| चक्र | पहिया, चाक, चक्का। |
| चिकित्सा | उपचार, इलाज, दवादारू। |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| चतुर | कुशल, नागर, प्रवीण, दक्ष, निपुण, योग्य, होशियार, चालाक, सयाना, विज्ञ। |
| चन्द्र | सोम, राकेश, रजनीश, राकापति, चाँद, निशाकर, हिमांशु, मयंक, सुधांशु, मृगांक, चन्द्रमा, कला-निधि, ओषधीश। |
| चाँदनी | चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी, कुमुदकला, जुन्हाई, अमृतवर्षिणी, चन्द्रातप, चन्द्रमरीचि। |
| चपला | विद्युत्, बिजली, चंचला, दामिनी, तड़ित। |
| चश्मा | ऐनक, उपनेत्र, सहनेत्र, उपनयन। |
| चाटुकारी | खुशामद, चापलूसी, मिथ्या प्रशंसा, चिरौरी, चमचागीरी। |
| चिह्न | प्रतीक, निशान, लक्षण, पहचान, संकेत। |
| चोर | रजनीचर, दस्यु, साहसिक, कभिज, खनक, मोषक, तस्कर। |

## (छ)

| | |
|---|---|
| छात्र | विद्यार्थी, शिक्षार्थी, शिष्य। |
| छाया | साया, प्रतिबिम्ब, परछाई, छाँव। |
| छल | प्रपंच, झाँसा, फ़रेब, कपट। |
| छटा | आभा, कांति, चमक, सौन्दर्य, सुन्दरता। |
| छानबीन | जाँच-पड़ताल, पूछताछ, जाँच, तहकीकात। |
| छेद | छिद्र, सूराख, रंध्र। |
| छली | ठग, छद्मी, कपटी, कैतव, धूर्त, मायावी। |
| छाती | उर, वक्ष, वक्षःस्थल, हृदय, मन, सीना। |

## (ज)

| | |
|---|---|
| जननी | माँ, माता, माई, मइया, अम्बा, अम्मा। |
| जीव | प्राणी, देहधारी, जीवधारी। |
| जिज्ञासा | उत्सुकता, उत्कंठा, कुतूहल। |
| जंग | युद्ध, रण, समर, लड़ाई, संग्राम। |
| जग | दुनिया, संसार, विश्व, भुवन, मृत्युलोक। |
| जल | सलिल, उदक, तोय, अम्बु, पानी, नीर, वारि, पय, अमृत, जीवक, रस, अप। |
| जहाज़ | जलयान, वायुयान, विमान, पोत, जलवाहन। |
| जानकी | जनकसुता, वैदेही, मैथिली, सीता, रामप्रिया, जनकदुलारी, जनकनन्दिनी। |
| जुटाना | बटोरना, संग्रह करना, जुगाड़ करना, एकत्र करना, जमा करना, संचय करना। |
| जोश | आवेश, साहस, उत्साह, उमंग, हौसला। |
| जीभ | जिह्वा, रसना, रसज्ञा, चंचला। |
| जमुना | सूर्यतनया, सूर्यसुता, कालिंदी, अर्कजा, कृष्णा। |
| ज्योति | प्रभा, प्रकाश, लौ, अग्निशिखा, आलोक। |

## (झ)

| | |
|---|---|
| झंडा | ध्वजा, केतु, पताका, निसान। |
| झरना | सोता, स्रोत, उत्स, निर्झर, जलप्रपात, प्रस्रवण, प्रपात। |
| झुकाव | रुझान, प्रवृत्ति, प्रवणता, उन्मुखता। |
| झकोर | हवा का झोंका, झटका, झोंक, बयार। |
| झूठ | मिथ्या, मृषा, अनृत, असत, असत्य। |

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| टीका | भाष्य, वृत्ति, विवृति, व्याख्या, भाषांतरण। |
| टक्कर | भिड़ंत, संघट्ट, समाघात, ठोकर। |
| टोल | समूह, मण्डली, जत्था, झुण्ड, चटसाल, पाठशाला। |
| टीस | साल, कसक, शूल, शूक्त, चसक, दर्द, पीड़ा। |
| टेढ़ा | (i) वंक, कुटिल, तिरछा, वक्र।<br>(ii) कठिन, पेचीदा, मुश्किल, दुर्गम। |
| टंच | सूम, कृपण, कंजूस, निष्ठुर। |

## (ठ)

| | |
|---|---|
| ठंड | शीत, ठिठुरन, सर्दी, जाड़ा, ठंडक। |
| ठेस | आघात, चोट, ठोकर, धक्का। |
| ठौर | ठिकाना, स्थल, जगह। |
| ठग | जालसाज, प्रवंचक, वंचक, प्रतारक। |
| ठाठ | आडम्बर, सजावट, वैभव। |
| ठिठोली | मज़ाक, उपहास, फ़बती, व्यंग्य, व्यंग्योक्ति। |
| ठगी | प्रतारणा, वंचना, मायाजाल, फ़रेब, जालसाज़। |

## (ड)

| | |
|---|---|
| डगर | बाट, मार्ग, राह, रास्ता, पथ, पंथ। |
| डर | त्रास, भीति, दहशत, आतंक, भय, खौफ़। |
| डेरा | पड़ाव, खेमा, शिविर। |
| डोर | डोरी, रज्जु, तांत, रस्सी, पगहा, तन्तु। |
| डकैत | डाकू, लुटेरा, बटमार। |
| डायरी | दैनिकी, दैनन्दिनी, रोज़नामचा। |

## (ढ)

| | |
|---|---|
| ढीठ | धृष्ट, प्रगल्भ, अविनीत, गुस्ताख। |
| ढोंग | स्वाँग, पाखण्ड, कपट, छल। |
| ढंग | पद्धति, विधि, तरीका, रीति, प्रणाली, करीना। |
| ढाढ़स | आश्वासन, तसल्ली, दिलासा, धीरज, सांत्वना। |
| ढोंगी | पाखण्डी, बगुला-भगत, रंगासियार, कपटी, छली। |

## (त)

| | |
|---|---|
| तन | शरीर, काया, जिस्म, देह, वपु। |
| तपस्या | साधना, तप, योग, अनुष्ठान। |
| तरंग | हिलोर, लहर, ऊर्मि, मौज, वीचि। |
| तरु | वृक्ष, पेड़, विटप, पादप, द्रुम, दरख्त। |
| तलवार | असि, खड्ग, सिरोही, चन्द्रहास, कृपाण, शमशीर, करवाल, कर्तरी, तेग। |
| तम | अंधकार, ध्वान्त, तिमिर, अँधेरा, तमसा। |
| तरुणी | युवती, मनोज्ञा, सुंदरी, यौवनवक्षी, प्रमदा, रमणी। |
| तारा | नखत, उड्डगण, नक्षत्र, तारक। |
| तम्बू | डेरा, खेमा, शिविर। |
| तस्वीर | चित्र, फोटो, प्रतिबिम्ब, प्रतिकृति, आकृति। |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| तालाब | जलाशय, सरोवर, ताल, सर, तड़ाग, जलधर, सरसी, पद्माकर, पुष्कर। |
| तारीफ़ | बड़ाई, प्रशंसा, सराहना, प्रशस्ति, गुणगान। |
| तीर | नाराच, बाण, शिलीमुख, शर, सायक। |
| तोता | सुवा, शुक, दाडिमप्रिय, कीर, सुग्गा, रक्ततुंड। |
| तत्पर | तैयार, कटिबद्ध, उद्यत, सन्नद्ध। |
| तन्मय | मग्न, तल्लीन, लीन, ध्यानमग्न। |
| तालमेल | समन्वय, संगति, सामंजस्य। |
| तरकारी | शाक, सब्ज़ी, भाजी। |
| तूफ़ान | झंझावात, अंधड़, आँधी, प्रभंजन। |
| त्रुटि | अशुद्धि, भूल-चूक, गलती। |

### (थ)

| | |
|---|---|
| थकान | क्लान्ति, श्रान्ति, थकावट, थकन। |
| थोड़ा | कम, ज़रा, अल्प, स्वल्प, न्यून। |
| थाह | अन्त, छोर, सिरा, सीना। |
| थोथा | पोला, खाली, खोखला, रिक्त, छूछा। |
| थल | धरती, ज़मीन, पृथ्वी, भूतल, भूमि। |

### (द)

| | |
|---|---|
| दर्पण | शीशा, आइना, मुकुर, आरसी। |
| दास | चाकर, नौकर, सेवक, परिचारक, परिचर, किंकर, गुलाम, अनुचर। |
| दुःख | क्लेश, खेद, पीड़ा, यातना, विषाद, यन्त्रणा, क्षोभ, कष्ट। |
| दूध | पय, दुग्ध, स्तन्य, क्षीर, अमृत। |
| देवता | सुर, आदित्य, अमर, देव, वसु। |
| दोस्त | सखा, मित्र, स्नेही, अन्तरंग, हितैषी, सहचर। |
| द्रोपदी | श्यामा, पाँचाली, कृष्णा, सैरन्ध्री, याज्ञसेनी, द्रुपदसुता, नित्ययौवना। |
| दासी | बाँदी, सेविका, किंकरी, परिचारिका। |
| दीपक | आदित्य, दीप, प्रदीप, दीया। |
| दुर्गा | सिंहवाहिनी, कालिका, अजा, भवानी, चण्डिका, कल्याणी, सुभद्रा, चामुण्डा। |
| दिव्य | अलौकिक, स्वर्गिक, लोकातीत, लोकोत्तर। |
| दीपावली | दीवाली, दीपमाला, दीपोत्सव, दीपमालिका। |
| दामिनी | बिजली, चपला, तड़ित, पीत-प्रभा, चंचला, विजय, विद्युत्, सौदामिनी। |
| देह | तन, रपु, शरीर, घट, काया, गात, कलेवर, तनु, मूर्ति। |
| दुर्लभ | अलभ्य, नायाब, विरल, दुष्प्राप्य। |
| दर्शन | भेंट, साक्षात्कार, मुलाकात। |
| दंगा | उपद्रव, फ़साद, उत्पात, उधम। |
| द्वेष | बैर, शत्रुता, दुश्मनी, खार, ईर्ष्या, जलन, डाह, मात्सर्य। |
| दरवाज़ा | किवाड़, पल्ला, कपाट, द्वार। |
| दाई | धाया, धात्री, अम्मा, सेविका। |
| देवालय | देवमन्दिर, देवस्थान, मन्दिर। |

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| दृढ़ | पुष्ट, मज़बूत, पक्का, तगड़ा। |
| दुर्गम | अगम्य, विकट, कठिन, दुस्तर। |
| द्विज | ब्राह्मण, ब्रह्मज्ञानी, वेदविद्, पण्डित, विप्र। |
| दिनांक | तारीख, तिथि, मिति। |

### (ध)

| | |
|---|---|
| धनुष | चाप, धनु, शरासन, पिनाक, कोदण्ड, कमान, विशिखासन। |
| धीरज | धीरता, धीरत्व, धैर्य, धारण, धृति। |
| धरती | धरा, धरणी, पृथ्वी, क्षिति, वसुधा, अवनी, मेदिनी। |
| धवल | श्वेत, सफ़ेद, उजला। |
| धुंध | कुहरा, नीहार, कुहासा। |
| ध्वस्त | नष्ट, भ्रष्ट, भग्न, खण्डित। |
| धूल | रज, खेहट, मिट्टी, गर्द, धूलि। |
| ध्रुव | दृढ़, अटल, स्थिर, निश्चित। |
| धंधा | रोज़गार, व्यापार, कारोबार, व्यवसाय। |
| धनुर्धर | धन्वी, तीरंदाज़, धनुषधारी, निषंगी। |
| धाक | रोब, दबदबा, धौंस। |
| धक्का | टक्कर, रेला, झोंका। |

### (न)

| | |
|---|---|
| नदी | सरिता, दरिया, अपगा, तटिनी, सलिला, स्रोतस्विनी, कल्लोलिनी, प्रवाहिणी। |
| नमक | लवण, लोन, रामरस, नोन। |
| नया | नवीन, नव्य, नूतन, आधुनिक, अभिनव, अर्वाचीन, नव, ताज़ा। |
| नाश | (i) समाप्ति, अवसान (ii) विनाश, संहार, ध्वंस, नष्ट-भ्रष्ट। |
| नित्य | हमेशा, रोज़, सनातन, सर्वदा, सदा, सदैव, चिरंतन, शाश्वत। |
| नियम | विधि, तरीका, विधान, ढंग, कानून, रीति। |
| नीलकमल | इंदीवर, नीलाम्बुज, नीलसरोज, उत्पल, असितकमल, कुवलय, सौगन्धित। |
| नौका | तरिणी, डोंगी, नाव, जलयान, नैया, तरी। |
| नारी | स्त्री, महिला, रमणी, वनिता, वामा, अबला, औरत। |
| निन्दा | अपयश, बदनामी, बुराई, बदगोई। |
| नैसर्गिक | प्राकृतिक, स्वाभाविक, वास्तविक। |
| नरेश | नरेन्द्र, राजा, नरपति, भूपति, भूपाल। |
| निष्पक्ष | उदासीन, अलग, निरपेक्ष, तटस्थ। |
| नियति | भाग्य, प्रारब्ध, विधि, भावी, दैव्य, होनी। |
| नक्षत्र | तारा, सितारा, खद्योत, तारक। |
| नाग | सर्प, विषधर, भुजंग, व्याल, फणी, फणधर, उरग। |
| नग | भूधर, पहाड़, पर्वत, शैल, गिरि। |
| नरक | यमपुर, यमलोक, जहन्नुम, दौजख। |
| निधि | कोष, खज़ाना, भण्डार। |
| नग्न | नंगा, दिगम्बर, निर्वस्त्र, अनावृत। |
| नीरस | रसहीन, फीका, सूखा, स्वादहीन। |
| नीरव | मौन, चुप, शान्त, खामोश, निःशब्द। |
| निरर्थक | बेमानी, बेकार, अर्थहीन, व्यर्थ। |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| निष्ठा | श्रद्धा, आस्था, विश्वास। |
| निर्णय | निष्कर्ष, फ़ैसला, परिणाम। |
| निष्ठुर | निर्दय, निर्मम, बेदर्द, बेरहम। |

**(प)**

| | |
|---|---|
| पत्थर | पाहन, प्रस्तर, संग, अश्म, पाषाण। |
| पति | स्वामी, कान्त, भर्तार, बल्लभ, भर्ता, ईश। |
| पत्नी | दुलहिन, अर्धांगिनी, गृहिणी, त्रिया, दारा, जोरू, गृहलक्ष्मी, सहधर्मिणी, सहचरी, जाया । |
| पथिक | राही, बटाऊ, पंथी, मुसाफ़िर, बटोही। |
| पण्डित | विद्वान्, सुधी, ज्ञानी, धीर, कोविद, प्राज्ञ। |
| परशुराम | भृगुसुत, जामदग्न्य, भार्गव, परशुधर, भृगुनन्दन, रेणुकातनय। |
| पर्वत | पहाड़, अचल, शैल, नग, भूधर, मेरू, महीधर, गिरि। |
| पवन | समीर, अनिल, मारुत, वात, पवमान, वायु, बयार। |
| पवित्र | पुनीत, पावन, शुद्ध, शुचि, साफ़, स्वच्छ। |
| पार्वती | भवानी, अम्बिका, गौरी, अभया, गिरिजा, उमा, सती, शिवप्रिया। |
| पिता | जनक, बाप, तात, गुरु, फ़ादर, वालिद। |
| पुत्र | तनय, आत्मज, सुत, लड़का, बेटा, औरस, पूत। |
| परिणय | शादी, विवाह, पाणिग्रहण। |
| पूज्य | आराध्य, अर्चनीय, उपास्य, वंद्य, वंदनीय, पूजनीय। |
| पुत्री | तनया, आत्मजा, सुता, लड़की, बेटी, दुहिता। |
| पृथ्वी | वसुधा, वसुन्धरा, मेदिनी, मही, भू, भूमि, इला, उर्वी, ज़मीन, क्षिति, धरती, धात्री। |
| प्रकाश | चमक, ज्योति, द्युति, दीप्ति, तेज़, आलोक। |
| प्रभात | सवेरा, सुबह, विहान, प्रातःकाल, भोर, ऊषाकाल। |
| प्रथा | प्रचलन, चलन, रीति–रिवाज़, परम्परा, परिपाटी, रूढ़ि। |
| प्रलय | कयामत, विप्लव, कल्पान्त, गज़ब। |
| प्रसिद्ध | मशहूर, नामी, ख्यात, नामवर, विख्यात, प्रख्यात, यशस्वी, मकबूल। |
| प्रार्थना | विनय, विनती, निवेदन, अनुरोध, स्तुति, अभ्यर्थना, अर्चना, अनुनय। |
| प्रिया | प्रियतमा, प्रेयसी, सजनी, दिलरुबा, प्यारी। |
| प्रेम | प्रीति, स्नेह, दुलार, लाड़-प्यार, ममता, अनुराग, प्रणय। |
| पैर | पाँव, पाद, चरण, गोड़, पग, पद, पगु, टाँग। |
| प्रभा | छवि, दीप्ति, द्युति, आभा। |
| पंथ | राह, डगर, पथ, मार्ग। |
| परतन्त्र | पराधीन, परवश, पराश्रित। |
| परिवार | कुल, घराना, कुटुम्ब, कुनबा। |
| परछाई | प्रतिच्छाया, साया, प्रतिबिम्ब, छाया, छवि। |
| पक्षी | विहग, निहंग, खग, अण्डज़, शकुन्त। |
| पल | क्षण, लम्हा, दम। |
| पश्चात्ताप | अनुताप, पछतावा, ग्लानि, संताप। |
| पाश | जालबंधन, फंदा, बंधन, जकड़न। |
| पराग | रंज, पुष्परज, कुसुमरज, पुष्पधूलि। |

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| परिवर्तन | क्रांति, हेर-फेर, बदलाव, तब्दीली। |
| पड़ोसी | हमसाया, प्रतिवासी, प्रतिवेशी। |
| पुरातन | प्राचीन, पूर्वकालीन, पुराना। |
| पूजा | आराधना, अर्चना, उपासना। |
| प्रकांड | अतिशय, विपुल, अधिक, भारी। |
| प्रज्ञा | बुद्धि, ज्ञान, मेधा, प्रतिभा। |
| प्रचण्ड | भीषण, उग्र, भयंकर। |
| प्रणय | स्नेह, अनुराग, प्रीति, अनुरक्ति। |
| प्रताप | प्रभाव, धाक, बोलबाला, इकबाल। |
| प्रतिज्ञा | प्रण, वचन, वायदा। |
| प्रेक्षागार | नाट्यशाला, रंगशाला, अभिनयशाला, प्रेक्षागृह। |
| प्रौढ़ | अधेड़, प्रबुद्ध। |
| पल्लव | किसलय, घर्ण, पत्ती, पात, कोपल, फुनगी। |
| पांडुलिपि | हस्तलिपी, मसौदा, पांडुलेख। |

**(फ)**

| | |
|---|---|
| फणी | सर्प, साँप, फणधर, नाग, उरग। |
| फ़ौरन | तत्काल, तत्क्षण, तुरन्त। |
| फूल | सुमन, कुसुम, गुल, प्रसून, पुष्प, पुहुप, मंजरी, लतांत। |
| फौज़ | सेना, लश्कर, पल्टन, वाहिनी, सैन्य। |
| फणीन्द्र | शेषनाग, वासुकी, उरगाधिपति, सर्पराज, नागराज। |

**(ब)**

| | |
|---|---|
| बलराम | हलधर, बलवीर, रेवतीरमण, बलभद्र, हली, श्यामबन्धु। |
| बाग | उपवन, वाटिका, उद्यान, निकुंज, फुलवाड़ी, बगीचा। |
| बन्दर | कपि, वानर, मर्कट, शाखामृग, कीश। |
| बट्टा | घाटा, हानि, टोटा, नुकसान। |
| बलिदान | कुर्बानी, आत्मोत्सर्ग, जीवनदान। |
| बंजर | ऊसर, परती, अनुपजाऊ, अनुर्वर। |
| बिछोह | वियोग, जुदाई, बिछोड़ा, विप्रलंभ। |
| बियावान | निर्जन, सूनसान, वीरान, उजाड़। |
| बंक | टेढ़ा, तिर्यक्, तिरछा, वक्र। |
| बहुत | ज़्यादा, प्रचुर, प्रभूत, विपुल, इफ़रात, अधिक। |
| बुद्धि | प्रज्ञा, मेधा, ज़ेहन, समझ, अकल, गति। |
| ब्रह्मा | विधि, चतुरानन, कमलासन, विधाता, विरंचि, पितामह, अज, प्रजापति, स्वयंभू। |
| बादल | मेघ, पयोधर, नीरद, वारिद, अम्बुद, बलाहक, जलधर, घन, जीमूत। |
| बाल | केश, अलक, कुन्तल, रोम, शिरोरूह, चिकुर। |
| बिजली | तड़ित, दामिनी, विद्युत, सौदामिनी, चंचला, बीजुरी। |
| बसंत | ऋतुराज, ऋतुपति, मधुमास, कुसुमाकर, माधव। |
| बाण | तीर, तोमर, विशिख, शिलीमुख, नाराच, शर, इषु। |
| बारिश | पावस, वृष्टि, वर्षा, बरसात, मेह, बरखा। |
| बालिका | बाला, कन्या, बच्ची, लड़की, किशोरी। |

Download From: https://sarkaripot.in/
Scanned by CamScanner

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| | **(व)** |
| वर्षा | बरसात, मेह, बारिश, पावस, चौमास। |
| वक्ष | सीना, छाती, वक्षस्थल, उदरस्थल। |
| वन | अरण्य, अटवी, कानन, विपिन। |
| वस्त्र | परिधान, पट, चीर, वसन, कपड़ा, पोशाक, अम्बर। |
| विकार | विकृति, दोष, बुराई, बिगाड़। |
| विष | गरल, माहुर, हलाहल, कालकूट, ज़हर। |
| विरुद | प्रशस्ति, कीर्ति, यशोगान, गुणगान। |
| विविध | नाना, प्रकीर्ण, विभिन्न। |
| विभोर | मस्त, मुग्ध, मग्न, लीन। |
| विप्र | भूदेव, ब्राह्मण, महीसुर, पुरोहित, पण्डित। |
| विभा | प्रभा, आभा, कांति, शोभा। |
| विशारद | पण्डित, ज्ञानी, विशेषज्ञ, सुधी। |
| विलास | आनन्द, भोग, सन्तुष्टि, वासना। |
| व्यसन | लत, बान, टेक, आसक्ति। |
| वृक्ष | द्रुम, पादप, तरु, विटप। |
| विवाद | अनबन, झगड़ा, तकरार, बखेरा। |
| वंक | टेढ़ा, वक्र, कुटिल। |
| विपरीत | उलटा, प्रतिकूल, खिलाफ़, विरुद्ध। |
| व्रण | घाव, फोड़ा, ज़ख्म, नासूर। |
| वेश्या | गणिका, वारांगना, पतुरिया, रंडी, तवायफ़। |
| वसन्त | मधुमास, ऋतुराज, माधव, कुसुमाकर, कामसखा, मधुऋतु। |
| विद्या | ज्ञान, शिक्षा, गुण, इल्म, सरस्वती। |
| विधि | शैली, तरीका, नियम, रीति, पद्धति, प्रणाली, चाल। |
| विमल | स्वच्छ, निर्मल, पवित्र, पावन, विशुद्ध। |
| विष्णु | नारायण, केशव, गोविन्द, माधव, जनार्दन, विशम्भर, मुकुन्द, लक्ष्मीपति, कमलापति। |
| | **(श)** |
| शपथ | कसम, प्रतिज्ञा, सौगन्ध, हलफ़, सौं। |
| शहद | मधु, मकरंद, पुष्परस, पुष्पासव। |
| शब्द | ध्वनि, नाद, आश्व, घोष, रव, मुखर। |
| शरण | संश्रय, आश्रय, त्राण, रक्षा। |
| शिष्ट | शालीन, भद्र, संभ्रान्त, सौम्य, सज्जन, सभ्य। |
| शेर | सिंह, नाहर, केहरि, वनराज, केशरी, मृगेन्द, शार्दूल, व्याघ्र। |
| शिरा | नाड़ी, धमनी, नस। |
| शुभ | मंगल, कल्याणकारी, शुभंकर। |
| शिक्षा | नसीहत, सीख, तालीम, प्रशिक्षण, उपदेश, शिक्षण, ज्ञान। |
| श्वेत | सफ़ेद, धवल, शुक्ल, उजला, सित। |
| शंकर | शिव, उमापति, शम्भू, भोलेनाथ, त्रिपुरारि, महेश, देवाधिदेव, कैलाशपति, आशुतोष। |

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| शाश्वत | सर्वकालिक, अक्षय, सनातन, नित्य। |
| शिकारी | आखेटक, लुब्धक, बहेलिया, अहेरी, व्याध। |
| श्मशान | मरघट, मसान, दाहस्थल। |
| | **(ष)** |
| षड्यंत्र | साज़िश, दुरभिसंधि, अभिसंधि, कुचक्र। |
| | **(स)** |
| सब | अखिल, सम्पूर्ण, सकल, सर्व, समस्त, समग्र, निखिल। |
| संकल्प | दृढ़, दृढ़ निश्चय, प्रतिज्ञा, प्रण। |
| संग्रह | संकलन, संचय, जमाव। |
| संन्यासी | बैरागी, दंडी, विरत, परिव्राजक। |
| सजग | सतर्क, चौकस, चौकन्ना, सावधान। |
| संहार | अन्त, नाश, समाप्ति, ध्वंस। |
| समसामयिक | समकालिक, समकालीन, समवयस्क, वर्तमान। |
| समीक्षा | विवेचना, मीमांसा, आलोचना, निरूपण। |
| समुद्र | नदीश, वारीश, रत्नाकर, उदधि, पारावार। |
| सखी | सहेली, सहचरी, सैरंध्री। |
| सज्जन | भद्र, साधु, पुंगव, सभ्य, कुलीन। |
| संसार | विश्व, दुनिया, जग, जगत्, इहलोक। |
| समाप्ति | इतिश्री, इति, अंत, समापन। |
| सार | रस, सत, निचोड़, सत्त्व। |
| स्तन | पयोधर, छाती, कुच, उरस, उरोज। |
| सुन्दरी | ललिता, सुनेत्रा, सुनयना, विलासिनी, कामिनी। |
| सूची | अनुक्रम, अनुक्रमणिका, तालिका, फेहरिस्त, सारणी। |
| स्वर्ण | सुवर्ण, सोना, कनक, हिरण्य, हेम। |
| स्वर्ग | सुरलोक, द्युलोक, वैकुंठ, परलोक, दिव। |
| स्वच्छन्द | निरंकुश, स्वतन्त्र, निर्बंध। |
| स्वावलम्बन | आत्माश्रय, आत्मनिर्भरता, स्वाश्रय। |
| स्नेह | प्रेम, प्रीति, अनुराग, प्यार, मोहब्बत, इश्क। |
| समुद्र | सागर, रत्नाकर, पयोधि, नदीश, सिन्धु, जलधि, पारावार, वारीश, अर्णव, अब्धि। |
| सरस्वती | भारती, शारदा, वीणापाणि, गिरा, वाणी, महाश्वेता, श्री, वाक्, हंसवाहिनी, ज्ञानदायिनी। |
| सूर्य | सूरज, दिनकर, दिवाकर, भास्कर, रवि, नारायण, सविता, कमलबन्धु, आदित्य, प्रभाकर, मार्तण्ड। |
| सम्पूर्ण | पूर्ण, समग्र, सारा, पूरा, मुकम्मल। |
| सर्प | भुजंग, अहि, विषधर, व्याल, फणी, उरग, साँप, नाग, अही |
| सुरपुर | सुलोक, स्वर्गलोक, हरिधाम, अमरपुर, देवराज्य, स्वर्ग। |
| सेठ | महाजन, सूदखोर, साहूकार, ब्याजजीवी, पूँजीपति, मालदार, धनवान, धनी, तालुकदार। |
| संध्या | निशारंभ, दिनावसान, दिनांत, सायंकाल, गोधूलि, साँझ। |
| स्तुति | प्रार्थना, पूजा, आराधना, अर्चना। |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| | **(ह)** |
| हंस | मुक्तमुक, मराल, सरस्वतीवाहन। |
| हँसी | स्मिति, मुस्कान, हास्य। |
| हित | कल्याण, भलाई, भला, उपकार। |
| हक | अधिकार, स्वत्व, दावा, फर्ज़, उचित पक्ष। |
| हिमालय | हिमगिरि, हिमाद्रि, गिरिराज, शैलेन्द्र। |
| हनुमान् | पवनसुत, महावीर, आंजनेय, कपीश, बजरंगी, मारुतिनन्दन, बजरंग। |
| हाथ | कर, हस्त, पाणि, भुजा, बाहु, भुजाग्र। |
| हाथी | गज, कुंजर, वितुण्ड, मतंग, नाग, द्विरद। |
| हार | (i) पराजय, पराभव, शिकस्त, मात।<br>(ii) माला, कंठहार, मोहनमाला, अंकमालिका। |
| हिम | तुषार, तुहिन, नीहार, बर्फ़। |
| हिरन | मृग, हरिण, कुरंग, सारंग। |
| होशियार | समझदार, पटु, चतुर, बुद्धिमान, विवेकशील। |
| हेम | स्वर्ण, सोना, कंचन। |
| हरि | बंदर, इन्द्र, विष्णु, चंद्र, सिंह। |
| | **(क्ष)** |
| क्षेत्र | प्रदेश, इलाका, भू-भाग, भूखण्ड। |
| क्षणभंगुर | अस्थिर, अनित्य, नश्वर, क्षणिक। |
| क्षय | तपेदिक, यक्ष्मा, राजरोग। |
| क्षुब्ध | व्याकुल, विकल, उद्विग्न। |
| क्षमता | शक्ति, सामर्थ्य, बल, ताकत। |
| क्षीण | दुर्बल, कमज़ोर, बलहीन, कृश |

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**निर्देश** (प्र.सं. 1-2) *प्रश्नों में दिए गए शब्द के समानार्थक शब्द का चयन उसके नीचे दिए गए विकल्पों में से कीजिए।*

**1.** विप्र (के.वी.एस.पी.आर.टी 2015)
(a) निर्धन (b) धनी
(c) ब्राह्मण ✓ (d) सैनिक

**2.** आविर्भाव
(a) मृत्यु (b) मोक्ष
(c) वानप्रस्थ (d) उत्पत्ति ✓

**3.** निम्नलिखित में पर्यायवाची शब्द है (अन्वेषक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) अचिर, अचर
(b) राधारमण, कंसनिकन्दन ✓
(c) अम्बुज, अम्बुधि
(d) नीरद, नीरज

**4.** कौन-सा विकल्प वैचारिक अन्तर के समानार्थी शब्दों का है?
(a) देखना, घूरना ✓ (b) बेहद, असीम
(c) जल, नीर (d) सौन्दर्य, खूबसूरती

**5.** 'नौका' शब्द का पर्याय बताइए।
(a) तिया (b) तरंगिणी
(c) तरी ✓ (d) तरणिजा

**6.** 'घर' के लिए यह पर्यायवाची नहीं है (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) गृह (b) ग्रह ✓
(c) आलय (d) निलय

**7.** 'पवन' का पर्यायवाची शब्द है (सहायक उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2014)
(a) मिलना (b) पूजना
(c) समीर ✓ (d) आदर

**8.** 'खर' का पर्यायवाची शब्द है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) खरगोश (b) शशक
(c) मूर्ख (d) गधा ✓

**9.** अनिल पर्यायवाची है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) पवन का ✓ (b) चक्रवात का
(c) पावस का (d) अनल का

**10.** 'प्रसून' शब्द का पर्यायवाची है। (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) वृक्ष (b) पुष्प ✓
(c) चन्द्रमा (d) अग्नि

**11.** 'कानन' शब्द का पर्यायवाची नहीं है
(a) जंगल (b) अरण्य
(c) विपिन (d) इनमें से कोई नहीं ✓

**12.** 'नियति' शब्द का समानार्थी शब्द है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) चरित्र (b) स्वभाव
(c) भाग्य ✓ (d) कर्म

**निर्देश** (प्र.सं. 13-15) *प्रश्नों में दिए गए शब्दों के पर्याय (समानार्थक शब्द) के लिए चार-चार विकल्प दिए गए हैं; उचित विकल्प चुनिए।*

**13.** स्वच्छ (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2014)
(a) निर्मल ✓ (b) पंकिल
(c) नीरज (d) नीरद

**14.** ग्रीष्म
(a) गर्मी ✓ (b) वर्षा
(c) तपन (d) पावक

**15.** शाश्वत (एस.एस.सी. कांस्टेबल (जी.डी.) भर्ती परीक्षा 2012)
(a) आंशिक (b) साकार
(c) चिरंतन ✓ (d) लौकिक

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**निर्देश** (प्र.सं. 16-18) *प्रश्नों में दिए गए शब्दों के पर्याय (समानार्थक शब्द) के लिए विकल्प दिए गए हैं; उन विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कीजिए।*

**16.** सुगंध
(a) इत्र (b) सौरभ ✓
(c) चंदन (d) केसर

**17.** जंगल
(a) बहिन (b) द्रुमदल
(c) कानन ✓ (d) कुसुम

**18.** बादल (एस.एस.सी. स्टेनोग्राफर परीक्षा 2015)
(a) पयोधि (b) अंबुज
(c) अंबुधि (d) पयोद ✓

**19.** 'व्यवहार' और 'मत' शब्दों के सही पर्याय हैं (बिहार पुलिस सिपाही भर्ती परीक्षा 2012)
(a) 'आचार' और 'विचार' ✓ (b) आचरण और सिद्धान्त
(c) विचार और राय (d) बरताव और निर्णय

**20.** निम्न विकल्पों में से जो 'चतुर' शब्द का समानार्थी नहीं है वह छाँटिए। (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) नागर (b) पटु
(c) देवप्रिय ✓ (d) दक्ष

**21.** पर्यायवाची शब्द का कौन-सा युग्म सही नहीं है? (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) वसुमती-धरती (b) वाजि-सिंह ✓
(c) मरीचि-किरण (d) वहिन-आग

**22.** सुधाकर शब्द किसका पर्यायवाची है? (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) सिन्धु (b) जलाशय
(c) चन्द्रमा ✓ (d) बादल

**23.** 'अद्‌भुत' शब्द का समानार्थी नहीं है (आई.बी.पी.एस./आर.आर.बी.एस. परीक्षा 2014)
(a) अद्वितीय (b) आश्चर्यजनक
(c) भयानक ✓ (d) अपूर्व

**24.** 'पापी' शब्द का समानार्थी शब्द है (आई.बी.पी.एस./आर.आर.बी.एस. परीक्षा 2014)
(a) पामर (b) निर्दयी ✓
(c) कुत्सित (d) अधम पाव की

**25.** 'फूल' शब्द का समानार्थी नहीं है (आई.बी.पी.एस./आर.आर.बी.एस. परीक्षा 2014)
(a) पुष्प (b) सरोज
(c) प्रसून (d) मंजरी ✓

**26.** 'मृषा' किस शब्द का पर्याय है? (सी.जी.पी.एस.सी. परीक्षा 2013)
(a) मिथ्या ✓ (b) मृत्यु
(c) मुक्ति (d) मित्र

**27.** 'अरविन्द' शब्द का पर्यायवाची है। (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) केवड़ा (b) कमल ✓
(c) गुलाब (d) कचवृक्ष

**28.** 'अरण्य' का पर्यायवाची है (एस.एस.सी. हिन्दी अनुवादक परीक्षा 2010)
(a) कानन ✓ (b) देवदारु
(c) अकेला (d) हरियाली

**29.** 'असुर' का समानार्थी है (राजस्थान बी.एस.टी.सी./एन.टी.टी. परीक्षा 20
(a) पापी (b) भूत
(c) राक्षस ✓ (d) उद्‌दंड

**30.** 'आनन्द' का पर्यायवाची है (म.प्र. बी.एड. प्रवेश परीक्षा 20
(a) सहकार (b) स्पृहा
(c) प्रमाद (d) प्रमोद ✓

**31.** 'इन्द्र' का पर्यायवाची है (आर.आर.बी. (गोरखपुर) परीक्षा 20
(a) पुरन्दर ✓ (b) महेश
(c) महीसुर (d) देवासुर

**32.** 'चपला' का समानार्थी है (बिहार बी.एड. प्रवेश परीक्षा 20
(a) ज्वाला
(b) कंजूस
(c) भामिनी
(d) दामिनी ✓

**33.** 'जीभ' का पर्याय है (यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 20
(a) वचन (b) रसना ✓
(c) ध्वनि (d) जीव

**34.** 'तरंग' किसका पर्यायवाची है?
(a) क्षीण (b) काया
(c) ऊर्मि ✓ (d) प्रतिकृति

**35.** 'दास' किसका पर्यायवाची है? (राजस्थान बी.एस.टी.सी./एन.टी.टी. परीक्षा 200
(a) किन्नर (b) सेवक ✓
(c) नायक (d) इनमें से कोई नहीं

**36.** 'माहवार' किसका पर्यायवाची है? (नर्मदा-मालवा ग्रामीण बैंक (क्लर्क) परीक्षा 20
(a) महावर (b) मंगलवार
(c) प्रतिमाह ✓ (d) महावत

**37.** 'शिव' का पर्यायवाची है (यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 20
(a) शिवालय (b) रुद्र ✓
(c) रुद्राक्ष (d) हरि

**38.** 'सिवा' शब्द का पर्यायवाची है (नर्मदा-मालवा ग्रामीण बैंक (क्लर्क) परीक्षा 20
(a) शंकर (b) अतिरेक
(c) रिश्तेदार (d) अलावा ✓

**39.** 'सूरज' किसका पर्यायवाची है? (राजस्थान बी.एस.टी.सी./एन.टी.टी. परीक्षा 200
(a) अंशुमाली (b) आदित्य
(c) भास्कर (d) ये सभी ✓

**40.** 'हिरण्य' पर्यायवाची है
(a) कुरंग (b) सारंग
(c) कंचन ✓ (d) केशरी ✗

**निर्देश** (प्र.सं. 41-65 तक) *निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक शब्द के स चार विकल्प दिए गए हैं। इनमें से तीन पर्यायवाची हैं और ए शब्द पर्यायवाची नहीं है। जो पर्यायवाची नहीं है, उसका च कीजिए।*

**41.** 'अग्नि'
(a) अनिल ✓ (b) पावक
(c) कृशानु (d) वैश्वानर (म.प्र. बी.एड. प्रवेश परीक्षा 20

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

42. 'अमृत' (एस.एस.सी. हिन्दी अनुवादक परीक्षा 2010)
(a) सोम (b) हेम
(c) पीयूष (d) अमिय

43. 'अहि' (यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) सरप (b) सरीसृप
(c) पवनाश (d) रिपुर

44. 'आकाश'
(a) व्योम (b) शान्ति
(c) दिव (d) पुष्कर

45. 'इंदिरा'
(a) श्री (b) कमला
(c) पद्मा (d) भारती

46. 'कमल' (एल.एल.बी. प्रवेश परीक्षा 2010)
(a) नीरधि (b) पंकज
(c) सरोज (d) पुण्डरीक

47. 'कर्ण' (बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010)
(a) सूतपुत्र (b) धनंजय
(c) राधेय (d) अंगराज

48. 'कल्पद्रुम'
(a) पारिजात (b) हरिचंदन
(c) बोधिवृक्ष (d) कल्पवृक्ष

49. 'खामोश'
(a) शान्त (b) मौन
(c) नीरव (d) नीरस

50. 'चाँदनी' (यू.पी.पी.एस.सी समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) चन्द्रातप (b) कौमुदी
(c) ज्योत्स्ना (d) मयंक

51. 'जिज्ञासा'
(a) वृत्तिका (b) उत्कंठा
(c) उत्सुकता (d) कुतूहल

52. 'झरना'
(a) उत्स (b) स्तोत्र
(c) स्रोत (d) निर्झर

53. 'तोष'
(a) तुष्टि (b) तृप्ति
(c) तृष्णा (d) संतोष

54. 'थकान'
(a) श्रान्ति (b) विश्रांति
(c) क्लान्ति (d) थकावट

55. 'दर्पण'
(a) आरसी (b) आइना
(c) दर्शन (d) मुकुर

56. 'निन्दा'
(a) बुराई (b) भर्त्सना
(c) दोषारोपण (d) विमर्श

57. 'पृथ्वी'
(a) भारती (b) क्षिति
(c) वसुधा (d) धरा

58. 'ब्रह्मा'
(a) प्रजापति (b) विधि
(c) स्वयंभू (d) पंचानन

59. 'महादेव'
(a) हरि (b) शिव
(c) नीलकंठ (d) आशुतोष

60. 'रात्रि'
(a) यामिनी (b) शर्वरी
(c) सर्वरी (d) विभावरी

61. 'समुद्र' (यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) पयोधि (b) जलद
(c) जलधि (d) वारिधि

62. 'सरस्वती' (यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) वीणापाणि (b) महाश्वेता
(c) पद्मा (d) भारती

63. 'सूर्य' (यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) प्रभाकर (b) निशाकर
(c) दिनकर (d) दिनेश

64. 'सुन्दर'
(a) चारु (b) ललाम
(c) मंजुल (d) मंजूषा

65. 'हिमालय' (इग्नू बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010)
(a) गिरिजेश (b) गिरिराज
(c) नगराज (d) हिमाद्रि

66. 'शांति' शब्द का समानार्थी नहीं है (वेनगंगा कृष्णा ग्रामीण बैंक ऑफिसर्स परीक्षा 2011)
(a) चुप्पी (b) मौन
(c) नीरवता (d) आकाश

67. निम्नलिखित में से किस एक विकल्प में सभी शब्द पर्यायवाची नहीं हैं
(a) प्रदीप, दीपक, दिवाली, दीया (b) अन्य, इतर, गैर, पराया
(c) असि, खंजर, तेग, शमशीर (d) गृहिणी, दारा, पत्नी, अर्धांगिनी

68. निम्नलिखित में से किस एक विकल्प में सभी शब्द पर्यायवाची हैं
(a) औषध, दवा, भेषज, वैद्य (b) अलौकिक, लोकोत्तर, पीयूष, दिव्य
(c) जलाशय, सरोवर, पुष्कर, तड़ाग (d) रीति, पद्धति, त्रास, प्रणाली

69. निम्नलिखित में से किस वर्ग में सभी शब्द पर्याय नहीं हैं? (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) अचल, नग, गिरि, भूधर
(b) अमर, सुर, कैवल्य, देव
(c) सरिता, तटिनी, तरंगिणी, सलिला
(d) कृपाण, असि, करवाल, चंद्रहास

70. मृगेन्द्र का पर्याय है (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) अहि (b) कुरंग
(c) हय (d) शार्दूल

71. निम्नांकित शब्दों में से 'सरस्वती' का पर्याय है (उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा 2015)
(a) पद्मा (b) गिरा
(c) शैलजा (d) अर्कजा

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**72.** कौन-सा शब्द 'भ्रमर' का पर्यायवाची नहीं है? (उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा 2015)
(a) षट्पद (b) मधुकर
(c) अलि (d) प्रभाकर

**73.** 'पन्नग' का समानार्थी शब्द है? (उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा 2015)
(a) उरग (b) पिक
(c) पिनाक (d) केशरी

**74.** कौन-सा शब्द 'गंगा' का पर्यायवाची नहीं है?
(a) त्रिपथगा (b) अमरतरंगिनी
(c) पुष्पवन्या (d) विष्णुपदी

**75.** 'लक्ष्मी' का पर्यायवाची शब्द है
(a) श्री (b) पुष्पासव
(c) राज्ञी (d) महीसुर

**निर्देश** (प्र.सं. 76-77) *निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द चुनिए।*

**76.** समुद्र (यू.पी.एस.एस.एस.सी. चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा 201
(a) अर्णव (b) विश्वंभर (c) उदक (d) त्रिंग

**77.** सौदामनी (यू.पी.एस.एस.एस.सी. चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा 201
(a) द्वारा (b) विद्युत (c) गंगोत्री (d) व्यापारी

**78.** दिए हुए शब्दों में भिन्न अर्थ वाला शब्द है (बी.एड. परीक्षा 200
(a) तुरंग (b) मृगेन्द्र (c) मृगराज (d) व्याघ्र

**79.** हिमांशु का पर्यायवाची शब्द है
(a) कलकंठ (b) कपीश्वर (c) उत्कृष्ट (d) रत्नाकार

**80.** जाह्नवी का पर्यायवाची शब्द है
(a) संसार (b) जानने वाली
(c) सुरसरि (d) जहन्नुम

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** (c) | **2.** (d) | **3.** (b) | **4.** (a) | **5.** (c) | **6.** (b) | **7.** (c) | **8.** (d) | **9.** (a) | **10.** (b) |
| **11.** (d) | **12.** (c) | **13.** (a) | **14.** (a) | **15.** (c) | **16.** (b) | **17.** (c) | **18.** (d) | **19.** (a) | **20.** (c) |
| **21.** (b) | **22.** (c) | **23.** (c) | **24.** (b) | **25.** (d) | **26.** (a) | **27.** (b) | **28.** (a) | **29.** (c) | **30.** (d) |
| **31.** (a) | **32.** (d) | **33.** (b) | **34.** (c) | **35.** (b) | **36.** (c) | **37.** (b) | **38.** (d) | **39.** (d) | **40.** (c) |
| **41.** (a) | **42.** (b) | **43.** (d) | **44.** (b) | **45.** (d) | **46.** (a) | **47.** (b) | **48.** (c) | **49.** (d) | **50.** (d) |
| **51.** (a) | **52.** (b) | **53.** (c) | **54.** (b) | **55.** (c) | **56.** (d) | **57.** (a) | **58.** (d) | **59.** (a) | **60.** (c) |
| **61.** (b) | **62.** (c) | **63.** (b) | **64.** (d) | **65.** (a) | **66.** (d) | **67.** (a) | **68.** (c) | **69.** (b) | **70.** (d) |
| **71.** (b) | **72.** (d) | **73.** (a) | **74.** (c) | **75.** (a) | **76.** (a) | **77.** (b) | **78.** (b) | **79.** (b) | **80.** (c) |

## अभ्यासार्थ प्रश्नावली

**1.** निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।
(क) अचला (ख) अन्वेषण
(ग) आदित्य (घ) आहार
(ङ) उत्साह (च) ऐश्वर्य
(छ) कोकिल (ज) चपला
(झ) दर्पण (ञ) प्रभात

**2.** निम्नलिखित शब्दों के दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए।
(क) असुर (ख) अमृत
(ग) आँख (घ) आकाश
(ङ) कृष्ण

**3.** निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।
(क) मधुर (ख) समुद्र
(ग) रजनी (घ) आनन्द
(ङ) इच्छा (च) अग्नि
(छ) बादल (ज) फूल

**4.** निम्नलिखित शब्दों को उनके सही पर्यायवाची शब्द से सुमेलित कीजि
(क) खुशबू (i) ऋतुराज
(ख) कटिबद्ध (ii) सुरलोक
(ग) ऊर्जा (iii) सुरभि
(घ) स्वर्ग (iv) तत्पर
(ङ) वसंत (v) ओज

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# 5

# विलोमार्थक शब्द

*'विलोम' शब्द का अर्थ है—उल्टा या विपरीत। अत: किसी शब्द का उल्टा अर्थ व्यक्त करने वाला शब्द विलोमार्थक शब्द कहलाता है। विलोम शब्द का अंग्रेज़ी पर्याय 'Antonyms' होता है। विलोमार्थक शब्दों को विपर्यायवाची, प्रतिलोमार्थक और विलोम शब्द भी कहते हैं।*

भाषा में भावों-विचारों की स्पष्टता के लिए विलोम शब्द का ज्ञान उपयोगी होता है; जैसे—अवरोह शब्द का 'पतन', 'नीचे गिरना' की अपेक्षा आरोह शब्द अर्थात् उल्टा कहने से अर्थ की प्रतीति और भी स्पष्टता से हो जाती है। इस प्रकार विलोम शब्दों के प्रयोग से भाषा में अभिव्यक्ति शक्ति बढ़ जाती है। विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु विलोमार्थक शब्दों की सूची प्रस्तुत है

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| | (अ) | | |
| अंत | आदि | अकंटक | कंटकित |
| अंतरंग | बहिरंग | अक्षत | विक्षत |
| अंतर्द्वन्द्व | बहिर्द्वन्द्व | अक्षम | सक्षम |
| अंतर्मुखी | बहिर्मुखी | अदृश्य | दृश्य |
| अंदर | बाहर | अस्तित्व | अनस्तित्व |
| अंधकार | प्रकाश | अर्हता | अनर्हता |
| अकर्मक | सकर्मक | अभिमुख | प्रतिमुख |
| अकाल | सुकाल | अभिप्रेत | अनभिप्रेत |
| अग्र | पश्च | अधिमूल्यन | अवमूल्यन |
| अगला | पिछला | अवर | प्रवर |
| अच्छा | बुरा | अवनति | उन्नति |
| अधम | उत्तम | अर्पण | ग्रहण |
| अध्यवसाय | अनध्यवसाय | अभिज्ञ | अनभिज्ञ |
| अधोमुखी | ऊर्ध्वमुखी | अनागत | विगत |
| अधोगामी | ऊर्ध्वगामी | अधिकृत | अनधिकृत |
| अति | अल्प | अथाह | छिछला |
| अथ | इति | अनाथ | सनाथ |
| अनुकूल | प्रतिकूल | अविचल | विचल |
| अर्पण | ग्रहण | अविस्मरणीय | विस्मरणीय |
| अनिवार्य | वैकल्पिक | अनुराग | विराग |
| अच्युत | च्युत | अग्रज | अनुज |
| अस्त | उदय | अवनि | अम्बर |
| अवनत | उन्नत | अस्त्रीकरण | निरस्त्रीकरण |
| अनुलोम | प्रतिलोम/विलोम | अवलम्ब | निरालम्ब |
| अमित | परिमित | अद्यत | अनुद्यत |

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| अपकार | उपकार | अनुक्रिया | प्रतिक्रिया |
| अस्थिर | स्थिर | अपशकुन | शकुन |
| आरोह | अवरोह | अचल | चल |
| अपचय | उपचय | अनायास | सायास |
| अभिशाप | वरदान | अधः पतन | उत्थान |
| अपव्यय | मितव्यय | अतिथि | अतिथेय |
| अनन्त | अन्त | अल्पायु | दीर्घायु |
| अधूरा | पूरा | अस्तित्व | अनस्तित्व |
| अल्पसंख्यक | बहुसंख्यक | अपना | पराया |
| अल्पज्ञ | बहुज्ञ | अपेक्षा | उपेक्षा |
| अशक्त | सशक्त | अत्यधिक | स्वल्प |
| असीम | ससीम | अनुरक्ति | विरक्ति |
| अपराध | निरपराध | अर्जन | वर्जन |
| अभिसरण | अपसरण | अवकाश | अनवकाश |
| अवाक् | सवाक् | अक्षर | क्षर |
| अग्नि | जल | अमर | मर्त्य |
| अहिंसा | हिंसा | अर्थ | अनर्थ |
| अर्वाचीन | प्राचीन | अगम | सुगम |
| अल्पमत | बहुमत | अमृत | विष |
| अपमान | सम्मान | अभ्यास | अनभ्यास |
| अज्ञ | विज्ञ | अमावस्या | पूर्णिमा |
| अलभ्य | लभ्य | अनुग्रह | विग्रह |
| अच्छा | बुरा | अन्वय | अनन्वय |
| अधुनातन | पुरातन | अधिक | कम |
| अशन | अनशन | अक्रूर | क्रूर |
| असम्भव | सम्भव | अतिवृष्टि | अनावृष्टि |
| अभ्यस्त | अनभ्यस्त | अल्प | प्रचुर |
| अनुमत | अननुमत | अधीर | गरीब |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**निर्देश** *विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में वस्तुनिष्ठपरक प्रश्नों में जिस शब्द का विलोम पूछना होता है उसे ऊपर मोटे (काले) अक्षरों में अंकित किया जाता है। उसके नीचे विलोम शब्द चुनने के लिए चार विकल्प दिए जाते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं को ध्यान में रखकर अभ्यासार्थ हेतु कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न यहाँ दिए गए हैं।*

**1.** 'अध:' शब्द के साथ प्रयुक्त 'उपरि' शब्द किस प्रकार की शब्द कोटि में आएगा? (अन्वेषक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) पर्याय (b) अनेकार्थी
(c) अनाधिक (d) विलोम

**2.** 'कृपा' किस शब्द का विलोम है? (अन्वेषक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) कोप (b) कटु (c) क्रोध (d) क्रूर

**निर्देश** (प्र.सं. 3-4) *में दिए गए विलोम शब्द का चयन उसके नीचे दिए गए विकल्पों में से कीजिए।*

**3.** अनुरक्ति
(a) आसक्ति (b) विरक्ति (c) उक्ति (d) विज्ञप्ति

**4.** स्वप्न (के.वी.एस.पी.आर.टी. 2015)
(a) निद्रा (b) जागरण (c) ध्यान (d) मनन

**निर्देश** (प्र. सं. 5-7) *में दिए गए शब्दों का उपयुक्त विलोम बताने के लिए चार-चार विकल्प प्रस्तावित हैं। उचित विकल्प का चयन कीजिए।*

**5.** यौवन
(a) जरा (b) पराजय (c) मृत्यु (d) जीत

**6.** यथार्थ
(a) उड़ान (b) कल्पना (c) स्वप्न (d) विचार

**7.** प्रतिवादी (एस.एस.सी. स्टेनोग्राफर परीक्षा 2015)
(a) विपक्षी (b) आरोपी (c) संवादी (d) वादी

**8.** 'सूक्ष्म' शब्द का विलोम है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014/ डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) सूक्ष्म (b) सूक्ष्महीन (c) स्थूल (d) अस्थूल

**9.** 'सुस्ती' का विलोम है (डी.एस.एस.एस.बी.असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) तन्दरुस्ती (b) चुस्ती (c) ताज़गी (d) सुस्तीविहीन

**10.** 'मिथ्या' का विलोम शब्द कौन-सा है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) आडम्बर (b) धुंधला (c) दिखाना (d) सत्य

**11.** 'अथ' का विलोम शब्द है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) अन्त (b) इति (c) अर्थ (d) अघ

**12.** 'शोषक' शब्द का विलोम चुनिए (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) शोषित (b) पोषक (c) पोसक (d) पोषित

**13.** 'हर्ष' शब्द के लिए चार विकल्प दिए गए हैं। सही विलोम शब्द का चयन कीजिए (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) खेद (b) वेदना (c) दु:ख (d) विषाद

**निर्देश** (प्र.सं. 14-16) *निम्नलिखित में दिए गए शब्द के विलोम के लिए चार-चार विकल्प प्रस्तावित हैं। उचित विकल्प का चयन कीजिए।*

**14.** अविश्वास (एस.एस.सी. स्टेनोग्राफर परीक्षा 2012)
(a) श्वास (b) विश्वास (c) सन्तोष (d) उच्छवास

**15.** उदय (एस.एस.सी.स्टेनोग्राफर परीक्षा 2012/लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) अस्त (b) लाल (c) भासित (d) बलिष्ठ

**16.** पुण्य (एस.एस.सी.स्टेनोग्राफर परीक्षा 2012)
(a) दोष (b) असंगति (c) पाप (d) पीड़ा

**17.** 'साक्षर' शब्द का विलोम क्या है? (इलाहाबाद उच्च न्यायालय भर्ती परीक्षा 2014)
(a) अशिक्षित (b) अनपढ़ (c) सुरक्षर (d) निरक्षर

**18.** 'उद्धत' शब्द का विलोम क्या है? (ई.जी.पी.एस.सी. प्रारम्भिक परीक्षा 2014)
(a) विनय (b) अवनति (c) अनुदार (d) विनीत

**19.** 'आरोह' का विलोम शब्द है (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) अवरोह (b) क्रमबद्ध (c) क्रमानुसार (d) लगातार

**20.** निम्न में से कौन-सा शब्द 'बुराई' का विलोम है? (ऑफिसर स्केल 1 परीक्षा 2014)
(a) अच्छाई (b) बढ़िया (c) सुन्दर (d) समाप्ति

**21.** निम्नलिखित विकल्पों में से 'कृश' का विलोम शब्द चुनिए (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) हृष्ट-पुष्ट (b) केश (c) भव (d) विटप

**22.** 'अल्पज्ञ' का विलोम दिए गए विकल्पों में से चुनिए (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) अभिज्ञ (b) अवज्ञ (c) कृतज्ञ (d) सर्वज्ञ

**23.** 'अंतरंग' का विलोम शब्द है
(a) बाहरी (b) बहिरंग (c) ऊपरी (d) बाह्य

**24.** 'अक्षत' का विलोम है
(a) क्षति (b) चावल (c) विक्षत (d) पूर्ण

**25.** निम्नलिखित अनुलोम-विलोम युग्मों में से कोई एक युग्म सही नहीं है
(a) अन्तरंग-बहिरंग (b) उचित-अनुचित
(c) सुख-कष्ट (d) सुसाध्य-दु:साध्य

**26.** 'अनादर' का विलोम शब्द है (उ.प्र. बी.एड. प्रवेश परीक्षा 200 म.प्र. उच्च न्यायालय क्लर्क स्टेनो परीक्षा 201
(a) मान (b) सम्मान (c) आदर (d) सत्कार

**27.** 'अभिज्ञ' का विलोम शब्द है (यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 201
(a) अज्ञ (b) नज्ञ (c) प्रज्ञ (d) चतुर

**28.** 'आस्था' का विलोम शब्द है
(a) अनास्था (b) अविश्वास (c) वैमनस्यता (d) अन्धविश्वास

**29.** 'इष्ट' का विलोम शब्द है
(a) विरोधी (b) अनिष्ट (c) प्रतिद्वन्द्वी (d) शत्रु

**30.** 'उद्घाटन' का विलोम शब्द है (म.प्र. लेखपाल भर्ती परीक्षा 20
(a) समाप्ति (b) लोकार्पण (c) विमोचन (d) समापन

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**31.** 'एक' का विलोम शब्द है
(हिमाचल प्रदेश (इलेक्शन कानूनगो) परीक्षा 2010)
(a) दो (b) अधिक
(c) बहुत (d) अनेक

**32.** 'ऐश्वर्य' का विलोम शब्द है
(a) अनैश्वर्य (b) वैभव
(c) विलासिता (d) दरिद्रता

**33.** 'ऋजु' का विलोम शब्द है (उ.प्र. बी.एड. परीक्षा 2008)
(a) सीधा (b) सरल
(c) तिर्यक् (d) वक्र

**34.** 'वारुण' का विलोम शब्द है (उ.प्र. बी.एड. परीक्षा 2010)
(a) कृतघ्न (b) कृथित
(c) शीलवान (d) निष्ठुर

**35.** 'कृतज्ञ' का विलोम शब्द है (दिल्ली वि.वि. बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010/ यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) कृतघ्न (b) कृतार्थ
(c) निन्दक (d) प्रत्युपकार

**36.** कृत्रिम का विलोम शब्द है (दिल्ली वि. वि. बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2009)
(a) सहज (b) असली
(c) प्राकृतिक (d) निर्मित

**37.** 'छिन्न' का विलोम शब्द है (इग्नू बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010)
(a) भिन्न (b) अभिन्न
(c) प्रक्षिप्त (d) संलग्न

**38.** 'जंगम' का विलोम शब्द है (उ.प्र. कृषि विपणन बोर्ड परीक्षा 2010/ अनुदेशक पात्रता परीक्षा 2008)
(a) स्थावर (b) प्रवाह
(c) सबल (d) दुर्बल

**39.** 'नैसर्गिक' का विलोम शब्द है
(राजस्थान बी.एस.टी.सी./एन.टी.टी. परीक्षा 2009)
(a) समानार्थक (b) कृत्रिम
(c) चमत्कार (d) इनमें से कोई नहीं

**40.** 'भोला' का विलोम है (राजस्थान बी.एस.टी.सी./एन.टी.टी. परीक्षा 2009)
(a) चालाक (b) तेजस्वी
(c) बुद्धिमान (d) चंचल

**41.** 'यथार्थ' का विलोम शब्द है
(यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) कृत्रिम (b) आदर्श
(c) उचित (d) अनुचित

**42.** 'विग्रह' का विलोम शब्द है
(यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) सन्धि (b) अविग्रह
(c) आग्रह (d) ग्रहण

**43.** 'संकीर्ण' का विलोम शब्द है
(यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) संक्षेप (b) विस्तार
(c) विकीर्ण (d) विस्तीर्ण

**44.** 'साधु' का विलोम शब्द है
(यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) साधुनी (b) सन्यासिन
(c) साध्वी (d) असाधु

**45.** 'आपेक्ष' का विलोम शब्द है (यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा/ उ.प्र. बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2011)
(a) असापेक्ष (b) निष्पक्ष
(c) निरपेक्ष (d) सापेक्ष

**46.** 'अपेक्षा' का विलोम शब्द है (उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा 2011)
(a) निन्दा (b) अनुपेक्षा
(c) उपेक्षा (d) तिरस्कार

**47.** 'सुलटाना' शब्द का विलोम शब्द है
(वेनगंगा कृष्णा ग्रामीण बैंक ऑफिसर्स (स्केल) परीक्षा 2011)
(a) निपटाना (b) मिटाना
(c) पलटाना (d) उलझाना

**48.** 'सृष्टि' का विलोम शब्द है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) विनाश (b) विध्वंस
(c) प्रलय (d) सृजन।

**49.** 'राजा' का विलोम शब्द है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) प्रजा (b) रानी
(c) सेनापति (d) रंक

**50.** निम्नलिखित में से कौन-सा विलोम शब्द युग्म गलत है?
(उत्तराखण्ड भर्ती परीक्षा 2014)
(a) इष्ट-अनिष्ट (b) छली-निश्छल
(c) उत्कर्ष-निष्कर्ष (d) सानुनासिक-निरनुनासिक

**51.** निम्नलिखित में से सही विलोम शब्द-युग्म कौन-सा है?
(उत्तराखण्ड भर्ती परीक्षा 2014)
(a) पाठ्य-सुपाठ्य (b) नत-अवनत
(c) शिष्ट-विशिष्ट (d) संश्लिष्ट-विश्लिष्ट

**52.** विलोम शब्द का कौन-सा युग्म सही नहीं है?
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) निष्पक्ष-पक्षधर (b) तिक्त-मधुर
(c) कल्पित-स्वप्निल (d) अकिंचन-सम्पन्न

**निर्देश** (प्र.सं. 53-63) *में दिए विलोम शब्द का चयन उसके नीचे दिए गए विकल्पों में से कीजिए।*

**53.** गोचर
(a) अगोचर (b) उभयचर (c) जलचर (d) नभचर

**54.** ज्योतिर्मय
(a) प्रकाशमय (b) तमोमय (c) विभावरी (d) शर्वरी

**55.** ऋजु
(उ.प्र. बी.एड प्रवेश परीक्षा 2008)
(a) सीधा (b) सरल (c) तिर्यक (d) वक्र

**56.** क्षमा
(a) बुरा (b) अनहित (c) दण्ड (d) प्रताड़न

**57.** खेचर
(a) भूचर (b) जलचर (c) परिचर (d) नभचर

**58.** गम्भीर
(a) शरारती (b) उत्पाती (c) वाचाल (d) सतर्क

**59.** अनादर
(उ.प्र. बी.एड प्रवेश परीक्षा 2008/ म.प्र. उच्च न्यायालय क्लर्क/स्टेनो परीक्षा 2010)
(a) मान (b) सम्मान (c) आदर (d) सत्कार

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**60. धरा**
(a) क्षिति (b) इला (c) गगन (d) अन्तरिक्ष

**61. इष्ट**
(a) विरोधी (b) अनिष्ट (c) प्रतिद्वन्द्वी (d) शत्रु

**62. कर्षण**
(a) आकर्षण (b) विकर्षण (c) प्रक्षेपण (d) फेंकना

**63. खण्डन**
(a) एकीकरण (b) प्रस्फुटन (c) विघटन (d) मण्डन

**निर्देश** (प्र.सं. 64-69) *में दिए विलोम शब्द का चयन उसके नीचे दिए गए विकल्पों में से कीजिए।*

**64. ओजस्वी**
(a) कायर (b) निस्तेज (c) भीरु (d) आलसी

**65. परमार्थ**
(a) स्वार्थ (b) स्वहित
(c) स्वलाभ (d) इनमें से कोई नहीं

**66. लघु**
(a) बड़ा (b) भारी (c) गुरु (d) वजन

**67. जड़**
(a) चेतन (b) प्राकृतिक (c) काली (d) लम्बी

**68. क्रिया**
(a) अनुक्रिया (b) प्रक्रिया (c) प्रतिक्रिया (d) क्रिया-कर्म

**69. प्रत्यक्ष**
(a) पीछे (b) ओझल (c) परोक्ष (d) नेपथ्य

**70.** 'कौटिल्य' का विलोम शब्द है *(यू.पी.एस.एस.एस.सी. चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)*
(a) मृदुलता (b) आर्तव (c) सार्दव (d) आर्जव

**71.** 'अवनि' का विलोम शब्द है *(यू.पी.एस.एस.एस.सी. चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)*
(a) धरा (b) शशांक
(c) अम्बर (d) सितारा

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** (d) | **2.** (a) | **3.** (b) | **4.** (b) | **5.** (a) | **6.** (b) | **7.** (d) | **8.** (c) | **9.** (b) | **10.** (d) |
| **11.** (b) | **12.** (b) | **13.** (d) | **14.** (b) | **15.** (a) | **16.** (c) | **17.** (d) | **18.** (d) | **19.** (a) | **20.** (a) |
| **21.** (a) | **22.** (d) | **23.** (b) | **24.** (c) | **25.** (c) | **26.** (c) | **27.** (a) | **28.** (a) | **29.** (b) | **30.** (d) |
| **31.** (d) | **32.** (a) | **33.** (d) | **34.** (d) | **35.** (a) | **36.** (c) | **37.** (d) | **38.** (a) | **39.** (b) | **40.** (a) |
| **41.** (b) | **42.** (a) | **43.** (d) | **44.** (d) | **45.** (c) | **46.** (c) | **47.** (c) | **48.** (c) | **49.** (d) | **50.** (c) |
| **51.** (b) | **52.** (c) | **53.** (a) | **54.** (b) | **55.** (d) | **56.** (c) | **57.** (a) | **58.** (c) | **59.** (c) | **60.** (c) |
| **61.** (b) | **62.** (b) | **63.** (d) | **64.** (b) | **65.** (a) | **66.** (c) | **67.** (a) | **68.** (c) | **69.** (c) | **70.** (c) |
| **71.** (c) | | | | | | | | | |

## अभ्यासार्थ प्रश्नावली

**1.** निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।
(क) आर्द्र (ख) सरस
(ग) अन्यमनस्क (घ) आकांक्षा
(ङ) कीर्ति (च) संकीर्ण
(छ) गुप्त (ज) तुच्छ
(झ) नश्वर (ञ) विशिष्ट
(ट) विस्तृत

**2.** निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।
(क) आविर्भाव (ख) कृत्रिम
(ग) चेतन (घ) जीवन
(ङ) निकट (च) असीम

**3.** निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।
(क) मानवीय (ख) अनुलोम
(ग) सामिष (घ) अमिज्ञ
(ङ) आधार (च) आकर्षण
(छ) उपमान (ज) ऊधम
(झ) पुरस्कार (ञ) उत्कर्ष

**4.** निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्द से मिलाइए।।

| | |
|---|---|
| (क) समास | (i) समापन |
| (ख) उद्घाटन | (ii) महान् |
| (ग) ग्राह्य | (iii) शाश्वत |
| (घ) तुच्छ | (iv) व्यास |
| (ङ) नश्वर | (v) त्याज्य |

**5.** निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के उपयुक्त विलोम शब्द लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
(क) सम्पन्न व्यक्ति ..... की व्यथा नहीं जान सकता।
(ख) सशक्त की विजय होती है, ..... को तो पराजित होना ही है।
(ग) गाँधी जी के अनुसार अत्याचार का उत्तर ..... से देना ही मनुष्यता है।
(घ) घृणा को ..... से जीतो।
(ङ) तुम्हारे पक्ष में कितने वोट पड़े और ..... में कितने?

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# 6

# अनेकार्थक शब्द

*अनेकार्थक शब्द का अर्थ है—अनेक अर्थ वाला, अर्थात् जिन शब्दों से एक से अधिक अर्थ-बोध होता है, उन्हें अनेकार्थक (Homonyms) कहते हैं।*

हिन्दी साहित्य में अनेकार्थी शब्दों का प्रयोग अधिकतर काव्य में ही मिलता है। काव्य के रसास्वादन के लिए इनका ज्ञान आवश्यक है। इन्हीं शब्दों द्वारा कवियों ने य और श्लेष अलंकारों का भरपूर प्रयोग किया है। विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु अनेकार्थक शब्दों की सूची प्रस्तुत है

| शब्द | अनेकार्थक शब्द |
|---|---|
| अंक | गिनती के अंक, गोद, भाग्य, चिह्न, रूपक के दस भेदों में से एक, नाटक का अध्याय। |
| अंकोर | दोपहरी, रिश्वत, भेंट, गोद, कलेवा। |
| अंग | शरीर, टुकड़ा, अवयव, भेद, पक्ष, सहायक, भाग, हिस्सा। |
| अक्रूर | कृष्ण के चाचा, मित्र, कोमल स्वभाव वाला। |
| अचल | अटल, पहाड़, निश्चल, स्थिर, वृक्ष, पार्वती। |
| अज | बकरा, दशरथ के पिता, अजन्मा, शिव, ब्रह्मा, मेषराशि, जीव, आत्मा, कामदेव। |
| अजया | बकरी, भाँग, विजया। |
| अच्युत | स्थिर, विष्णु, कृष्ण, अपतित। |
| अक्षर | वर्ण, ईश्वर, आत्मा, स्थिर, शिव, विष्णु, अविनाशी। |
| अधर | होंठ, आकाश, अनाधार, नीच, बुरा, चंचल। |
| अदिति | पृथ्वी, प्रकृति, देवताओं की माता, रक्षा, देवलोक, वाणी। |
| अमृत | जल, दूध, अमर, अन्न, सुधा, पारा, प्रिय, सुन्दर, आत्मा, शिव, घी, धन। |
| अब्ज | कपूर, अरब की संख्या, कमल, चन्द्रमा, शंख। |
| अब्द | बादल, वर्षा, मेघ, आकाश, साल। |
| अपेक्षा | आशा, आवश्यकता, इच्छा, आकांक्षा, लालच, अनुरोध, भरोसा, तुलना। |
| अनन्त | अन्तहीन, शेषनाग, लक्ष्मण, आकाश, विष्णु। |
| अरस | आकाश, नीरस, आलस्य, महल, रसशून्य, अनाड़ी, सुस्ती, बेस्वाद। |
| अरुण | सूर्य का सारथी, लाल, सूर्य, गरुड़, तड़का, सिन्दूर, केसर। |
| अन्तर | फ़र्क, भीतर, अन्तरिक्ष, समय, व्यवधान। |
| अपवाद | किसी नियम के विपरीत, कलंक, निन्दा, विरोध, आदेश, आज्ञा। |
| अतिथि | मेहमान, अग्नि, अपरिचित, संन्यासी, आगन्तुक, अभ्यागत। |
| अर्क | सूर्य, सत्त्व, ताँबा, बिजली की चमक, स्फटिक, मदार, क्वाथ (काढ़ा) रविवार। |
| अर्थ | धन, प्रयोजन, तात्पर्य, कारण, लिए, अभिप्राय, निमित्त, फल, वस्तु, प्रकार। |
| अलि | सखी, भ्रमर, कोयल, बिच्छू, मदिरा, कौआ, कोयल, सहेली, पंक्ति, बाँध, सेतु। |
| अवि | सूर्य, पहाड़, पर्वत, आक, भेड़, मेष, वायु, कम्बल। |
| अहि | दुष्ट, सूर्य, साँप, राहु, पृथ्वी, जल, बादल। |

| शब्द | अनेकार्थक शब्द |
|---|---|
| आम | सामान्य, एक फल, मामूली, अपक्व, आँव, कच्चा, आम्र। |
| आत्मज | पुत्र, कामदेव, बेटा। |
| आन | दूसरा, क्षण, शपथ, टेक, सीमा, बनावट, लज्जा, प्रतिज्ञा, विचार। |
| आतुर | उत्सुक, उतावला, रोगी, कमज़ोर, दु:खी, आहत, पीड़ित, व्यग्र, व्याकुल। |
| आराम | विश्राम, वाटिका, एक प्रकार का दण्डक वृत्त, फुलवाड़ी। |
| आसुग | मन, वायु, वाण। |
| इतर | अन्य, नीच, चरस, अन्त्यज, अवशेष, बाकी, साधारण, दूसरा। |
| इन्दु | गणित में एक की संख्या, चन्द्रमा, कपूर। |
| उरु | जाँघ, विशाल, श्रेष्ठ, विस्तीर्ण, अधिक मूल्यवान, जाँच। |
| उर्मी | लहर, पीड़ा, तरंग, प्रकाश, वेग, भंग, भ्रान्ति, भूल। |
| ऐन | कस्तूरी, घर, पूर्ण, आँख, उपयुक्त, ठीक। |
| ओस | गीला, गोद, धरोहर, बहाना, जिमीकन्द। |
| कंज | कमल, सिर के बाल, अमृत, ब्रह्म, केश। |
| कनक | सोना, धतूरा, गेहूँ, आटा, खजूर, नागकेसर, पलास। |
| कर | हाथ, टैक्स, सूँड, किरण, ओला, विषय, छल, युक्ति, काम। |
| कल | मशीन, चैन, आने वाला कल, बीता हुआ कल, शान्ति, सुन्दर। |
| कन्द | जड़, मिश्री, बादल, समूह, सूरन, गाँठ, शोथ। |
| कटाक्ष | आक्षेप, तिरछी चितवन, व्यंग्य। |
| कर्ण | कान, कुन्ती का पुत्र, समकोण त्रिभुज के सामने [illegible]। |
| काम | कार्य, इच्छा, कामना, अनुराग, चार पुरुषार्थों में एक पुरुषार्थ काम। |
| काल | समय, शत्रु, यमराज, अवसर, अकाल। |
| कुशल | चतुर, क्षेम (खैरियत), योग्य, कुश लाने वाला। |
| कृष्ण | भगवान कृष्ण, काला, वेदव्यास। |
| केतु | एक ग्रह, ध्वजा, पुच्छल तारा, ज्ञान, प्रकाश। |
| कौशिक | विश्वामित्र, इन्द्र, सपेरा, उल्लू, नेवला। |
| खग | पक्षी, वाण, गन्धर्व, सूर्य, ग्रह, चन्द्रमा, देवता, वायु। |
| खर | गधा, दुष्ट, तिनका, गर्दभ, खच्चर, कौआ, रावण के भाई का नाम। |
| खल | दवा कूटने का पात्र, धतूरा, दुष्ट। |
| गण | समूह, छन्दों में तीन वर्णों का समूह, शिव के अनुचर। |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

| शब्द | अनेकार्थक शब्द |
|---|---|
| गति | चाल, मोक्ष, हालत, गमन, परिणाम, ज्ञान, प्रमाण, मुक्ति, कर्मफल, दशा। |
| गुरु | शिक्षक, बड़ा, माता-पिता, भारी, छन्द में दीर्घ, मात्रा। |
| गोपाल | गाय पालने वाला, कृष्ण, ग्वाला, किसी लड़के का नाम। |
| गौतम | गौतम बुद्ध, द्रोणाचार्य का साला, भारद्वाज। |
| गौतमी | हल्दी, गोदावरी नदी, गोरोचन, गौतम ऋषि की पत्नी, अहिल्या, दुर्गा |
| घट | शरीर, घड़ा, कम, कलश, जलपात्र, पिण्ड, मन, हृदय, न्यून। |
| घन | हथौड़ा, बादल, बड़ा, मेघ, समूह, विस्तार, अभ्रक। |
| घुटना | कष्ट सहना, साँस लेने में कठिनाई, पाँव का मध्य भाग। |
| चक्र | कुम्हार का चाक, विष्णु का अस्त्र, पहिया, वायु का भँवर, दल। |
| चक्री | विष्णु, कुम्हार, गाँव का पुरोहित, चकवा पक्षी, कौआ। |
| चपला | चंचल स्त्री, लक्ष्मी, बिजली, मदिरा, जीभ, भाँग। |
| चर | विचरण करने वाला, पशुओं के चरने का स्थान, जासूस। |
| चाप | धनुष, दबाव, परिधि का एक भाग, धनु राशि। |
| चारा | पशुओं का भोजन, उपाय, आचरण, घास, जिस वस्तु को बंसी में लगाकर मछली फँसाई जाती है। |
| छन्द | काव्य, बहाना, छल, मत, युक्ति, रंग-ढंग, अभिप्राय, कविता। |
| छाजन | छप्पर, वस्त्र, अपरस, खपरैल की छवाई, आच्छादन। |
| जड़ | मूल, मूर्ख, हठी, अचेतन, स्तब्ध, चेष्टाहीन, मूक, गूँगा। |
| जर | जल, जड़, ज्वर, जरा, वृद्धावस्था। |
| जलज | कमल, शंख, सीप, मोती, सेवार, मछली, चंद्रमा |
| जालक | झरोखा, जाल, घोंसला, गवाक्ष। |
| जीव | जन्तु, जीविका, बृहस्पति, जीवात्मा। |
| जीवन | ज़िन्दगी, वायु, जल, वृत्ति, प्राणधारण, पानी, घी, मज्जा, परमात्मा, पुत्र |
| जोड़ | योग, मेल, गाँठ, समानता, एक ही तरह की दो वस्तुएँ। |
| जया | पार्वती, दुर्गा, हरी दूब, पताका, त्रयोदशी, ध्वजा, हरड़। |
| टीका | तिलक, व्याख्या, चेचक आदि का टीका, धब्बा, फलदान |
| ठाकुर | जाति विशेष, भगवान, स्वामी, नाई, बड़ा |
| ढाल | रक्षक, उतार, धातुओं की ढलाई, ढलुवाँ भूमि, ढार, प्रकार, रीति, ढंग। |
| तक्षक | विश्वकर्मा, बढ़ई, सूत्रधार, सर्प विशेष। |
| तारा | बृहस्पति की स्त्री, नक्षत्र, बालि की स्त्री, आँख के बीच की काली पुतली। |
| ताल | संगीत का ताल, झील, तालाब, ताड़ का वृक्ष। |
| तीर | बाण, नदी का किनारा, किनारा, तट, समीप। |
| तात | पूज्य, पिता, गुरु, मित्र, भाई। |
| द्रोण | द्रोणाचार्य, कौआ, दोना, नाव, मानव रहित विमान। |
| दहर | छोटा भाई, कुण्ड, नरक, छछून्दर, चूहा, बालक। |
| दिवा | दिन, दीपक, दिवस, बाईस अक्षरों का एक वर्ण वृत्त। |
| धन | जोड़, स्त्री, सम्पत्ति, लाभ, द्रव्य, पूँजी, चौपायों का समूह। |
| धर्म | सम्प्रदाय, स्वभाव, कर्त्तव्य, प्रकृति। |
| धारा | सन्तान, सेना, नियम, पानी का झरना, धार, झुण्ड। |
| नाक | स्वर्ग, इज्जत, एक फल, नासिका, अन्तरिक्ष, आकार, मान, प्रतिष्ठा। |
| नाग | सर्प, हाथी, बादल, नागवल्ली, एक पर्वत। |
| नागर | चतुर, नागरमोथा, नागरिक, सोंठ, पौर, सभ्य व्यक्ति, नारंगी। |

| शब्द | अनेकार्थक शब्द |
|---|---|
| निशाचर | राक्षस, चोर, उल्लू, सियार, सर्प, बिल्ली, प्रेत, भूत, महादेव। |
| पत्र | पत्ता, चिट्ठी, पन्ना, आवरण। |
| पानी | इज्जत, जल, चमक, शस्त्र की धार। |
| फल | परिणाम, लाभ, सन्तान, खाने वाला फल, हल। |
| बलि | पितरों को दिया गया भोग, एक राजा, उपहार, न्यौछावर, बलिहारी। |
| बहार | वसन्त, एक राग, आनन्द। |
| बल | शक्ति, सेना, बलराम, पार्श्व, बगल, लपेट, ऐंठन, सिकुड़न, अन्तर। |
| बिम्ब | छाया, चन्द्रमण्डल, बाँबी, घेरा, सूर्य। |
| भा | चमक, शोभा, बिजली, किरण, प्रभा, कान्ति, प्रकाश, दीप्ति |
| भाव | विचार, अभिप्राय, मनोविकार, दर, श्रद्धा, अस्तित्व, सारांश। |
| भूत | प्रेत, पंचभूत, बीता हुआ समय, मृत शरीर, तत्त्व, सत्य। |
| मधु | शहद, वसन्त, पराग, चैत्रमास, ऋतु, शराब। |
| माधव | वसन्त ऋतु, विष्णु, बैसाख महीना, श्रीकृष्ण |
| मद | नशा, मस्ती, हाथी के मस्तक का स्राव, गर्व, कस्तूरी, अभिमान। |
| मुद्रा | सिक्का, छापा, आकृति, कुण्डल, चिह्न, अँगूठी। |
| मूल | पूँजी, एक नक्षत्र, जड़, कन्द, आरम्भ, पास, समीप। |
| रंग | सातों रंग, आनन्द, विलास, नाटक का प्रदर्शन, शोभा, सौंदर्य, प्रेम, राग |
| रम्भा | वेश्या, एक अप्सरा, केला, कदली, गौरी, उत्तर दिशा। |
| रक्त | खून, केशर, लाल, कुंकुम, ताँबा, कमल, सिन्दूर, रुधिर। |
| रसाल | ईख, आम, मीठा, रसीला, कटहल, गेहूँ, अमलबेंत। |
| राशि | समूह, मेष-वृष आदि 12 राशियाँ, ढेर, पुंज, समुच्चय। |
| वंग | राँग, कपास, बंगाल प्रान्त। |
| वर्ण | रंग, अक्षर, चतुर्वर्ण्य, भेद, रूप। |
| वन | वाटिका, जंगल, पानी, भवन, काठ का पात्र |
| विधि | रीति, भाग्य विधाता, ईश्वर, कार्यक्रम, योजना, प्रकार, कानून, संगति। |
| वृत्त | गोल-घेरा, हाल, चरित्र। |
| विहंग | पक्षी, वाण, बादल, विमान, सूर्य, चन्द्रमा, देवता। |
| शर | सरकण्डा, बाण, तीर, नरकट, जल, पाँच की संख्या, रूस। |
| शरभ | ऊँट, एक मृग, टिड्डी, सिंह, हाथी का बच्चा, विष्णु। |
| सरि | समता, माला, नदी, सरिता, बराबरी, सदृश। |
| सारंग | हिरन, बादल, पानी, मोर, शंख, पपीहा, हाथी, सिंह, राजहंस, भ्रमर, कपूर, कामदेव, कोयल, धनुष, मधुमक्खी, कमल, भूषण। |
| सार | रस, रक्षा, जुआ, लाभ, उत्तम, पत्नी का भाई, तलवार, तत्त्व। |
| सिता | चाँदी, चमेली, चाँदनी, शकर, गोरोचन, सफेद दूब। |
| सूर | वीर, अन्धा, एक कवि, सूर्य, अर्क, मदार, आचार्य, पण्डित। |
| सूत | बढ़ई, धागा, पौराणिक, सारथी, सूत्रकार, सूर्य, पारा। |
| सैन | सेना, संकेत, बाजपक्षी, इंगित, लक्षण, चिह्न। |
| हरि | विष्णु, इन्द्र, बन्दर, हवा, सर्प, सिंह, आग, कामदेव, हंस, मेंढक, चाँद, हरा रंग। |
| हीन | नीचा, तुच्छ, कम, रहित, छोड़ा हुआ, अल्प, निष्कपट, बुरा, शून्य। |
| हेम | सोना, तुषार, इज़्ज़त, पीला रंग। |
| हंस | आत्मा, योगी, श्वेत, घोड़ा, सूर्य, सरोवर का पक्षी। |
| क्षेत्र | शरीर, तीर्थ, गृह, प्रकृति, खेल, स्त्री। |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**निर्देश** (प्र. सं. 1-36) *सभी प्रश्नों में दिए गए शब्दों के अर्थ विकल्पों में दिए गए हैं। इनमें से कोई एक विकल्प गलत है। आपको गलत विकल्प अर्थात् जो सम्बन्धित शब्द का अर्थ नहीं है, का चयन कर चिह्नित करना है।*

**1.** अंक
(a) दैनन्दिनी (b) गोद
(c) भाग्य (d) संख्या

**2.** अक्षर
(a) वर्ण (b) अक्षत
(c) आत्मा (d) स्थिर

**3.** अज
(a) अजन्मा (b) बकरा
(c) संन्यासी (d) मेष राशि

**4.** अधर
(a) आकाश (b) अनाधार
(c) होंठ (d) पाताल

**5.** अपेक्षा
(a) निराशा (b) आशा
(c) आवश्यकता (d) इच्छा

**6.** अमृत
(a) अमर (b) अनमोल
(c) दूध (d) जल

**7.** अर्क
(a) सत्त्व (b) सूर्य
(c) बुध (d) ताँबा

**8.** अर्थ
(a) कारण (b) प्रयोजन
(c) धन (d) अन्न

**9.** अलि
(a) रूपसी (b) सखी
(c) बिच्छू (d) भ्रमर

**10.** आम
(a) सामान्य (b) अप्रचलित
(c) व्यापक (d) एक फल का नाम

**11.** इतर
(a) अन्य (b) चरस
(c) ऊँच (d) नीच

**12.** उत्तर
(a) बाद में (b) श्रेष्ठ
(c) उत्तर दिशा (d) प्रश्न

**13.** कनक
(a) बिच्छू (b) आटा
(c) धतूरा (d) सोना

**14.** कुशल
(a) क्षेम (b) क्षमा (c) चतुर (d) योग्य

**15.** खग
(a) वाण (b) पक्षी (c) मृग (d) गन्धर्व

**16.** खर
(a) दुष्ट (b) तिनका
(c) गधा (d) श्रृगाल

**17.** गुरु
(a) उत्कोच (b) छन्द में दीर्घ
(c) माता-पिता (d) शिक्षक

**18.** गोपाल
(a) ग्वाला (b) बटुक
(c) कृष्ण (d) गाय पालने वाला

**19.** गोली
(a) दवा की टिकिया (b) कारतूस
(c) धोखेबाज (d) खेल में गोल रक्षक

**20.** गौतम
(a) महात्मा बुद्ध (b) भारद्वाज
(c) द्रोणाचार्य का साला (d) महावीर

**21.** गौतमी
(a) वृद्धा स्त्री (b) हल्दी
(c) गोरोचन (d) गोदावरी नदी

**22.** घुटना
(a) कष्ट सहना (b) सहनशीलता
(c) पाँव का मध्य भाग (d) साँस लेने में कठिनाई

**23.** चपला
(a) लक्ष्मी (b) बिजली
(c) महिला (d) चंचल स्त्री

**24.** छन्द
(a) छल (b) बहाना
(c) काव्य (d) उपाय

**25.** जीव
(a) निर्जीव (b) जी
(c) प्राणी (d) बृहस्पति

**26.** जीवन
(a) वायु (b) कर्त्तव्य
(c) प्राण (d) जिन्दगी

**27.** जलज
(a) कमल (b) शंख
(c) कपोत (d) मछली

**28.** टीका
(a) तिलक (b) फलदान
(c) व्याख्या (d) आडम्बर

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

**29.** ठाकुर
(a) सेवक (b) स्वामी (c) भगवान (d) जाति विशेष

**30.** तक्षक
(a) बढ़ई (b) शिलान्यास (c) विश्वकर्मा (d) सूत्रधार

**31.** द्विज
(a) पक्षी (b) दाँत
(c) गौना (d) ब्राह्मण

**32.** धन
(a) सम्पत्ति (b) जोड़
(c) स्त्री (d) नरेश

**33.** धर्म
(a) अध्ययन (b) स्वभाव
(c) प्रकृति (d) कर्तव्य

**34.** निशाचर
(a) उल्लू (b) हाथी
(c) चोर (d) राक्षस

**35.** पानी
(a) चमक (b) इज्जत
(c) संजीवनी (d) जल

**36.** पास
(a) निकट (b) उत्तीर्ण
(c) परान्द (d) पीतक

**37.** निम्नलिखित अनेकार्थी शब्द का दूसरा अर्थ बताइए
अज-अजन्मा (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) निर्भीक (b) आजीवन
(c) ईश्वर (d) आजन्म

**निर्देश** (प्र.सं. 38-40) *निम्न प्रश्नों में अनेकार्थी शब्द दिए गए हैं। एक अर्थ शब्द के साथ ही लिखा है, दूसरा अर्थ बताइए।*

**38.** कनक-धतूरा
(a) सोना (b) प्रसाद
(c) कसौटी (d) आभूषण

**39.** प्रमत्त-स्वेच्छाचारी (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) उत्कृष्ट (b) उन्मत्त
(c) प्रपीड़ित (d) परितप्त

**40.** अनेकार्थी शब्दों का कौन-सा युग्म सही नहीं है?
(a) नाना – अनेक, माँ के पिता
(b) अयन – दिशा, वन
(c) सैंधव – नमक, घोड़ा
(d) नाक – स्वर्ग, नासिव

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** (a) | **2.** (b) | **3.** (c) | **4.** (d) | **5.** (a) | **6.** (b) | **7.** (c) | **8.** (d) | **9.** (a) | **10.** (b) |
| **11.** (c) | **12.** (d) | **13.** (a) | **14.** (b) | **15.** (c) | **16.** (d) | **17.** (a) | **18.** (b) | **19.** (c) | **20.** (d) |
| **21.** (a) | **22.** (b) | **23.** (c) | **24.** (d) | **25.** (a) | **26.** (b) | **27.** (c) | **28.** (d) | **29.** (a) | **30.** (b) |
| **31.** (c) | **32.** (d) | **33.** (a) | **34.** (b) | **35.** (c) | **36.** (d) | **37.** (c) | **38.** (a) | **39.** (b) | **40.** (b) |

# अभ्यासार्थ प्रश्नावली

**1.** निम्नलिखित शब्दों के अनेक अर्थ लिखिए।
कनक, हेम, हार, हंस और रसाल

**2.** निम्न अनेकार्थी शब्दों के दो-दो अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
(i) विधि (ii) अलि
(iii) पानी (iv) पतंग

**3.** निम्नलिखित अनेकार्थक शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए।
(i) अम्बर (ii) अरुण
(iii) केतु (iv) गुण
(v) तीर (vi) पर

**4.** निम्नलिखित शब्दों के दो-दो भिन्नार्थक अर्थ दीजिए और इन अर्थों में इनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए।
(i) ताल (ii) नाग
(iii) उत्तर (iv) अर्थ
(v) कर

**5.** निम्नलिखित विकल्पों में से अनेकार्थी शब्द को पहचानकर चिह्नित कीजिए।
(i) (a) आँख (b) अंग
(c) कान (d) नाक
(ii) (a) मृगांक (b) शशांक
(c) इन्दु (d) चन्द्रमा
(iii) (a) शिक्षक (b) विद्यार्थी
(c) परीक्षार्थी (d) उत्तर
(iv) (a) कनक (b) गेहूँ
(c) चावल (d) दालें
(v) (a) करवट (b) कल
(c) निद्रा (d) विश्राम
(vi) (a) गेंद (b) हॉकी
(c) गोली (d) खिलाड़ी

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# 7

# समोच्चारित-भिन्नार्थक शब्द

*बहुत से शब्द ऐसे होते हैं जिनका उच्चारण समान-सा होता है, लेकिन उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं, ऐसे शब्दों को समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। दूसरे शब्दों में हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि–ऐसे शब्द, जिनकी वर्तनी (Spelling) में थोड़ा-सा अन्तर होने के कारण समानता का आभास होता है, परन्तु अर्थ की दृष्टि से उनमें कोई समानता नहीं होती है, समोच्चारित भिन्नार्थक (Paronyms) शब्द कहलाते हैं।*

समोच्चारित-भिन्नार्थक शब्दों को 'युग्म-शब्द', 'समध्वन्यात्मक शब्द', 'समानाभास शब्द' भी कहते हैं। जैसे—'अनल' और 'अनिल' शब्द का उच्चारण समान-स लेकिन अनल का अर्थ है—'आग' और 'अनिल' का अर्थ है—'वायु'। विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु समोच्चारित भिन्नार्थक शब्दों की तालिका प्रस्तुत है

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| अकर | न करने योग्य |
| आकर | खान/खदान |
| अग | सूर्य/अचल |
| अघ | पाप |
| अचल | स्थिर |
| अंचल | साड़ी का छोर/किनारा |
| अंचित | गुथा हुआ/पूजित |
| अचित् | जड़/चेतन रहित |
| अजय | जो जीता न जा सके |
| अजया | भौंग/बकरी |
| अतप | शीतल |
| आतप | धूप |
| अनल | आग |
| अनिल | वायु |
| अंगना | स्त्री |
| अँगना | छोटा/आँगन |
| अन्त | समाप्ति |
| अन्त्य | नीच |
| अन्तर | भिन्नता |
| अनन्तर | बाद में |
| अपर | दूसरा |
| अपार | असीम |
| अम्बुज | कमल |
| अम्बुधि | समुद्र |
| अंश | भाग/हिस्सा |
| अंस | कन्धा |
| अतल | जिसका तल न हो |
| अतुल | जिसकी तुलना न हो |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| अपेक्षा | तुलना में/आशा |
| उपेक्षा | त्याग/तिरस्कार |
| अर्थ | मतलब |
| अर्थ | धन |
| अभ्यास | किसी काम को बार-बार करना |
| अभ्याश | निकट |
| अम्ब | माता |
| अम्बु | जल |
| अगम | दुर्लभ |
| आगम | शास्त्र/उत्पत्ति |
| अणी | नोंक/अनी |
| आणि | तलवार की धार |
| अभिज्ञ | जानकार |
| अनभिज्ञ | अनजान |
| अभिसार | प्रेमी से छिपकर मिलना |
| अभीसार | आक्रमण |
| अरथी | टिकठी/झाँजी |
| अर्थी | चाहने वाला |
| अरबी | अरब की भाषा |
| अरवी | कन्द या घुइयाँ |
| अनिष्ट | बुराई/हानि |
| अनिष्ठ | निष्ठाहीन |
| अमित | बहुत/अधिक |
| अमीत | दुश्मन |
| अमूल | बेजड़ |
| अमूल्य | अनमोल |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| अधूत | निर्भय |
| अवधूत | योगी |
| अब्ज | कमल |
| अब्द | वर्ष |
| अभिराम | सुन्दर |
| अविराम | लगातार |
| अपकार | बुराई |
| अपमान | तिरस्कार |
| अभिहित | पीटा गया |
| अभिहत | पुकारा गया |
| अभियान | चढ़ाई |
| अभिमान | घमण्ड |
| अविरोध | मेल |
| अवरोध | रुकावट |
| अविलम्ब | तुरन्त |
| अवलम्ब | सहारा |
| अर्जन | संग्रह |
| अर्चन | पूजा |
| अर्घ | जलदान |
| अर्घ्य | पूजाद्रव्य |
| अजर | जो पुराना न हो |
| अजिर | आँगन |
| अलिक | ललाट |
| अलीक | झूठ |
| अलि | भौंरा |
| आली | सखी |
| अवलि | पंक्ति |
| आविल | गन्दा |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| अशक्त | असमर्थ |
| असक्त | उदासीन |
| अपत | बिना पत्ते का |
| अपट | वस्त्रहीन |
| अश्व | घोड़ा |
| अश्य | पत्थर |
| अभिज्ञ | जानकार |
| अविज्ञ | मूर्ख |
| अभय | निर्भय |
| उभय | दोनों |
| अन्न | अनाज |
| अन्य | दूसरा |
| आवृत | घिरा हुआ |
| आवृत्ति | दोहराना |
| आदि | आरम्भ |
| आदी | अभ्यस्त |
| आसक्त | लिप्त |
| आसकत | सुस्ती |
| आकार | आकृति |
| आकर | खान |
| आसन | लेटने या बैठने का |
| आसन्न | निकट |
| आँटी | सूत का लच्छा |
| आँठी | गुठली |
| आरति | दुःख/विरक्ति |
| आरती | धूप-दीप दिखाना |
| आहूत | बुलाया हुआ |
| आहूति | होम |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| आभरण | आभूषण |
| आवरण | पर्दा/पट |
| आयत | लम्बा/चौड़ा |
| आयात | बाहर से आया हुआ |
| इति | अन्त |
| ईति | आपदा |
| इन्दिरा | लक्ष्मी |
| इन्द्रा | इन्द्राणी |
| इत्र | सुगन्ध |
| इतर | दूसरा/चरस |
| इस्तरी | वह उपकरण जिससे कपड़ों को 'प्रेस' किया जाता है। |
| स्त्री | महिला |
| ईश | स्वामी/मालिक |
| ईष | शिव का एक अनुचर |
| ईसा | हरिष/बल |
| ईशा | ऐश्वर्य/दुर्गा/ईसा मसीह |
| उपमान | तुलना |
| उपकार | भलाई |
| उपल | पत्थर |
| उपला | कण्डा |
| उबारना | बचाना |
| उभारना | उकसाना/ऊँचा करना |
| उपयुक्त | उचित |
| उपर्युक्त | ऊपर कहा गया |
| उद्धार | कष्ट से मुक्ति |
| उधार | कर्ज |
| उद्धत | अक्खड़/उद्दण्ड |
| उद्यत | तैयार |
| उपस्थिति | उपलब्धता |
| उपस्थित | हाजिर |
| उत्कच | गंजा |
| उत्कट | तीव्र/प्रबल |
| ऋत् | सत्य |
| ऋतु | मौसम |
| ओटना | बिनौले अलग करना |
| औटना | खौलने की क्रिया |
| ओर | तरफ |
| और | तथा |
| करण | साधन |
| कर्ण | कान |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| कथा | कहानी |
| कत्था | खैर का सत |
| कड़ी | सख्त |
| कढ़ी | दही और बेसन का सालन |
| कटिबन्ध | नाड़ा |
| कटिबद्ध | तैयार |
| कड़ाई | कड़ापन |
| कढ़ाई | कशीदाकारी |
| कटौती | कमी |
| कठौती | काठ का बर्तन |
| कँटीला | काँटेदार |
| कटीला | काटने वाला |
| कंकाल | अस्थिपंजर |
| कंगाल | दरिद्र |
| किला | गढ़ |
| कीला | खूँटी/कील |
| कुल | वंश |
| कूल | किनारा |
| कुच | स्तन |
| कूच | प्रस्थान |
| कुट | किला/घर |
| कूट | पहाड़ की चोटी/व्यंग्य |
| कुमार | बिना ब्याहा |
| कुम्हार | बर्तन बनाने वाला |
| कृति | रचना |
| कृती | पुण्यात्मा/विद्वान् |
| कृपण | कंजूस |
| कृपाण | तलवार |
| केश | बाल |
| केस | मुकदमा |
| केशर | सिंह की गर्दन के बाल |
| केसर | जाफरान/कुमकुम |
| कोशल | अवध प्रदेश |
| कौशल | नैपुण्य |
| कोड़ी | बीस या बीसका समूह |
| कौड़ी | कपर्दिका |
| कोर | किनारा |
| कौर | ग्रास |
| कपिश | मटमैला |
| कपीश | हनुमान्/सुग्रीव |
| कर्ता | एक प्रकार का कारक |
| करता | करना |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| कोश | शब्दकोश |
| कोष | खजाना |
| खरीच | अमितव्ययी |
| खरोंच | छिल जाने या रगड़ का चिह्न |
| ग्रह | सूर्य/चन्द्र आदि नक्षत्र |
| गृह | घर |
| गाड़ी | सवारी/यान |
| गाढ़ी | घनी |
| गिरि | पर्वत |
| गिरी | बीज का गूदा |
| गिरा | वाणी |
| गिरा | पतित |
| गेय | गाने वाला |
| ज्ञेय | जो जाना जा सके |
| गूँधना | सानना |
| गूथना | पिरोना |
| चरित | जीवनी |
| चरित्र | आचरण |
| चित्त | मन . |
| चित | पड़ा हुआ |
| चिर | दीर्घ |
| चीर | कपड़ा |
| चपत | थप्पड़ |
| चम्पत | गायब |
| चरस | गाँजा/अतर |
| चरसा | चमड़े का थैला |
| चक्रवाक | चकवा पक्षी |
| चक्रवात | बवन्डर |
| चिता | मुर्दा जलाने वाली |
| चिन्ता | सोचनीय भाव |
| छात्र | विद्यार्थी |
| छत्र | छत |
| जरा | थोड़ा/अल्प |
| जरा | बुढ़ापा |
| जन्ता | चक्की |
| जनता | लोग |
| जरठ | बूढ़ा |
| जठर | पेट |
| जुड़ा | संलग्न |
| जूड़ा | केशों का बन्धन |
| जुआ | बैलों के कन्धे की लकड़ी |
| जूआ | द्यूत क्रीड़ा |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| जूठा | उच्छिष्ट भोजन |
| झूठा | असत्यवादी |
| जगत् | संसार |
| जगत | कुएँ का चबूतरा |
| छर | छर्रों के वेग से निकलने का शब्द |
| झर | पानी गिरने का स्थान |
| डोल | लोहे का बर्तन |
| ढोल | ढाँचा |
| डोंगी | छोटी नाव |
| ढोंगी | पाखण्डी |
| डीठ | नजर |
| ढीठ | धृष्ट |
| डाल | वृक्ष की शाखा |
| ढाल | रक्षक |
| ढलाई | ढालने की क्रिया |
| ढिलाई | शिथिलता |
| ताक | घूरकर देखना |
| ताख | दीवार का आला |
| तरणि | सूर्य |
| तरणी | नाव |
| तोष | सन्तुष्टि |
| तोश | हिंसा |
| तरंग | लहर |
| तुरंग | घोड़ा |
| थति | धरोहर |
| तिथि | दिनांक |
| दशा | हालत |
| दिशा | तरफ |
| दारू | शराब |
| दारु | लकड़ी |
| दशन | काटना |
| दंशन | दाँत |
| दिया | देना |
| दीया | दीपक |
| दिन | दिवस |
| दीन | गरीब |
| दीप | दीपक |
| द्वीप | टापू |
| देव | देवता |
| दैव | भाग्य |
| दारा | स्त्री |
| द्वारा | मार्फत |

Download From: https://sarkaripot.in/
Scanned by CamScanner

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| द्रव | तरल पदार्थ |
| द्रव्य | वस्तु |
| धन | सम्पत्ति |
| धना | प्रीतम |
| धान | अन्न विशेष |
| धन्य | सराहना |
| नन्दी | शिवजी का बैल |
| नान्दी | मंगलाचरण |
| नाइ | तरह/समान |
| नाई | बाल काटने वाला |
| नाड़ी | शिरा या नब्ज |
| नारी | स्त्री |
| नित | प्रतिदिन |
| नत | झुका हुआ |
| निर्वाण | मोक्ष |
| निर्माण | बनाना |
| नीत | लाया हुआ |
| नीति | सदाचार पद्धति |
| नावक | वाण |
| नाविक | मल्लाह |
| निमित्त | हेतु |
| नमित | झुका हुआ |
| नाहर | सिंह |
| नहर | पानी की कुल्या |
| निर् | बिना |
| निरा | विशुद्ध |
| नीर | पानी |
| नीरा | ताड़ का रस |
| निसान | झण्डा |
| निशान | चिह्न |
| निहित | छिपा हुआ/मौजूद |
| निहत | मारा हुआ |
| नियत | निश्चित |
| नियति | इरादा |
| नीरद | बादल |
| नीरज | कमल |
| परुष | कठोर |
| पुरुष | नर/मर्द |
| पट | वस्त्र |
| पट्ट | तख्ती |
| परिणाम | फल |
| परिमाण | मात्रा |
| पास | निकट |
| पाश | बन्धन |
| प्रदीप | दीपक |
| प्रतीप | उल्टा |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| प्रसाद | भोग/कृपा |
| प्रासाद | महल |
| प्रणाम | अभिवादन शब्द |
| प्रमाण | सबूत |
| पता | ठिकाना |
| पत्ता | पर्ण |
| पतन | गिरना |
| पत्तन | बन्दरगाह |
| पड़ना | गिरना |
| पढ़ना | अध्ययन |
| पथ | रास्ता |
| पंथ | मत |
| पवन | हवा |
| पावन | पवित्र |
| प्रवाह | बहाव |
| परवाह | फ़िक्र/ध्यान |
| प्रदेश | प्रान्त |
| परदेश | विदेश |
| प्रचारक | प्रचार करने वाला |
| परिचारक | सेवक |
| प्रणय | प्रेम |
| परिणय | विवाह |
| प्रकृत | यथार्थ |
| प्राकृत | मध्य |
| परिहार | त्याग |
| प्रहार | चोट |
| परिमित | मान/मर्यादा |
| परमिति | चरम सीमा |
| परिणति | समाप्ति |
| परिणत | रूपान्तरित |
| पीड़ा | दर्द |
| पीढ़ा | चौकी |
| पुरी | नगरी |
| पूरी | पूड़ी/सम्पूर्ण |
| पूछ | पूछने की क्रिया |
| पूँछ | दुम |
| प्रेषित | भेजा हुआ |
| प्रोषित | प्रवासी |
| फल | खाने वाला फल |
| फाल | हल की नोंक/साड़ी आदि में लगाने वाला कपड़ा |
| फन | सर्प का फन |
| फन | कला/गुण |
| बहु | बहुत |
| बहू | वधू |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| बहन | सहोदरा |
| वहन | ढोना |
| बान | आदत |
| बाण | तीर |
| बार | दफ़ा |
| वार | दिन |
| बास | गंध |
| वास | निवास |
| बात | वार्ता |
| वात | वायु |
| बाग | लगाम |
| बाग़ | उद्यान |
| बुरा | खराब |
| बूरा | शक्कर |
| बलि | नैवेद्य/पशु-बलि |
| बली | बलवान |
| बाड़ | फ़सल की रक्षा के लिए बनाया गया घेरा |
| बाढ़ | प्राकृतिक आपदा |
| भीत | डरा हुआ |
| भित्ति | दीवार |
| भुवन | संसार |
| भवन | घर |
| मणि | रत्न |
| मणी | साँप |
| मानक | स्तर |
| मानिक | लाल रंग का रत्न |
| मनोज | कामदेव |
| मनोज्ञ | सुन्दर |
| मूल | जड़ |
| मूल्य | कीमत |
| मेध | यज्ञ |
| मेधा | बुद्धि |
| मेदा | पेट |
| मैदा | बारीक आटा |
| तथागत | भगवान बुद्ध |
| यथागत | मूर्ख |
| रसा | तरी |
| रस्सा | मोटी रस्सी |
| रेखा | लकीर |
| लेखा | हिसाब-किताब |
| लक्ष | लाख |
| लक्ष्य | ध्येय |
| बँसी | मछली का काँटा |
| वंशी | मुरली |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| बदन | शरीर |
| वदन | चेहरा |
| ब्याज | सूद |
| व्याज | बहाना |
| बादी | गरिष्ठ भोजन |
| वादी | मुद्दई/वक्ता |
| वाद | तर्क |
| विवाद | झगड़ा |
| वस्तु | चीज़ |
| वास्तु | मकान |
| विलक्षण | अद्भुत |
| विचक्षण | चतुर |
| व्यग | अपंग |
| व्यंग्य | परिहास |
| व्यजन | पंखा |
| व्यंजन | वर्ण/खाद्य पदार्थ |
| सकल | सम्पूर्ण |
| शकल | टुकड़ा |
| शकठ | मचान |
| शकट | बैलगाड़ी |
| संकर | मिश्रित |
| शंकर | शिवजी |
| शशधर | चन्द्रमा |
| शशिधर | शिव |
| साला | पत्नी का भाई |
| शाला | घर |
| शिरा | नाड़ी/नालिका |
| सिरा | छोर/किनारा |
| शूर | वीर |
| सूर | अन्धा |
| शुक्ल | सफेद |
| शुल्क | फीस |
| षष्टि | साठ |
| षष्ठी | छठी |
| स्वजन | सम्बन्धी/मित्र |
| श्वजन | कुत्ते का बच्चा |
| साम | गेय वेद मन्त्र |
| शाम | सायं |
| संकरी | संकर का स्त्री |
| सँकरी | तंग |
| श्याम | कृष्ण |
| स्याम | एशिया का |
| संखिया | विष |
| संख्या | गिनती |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| सजा | सजाया हुआ |
| सजा | दण्ड |
| सत्व | सार |
| स्वत्व | अधिकार |
| सुत | बेटा |
| सूत | धागा |
| सती | पतिव्रता |
| शती | शताब्दी |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| सर्ग | अध्याय |
| स्वर्ग | तीसरालोक |
| सप्त | सात |
| शप्त | शाप पया हुआ |
| सदेह | सशरीर |
| सन्देह | शक |
| सागर | समुद्र |
| सागर | प्याला |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| सुधि | स्मरण |
| सुधी | समझदार |
| हंसी | मादा हंस |
| हँसी | हँसने की क्रिया |
| हंसमुख | हंस का मुख |
| हँसमुख | मजाकिया |
| हल्का | कम वजन |
| हलका | क्षेत्र |

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| हाल | समाचार |
| हाला | शराब |
| हेन | स्वर्ग |
| हिन | बर्फ |
| क्षत्र | मुकुट |
| क्षात्र | क्षत्रिय |
| क्षिति | पृथ्वी |
| क्षति | हानि |

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**निर्देश** (प्र. सं. 1-50 तक) *सभी प्रश्नों के शब्द-युग्म के सही अर्थ-भेद का चयन कीजिए।*

**1.** अन्तर—अनन्तर
(a) भिन्नता–बाद में
(b) दूरी–निकटता
(c) मतभेद–मतैक्य
(d) अन्तःकरण–ईर्ष्या

**2.** अपर—अपार
(a) विस्तृत–संकुचित
(b) दूसरा–असीम
(c) ऊँचा–अथाह
(d) छोटा–हिस्सा

**3.** अम्बुज—अम्बुधि
(a) बादल–कमल
(b) समुद्र–बादल
(c) कमल–समुद्र
(d) भ्रमर–मकरन्द

**4.** अपेक्षा—उपेक्षा
(a) ग्रहण–त्याग
(b) निकट–दूर
(c) तिरस्कार–आशा
(d) आशा–तिरस्कार

**5.** अगम—आगम
(a) दुर्लभ–उत्पत्ति
(b) शास्त्र–शास्त्री
(c) उत्पत्ति–दुर्लभ
(d) स्वानुभूत–अनजान

**6.** अभिज्ञ—अनभिज्ञ
(a) अनजान–अज्ञान
(b) जानकार–अनजान
(c) साक्षर–निरक्षर
(d) मूर्ख–ज्ञानी

**7.** अभियुक्त—अभ्युक्ति
(a) वादी–प्रतिवादी
(b) टिप्पणी–अपराधी
(c) अपराधी–टिप्पणी
(d) अभ्यर्थी–नियोक्ता

**8.** अभिराम—अविराम
(a) सामर्थ्य–उन्नति
(b) प्रातःकाल–सायंकाल
(c) लगातार–सुन्दर
(d) सुन्दर–लगातार

**9.** अमित—अमीत
(a) बहुत–शत्रु
(b) शत्रु–मित्र
(c) पर्याप्त–अधिक
(d) अधिक–न्यून

**10.** अमूल—अमूल्य
(a) अनमोल–बिना जड़ का
(b) बेजड़–अनमोल
(c) सूखा दूध–निःशुल्क
(d) बहुमूल्य–अल्पमूल्य

**11.** आभास—अभ्यास
(a) दृश्य–परिश्रम
(b) अनुभूति–कसरत
(c) भ्रम–आदत
(d) छाया–प्रतिछाया

**12.** आसन—आसन्न
(a) योग–ध्यान
(b) निकट–दूर
(c) चटाई–बिछाया हुआ
(d) बिछौना–निकट आया हुआ

**13.** आयुक्त—अयुक्त
(a) कमिश्नर–जो उचित न हो
(b) अधिकारी–जो कहा न जाए
(c) अनुचित–उच्चाधिकारी
(d) संलग्न–अनुचित

**14.** आद्य—अद्य
(a) वर्तमान–भूत
(b) पहला–आज
(c) मर्यादा–अनुचित
(d) प्रकाश–वर्तमान

**15.** आचार—आचार्य
(a) प्रकृति–पुरुष
(b) शिक्षक–स्वभाव
(c) रीति–व्यवहार–विद्वान्
(d) अनुष्ठान–कथावाचक

**16.** ईशा—ईषा
(a) महान्–तपस्वी
(b) परोपकारी–प्रभुत्व
(c) त्याग–ऐश्वर्य
(d) ऐश्वर्य–हल की लम्बी लकड़ी

**17.** उपल—उत्पल
(a) ओला–कमल
(b) ऊपरी–पानी
(c) जवाब–वर्षा
(d) कमल–शैवाल

**18.** ऋत—ऋतु
(a) मौसम–वर्षा
(b) सत्य–मौसम
(c) अनित्य–सर्दी
(d) ईश्वर–गर्मी

**19.** उभय—अभय
(a) उदासीन–बलिष्ट
(b) निर्भय–दोनों
(c) दोनों–निर्भय
(d) एकता–निर्द्वन्द्व

**20.** कर्ण—करण
(a) ऊपर–कर्ता
(b) ऊपरी–इन्द्रिय
(c) कोण की भुजा–कारक
(d) कान–साधन

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

**21.** कंकाल—कंगाल
(a) अस्थिपंजर–दरिद्र
(b) कर्कश–भिखारी
(c) अकिंचन–बेइमान
(d) दरिद्रता–तुच्छत

**22.** कक्षा—कच्छा
(a) जाँघिया–छात्र समूह
(b) छात्र समूह–जाँघिया
(c) घेरा–परिधान
(d) चक्र–व्यायाम

**23.** कुल—कूल
(a) समस्त–शान्ति
(b) योग–ठण्डा
(c) वंश–किनारा
(d) ठण्डाई–योग

**24.** कल्मष—कुल्माष
(a) मन का मैल–सात्विक
(b) पाप–पुण्य
(c) कुल्थी, उर्द–कालिख
(d) कालिख–कुल्थी, उर्द

**25.** कृतज्ञ—कृतघ्न
(a) उपकार मानने वाला–उपकार न मानने वाला
(b) उपकारी–अपकारी
(c) अपकारी–उपकारी
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

**26.** कृपण—कृपाण
(a) तलवार–कंजूस
(b) कंजूस–तलवार
(c) अपव्ययी–मितव्ययी
(d) मितव्ययी–अपव्ययी

**27.** कटिबद्ध—कटिबन्ध
(a) करधनी–तैयार
(b) तटबंध–कटुत्व
(c) तैयार–कमरबंद
(d) कटुत्व–तटबंध

**28.** केश—केस
(a) मामला–घोड़े की गर्दन के बाल
(b) केसर–कस्तूरी
(c) हल्दी–दूब
(d) बाल–मुकदमा

**29.** खाद—खाद्य
(a) उर्वरक–खाने योग्य
(b) सड़न–पथ्य
(c) पाथेय–अन्न
(d) शीतलपेय–भोजन

**30.** गणना—गड़ना
(a) संख्या–दबाना
(b) गिनती–चुभना
(c) जोड़ना–घटाना
(d) योग–भोग

**31.** गृह—ग्रह
(a) निवास–कक्षा
(b) नक्षत्र–मगरमच्छ
(c) घर–नक्षत्र
(d) घड़ियाल–तारागण

**32.** चित्त—चित
(a) दुविधा–थका हुआ
(b) पराजित–अन्तःकरण
(c) चंचल–पराजित
(d) मन–पीठ के बल पड़ा हुआ

**33.** चन्ट—चण्ड
(a) चतुर–क्रोधी
(b) धोखेबाज–शराबी
(c) मद्यप–मादकता
(d) चोर–मूर्ख

**34.** छत्र—क्षत्र
(a) मुकुट–छाता
(b) छाता–क्षत्रिय
(c) राजा–सेनापति
(d) विद्यार्थी–सैनिक

**35.** जर-जरा
(a) मूल–रोग
(b) बुखार–जला हुआ
(c) दौलत–थोड़ा अल्प
(d) ज्वार-भाटा

**36.** जुड़ा-जूड़ा
(a) बन्धन–संलग्न
(b) व्यापार–द्यूत क्रिया
(c) यौगिक–मिश्रण
(d) संलग्न–केश बन्धन

**37.** तरंग—तुरंग
(a) लहर–घोड़ा
(b) आवेश–त्वरित क्रिया
(c) आनन्द–हाथी
(d) वैभव–तीव्रगामी

**38.** तृण—त्राण
(a) साधारण–शोषण
(b) तिनका–मुक्ति, छुटकारा
(c) विनम्र–कुटिल
(d) कुश की नोंक–आसन

**39.** तनु—तनू
(a) हल्का–तीक्ष्ण
(b) शरीर–प्रिय
(c) पतला–शरीर, देह
(d) पुत्र–पतला

**40.** द्वार—द्वारा
(a) प्रवेश–निकास
(b) घर–गृहस्थ
(c) माध्यम–पत्नी
(d) दरवाजा–माध्यम

**41.** धरा—धारा
(a) पृथ्वी–प्रवाह
(b) आधार–आवेश
(c) रखा हुआ–तीव्र वेग
(d) स्थिर–अस्थिर

**42.** धन—धना
(a) योग–पत्नी
(b) सम्पत्ति–प्रीतम
(c) लाभ–धानी रंग
(d) रुपया–भू-सम्पत्ति

**43.** नारी—नाड़ी
(a) मादा–कमरबन्द (करधनी)
(b) महिला–जल निकास
(c) स्त्री–नब्ज
(d) एक प्रकार का साग–बथुआ

**44.** नियत—नीयत
(a) भाग्य–मनोभाव
(b) सदाचार–छल रहित
(c) इरादा–भाग्य
(d) निश्चित–इरादा

**45.** निर्वाद—निर्विवाद
(a) भ्रम, निन्दा–बिना विवाद के
(b) गन्दगी–समझौता
(c) निष्कासन–भाईचारा
(d) सद्गुण–मित्रता

**46.** परुष—पुरुष
(a) कायर–निडर
(b) कठोर–आदमी
(c) निर्भय–बलवान
(d) लचीला–बहादुर

**47.** प्रहार—परिहार
(a) आक्रमण–अपनाना
(b) हमला–रक्षा करना
(c) मारना–त्यागना
(d) उत्पीड़न–प्रतिज्ञा

**48.** पर्जन्य—परिजन
(a) आत्मीयजन–सामाजिक लोग
(b) अन्न उगाना–आत्मीयजन
(c) सिंचाई–उपकार करना
(d) मेघ–परिवार के लोग

**49.** यथागत—तथागत
(a) मूर्ख–भगवान बुद्ध
(b) आज्ञाकारी–भगवान महावीर
(c) किंकर्तव्यविमूढ़–पार्श्वनाथ
(d) ज्ञानी–नागार्जुन

**50.** सम—शम
(a) उचित–अनुचित
(b) समान–संयम
(c) सुधार–उपचार
(d) साधना–बराबर

Download From: https://sarkaripot.in/
Scanned by CamScanner

**51.** 'अम्बर-अम्बार' युग्म का सही अर्थ है
(a) अमर–अमराई
(b) वस्त्र–अत्यधिक
(c) आकाश–एक फल विशेष
(d) कपड़ा–सिलाई

**52.** 'मन्दिर-मन्दिरा' युग्म का उपयुक्त अर्थ वाला युग्म कौन है?
(a) पूजागृह–पुजारी
(b) मकान–सवारी
(c) गुफा–बड़ी गुफा
(d) देवालय–अश्वशाला

**53.** 'धात्र-धात्री' शब्द युग्म का सही अर्थ वाला विकल्प पहचानिए
(a) बर्तन–माता
(b) आकाश–धरती
(c) तम्बाकू–रस कलश
(d) झण्डा–धारण करने वाला

**54.** 'नौटंकी-नौटंका' शब्द युग्म का सही अर्थ क्या है?
(a) ड्रामा–अभिनेता
(b) लोकनाट्य–अत्यन्त हल्का
(c) संगीत–धूर्तता
(d) दिखावा–पहनावा

**55.** 'परिषद्य-परिषिक्त' शब्द युग्म का सही अर्थ है
(a) स्वीकृत–त्याज्य
(b) सदन–संचालन
(c) परिषद् का सदस्य–सींचा गया
(d) परिषद्–पदाधिकारी

**56.** 'प्रतिकूल-प्रतिकूला' शब्द युग्म का सही अर्थ वाला विकल्प चुनिए
(a) विरोधी–विरोधाभास
(b) प्रतिद्वन्द्वी–सहयोगी
(c) प्रतियोगी–वियोगी
(d) विपरीत–सपत्नीक

**57.** 'बड़ाई-बढ़ाई' शब्द युग्म का सही अर्थ है
(a) प्रशंसा–बढ़ोतरी
(b) महानता–कारपेन्टर
(c) सम्मान–तक्षक
(d) खुशामद–आमद

**58.** 'इति-ईति' शब्द युग्म का सही अर्थ है
**(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)**
(a) समाप्त–शुभ
(b) प्रारम्भ–विघ्न
(c) विघ्न–समाप्त
(d) समाप्त–विघ्न

**59.** 'कुच-कूच' शब्द युग्म का सही अर्थ है
**(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)**
(a) उरोज–सेना
(b) सेना–स्तन
(c) उरोज–प्रस्थान
(d) स्तन–कली

**60.** 'सम-शम' शब्द युग्म का सही अर्थ वाला युग्म है
**(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)**
(a) शान्ति–चावल
(b) शान्ति–मोक्ष
(c) चावल–शान्ति
(d) समान–मोक्ष

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** (a) | **2.** (b) | **3.** (c) | **4.** (d) | **5.** (a) | **6.** (b) | **7.** (c) | **8.** (d) | **9.** (a) | **10.** (b) |
| **11.** (c) | **12.** (d) | **13.** (a) | **14.** (b) | **15.** (c) | **16.** (d) | **17.** (a) | **18.** (b) | **19.** (c) | **20.** (d) |
| **21.** (a) | **22.** (b) | **23.** (c) | **24.** (d) | **25.** (a) | **26.** (b) | **27.** (c) | **28.** (d) | **29.** (a) | **30.** (b) |
| **31.** (c) | **32.** (d) | **33.** (a) | **34.** (b) | **35.** (c) | **36.** (d) | **37.** (a) | **38.** (b) | **39.** (c) | **40.** (d) |
| **41.** (a) | **42.** (b) | **43.** (c) | **44.** (d) | **45.** (a) | **46.** (b) | **47.** (c) | **48.** (d) | **49.** (a) | **50.** (b) |
| **51.** (c) | **52.** (d) | **53.** (a) | **54.** (b) | **55.** (c) | **56.** (d) | **57.** (a) | **58.** (d) | **59.** (c) | **60.** (d) |

## अभ्यासार्थ प्रश्नावली

**1.** निम्नलिखित शब्द-युग्मों को वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थों का अन्तर स्पष्ट हो जाए।
(i) अपेक्षा–उपेक्षा
(ii) उदार–उधार
(iii) मौत–मात
(iv) सज्जन–साजन
(v) घर–मकान
(vi) वाद–अपवाद
(vii) प्रिय–प्रिया
(viii) मुख–आमुख
(ix) मर्त्य–मृत्यु
(v) दान–अनुदान
(vi) आहार–उपहार
(vii) अनुराग–विराग
(viii) अनल–अनिल
(ix) अतीत–प्रतीत
(x) आत्मघात–परिघात

**2.** निम्नलिखित शब्द-युग्मों के भिन्न-भिन्न अर्थ स्पष्ट कीजिए और वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए।
(i) निदेशक–निर्देशक
(ii) आदेश–उपदेश
(iii) प्रसाद–प्रासाद
(iv) उपयोग–उपभोग

**3.** निम्नलिखित शब्द-युग्मों के अर्थ लिखिए और वाक्यों में उनके प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनके अन्तर स्पष्ट हो जाएँ।
(i) अमित–अमीत
(ii) असन–आसन
(iii) उत्पाद–उत्पात
(iv) अगम–आगम
(v) इति–ईति

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

# 8

# वाक्यांशों के लिए एक शब्द

*कभी-कभी कोई वक्ता किसी बात को कहने में बहुत से शब्दों का प्रयोग करता है और कभी-कभी उसी बात को कम-से-कम शब्दों में कह देता है। कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक भावों को व्यक्त कर देना उत्तम माना जाता है, क्योंकि ऐसी भाषा प्रभावशाली होती है। कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक विचारों की अभिव्यक्ति के लिए वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग बहूपयोगी होता है।*

अपठित गद्यांश से सम्बन्धित सारांश, भावार्थ, आशय, मुख्यार्थ और संक्षेपण के लिए इन शब्दों का ज्ञान बहूपयोगी होता है, क्योंकि इन्हें हल करने के लिए संक्षिप्त विशेष बल दिया जाता है। वाक्यांशों के लिए एक शब्द सूत्रात्मक या समास शैली पर आधारित होते हैं। कुशल वक्ता और लेखक के लिए इन शब्दों का ज्ञान स्वरूप सिद्ध होता है, क्योंकि कम-से-कम शब्दों से अधिक-से-अधिक भावाभिव्यक्ति प्रतिभा का प्रतीक है। छात्रों के अध्ययन की सुविधा के लिए वाक्यांशों के शब्द-तालिका प्रस्तुत है

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| **(अ)** | |
| हाथी हाँकने का लोहे का छड़ेदार हुक | अंकुश |
| जिसको गोद में स्थान मिला हो | अंकस्थ |
| गोद में सोने वाली स्त्री | अंकशायिनी |
| जम्हाई के साथ अंग को तानना | अँगड़ाई |
| शरीर के किसी अवयव का टूटना | अंगभंग |
| अण्डे से उत्पन्न होने वाला | अण्डज |
| गुरु के समीप रहने वाला विद्यार्थी | अंतेवासी |
| महल का भीतरी भाग | अंत:पुर |
| जिसका जन्म अन्त्य (छोटी) जाति में हुआ हो | अंत्यज |
| जो कहा न जा सके | अकथनीय |
| न करने योग्य | अकरणीय |
| जिस क्रिया का कर्म न हो | अकर्मक |
| जो बात न कही गई हो | अकथित |
| जो दण्ड पाने योग्य न हो | अदण्डनीय |
| जो न जाना गया हो | अज्ञात |
| वह रोग जिसका ठीक होना कठिन हो | असाध्य |
| अन्य माता से पैदा हुआ भाई | अन्योदर/सौतेला |
| जो अभियोग लगाए/जो शिकायत करे | अभियोगी |
| जो दूसरे के बलबूते पर हो | अपरबल |
| जो बिना ढका हो | अनावृत |
| जो दूसरों से सम्बन्धित न हो | अनन्य |
| जो व्यवहार में न लाया गया हो | अव्यवहृत |
| पूरे जीवन में | आजीवन |
| जो पान करने योग्य नहीं है | अपेय |

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| आवश्यकता से अधिक धन का ग्रहण न करना | अपरिग्रह |
| आवश्यकता या उचित मात्रा से अधिक खर्च करने वाला | अपव्ययी |
| जिसका अस्तित्व अल्पकाल तक रहे | अल्पकालिक |
| जिसके पास कुछ न हो | अकिंचन |
| मल्लयुद्ध का स्थान | अखाड़ा |
| जो खाने योग्य न हो | अखाद्य |
| पूर्व और दक्षिण का कोना | अग्निकोण |
| आगे का विचार करने वाला | अग्रसोची |
| बड़ा भाई (जिसका जन्म पहले हुआ हो) | अग्रज |
| जिस पर अभियोग लगाया गया हो | अभियुक्त |
| जिस व्यक्ति का कोई अंग टूटा या खराब हो | अपंग |
| जिसका जन्म बाद में हुआ हो | अनुज |
| जिसका खण्डन न किया जा सके | अखण्डनीय |
| जो गिना न जा सके | अगणित |
| जिसकी गिनती प्रमुख व्यक्तियों में हो | अग्रणी |
| जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो | अगोचर/इन्द्रियातीत |
| जिसकी चिन्ता न हो | अचिन्त्य |
| जो छुआ न गया हो | अछूता |
| जो जीता न जा सके | अजेय |
| जिसका कभी जन्म न हो | अजन्मा |
| जिसका कोई शत्रु उत्पन्न न हुआ हो | अजातशत्रु |
| जिसकी समता न हो सके या जिसकी तौल न हो सके | अतुल |
| सीमा का अनुचित उल्लंघन | अतिक्रमण |
| जिसके आने की तिथि ज्ञात न हो | अतिथि |
| आवश्यकता से अधिक वर्षा | अतिवृष्टि |
| किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना | अतिशयोक्ति |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| जो बीत चुका हो | अतीत |
| जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न किया जा सके | अतीन्द्रिय |
| जो कभी दिखाई न देता हो | अदृश्य |
| जिसके जोड़ या बराबरी का कोई न हो | अद्वितीय |
| जो देखा न गया हो (भाग्य) | अदृष्ट |
| अधिकार में आया हुआ | अधिकृत |
| विशेष आदेश जो किसी निश्चित अवधि तक लागू हो | अध्यादेश |
| पढ़ाने-लिखाने का कार्य | अध्यापन |
| वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले | अध्यूढ़ा |
| जिसका कहीं अन्त न होता हो | अनन्त |
| जो जाना न गया हो | अनवगत |
| जिसका कोई मालिक न हो | अनाथ |
| जिस पर आक्रमण न किया गया हो | अनाक्रान्त |
| जो नियमानुकूल न हो | अनियमित |
| जिस पर कोई रोक-टोक न हो | अनियन्त्रित |
| प्रत्येक पदार्थ को क्षणिक और नश्वर मानने वाला सिद्धान्त | अनित्यवादी |
| जिसका जवाब न दिया गया हो | अनिस्तीर्ण |
| जो वचन या वाणी से न कहा जा सके | अनिर्वचनीय |
| जो रुका हुआ न हो | अनिरुद्ध |
| जिसका अन्य उपाय न हो | अनन्योपाय |
| जिस बच्चे के माँ-बाप न हों | अनाथ |
| जिसे बुलाया न गया हो | अनाहूत |
| बिना पलक गिराए | अनिमेष |
| जिसका निवारण न किया जा सके | अनिवार्य |
| जिसकी समानता न प्रकट की जा सके | अनुपम |
| जिसका अनुभव किया गया हो | अनुभूत |
| परम्परा से चली आई हुई बात या कथा | अनुश्रुति |
| जिस पर अनुग्रह किया गया हो | अनुगृहीत |
| जो अनुकरण योग्य हो | अनुकरणीय |
| जो नया न हो | अनूतन |
| किसी पुरुष से प्रेम करने वाली अविवाहित स्त्री | अनूढ़ा |
| जो किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति आसक्त हो | अनुरक्त |
| जिसका मन दूसरी ओर हो | अन्यमनस्क |
| जो किसी की देख-रेख में न हो | अनेर |
| जिसे पढ़ा न जा सके | अपठनीय |
| जिसे पढ़ा न गया हो | अपठित |
| जिसके फलस्वरूप अपमान होता हो | अपमानजनक |
| दोपहर के बाद का समय | अपराह्न |
| देवलोक या इन्द्रपुरी की नर्तकी | अप्सरा |
| जो ढीट न हो | अप्रगल्भ |
| बिगड़ा हुआ शब्द | अपभ्रंश |
| जिसका विवाह न हुआ हो | अपरिणीत |
| जिसकी नाप-तौल न हो सके | अपरिमेय |
| साधारण या व्यापक नियम के विरुद्ध वस्तुएँ | अपवाद |

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| जिसके बिना काम न चल सके | अपरिहार्य |
| जिसकी आशा न की जा सकती हो | अप्रत्याशित |
| जिसे पराजित न किया जा सके | अपराजेय |
| जो पहले न रहा हो | अपूर्व |
| जिसके टुकड़े न हो सकें | अखण्डनीय |
| जो प्रमाण से सिद्ध न हो सके | अप्रमेय |
| जो कपड़ा न पहना गया हो | अपहृत |
| जो प्रमाण देने योग्य न हो | अप्रमाण्य |
| जो समझा न जा सके | अबोध |
| जिस पर मत दे दिया गया हो | अभिमत |
| जो अभियोग लगाए या शिकायत करे | अभियोगी |
| जो पहले न घटित हुआ हो | अभूतपूर्व |
| जो भेदा न जा सके | अभेद्य |
| न मरने वाला | अमर |
| जिसे मारना उचित न हो | अवध्य |
| जो बाँटा न गया हो | अविभक्त |
| सम्पूर्ण लक्ष्य पर लक्षण का घटित न होना | अव्याप्ति |
| जिसकी संख्या सीमित न हो | असंख्य |
| सौ करोड़ की संख्या | अरब |
| जो इस लोक का न हो | अलौकिक |
| कम जानने वाला | अल्पज्ञ |
| कम बोलने वाला | अल्पभाषी/मितभाषी |
| अवश्य होने वाला | अवश्यम्भावी |
| बिना वेतन का | अवैतनिक |
| जो शोक करने के योग्य न हो | अशोच्य |
| एक-एक अक्षर तक | अक्षरशः |
| जो संविधान के अनुकूल न हो | असंवैधानिक |
| जो बराबर न हो | असम |
| जो कुछ न जानता हो | अज्ञ |
| जो परिणय सूत्र में न बँधा हो | अपरिणीत |
| जो स्त्री सूर्य भी नहीं देख पाती | असूर्यपश्या |
| अहंकारपूर्वक अपने को सबसे बढ़कर समझना | अहंमन्यता |
| जिसका चिन्तन न किया जा सके | अचिन्त्य |
| जिसमें प्रतिभा का अभाव हो | अप्रतिभा |
| जिसका जवाब न दिया गया हो | अनिस्तीर्ण |

## (आ)

| | |
|---|---|
| अचानक होने वाला | आकस्मिक |
| भगवान के सहारे अनिश्चित आय | आकाशवृत्ति |
| जिस पर आक्रमण हो | आक्रान्त |
| वह नायिका जिसका पति परदेश से लौटा हो | आगतपतिका |
| जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाए | आगन्तुक |
| जो सूँघने योग्य हो | आघ्रेय |
| जो अपने आचरण से पवित्र है | आचारपूत |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| दूसरों के सुख के लिए आत्मसुख को त्यागना | आत्मोत्सर्ग |
| अपने प्राण अपने आप लेने वाला | आत्मघाती/आत्महन्ता |
| वह स्त्री जिसका पति आने वाला हो | आगमिष्यत्पतिका |
| स्वयं पर अभिमान करना | आत्माभिमान |
| अत्याचार करने वाला | आततायी |
| अतिथि की सेवा करने वाला | आतिथेयी |
| अतिथि की सेवा | आतिथ्य |
| जो जन्म लेते ही गिर या मर गया हो | आदण्डपात |
| आदर्शमूलक भावना को प्रश्रय देने वाला मत | आदर्शवाद |
| किसी मत का सर्वप्रथम प्रवर्तन करने वाला | आदि प्रवर्तक |
| आदि से अन्त तक | आद्यान्त |
| देवता अथवा भूतादि के द्वारा होने वाला दुःख | आधिदैविक |
| जीवों या शरीरधारियों के द्वारा प्राप्त दुःख | आधिभौतिक |
| नवीन बनाने की क्रिया | आधुनिकीकरण |
| आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला | आध्यात्मिक |
| जिसका अहंकार चूर्ण हो गया हो | आन्तगर्व |
| परम्परा से सुना हुआ | आनुश्राविक |
| जो किसी वंश में बराबर होता आया हो | आनुवंशिक |
| जिसकी समस्त कामनाएँ पूरी हो गई हों | आप्तकाम |
| सिर से पैर तक | आपादमस्तक |
| ऐसा व्रत जो मरने पर ही समाप्त हो | आमरणव्रत |
| जड़ से चोटी तक | आमूलचूल |
| देश में विदेश से माल आने की क्रिया | आयात |
| रुपये-पैसे से सम्बन्ध रखने वाला | आर्थिक |
| आलोचना करने वाला | आलोचक |
| जन्म लेना और मरना | आवागमन |
| ईश्वर, धर्मग्रन्थ आदि में विश्वास करने वाला | आस्तिक |
| वह कवि जो तत्क्षण कविता कर सके | आशुकवि |
| आशा से परे | आशातीत |
| जो आशा करता हो | आशावादी |
| लिखने की वह कला जो बोलने के साथ ही (तीव्रगति से) लिखी जाती है | आशुलिपि |

### (इ)

| | |
|---|---|
| इतिहास को जानने वाला | इतिहासज्ञ; इतिहासवेत्ता |
| इन्द्र को जीतने वाला | इन्द्रजीत |
| इन्द्रियों को वश में रखने वाला | इन्द्रियजीत |
| जिसकी आकांक्षा हो | इष्ट |
| केवल इसी लोक से सम्बन्धित | इहलौकिक |

### (ई)

| | |
|---|---|
| जिस वस्तु को चाहा गया हो | ईप्सित |
| जो दूसरों से ईर्ष्या करता हो | ईर्ष्यालु |
| पूरब और उत्तर के बीच की दिशा | ईशान |

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| **(उ)** | |
| सूरज के निकलने से पूर्व का काल | उषाकाल |
| जिसने ऋण चुका दिया हो | उऋण |
| सबसे ऊँचा | उच्चतम |
| ऊपर से नीचे लाना | उतारना/अवतरण |
| जो पार हो गया हो | उत्तीर्ण |
| छाती के बल चलने वाला | उदक (सर्प) |
| जिसकी वृत्ति उदार हो | उदारचेता |
| ऊपर कहा गया | उपरोक्त/उपर्युक्त |
| पर्वत के पास की भूमि | उपत्यका |
| जिसका उपकार किया गया हो | उपकृत |
| सूर्य जिस स्थान से निकलता है | उदयाचल |
| जिसके दाँत न जन्मे हों | उदन्त |
| जिसके विषय में लिखना आवश्यक हो | उल्लेखनीय |
| जिस भूमि में बहुत अन्न पैदा होता हो | उर्वरा |
| **(ऊ)** | |
| ऊपर की ओर जाने वाला | ऊर्ध्वगामी |
| ऊँचे स्वर से उच्चारण किया गया | ऊर्ध्वोच्चारित |
| जिस भूमि में कुछ न पैदा होता हो | ऊसर |
| **(औ)** | |
| विवाहित स्त्री से उत्पन्न पुत्र | औरस |
| जो केवल कहने सुनने के लिए हो | औपचारिक |
| **(क)** | |
| वह कथा जो जन साधारण में प्रचलित हो | किंवदन्ती |
| काँटों या बाधाओं से भरा हुआ | कंटकाकीर्ण |
| जो कहा गया है | कथित |
| जो फूल अभी खिला न हो | कली |
| कर्म करने वाला | कर्मठ |
| जिसे यह न सूझ पड़े कि अब क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए | किंकर्त्तव्यविमूढ़ |
| जिसकी उत्पत्ति स्वभावगत न हो | कृत्रिम |
| जिस लड़की का विवाह न हुआ हो | कुमारी |
| तीक्ष्ण बुद्धि वाला व्यक्ति | कुशाग्रबुद्धि |
| जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो | कुलीन |
| जिसे बाहरी जगत् का ज्ञान न हो | कूपमण्डूक |
| अहसान मानने वाला | कृतज्ञ |
| अहसान न मानने वाला | कृतघ्न |
| किसी की कृपा से परम सन्तुष्ट | कृतार्थ |
| जो अपने काम से जी चुराता है | कामचोर |
| केन्द्र से दूर जाने की प्रवृत्ति रखने वाला | केन्द्रापसारी |
| केन्द्र की ओर उन्मुख होने वाला | केन्द्राभिमुख |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| जो पाप-पुण्य से रहित हो | केवलात्मा |
| सुन्दर बड़े बालों वाली स्त्री | केशिनी |
| किसी वस्तु या बात के विषय में जानने की प्रबल इच्छा | कौतूहल/जिज्ञासा |
| कष्ट सहन करने वाला | कष्ट-सहिष्णु |
| अँधेरी रातों वाला पखवारा | कृष्णपक्ष |
| पद, वय आदि के विचारों से अन्य की अपेक्षा छोटा | कनिष्ठ |
| **(क्ष)** | |
| जिसका हाथ बहुत तेज़ चलता हो | क्षिप्रहस्त |
| जिसका कुछ क्षणों में ही नाश हो जाए | क्षणभंगुर |
| जो क्षमा पाने योग्य हो | क्षम्य |
| क्षमा करने वाला व्यक्ति | क्षमाशील |
| भूख से व्याकुल | क्षुधातुर |
| **(ख)** | |
| सूर्य या चन्द्र के समस्त मण्डल से ढक जाने वाला ग्रहण | खग्रास |
| खाने योग्य पदार्थ | खाद्य |
| आकाश में चलने वाला | खेचर/नभचर |
| **(ग)** | |
| बहुत गप्पे हाँकने वाला | गपोड़िया |
| जो शीघ्र न पचे | गरिष्ठ |
| गणित का ज्ञाता | गणितज्ञ |
| वह नाटक जिसमें गीत अधिक हों | गीतरूपक |
| गाँव में रहने वाला | ग्रामीण |
| जो छिपाने के योग्य हो | गोपनीय |
| गायों के रहने का स्थान | गौशाला/गोष्ठ |
| परम्पराओं (रूढ़ियों) के अनुसार चलने वाला | गतानुगतिका/रूढ़िवादी |
| रात और संध्या के बीच की बेला | गोधूलि |
| हाथी का बच्चा | गजशावक/कलभ |
| **(घ)** | |
| घृणा करने योग्य | घृणास्पद |
| जिसकी घोषणा की गई हो | घोषित |
| **(च)** | |
| चन्द्र है चूड़ा पर जिसके | चन्द्रचूड़ |
| जो चक्र धारण करता है | चक्रधर |
| जिसके हाथ में चक्र सुदर्शन है | चक्रपाणि |
| वह काव्य जिसमें पद्य एवं गद्य मिश्रित हो | चम्पू |
| ऐसा वस्त्र जो पुराना एवं फटा हुआ हो | चिरकुट |
| जो चर्चा का विषय हो | चर्चित |
| स्वार्थवश किसी का गुणगान करने वाला/चापलूसी करने वाला | चाटुकार |
| जिसकी चार भुजाएँ हों | चतुर्भुज |
| किसी वस्तु का चौथा भाग | चतुर्थांश |
| किसी को सावधान करने के लिए कही जाने वाली बात | चेतावनी |

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| महीने के किसी पक्ष की चौथी तिथि | चतुर्थी/चौथ |
| अधिक दिनों तक जीने वाला | चिरंजीवी |
| बहुत दिनों तक रहने वाला | चिरस्थायी |
| **(छ)** | |
| जो हर समय दूसरों की बुराइयाँ खोजते हैं | छिद्रान्वेषी |
| सेना के ठहरने का स्थान | छावनी |
| अचानक किया जाने वाला हमला | छापा |
| किसी को दोषारोपण करके छेड़ना | छींटाकशी |
| **(ज)** | |
| जिसकी इन्द्रियाँ वश में हों | जितेन्द्रिय |
| पेट की अग्नि | जठरानल |
| जल में रहने वाले जन्तु | जलचर |
| जल में जन्म लेने वाला/जल में पैदा होने वाला | जलज |
| जानने की इच्छा वाला | जिज्ञासु |
| जीतने की इच्छा | जिगीषु |
| **(झ, ञ)** | |
| बिखरे हुए बड़े-बड़े बालों वाला | झबरा |
| **(त)** | |
| तैरने, तरने या पार होने की इच्छा | तितीर्षा |
| अपने काम में निष्ठा से लगा हुआ | तत्पर |
| गुटों से अलग रहने वाला | तटस्थ |
| तत्त्व जानने वाला | तत्त्वविद् |
| त्याग करने योग्य | त्याज्य |
| **(त्र)** | |
| छुटकारा दिलाने वाला | त्राता |
| वह स्थान जो दोनों भृकुटियों के मध्य में होता है | त्रिकुटी |
| तीन कालों को देखने वाला | त्रिकालदर्शी |
| तीनों कालों को जानने वाला | त्रिकालज्ञ |
| जो तीन माह में एक बार हो | त्रैमासिक |
| **(थ)** | |
| थाने का प्रधान अधिकारी | थानेदार |
| **(द)** | |
| स्वामी के स्नेह से रहित स्त्री | दुर्भगा |
| जिसको पकड़ने में दिक्कतों का सामना करना पड़े | दुरभिग्रह |
| अनुचित बातों के लिए आग्रह | दुराग्रह |
| किसी काम को चित्त लगाकर करने वाला | दत्तचित्त |
| जो दो बार जन्म लेता हो | द्विज |
| जिसे कठिनता से धारण किया जा सके | दुर्वह |
| जिसका दमन करना कठिन हो | दुर्दम्य |
| वह व्यक्ति जो अपने ऋणों को चुकता करने में असमर्थ हो गया हो | दिवालिया |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| स्त्री और पुरुष का जोड़ा | दम्पति |
| गोद लिया हुआ पुत्र | दत्तक |
| जिसे दबाया या सताया गया हो | दलित |
| जंगल की आग | दावानल |
| संकीर्ण (संकुचित) विचारों वाला व्यक्ति | दकियानूसी |
| जहाँ जाना कठिन हो | दुर्गम |
| जिसे करना कठिन हो | दुष्कर |
| बहुत दूर की बात सोचने वाला/देखने वाला | दूरदर्शी |
| वह रोग जिसमें सूर्य की तेज किरणों के कारण दिन में बहुत कम दिखाई देता हो। | दिनौंधी |

**(ध)**

| | |
|---|---|
| यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मार्थ बना हुआ घर | धर्मशाला |
| धारण करने वाला | धारक |
| धर्म में आस्था रखने वाला | धर्मात्मा |
| मछली पकड़ने/बेचने वाली जाति | धीवर |
| बहुत प्रचण्ड, चंचल और अपने गुणों का अपने आप वर्णन करने वाला नायक | धीरोद्धत |

**(न)**

| | |
|---|---|
| जो ममत्व से रहित हो | निर्मम |
| जिस पर कोई कलंक न लगा हो | निष्कलंक |
| चन्द्रमास के किसी पक्ष की नौवीं तिथि | नवमी |
| हाल की ब्याही स्त्री | नवोढ़ा |
| निशा (रात्रि) में विचरण करने वाला | निशाचर |
| जिसमें तेज न हो | निस्तेज |
| हाल ही में उत्पन्न हुआ बालक | नवजात |
| जिसे किसी बात की स्पृहा (आकांक्षा) न हो | निःस्पृह |
| जहाँ किसी बात का डर या खतरा न हो | निरापद |
| जो नष्ट होने वाला हो | नश्वर |
| जो ईश्वर पर विश्वास न करता हो | नास्तिक |
| तथ्यों के आधार पर दोषारोपण | निन्दा |
| जिसके मन में भय न हो | निर्भीक |
| जिसका कोई आकार न हो | निराकार |

**(प)**

| | |
|---|---|
| पशु के ढंग का | पाश्विक |
| पूर्ण रूप से फूला, पका या पचा हुआ | परिपक्व |
| वह जो प्रार्थना करता है | प्रार्थी |
| जिसकी प्रतारणा की गई हो | प्रतारित |
| प्रश्न के रूप में पूछे जाने योग्य | प्रष्टव्य |
| इतिहास के पूर्व काल से सम्बन्धित | प्रागैतिहासिक |
| अगुआ बनकर मार्ग दिखाने वाला | पथ-प्रदर्शक |
| परलोक से सम्बन्धित | पारलौकिक |
| ऐसी बुद्धि वाला जो किसी बात का हल तुरन्त निकाल सके | प्रत्युत्पन्नमति |
| ऐसा लेख अथवा कहानियाँ जो हास्यरस से पूर्ण हों | प्रहसन |

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| वह भावना जिसमें प्रतिकार की गन्ध हो | प्रतिचिकीर्षा |
| उत्तर पाने पर दिया हुआ उत्तर | प्रत्युत्तर |
| मार्ग-दर्शन कराने वाला | पथ-प्रदर्शक/मार्गद |
| जो दूसरों के अधीन हो | पराधीन |
| जो आँख के सामने न हो | परोक्ष |
| सामान्य विचार-विमर्श | परामर्श |
| जिसके पार देखा जा सके | पारदर्शी |
| जिसका कारण पृथ्वी है या जो पृथ्वी से सम्बद्ध है | पार्थिव |
| जो प्रतिकूल पक्ष का है | प्रतिपक्षी |
| दोष या पाप मिटाने के लिए शास्त्रानुकूल कर्म या कृत्य | प्रायश्चित्त |
| पाने की इच्छा वाला | पिपासु |
| कुत्ते का बच्चा | पिल्ला |
| जो बात बार-बार कही जाए | पुनरुक्ति |
| उपकार के बदले किया गया उपकार | प्रत्युपकार |
| दोपहर से पहले का समय | पूर्वाह्न |
| किसी आदमी के निधन की वार्षिक तिथि | पुण्यतिथि |
| प्रकाश में लाने योग्य | प्रकाश्य |
| जो कहीं जाकर लौट आया हो | प्रत्यागत |
| वह कथन जिसका उत्तर देना पड़े | प्रहेलिका (पहेली) |
| किए हुए परिश्रम के बदले मिलने वाला धन | पारिश्रमिक |

**(फ)**

| | |
|---|---|
| फल की आकांक्षा वाला | फलाकांक्षी |
| केवल फल खाकर जीवन व्यतीत करने वाला | फलाहारी |

**(ब)**

| | |
|---|---|
| रात्रि के चार बजे का समय | ब्रह्ममुहूर्त |
| बहुत से लोगों की मिलकर एक राय | बहुमत |
| अत्यधिक मूल्यवान वस्तु | बहुमूल्य |
| बहुत-सी भाषाओं को जानने वाला | बहुभाषाविद् |
| जो बालकों के लिए उपयोगी हो | बालोपयोगी |
| जिसकी जीविका बुद्धि के माध्यम से चलती हो | बुद्धिजीवी |

**(भ)**

| | |
|---|---|
| किसी गूढ़ विषय की वृहत टीका | भाष्य |
| टूटे-फूटे पदार्थ के बचे टुकड़े | भग्नावशेष |
| भय उत्पन्न करने वाला | भयानक |
| वर्तमान से पूर्व का | भूतपूर्व |
| भूगोल से सम्बन्ध रखने वाला | भौगोलिक |

**(म)**

| | |
|---|---|
| किसी विषय का गंभीर मनन और विचार करने वाला | मीमांसक |
| मन के मलिन होने की स्थिति या भाव | मनोमालिन्य |
| मन के दुर्बल होने की स्थिति या भाव | मनोदौर्बल्य |
| वह दानी जो खुले हाथ दान करे | मुक्तहस्त |
| मृत्यु की इच्छा | मुमूर्षा |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| मधुर बोलने वाला | मृदुभाषी |
| मत के अनुसार चलने वाला | मतानुयायी |
| झूठ बोलने वाला | मिथ्यावादी/मिथ्याभाषी |
| जो फूल आधा खिला हो | मुकुल |
| मछली के समान जिसकी आँखें हों | मीनाक्षी |
| हिरण की आँख के समान आँखों वाली | मृगनयनी |
| थोड़ा और नपा-तुला भोजन करने वाला | मिताहारी |
| जिसके हृदय को चोट पहुँची हो | मर्माहत |
| वह व्यक्ति जो मार्क्स की विचारधारा को मानता हो | मार्क्सवादी |

**(य)**

| | |
|---|---|
| अपने युग का बहुत बड़ा व्यक्ति | युगपुरुष |
| लड़ाई लड़ने की उत्सुकता | युयुत्सा |
| यश ही जिसका धन हो | यशस्वी |
| यन्त्र से सम्बन्धित | यान्त्रिक |
| जहाँ तक सम्भव हो | यथासम्भव |
| शक्ति के अनुसार | यथाशक्ति |
| जो कोई वस्तु या भिक्षा माँगता हो | याचक |

**(र)**

| | |
|---|---|
| जिससे रोंगटे खड़े हो जाएँ | रोमांचित |
| वह काव्य जिसका अभिनय हो सके | रूपक |
| खून से रंगा हुआ या लथ-पथ | रक्त-रंजित |
| वह रोग जिसमें रात को दिखाई नहीं देता | रतौंधी |
| राष्ट्र का प्रधान | राष्ट्रपति |

**(ल)**

| | |
|---|---|
| वह व्यक्ति जो लोहे को पीटकर अपना गुजारा करता है | लोहार |
| वह व्यक्ति जो लकड़ियाँ काटकर अपना रोजगार करता है | लकड़हारा |
| लम्बे या मोटे उदर (पेट) वाला | लम्बोदर |
| लुभाया या ललचाया हुआ | लुब्ध |
| जो भूमि का लेखा-जोखा रखता हो | लेखपाल |
| जो लोक या संसार में न हो | लोकोत्तर |
| जनसाधारण के गीत | लोकगीत |

**(व)**

| | |
|---|---|
| कन्या का विवाह कर देने का वचन देने की रस्म | वाग्दान |
| जिससे हिलोरें पैदा की जा सकें | विलोड़नीय |
| जिसे जीत लिया गया हो | विजित |
| जो किसी विकार से ग्रस्त हो | विकृत |
| भले-बुरे की पहचान का ज्ञान | विवेक |
| जो पत्नी को अपने साथ न रखे हो | विपत्नीक |
| जिसका वर्णन न हो सके | वर्णनातीत |
| जो दूसरे को वाणी से देने को कह चुका हो | वाग्दत्त |
| जिसके हाथ में वज्र हो | वज्रपाणि |
| जो बहुत और व्यर्थ बोलता हो | वाचाल |
| अनुचित यौन सम्बन्ध रखने वाला | व्यभिचारी |

| वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|
| सौतेली माँ | विमाता |
| विपत्ति उत्पन्न करने वाला | विपत्तिजनक |
| जो विश्वास करने योग्य हो | विश्वसनीय |
| जिसका विद्या से विशेष अनुराग हो | विद्याव्यसनी |

**(श)**

| | |
|---|---|
| शिव की उपासना करने वाला | शैव |
| जिसे शास्त्रों की अच्छी जानकारी हो | शास्त्रज्ञ |
| शक्ति की आराधना करने वाला | शाक्त |
| तरकारी और फलों का भोजन करने वाला | शाकाहारी |
| शरण में आया हुआ | शरणागत |
| शत्रु का हनन करने वाला | शत्रुघ्न |
| जो शरण का इच्छुक हो | शरणार्थी |
| सदैव रहने वाला | शाश्वत |

**(स)**

| | |
|---|---|
| सावधान रहने वाला व्यक्ति | सतर्क |
| चोरी के लिए मकान की दीवार में किया गया बड़ा-सा छेद | सेंध |
| अपने ही पति की अनुरागिनी स्त्री | स्वकीया |
| जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो | स्वयंभू |
| इच्छानुसार अपना पति चुनने वाली कन्या | स्वयंवरा |
| जो किसी दूसरे की जगह पर आया हो | स्थानापन्न |
| अलग-अलग अवयवों को एक में जोड़ना | संश्लेषण |
| जो स्पष्ट किया हुआ हो | स्पष्टीकृत |
| वह व्यक्ति जिसके सिद्धान्त हों | सिद्धान्तवादी |
| जिसको एक स्थान से दूसरे पर न ले जाया जा सके | स्थावर |
| जो स्त्री के वशीभूत या उसके स्वभाव का हो | स्त्रैण |
| जो स्वयं उत्पन्न हुआ हो | स्वयंभू |
| वे वस्तुएँ जो एक प्रकृति की हों | सजातीय |
| छूत या संसर्ग से फैलने वाला रोग | संक्रामक |
| जो पढ़ना-लिखना जानता हो | साक्षर |
| सबसे सम्बन्ध रखने वाला | सार्वजनिक |
| जो सारी पृथ्वी से सम्बन्धित हो | सार्वभौमिक |
| सिंह का बच्चा | सिंहशावक |
| सेना का संचालक | सेनापति |
| पसीने से युक्त | स्वेदित |
| अपना प्रयोजन सिद्ध करने वाला | स्वार्थी |
| अपने भरोसे रहने वाला | स्वावलम्बी |

**(ह)**

| | |
|---|---|
| जिसे देख-सुनकर हृदय फटता हो | हृदयविदारक |
| किसी व्यक्ति द्वारा हलफ शपथ के साथ लिखा हुआ न्यायालय में प्रस्तुत पत्र | हलफ़नामा |
| हाथ की चतुराई | हस्तलाघव |
| वह सामग्री जो हवन के लिए हो | हवि |
| किसी वस्तु को दूसरे के हाथों देना | हस्तान्तरित |
| हाथ की कारीगरी | हस्तकौशल |
| भलाई की इच्छा रखने वाला | हितैषी |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**निर्देश** (प्र.सं. 1-6) *निम्न प्रश्नों में दिए गए वाक्यों के लिए एक शब्द का चयन कीजिए।*

**1.** जो पहले कभी न हुआ हो
(a) अद्‌भुत (b) अभूतपूर्व ✓
(c) अनुपम (d) इनमें से कोई नहीं

**2.** जो सब कुछ जानता हो
(a) सर्वज्ञ ✓ (b) अज्ञ
(c) विशेषज्ञ (d) कृतज्ञ

**3.** जिसकी गर्दन सुन्दर हो
(a) सुदर्शन (b) सुगर्दन
(c) सुग्रीव ✓ (d) सुगद

**4.** बिना घर का
(a) अनाथ (b) अनिकेत ✓
(c) अनाहूत (d) अनिग्रह

**5.** जिसे बुलाया न गया हो
(a) अनाहूत ✓ (b) अनबोला
(c) अतिथि (d) अभ्यागत

**6.** जो आँखों के सामने न हो
(a) प्रत्यक्ष (b) अप्रत्यक्ष ✓
(c) अदृष्टव्य (d) अपरोक्ष

**7.** जो हर समय अपना मतलब साधता हो उसे क्या कहा जाता है?
(यू.पी.एस.एस.एस.सी कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) स्वारथी (b) मतलबी ✓
(c) परमार्थी (d) स्वार्थी

**8.** जो कम बोलता हो (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) अल्पभाषी ✓ (b) मितव्ययी
(c) प्रत्युत्पन्नमति (d) दाचाल

**9.** किसी के उपकार की उपेक्षा करनेवाला
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) कृतज्ञ (b) कृतघ्न ✓
(c) अजातशत्रु (d) दूरदर्शी

**निर्देश** (प्र.सं. 10-12) *दिए गए प्रत्येक वाक्यांश के लिए एक शब्द दीजिए। इसके लिए चार-चार विकल्प दिए गए हैं। उचित विकल्प चुनिए और उत्तर-पत्रिका में तदनुसार काला कीजिए।*

**10.** समुद्र में लगने वाली आग (एस.एस.सी. जी.डी. 2015)
(a) जठराग्नि (b) दगग्नि
(c) दावग्नि (d) वड़वाग्नि ✓

**11.** मन को आनन्दित करने वाला
(a) प्रिय (b) श्रेयस्
(c) मनोरंजन ✓ (d) मोहित

**12.** जिसको प्राप्त न किया जा सके
(a) अलभ्य ✓ (b) दुर्लभ्य
(c) दुष्कर (d) दुष्प्राप्य

**13.** राकेश बहुत मेहनत करने वाला लड़का है। रेखांकित अंश के लिए शब्द बताइए (इलाहाबाद उच्च न्यायालय ग्रुप-सी परीक्षा
(a) परिश्रमी ✓ (b) संघर्षरत
(c) श्रमिक (d) श्रमवान

**14.** किस वाक्यांश के लिए दिया हुआ एक शब्द सही नहीं है? (डी.एस.एस.एस.बी.असिस्टेंट टीचर परीक्षा
(a) जिस स्त्री को कोई संतान न हो – बाँझ
(b) जो बहुत बोलता हो – मितभाषी ✓
(c) क्रम के अनुसार – यथाक्रम
(d) जो स्मरण रखने योग्य है – स्मरणीय

**निर्देश** (प्र.सं. 15-20) *दिए गए प्रत्येक वाक्यांश के लिए शब्द दीजि इसके लिए चार-चार विकल्प दिए गए हैं। उचित विकल्प का चु कीजिए।*

**15.** तेज चलने वाला (एस.एस.सी. कांस्टेबल
(a) गतिशील (b) चुस्त
(c) कर्मठ (d) द्रुतगामी ✓

**16.** विना स्वार्थ के कार्य करने वाला
(a) सहायक (b) निस्वार्थी ✓
(c) पुण्यात्मा (d) हितैषी

**17.** किसी की सहायता करने वाला
(a) सहकार (b) सहायक ✓
(c) सहृदय (d) सहचर

**18.** जिसका निवारण करना कठिन हो
(a) अनिवार्य (b) अपरिहार्य
(c) दुर्निवार ✓ (d) अवश्यम्भावी

**19.** आशा जगाने वाला
(a) आशाजनक ✓ (b) आशातीत
(c) आशानुगत (d) आशीष

**20.** जो सबके लिए हो
(a) सार्वजनिक ✓ (b) सार्वभौमिक
(c) सार्वकालिक (d) सार्वदेशिक

**निर्देश** (प्र.सं. 21-26) *निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए वाक्यों के लि शब्द चुनिए।*

**21.** पर्वत की तलहटी (राजस्व विभाग उ.प्र. लेखपाल भर्ती परीक्षा
(a) बेसिन (b) घाटी
(c) उपत्यका ✓ (d) द्रोण

**22.** कंजूसी से धन व्यय करने वाला
(a) मसृण (b) मितव्ययी ✓
(c) अल्पव्ययी (d) कृपण

**23.** 'वीर पुत्र को जन्म देने वाली स्त्री' के लिए एक शब्द है
(a) वसुन्धरा (b) माते
(c) वीरप्रसू ✓ (d) इनमें से कोई नहीं

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**24.** जो सबसे आगे रहता हो उसको ........ कहते हैं। **(उत्तराखण्ड समूह-ग परीक्षा 2014)**
(a) अग्रणी (b) अनादि
(c) अनुकरणीय (d) अवैध

**25.** 'जो अपने प्रति किए गए उपकार को न माने' प्रस्तुत कथन के लिए एक शब्द कौन-सा है?
**(म.प्र. व्यावसायिक परीक्षा मण्डल अन्वेषक/खण्ड स्तर अन्वेषक 2014)**
(a) किंकर्तव्यविमूढ़ (b) कृतघ्न
(c) कृतकार्य (d) कृपण

**26.** 'अगोचर' शब्द किस वाक्य खण्ड के लिए प्रयुक्त होता है?
(a) जो इन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके
(b) जो कल्पना से परे हो
(c) जिसकी आशा न की गई हो
(d) जिसके पार देखा न जा सके

**निर्देश** (प्र. सं. 27-29) *इन प्रश्नों में दिए गए प्रत्येक वाक्य खण्ड के अर्थ को एक शब्द में व्यक्त करने वाला शब्द दिए गए विकल्पों में से चुनिए।*

**27.** रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान **(के.वी.एस.पी.आर.टी. 2015)**
(a) पृष्ठमंच (b) दर्शकदीर्घा
(c) नाट्यस्थल (d) नेपथ्य

**28.** जिसके सिर पर चन्द्रमा हो
(a) चन्द्रवदन (b) चन्द्रहास
(c) चन्द्रशेखर (d) सिरमौर

**29.** फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार
(a) प्रक्षिप्त (b) प्रक्लेदित
(c) शस्त्र (d) अस्त्र

**निर्देश** (प्र.सं. 30-34) *वाक्यांशों के लिए दिए गए विकल्पों में से प्रयुक्त शब्द का चयन कीजिए।*

**30.** जिसकी आशा न की गई हो **(उ.प्र. वन विभाग 2015)**
(a) प्रतिआशा (b) अप्रत्याशित
(c) आशातीत (d) अप्रतिआशा

**31.** पृथ्वी के तीनों ओर पानी वाला स्थान
(a) द्वीप (b) प्रायद्वीप
(c) महाद्वीप (d) इनमें से कोई नहीं

**32.** जिसके पास कुछ भी न हो
(a) गरीब (b) अकिंचन
(c) दरिद्र (d) विनीत

**33.** विशिष्ट अवसर पर विशिष्ट लोगों के समक्ष दिया गया विद्वत्तापूर्ण भाषण
(a) सम्भाषण (b) अभिभाषण (c) अपभाषण (d) अनुभाषण

**34.** आदि से अन्त तक
(a) आद्योपान्त (b) आदि (c) दिगन्त (d) अन्तिम

**निर्देश** (प्र.सं. 35-37) *इन प्रश्नों में दिए गए वाक्यांश के अर्थ को व्यक्त करने वाला सही शब्द दिए गए विकल्पों में से चुनिए।*

**35.** बिना प्रयास/परिश्रम के **(के.वी.एस पी.आर.टी./एल.डी.सी. 2015)**
(a) आकस्मिक (b) अप्रत्याशित
(c) अनायास (d) अचानक

**36.** जानने की इच्छा रखने वाला
(a) उत्साही (b) जिज्ञासु
(c) तत्पर (d) जिज्ञासा

**37.** दूसरों की बात सहन करने वाला
(a) कृपालु (b) सहिष्णु (c) उदार (d) तटस्थ

**38.** 'शक्तिशाली दयालु शान्त-धीर और योद्धा नायक' के लिए एक शब्द है **(हिमाचल प्रदेश (इलेक्शन कानूनगो) 2015)**
(a) धीरललित (b) धीरोद्धत
(c) धीरोदात्त (d) इनमें से कोई नहीं

**39.** 'जो प्रमाण से सिद्ध न हो सके' के लिए एक शब्द है
(a) अप्रमाणित (b) अप्रमेय
(c) अपरिमित (d) अनप्रमाणित

**40.** 'वन में लगने वाली आग' वाक्यांश के लिए एक शब्द है
(a) बड़वाग्नि (b) दावाग्नि
(c) विरहाग्नि (d) जठराग्नि

**41.** 'वह नायिका जो अपने पति के परदेश में होने के कारण दुःखी हो' वह है
(a) प्रोषितपतिका (b) वियोगिनी
(c) विरहविदग्धा (d) खण्डिता

**42.** 'मोक्ष की कामना करने वाला' वाक्यांश के लिए एक शब्द है
(a) मोक्षकामी (b) मौक्तिक
(c) मुमुक्षु (d) मुमुक्षी

**43.** 'इन्द्रियों को जीत लिया हो जिसने' के लिए एक शब्द है
(a) इन्द्रियाधिपति (b) जितेन्द्रिय
(c) जीतेन्द्रिय (d) इन्द्र

**44.** 'जिसका उपचार न हो सके' के लिए एक शब्द है
(a) दुःसाध्य (b) असाध्य
(c) श्रमसाध्य (d) साधनहीन

**निर्देश** *निम्नलिखित प्रश्नों में वाक्यांशों/अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द के लिए चार-चार विकल्प दिए गए हैं। इनमें से कोई एक विकल्प सही है, आपको सही विकल्प चुनना है, वही आपका उत्तर होगा।*

**45.** ईश्वर को नहीं मानने वाला
**(राजस्थान बी.एस.टी.सी/एन.टी.टी. परीक्षा 2009/ नर्मदा मालवा ग्रामीण बैंक (क्लर्क) परीक्षा 2010)**
(a) आस्तिक (b) अधर्मी
(c) दुराचारी (d) नास्तिक

**46.** ईश्वर में विश्वास करने वाला
**(राजस्थान बी.एस.टी.सी/एन.टी.टी. परीक्षा 2009)**
(a) आस्तिक (b) नास्तिक
(c) भक्त (d) इनमें से कोई नहीं

**47.** पेट की अग्नि **(यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)**
(a) दावाग्नि (b) बड़वाग्नि
(c) जठराग्नि (d) मन्दाग्नि

**48.** दिशाएँ ही जिनके वस्त्र हैं **(यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)**
(a) विश्वम्भर (b) दिक्पाल
(c) पैगम्बर (d) दिगम्बर

**49.** 'गुरु के समीप रहने वाला विद्यार्थी'
(a) अन्तेवासी (b) अन्तःपुर (c) वज्रवटुक (d) ब्रह्मचारी

**50.** बहुत-सी भाषाओं को जानने वाला
**(उत्तराखण्ड सहायक लेखाकार परीक्षा 2010)**
(a) बहुभाषाविद् (b) बहुभाषाभाषी (c) बहुश्रुत (d) बहुदर्शी

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

**51.** जो वाणी द्वारा व्यक्त न किया जा सके (उ.प्र. बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2011)
(a) स्वानुभूति (b) रहस्य
(c) अनिर्वचनीय ✓ (d) इनमें से कोई नहीं

**52.** पूरब और उत्तर के बीच की दिशा
(a) अग्निकोण (b) उदीची (c) प्राची (d) ईशान ✓

**53.** जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो (नर्मदा मालवा ग्रामीण बैंक (क्लर्क) परीक्षा 2009)
(a) सेठ (b) धनी (c) वैभवशाली (d) कुलीन ✓

**54.** जिसका जन्म कन्या के गर्भ से हुआ हो (यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) कन्यापुत्र (b) कानीन ✓ (c) अवैधपुत्र (d) कुमारीसुत

**55.** हवन में जलाने वाली लकड़ी (यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2010)
(a) हवन सामग्री (b) वनकाष्ठ (c) शुष्ककाष्ठ (d) समिधा ✓

**56.** सत्, रज् व तम् से परे (म.प्र. संविदा पर्यवेक्षक भर्ती परीक्षा 2010)
(a) गुणातीत ✓ (b) गूढ़ोक्ति (c) गुढ़ोत्तर (d) गवेषण

**57.** आधी रात का समय (यू.पी.पी.एस.सी. समीक्षा अधिकारी परीक्षा 2011)
(a) शर्वरी (b) विभावरी (c) निशा (d) निशीथ ✓

**58.** कमल से युक्त जलाशय (उ.प्र. बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010)
(a) सरोवर (b) शतदल (c) नीरज (d) पद्माकर ✓

**59.** 'जिसका अनुभव किया गया हो' (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 201
(a) अनुभवी (b) अनुभूत ✓
(c) अनुभवयोग्य (d) अनुभाव्य

**60.** 'जिसकी पहले आशा नहीं की गई' (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 201
(a) अकल्पित (b) अकल्पनीय
(c) अप्रत्याशित ✓ (d) आशातीत

**61.** 'किसी भी पक्ष का समर्थन नहीं करने वाला' (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 201
(a) निरापद (b) निष्पक्ष (c) तटस्थ ✓ (d) दत्तचित्त

**62.** 'युयुत्सु' का अर्थ है (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 201
(a) युद्ध में अमर होने वाला (b) युद्ध की इच्छा
(c) युद्ध की इच्छा रखने वाला ✓ (d) दूसरों को रुलाने वाला

**63.** 'जिसमें अपमान का भाव हो, वह हँसी' क्या कहलाती है? (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 201
(a) हास (b) परिहास (c) व्यंग्य (d) उपहास ✓

**64.** 'अच्छाई और बुराई को पहचानने का गुण' कहलाता है (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 201
(a) ज्ञान (b) परिज्ञान
(c) विवेक ✓ (d) विद्वत्ता

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** (b) | **2.** (a) | **3.** (c) | **4.** (b) | **5.** (a) | **6.** (b) | **7.** (b) | **8.** (a) | **9.** (b) | **10.** (d) |
| **11.** (c) | **12.** (a) | **13.** (a) | **14.** (b) | **15.** (d) | **16.** (b) | **17.** (b) | **18.** (c) | **19.** (a) | **20.** (a) |
| **21.** (c) | **22.** (b) | **23.** (c) | **24.** (a) | **25.** (b) | **26.** (a) | **27.** (d) | **28.** (c) | **29.** (a) | **30.** (b) |
| **31.** (b) | **32.** (b) | **33.** (a) | **34.** (a) | **35.** (c) | **36.** (b) | **37.** (b) | **38.** (c) | **39.** (b) | **40.** (b) |
| **41.** (a) | **42.** (c) | **43.** (b) | **44.** (b) | **45.** (d) | **46.** (a) | **47.** (c) | **48.** (d) | **49.** (a) | **50.** (a) |
| **51.** (c) | **52.** (d) | **53.** (d) | **54.** (b) | **55.** (d) | **56.** (a) | **57.** (d) | **58.** (d) | **59.** (b) | **60.** (c) |
| **61.** (c) | **62.** (c) | **63.** (d) | **64.** (c) | | | | | | |

# अभ्यासार्थ प्रश्नावली

**1.** निम्नलिखित पदबन्धों के अर्थ को प्रकट करने वाले एक-एक शब्द लिखिए।
(i) जिस पर अनुग्रह किया गया हो।
(ii) गुरु के साथ या समीप रहने वाला विद्यार्थी।
(iii) जिसका निवारण न हो सकता हो।
(iv) जो कुछ न जानता हो।
(v) जो किसी पर अभियोग लगाए।
(vi) अतिथि की सेवा करने वाला
(vii) जो विधि या कानून के विरुद्ध हो।
(viii) जो शोक करने योग्य न हो।
(ix) जिस पर आक्रमण हो।
(x) अचानक होने वाला
(xi) जिसके समान कोई दूसरा न हो।
(xii) जिसका कोई शत्रु नहीं जन्मा हो।
(xiii) जो सब कुछ जानता हो।
(xiv) जिसका कोई अर्थ न हो।
(xv) जो पढ़ना-लिखना जानता हो।

**2.** निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।
(i) जंगल की आग
(ii) जो एक से अधिक भाषाएँ जानता हो।
(iii) जो युद्ध में स्थिर रहता हो।
(iv) रात और संध्या के बीच की बेला।
(v) कर्म करने वाला

**3.** निम्नलिखित शब्दों को वाक्यांश के रूप में लिखिए।
(i) आयात (ii) द्विज
(iii) स्वयंभू (iv) चक्रपाणि
(v) स्वकीया (vi) अतिशयोक्ति
(vii) अबोध (viii) असूर्यपश्या
(ix) किंकर्त्तव्यविमूढ़ (x) गोधूलि

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# 9 हिन्दी व्याकरण

*व्याकरण का अर्थ है—व्याकृत या विश्लेषण करने वाला शास्त्र। व्याकरण वह शास्त्र है, जो किसी भाषा के स्वरूप को स्पष्ट करता है तथा उसे शुद्ध उच्चारित करने, लिखने और समझने की विधि बताता है। इसके द्वारा भाषा विशेष के वे नियम स्पष्ट किए जाते हैं जो शिष्ट एवं सुशिक्षित जनों के भाषा-प्रयोग में दिखाई देते हैं।*

व्याकरण द्वारा भाषा का परिष्कार किया जाता है। व्याकरण वस्तुत: भाषा के अधीन होता है और भाषा के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। दूसरे शब्दों में व्याकरण भाषा की मर्यादा का उल्लंघन करने से रोकता है। भाषा का निर्माण वर्ण, शब्द और वाक्य के संयोग से होता है। व्याकरण के अन्तर्गत संज्ञा, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि का वर्णन किया गया है। हिन्दी व्याकरण के अन्तर्गत इनका विशेष स्थान है।

## संज्ञा

जिन विकारी शब्दों से किसी व्यक्ति, स्थान, प्राणी, गुण, काम, भाव आदि का बोध होता है, उन्हें संज्ञा कहते हैं। दूसरे शब्दों में वस्तु (जिसका अस्तित्व होता है या होने की कल्पना की जा सकती है उसे वस्तु कहते हैं) के नाम को संज्ञा कहते हैं। इस प्रकार **नाम** और **संज्ञा** समानार्थक शब्द हैं। व्याकरण में संज्ञा शब्द ही प्रचलित है। संज्ञा के पाँच भेद माने जाते हैं; जो निम्न हैं

### 1. जातिवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का बोध होता है, उन्हें 'जातिवाचक' संज्ञा कहते हैं; जैसे—

'घर' कहने से सभी तरह के घरों का, 'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का और 'नदी' कहने से सभी नदियों का जातिगत बोध होता है। जातिवाचक संज्ञाओं की स्थितियाँ इस प्रकार हैं

(i) **सम्बन्धियों, व्यवसायों, पदों और कार्यों के नाम** भाई, माँ, डॉक्टर, वकील, मन्त्री, अध्यक्ष, किसान, अध्यापक, मजदूर इत्यादि।

(ii) **पशु-पक्षियों के नाम** बैल, घोड़ा, हिरण, तोता, मैना, मोर इत्यादि।

(iii) **वस्तुओं के नाम** मकान, कुर्सी, मेज, पुस्तक, कलम इत्यादि।

(iv) **प्राकृतिक तत्त्वों के नाम** बिजली, वर्षा, आँधी, तूफान, भूकम्प, ज्वालामुखी इत्यादि।

### 2. व्यक्तिवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी एक ही वस्तु, व्यक्ति या स्थान आदि का बोध होता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—

(i) **व्यक्तियों के नाम** राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, हज़रत मोहम्मद, ईसा मसीह इत्यादि।

(ii) **फलों के नाम** आम, अमरूद, सेब, संतरा, केला इत्यादि।

(iii) **ग्रन्थों के नाम** रामायण, रामचरितमानस, पद्मावत, कामायनी, कुरान, साकेत इत्यादि।

(iv) **समाचार पत्रों के नाम** हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला इत्यादि

(v) **नदियों के नाम** गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी, सिन्धु इत्यादि।

(vi) **नगरों के नाम** लखनऊ, वाराणसी, आगरा, जयपुर, पटना इत्यादि।

इन शब्दों से एक ही वस्तु का बोध होता है। अत: ये सभी व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द हैं। जब व्यक्तिवाचक संज्ञा एक से अधिक का बोध कराने लगती है तो वह जातिवाचक संज्ञा हो जाती है;

जैसे—आज के युग में जयचन्दों की कमी नहीं है। यहाँ 'जयचंदों' किसी व्यक्ति का नाम न होकर विश्वासघाती व्यक्तियों की जाति का बोधक है।

जातिवाचक और व्यक्तिवाचक संज्ञा में अन्तर

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **जातिवाचक संज्ञा** | कवि | स्त्री | नदी | नगर | पर्वत |
| **व्यक्तिवाचक संज्ञा** | सूरदास | राधा | यमुना | मुम्बई | हिमालय |

### 3. भाववाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी वस्तु के गुण, दशा या व्यापार का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—

(i) **गुण के अर्थ में** सुन्दरता, कुशाग्रता, बुद्धिमत्ता इत्यादि।

(ii) **अवस्था के अर्थ में** जवानी, बचपन, बुढ़ापा इत्यादि।

(iii) **दशा के अर्थ में** उन्नति, अवनति, चढ़ाई, ढलान इत्यादि।

(iv) **भाव के अर्थ में** मित्रता, शत्रुता, कृपणता इत्यादि।

इन शब्दों से भाव विशेष का बोध होता है। अत: ये सभी भाववाचक संज्ञा शब्द हैं।

**भाववाचक संज्ञा का निर्माण** भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय में आव, अन, ई, ता, त्व, पन, आई आदि प्रत्यय जोड़कर किया जाता है; जैसे—

(i) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा

| जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| मनुष्य | मनुष्यता |
| लड़का | लड़कपन |
| पुरुष | पुरुषत्व |
| नारी | नारीत्व |
| बूढ़ा | बुढ़ापा |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

(ii) व्यक्तिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा

| व्यक्तिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| राम | रामत्व |
| रावण | रावणत्व |
| शिव | शिवत्व |

(iii) सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा

| सर्वनाम | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| अपना | अपनापन/अपनत्व |
| अहं | अहंकार |
| मम | ममत्व/ममता |
| निज | निजत्व |

(iv) विशेषण से भाववाचक संज्ञा

| विशेषण | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| कठोर | कठोरता |
| चौड़ा | चौड़ाई |
| वीर | वीरता/वीरत्व |
| सुंदर | सुंदरता/सौन्दर्य |
| ललित | लालित्य |
| भोला | भोलापन |
| हरा | हरियाली |

(v) क्रिया से भाववाचक संज्ञा

| क्रिया | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| घबराना | घबराहट |
| खेलना | खेल |
| पढ़ना | पढ़ाई |
| मिलना | मिलाप |
| भटकना | भटकाव |

(vi) अव्यय से भाववाचक संज्ञा

| अव्यय | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| दूर | दूरी |
| नीचे | नीचाई |
| निकट | निकटता |
| समीप | सामीप्य |

## 4. समूहवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से एक ही जाति की वस्तुओं के समूह का बोध होता है, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—

(i) **व्यक्तियों के समूह** कक्षा, सेना, समूह, संघ, टुकड़ी, गिरोह और दल इत्यादि।

(ii) **वस्तुओं के समूह** कुंज, ढेर, गट्ठर, गुच्छा इत्यादि।

## 5. द्रव्यवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी ऐसे पदार्थ या द्रव्य का बोध होता है, जिसे हम नाप-तौल सकते हैं लेकिन गिन नहीं सकते हैं, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—

(i) **धातुओं के नाम** सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, पीतल आदि।

(ii) **पदार्थों के नाम** दूध, दही, घी, तेल, पानी आदि।

अत: ये सभी द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द हैं।

संज्ञा के तीन आधार हैं, इन्हें 'संज्ञा की कोटियाँ' भी कहा जाता है। ये हैं—लिंग, वचन और कारक।

## मध्यान्तर प्रश्नावली

**1.** संज्ञा किसे कहते हैं?
(a) स्थान के नाम को (b) वस्तु के नाम को
(c) प्राणी के नाम को (d) ये सभी ✓

**2.** संज्ञा का भेद नहीं है
(a) जातिवाचक (b) गुणवाचक ✓
(c) व्यक्तिवाचक (d) द्रव्यवाचक

**3.** संज्ञा के कितने भेद माने जाते हैं?
(a) पाँच ✓ (b) दो
(c) सात (d) छः

**4.** जातिवाचक संज्ञा शब्द है
(a) डॉक्टर ✓ (b) कामायनी
(c) सुशील (d) बचपन

**5.** निम्नलिखित में कौन-सा शब्द, संज्ञा है?
(a) क्रुद्ध (b) क्रोध ✓
(c) क्रोधित (d) क्रोधी

**6.** 'मिठास' शब्द है
(a) व्यक्तिवाचक संज्ञा (b) जातिवाचक संज्ञा
(c) भाववाचक संज्ञा ✓ (d) समूहवाचक संज्ञा

**7.** 'महात्म्य', शब्द है
(a) क्रिया (b) विशेषण
(c) क्रिया-विशेषण (d) भाववाचक संज्ञा ✓

**8.** निम्नलिखित विकल्पों में से किस विकल्प में सभी शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं?
(a) ममता, बैल, राधेश्याम (b) राधेश्याम, पन्नालाल, हिमालय ✓
(c) आम, साधना, ऊँचाई (d) उदासी, शेर, चालाकी

**9.** निम्नलिखित विकल्पों में से किस विकल्प में सभी शब्द समूहवाचक संज्ञाएँ हैं?
(a) सेना, कक्षा, सभा ✓
(b) अध्यापक, मिठाई, समाचार
(c) पशु, मानव, अच्छा
(d) चोरी, गुरुता, साधु

**10.** निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा से सम्बन्धित है?
(a) आगरा ✓ (b) गरीब
(c) पानी (d) बचपन

### उत्तरमाला

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **1.** (d) | **2.** (b) | **3.** (a) | **4.** (a) | **5.** (b) |
| **6.** (c) | **7.** (d) | **8.** (b) | **9.** (a) | **10.** (a) |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## लिंग

लिंग शब्द संस्कृत भाषा का है, जिसका अर्थ है—चिह्न। जिस चिह्न द्वारा यह जाना जाए कि अमुक शब्द पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं। दूसरे शब्दों में, संज्ञा के जिस रूप से पुरुषत्व या स्त्रीत्व का बोध हो उसे लिंग कहते हैं। हिन्दी में लिंग दो प्रकार के होते हैं—

### 1. पुल्लिंग

जिन संज्ञा शब्दों से यथार्थ या कल्पित पुरुषत्व का बोध होता है, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं; जैसे—लड़का, बैल, घोड़ा, पेड़, नगर इत्यादि। यहाँ 'लड़का' 'बैल' 'घोड़ा' से यथार्थ पुरुषत्व तथा 'पेड़' और 'नगर' से कल्पित पुरुषत्व का बोध होता है।

### 2. स्त्रीलिंग

जिन संज्ञा शब्दों से यथार्थ या कल्पित स्त्रीत्व का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे—लड़की, गाय, लता, पुरी इत्यादि। यहाँ 'लड़की' और 'गाय' यथार्थ स्त्रीत्व का तथा 'लता' और 'पुरी' से कल्पित स्त्रीत्व का बोध होता है।

### शब्दों में स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग की पहचान करना

किसी भी भाषा के शब्द व्यवहार पर ध्यान देने से ही लिंग का ज्ञान हो जाता है। हिन्दी भाषा में सृष्टि के समस्त पदार्थों को दो ही लिंगों में विभक्त किया गया है। अत: सजीव शब्दों का लिंग निर्धारण सरलता से हो जाता है, लेकिन निर्जीव शब्दों का लिंग निर्धारण कठिन होता है। लिंग निर्धारण सम्बन्धी कोई निश्चित एवं व्यापक नियम नहीं है, फिर भी कुछ आवश्यक नियम निम्न प्रकार हैं

- संस्कृत के पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग शब्द जो हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं वे प्राय: पुल्लिंग तथा संस्कृत के स्त्रीलिंग शब्द जो हिन्दी में प्रचलित हैं प्राय: स्त्रीलिंग ही रहते हैं; जैसे—तन, मन, धन, देश, जगत् आदि शब्द पुल्लिंग हैं; सुन्दरता, आशा, लता, दिशा इत्यादि स्त्रीलिंग हैं।
- जिन शब्दों के अन्त में आ, आव, पा, पन, न प्रत्यय हो; जैसे—छोटा, मोटा, पड़ाव, बुढ़ापा, बचपन, लेन-देन आदि शब्द पुल्लिंग हैं।
- जिन शब्दों के अन्त में आई, वट, हट आदि प्रत्यय हों वे प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—सिलाई, बुनाई, कटाई, लिखावट, बनावट, घबराहट, चिल्लाहट इत्यादि।
- महीनों, दिनों, ग्रहों और पर्वतों के नाम पुल्लिंग होते हैं; जैसे—चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ ...; सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार ...; राहु, केतु, हिमालय, विन्ध्याचल इत्यादि।
- नदियों, तिथियों तथा नक्षत्रों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—गंगा, यमुना, गोदावरी, कावेरी ...; द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी...; अश्विनी, रोहिणी आदि।
- संस्कृत के ऊकारान्त और उकारान्त शब्द पुल्लिंग होते हैं; जैसे—प्रभू, भ्रू; अश्रु, जन्तु, राहु, त्रिशंकु आदि। इसी प्रकार तद्भव ऊकारान्त पुल्लिंग होते हैं; जैसे—डाकू, पिल्लू, जनेऊ आदि।
- संस्कृत के कुछ पुल्लिंग शब्द और नपुंसकलिंग शब्द हिन्दी में स्त्रीलिंग के रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—अग्नि, आत्मा, ऋतु, वायु, सन्तान, राशि इत्यादि।
- द्रव्यवाचक शब्द प्राय: पुल्लिंग रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—
  **द्रव्य** घी, तेल, मक्खन, दूध, पानी; हीरा, मोती, पन्ना, लोहा, ताँबा आदि।
- भाषा, बोली और लिपि का नाम स्त्रीलिंग में होता है; जैसे—हिन्दी, अंग्रेज़ी, रूसी, चीनी, अरबी, फ़ारसी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, कुमाऊँनी, गढ़वाली, देवनागरी, रोमन, कैथी, मुड़िया, खरोष्ठी, ब्राह्मी इत्यादि।
- कुछ प्राणिवाचक शब्द पुरुषत्व और स्त्रीत्व दोनों का बोध कराते हैं। व्यवहार के अनुसार ये **नित्य पुल्लिंग** या **नित्य स्त्रीलिंग** होते हैं; जैसे—**नित्य पुल्लिंग** चीता, उल्लू, तोता, कौआ, खटमल, हाथी आदि।
  **नित्य स्त्रीलिंग** मैना, मक्खी, कोयल, चील, गौरैया आदि।

  इन शब्दों के लिंग निर्धारण के लिए शब्दों के साथ 'नर' या 'मादा' शब्द जोड़ देते हैं; जैसे—तोता (नर), चीता (मादा), कोयल (नर) आदि।

### वाक्यों को स्त्रीलिंग से पुल्लिंग बनाने में आवश्यक नियम

*वाक्यों को स्त्रीलिंग से पुल्लिंग बनाने में आवश्यक नियम निम्नलिखित हैं*

- अकारान्त तथा आकारान्त पुल्लिंग शब्दों को 'ईकारान्त' कर देने से स्त्रीलिंग हो जाते हैं; जैसे–लड़का-लड़की,नाना-नानी, मोटा-मोटी, गोप-गोपी, हिरन-हिरनी, पुत्र-पुत्री आदि।
- 'आ' प्रत्ययान्त पुल्लिंग शब्दों में 'आ' के स्थान पर 'इया' लगाने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे–कुत्ता-कुतिया, बूढ़ा-बुढ़िया, बछड़ा-बछिया आदि।
- व्यवसायबोधक, जातिबोधक तथा उपनामवाचक शब्दों के अन्तिम स्वर का लोप करके उनमें 'इन' और 'आइन' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बन जाता है; जैसे–धोबी-धोबिन, कहार-कहारिन, माली-मालिन, बाघ-बाघिन आदि।
- कतिपय उपनामवाची शब्दों में 'आनी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है; जैसे–देवर-देवरानी, जेठ-जेठानी, सेठ-सेठानी, खत्री-खत्रानी आदि।
- जातिवाचक या भाववाचक संज्ञाओं का पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने में यदि शब्द का अन्य स्वर दीर्घ है तो उसे ह्रस्व करते हुए 'नी' प्रत्यय का भी प्रयोग होता है; जैसे–ऊँट-ऊँटनी, हाथी-हथिनी आदि।
- संस्कृत के 'वान' और 'मान' प्रत्ययान्त विशेषण शब्दों में 'वान' तथा 'मान' को क्रमश: 'वती' और 'मती' कर देने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे–पुत्रवान्-पुत्रवती, श्रीमान्-श्रीमती, बुद्धिमान्-बुद्धिमती, बलवान-बलवती, भगवान्-भगवती इत्यादि।
- संस्कृत के अकारान्त विशेषण शब्दों के अन्त में 'आ' लगा देने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे–प्रियतम-प्रियतमा, श्याम-श्यामा, चंचल-चंचला, आत्मज-आत्मजा, कान्त-कान्ता आदि
- जिन पुल्लिंग शब्दों के अन्त में 'अक' होता है उनमें 'अक' के स्थान पर 'इका' लगा देने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे–बालक-बालिका, नायक-नायिका, पालक-पालिका, सेवक-सेविका, लेखक-लेखिका आदि।

## मध्यान्तर प्रश्नावली

**1.** संज्ञा के जिस रूप से पुरुषत्व या स्त्रीत्व का बोध हो उसे क्या कहते हैं?
(a) वचन (b) कारक (c) लिंग (d) क्रिया

**2.** हिन्दी भाषा में लिंग के कितने भेद हैं?
(a) तीन (b) दो (c) चार (d) पाँच

**3.** निम्नलिखित में से किनके नाम प्राय: पुल्लिंग होते हैं?
(a) भाषाओं के नाम (b) नदियों के नाम
(c) तिथियों के नाम (d) दिनों के नाम

**4.** निम्नलिखित में से किनके नाम प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं?
(a) बोलियों के नाम (b) पेड़ों के नाम
(c) फलों के नाम (d) सागरों के नाम

**5.** कवि का स्त्रीलिंग रूप होगा
(a) कवित्री (b) लेखिका
(c) कवीत्री (d) कवयित्री

**6.** विदुषी का पुल्लिंग रूप होगा
(a) विदवान (b) विदाता (c) विद्वान् (d) विद्योता

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

7. 'राजा ने दान दिया।' वाक्य का स्त्रीलिंग रूप होगा
(a) राजाओं ने दान दिया (b) रानी ने दान दिया
(c) राजा ने प्रजा को दान दिया (d) रानियों ने दान दिया

8. छात्र ने परीक्षा उत्तीर्ण की। (रेखांकित शब्द का स्त्रीलिंग लिखिए)
(a) छात्रों (b) छात्रा (c) छात्राएँ (d) छात्री

9. मगरमच्छ का स्त्रीलिंग है
(a) मगरमच्छी (b) मगरमच्छनी (c) मादा मगरमच्छ (d) मगरमच्छानी

10. निम्नांकित में कौन शब्द पुल्लिंग प्रयोग नहीं होता
(a) हाथी (b) दही (c) नदी (d) पानी

**उत्तरमाला**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. (c) | 2. (b) | 3. (d) | 4. (a) | 5. (d) |
| 6. (c) | 7. (b) | 8. (b) | 9. (c) | 10. (c) |

## वचन

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से एकत्व या अनेकत्व का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। वचन दो प्रकार के होते हैं–

### 1. एकवचन

शब्द के जिस रूप से एक वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—नदी, लड़का, घोड़ा, कलम आदि।

### 2. बहुवचन

शब्द के जिस रूप से अनेक वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे—लड़के, घोड़े, कलमें, नदियाँ आदि।

सामान्यत: एक संख्या के लिए एकवचन और अनेक संख्याओं के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। कभी-कभी एक के लिए बहुवचन और अनेक के लिए एकवचन का प्रयोग होता है; जैसे—

### एक के लिए बहुवचन का प्रयोग

(i) सम्मानसूचक एक का बहुवचन में प्रयोग होता है; जैसे—
- महात्मा गाँधी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे।
- पिताजी बाज़ार जा रहे हैं।
- प्रधानाचार्य जी इस सभा की अध्यक्षता करेंगे।
- गुरुजी छात्रों को पढ़ा रहे हैं।
- राज्यपाल महोदय छात्रावास का शिलान्यास करेंगे।

(ii) अभिमान या अधिकार प्रकट करने के लिए संज्ञा, सर्वनाम आदि का प्रयोग बहुवचन में होता है; जैसे—
- हम उससे बात नहीं करेंगे।
- हम तुम्हें कक्षा से निकाल देंगे।

(iii) कभी-कभी कुछ शब्दों के बहुवचन रूप ही लोकव्यवहार में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—**तू** एकवचन और **तुम** बहुवचन है, परन्तु एक व्यक्ति के लिए प्राय: **तुम** शब्द का ही प्रयोग किया जाता है। **तू** शब्द का प्रचलन नगण्य है।

**तू** शब्द का प्रयोग तिरस्कार स्वरूप ही किया जाता है। अपवाद स्वरूप लोग ईश्वर के लिए **तू** शब्द का प्रयोग करते हैं।

(iv) अनेकता प्रकट करने के लिए कई संज्ञा शब्दों के साथ; लोग, गण, जन, वर्ग, वृन्द, समूह, समुदाय, जाति, दल आदि शब्द जोड़ दिए जाते हैं, तो उनका प्रयोग बहुवचन में हो जाता है; जैसे—तुम लोग, प्रियजन, अध्यापक वर्ग, नारिवृन्द, जनसमूह, जनसमुदाय, पुरुष जाति, क्रान्तिदल इत्यादि।

### अनेक के लिए एकवचन का प्रयोग

जातिवाचक संज्ञाएँ कभी-कभी एकवचन में ही बहुवचन का बोध कराती हैं; जैसे—एक किलो आलू, मुम्बई का केला, एक लाख रुपया इत्यादि।

### संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम

*संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम निम्नलिखित हैं*

- पुल्लिंग संज्ञा के 'आकारान्त' को 'एकारान्त' कर देने से बहुवचन बनता है; जैसे–लड़का-लड़के, घोड़ा-घोड़े, कपड़ा-कपड़े, बच्चा-बच्चे आदि। कुछ ऐसी भी पुल्लिंग संज्ञाएँ हैं जिनके रूप दोनों वचनों में एक से रहते हैं; जैसे–दादा, बाबा, मामा, नाना, पिता, कर्ता, दाता, योद्धा, युवा, आत्मा, देवता इत्यादि।
- आकारान्त स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा शब्दों के अन्त में 'एँ' लगाने से बहुवचन बनता है; जैसे–कथा-कथाएँ, लता-लताएँ, कामना- कामनाएँ, वार्ता-वार्ताएँ, अध्यापिका-अध्यापिकाएँ इत्यादि।
- अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों का बहुवचन संज्ञा के अन्तिम 'अ' को 'एँ' कर देने से बहुवचन बनता है; जैसे–बात-बातें, बहन-बहनें, रात-रातें, सड़क-सड़कें इत्यादि।
- इकारान्त या ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं में अन्त्य 'ई' को ह्रस्व कर अन्तिम वर्ण के बाद 'याँ' जोड़ने से बहुवचन बनता है; जैसे–तिथि-तिथियाँ, नारी-नारियाँ, नीति-नीतियाँ, रीति-रीतियाँ इत्यादि।
- संज्ञा के पुल्लिंग या स्त्रीलिंग रूपों में प्राय: 'गण', 'वर्ग', 'जन', 'लोग', 'वृन्द' लगाकर बहुवचन बनाया जाता है; जैसे–पाठक- पाठकगण, नारी- नारिवृन्द, अधिकारी-अधिकारी वर्ग, आप-आप लोग, सुधी-सुधीजन इत्यादि।
- जिन शब्दों का 'कर्ता' में एकवचन और बहुवचन समान होता है उनके साथ 'विभक्ति चिह्न' लगाने से बहुवचन बनाया जाता है; जैसे–बहू को-बहुओं को, गाँव से-गाँवों से, जाता है-जाते हैं, खेलेगा-खेलेंगे इत्यादि।

### वचन सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण निर्देश

*वचन परिवर्तन करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए*

- 'प्रत्येक' तथा 'हर एक' का प्रयोग सदा एकवचन में होता है।
- दूसरी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हिन्दी व्याकरण के अनुसार होना चाहिए; जैसे–अंग्रेज़ी का Foot (फुट) एकवचन तथा Feet (फीट) बहुवचन है। हिन्दी में फुट शब्द ही चलेगा। इसी प्रकार फ़ारसी में 'वकील' एकवचन और 'वकला' बहुवचन है, लेकिन हिन्दी में 'वकला' शब्द नहीं चलेगा। यही बात अन्य भाषाओं के शब्दों पर लागू होगी। ऐसे शब्दों का प्रयोग हिन्दी की प्रकृति और व्याकरण के अनुसार ही होगा; जैसे–

| | |
|---|---|
| (i) सड़क बीस **फीट** चौड़ी है। | *(अशुद्ध)* |
| सड़क बीस **फुट** चौड़ी है। | *(शुद्ध)* |
| (ii) रहीम के लखनऊ में तीन **मकानात** हैं। | *(अशुद्ध)* |
| रहीम के लखनऊ में तीन **मकान** हैं। | *(शुद्ध)* |
| (iii) मेरे पास अनेक महत्त्वपूर्ण **कागजात** हैं। | *(अशुद्ध)* |
| मेरे पास अनेक महत्त्वपूर्ण **कागज** हैं। | *(शुद्ध)* |
| (iv) निदेशक ने कई **स्कूल्स** का निरीक्षण किया। | *(अशुद्ध)* |
| निदेशक ने कई **स्कूलों** का निरीक्षण किया। | *(शुद्ध)* |
| (v) **वकला** ने शान्ति मार्च निकाला। | *(अशुद्ध)* |
| **वकीलों** ने शान्ति मार्च निकाला। | *(शुद्ध)* |

- भाववाचक तथा गुणवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है; जैसे–मैं आपकी सज्जनता से प्रभावित हूँ।
- द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है; जैसे–उनके पास बहुत सोना है, उनका बहुत-सा धन तिजोरी में बन्द है आदि।
- सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होने वाले शब्द–प्राण, दर्शन, आँसू, होश, बाल, हस्ताक्षर आदि हैं।
- सदैव एकवचन में प्रयुक्त होने वाले शब्द–माल, जनता, सामान, सामग्री, सोना आदि हैं।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## मध्यान्तर प्रश्नावली

1. हिन्दी में वचन के कितने भेद हैं?
(a) एक (b) तीन (c) दो (d) चार

2. कौन-सा शब्द हमेशा बहुवचन में प्रयुक्त होता है?
(a) शिशु (b) आँसू (c) भक्ति (d) ग्रंथ

3. किस वाक्य में वचन का सही प्रयोग हुआ है?
(a) मेरी होश उड़ गई। (b) हमारे होश उड़ गई।
(c) मैं होश उड़ गया। (d) मेरे होश उड़ गए।

4. वर्षा शब्द का उचित बहुवचन चुनिए।
(a) वर्षाएँ (b) वर्षाओं (c) वर्षा (d) वर्षागण

5. कौन-सा शब्द हमेशा एकवचन में प्रयुक्त होता है?
(a) माल (b) दर्शन
(c) होश (d) हस्ताक्षर

**उत्तरमाला**

1. (c) 2. (b) 3. (d) 4. (c) 5. (a)

# कारक

वाक्य में जिस शब्द का सम्बन्ध क्रिया से होता है, उसे कारक कहते हैं। इन्हें **विभक्ति** या **परसर्ग** (बाद में जुड़ने वाले) भी कहा जाता है। ये सामान्यत: स्वतन्त्र होते हैं और संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होते हैं। हिन्दी में परसर्ग प्रत्ययों के विकसित रूप हैं। हिन्दी में आठ कारक माने गए हैं, जो निम्न हैं

1. कर्ता कारक 2. कर्म कारक 3. करण कारक 4. सम्प्रदान कारक 5. अपादान कारक 6. सम्बन्ध कारक 7. अधिकरण कारक एवं 8. सम्बोधन कारक

## 1. कर्ता कारक

वाक्य में जिस शब्द द्वारा काम करने का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं; जैसे— **राम ने श्याम को मारा।**

इस वाक्य में **राम** कर्ता है, क्योंकि **मारा** क्रिया करने वाला 'राम' ही है। इसका परसर्ग **ने** है। ने के प्रयोग के कुछ नियम निम्नलिखित हैं

(i) 'ने' का प्रयोग केवल तिर्यक संज्ञाओं और सर्वनाम के बाद होता है; जैसे—राम **ने**, लड़कों **ने**, **मैंने**, **तुमने**, **आपने**, **उसने** इत्यादि।

(ii) 'ने' का प्रयोग कर्ता के साथ तब होता है जब क्रिया सकर्मक तथा सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत और संदिग्धभूत कालों में कर्मवाच्य या भाववाच्य हो; जैसे—
- **सामान्यभूत** बालक **ने** पुस्तक पढ़ी।
- **आसन्नभूत** बालक **ने** पुस्तक पढ़ी है।
- **पूर्णभूत** बालक **ने** पुस्तक पढ़ ली थी।
- **संदिग्धभूत** बालक **ने** पुस्तक पढ़ी होगी।
- **हेतुहेतुमद्भूत** बालक **ने** पुस्तक पढ़ी होती तो उत्तर ठीक होता।

इस प्रकार केवल **अपूर्णभूत** को छोड़कर शेष पाँच भूतकालों में 'ने' का प्रयोग होता है।

(iii) सामान्यत: अकर्मक क्रिया के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता है। लेकिन नहाना, छींकना, थूकना, खाँसना आदि में 'ने' का प्रयोग होता है; जैसे—
- **मैंने** छींका।
- **राम ने** थूका।
- **आपने** नहाया।
- **उसने** खाँसा।

(iv) जब अकर्मक क्रियाएँ सकर्मक बनकर प्रयुक्त होती हैं, तब 'ने' का प्रयोग होता है; जैसे—
- **उसने** अच्छा गाया।
- **आपने** अच्छा किया।

हिन्दी में 'ने' का प्रयोग सुनिश्चित है लेकिन उसका सर्वत्र प्रयोग नहीं होता। इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय बातें निम्न प्रकार हैं—

(क) अकर्मक क्रियाओं के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता है; जैसे—
- मोहन **हँसता** है।
- वह **आएगा**।
- श्याम **गया**।

(ख) सकर्मक क्रियाओं के साथ भी कर्ता के साथ वर्तमान और भविष्य काल में 'ने' का प्रयोग नहीं होता है; जैसे—
- राम रोटी **खाएगा**।
- मैं चाय **पीता** हूँ।

(ग) जिन वाक्यों में बकना, बोलना, भूलना, लाना, ले जाना, चुकना आदि सहायक क्रियाएँ आती हैं उनमें 'ने' का प्रयोग नहीं होता है; जैसे—
- मैं लिखना **भूल** गया।
- मैं साइकिल नहीं **लाया**।
- वह नहीं **बोला**।
- वह पुस्तक पढ़ **चुका**।

## 2. कर्म कारक

वाक्य में क्रिया का प्रभाव या फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं; जैसे— **राम ने श्याम को मारा**

यहाँ कर्ता **राम** है और उसके मारने का फल 'श्याम' पर पड़ता है। अत: **श्याम कर्म** है। यहाँ श्याम के साथ कारक चिह्न 'को' का प्रयोग हुआ है। कर्म कारक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है

(i) कर्म कारक 'को' का प्रयोग चेतन या सजीव कर्म के साथ होता है; जैसे—
- श्याम ने गीता **को** पत्र लिखा।
- राम ने श्याम **को** पुस्तक दी।
- पिता ने पुत्र **को** बुलाया।
- गुरु ने शिष्य **को** शिक्षा दी।

(ii) दिन, समय और तिथि प्रकट करने के लिए 'को' का प्रयोग होता है; जैसे—
- श्याम सोमवार **को** लखनऊ जाएगा।
- 15 अगस्त **को** दिल्ली चलेंगे।
- रविवार **को** विद्यालय बन्द रहेगा।

(iii) जब विशेषण का प्रयोग संज्ञा के रूप में कर्म कारक की भाँति होता है, तब उसके साथ 'को' का प्रयोग होता है; जैसे—
- बुरों **को** कोई नहीं चाहता।
- भूखों **को** भोजन कराओ।

अचेतन या निर्जीव कर्म के साथ 'को' का प्रयोग नहीं होता; जैसे—
- उसने खाना **खाया**।
- गोपाल ने फिल्म **देखी**।
- सीता घर **गई**।
- फूल मत **तोड़ो**।

## 3. करण कारक

करण का अर्थ है—साधन। संज्ञा का वह रूप जिससे किसी क्रिया के साधन का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं; जैसे—
- शिकारी ने शेर को बन्दूक से मारा।

इस वाक्य में बन्दूक द्वारा शेर मारने का उल्लेख है। अतएव **बन्दूक** करण कारक हुआ। करण कारक के चिह्न हैं—'से', 'के' 'द्वारा', 'के कारण', 'के साथ', 'के बिना' आदि।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

करण कारक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है

(i) साधन के अर्थ में करण कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- मैंने गुरु जी **से** प्रश्न पूछा।
- उसने तलवार **से** शत्रु को मार डाला।
- गीता तूलिका **से** चित्र बनाती है।

(ii) साधक के अर्थ में भी करण कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- **उससे** कोई अपराध नहीं हुआ।
- **मुझसे** यह सहन नहीं होता।

(iii) भाववाचक संज्ञा से क्रिया विशेषण बनाते समय करण कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- नम्रता **से** बात करो।
- खुद **से** कहता हूँ।

(iv) मूल्य या भाव बताने के लिए करण कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- आजकल आलू किस भाव **से** बिक रहा है।

(v) उत्पत्ति सूचक अर्थ में भी करण कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- कोयला खान **से** निकलता है।
- गन्ने के रस **से** चीनी बनाई जाती है।
- लोभ **से** क्षोभ उत्पन्न होता है।

(vi) प्यार, मैत्री, बैर होने पर करण कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- राम की रावण **से** शत्रुता थी।
- राम का विवाह सीता **के** साथ हुआ।

## 4. सम्प्रदान कारक

जिसके लिए कुछ किया जाए या जिसको कुछ दिया जाए इसका बोध कराने वाले शब्द को सम्प्रदान कारक कहते हैं; जैसे—**उसने विद्यार्थी को पुस्तक दी** वाक्य में विद्यार्थी सम्प्रदान है और इसका चिह्न **को** है।

कर्म और सम्प्रदान कारक का विभक्ति चिह्न **को** है, परन्तु दोनों के अर्थों में अन्तर है। **सम्प्रदान** का **को, के लिए** अव्यय के स्थान पर या उसके अर्थ में प्रयुक्त होता है, जबकि **कर्म** के **को** का **के लिए** अर्थ से कोई सम्बन्ध नहीं है; जैसे—

| कर्मकारक | सम्प्रदान कारक |
|---|---|
| सुनील अनिल **को** मारता है। | सुनील अनिल **को** रुपए देता है। |
| माँ ने बच्चों **को** खेलते देखा। | माँ ने बच्चे **के लिए** खिलौने खरीदे। |
| उस लड़के **को** बुलाया। | उसने लड़के **को** मिठाइयाँ दीं। |

सम्प्रदान कारक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है

(i) किसी वस्तु को दिए जाने के अर्थ में **को, के लिए** अथवा **के वास्ते** का प्रयोग होता है; जैसे—
- उमेश **को** पुस्तकें दो।
- अतिथि **के लिए** चाय लाओ।
- बाढ़ पीड़ितों **के वास्ते** चन्दा दीजिए।

(ii) निमित्त प्रकट करने के लिए सम्प्रदान कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- मैं गीता **के लिए** घड़ी लाया हूँ।
- वह **आपके लिए** फल लाया है।
- रोगी **के वास्ते** दवा लाओ।

(iii) अवधि का निर्देश करने के लिए भी सम्प्रदान कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- वह चार माह **के लिए** देहरादून जाएगा।
- वे पन्द्रह दिन **के लिए** लखनऊ आएँगे।
- मुझे दो दिन **के लिए** मोटर साइकिल चाहिए।

(iv) 'चाहिए' शब्द के साथ भी सम्प्रदान कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- मजदूरों **को** मजदूरी चाहिए।
- छात्रों **के लिए** पुस्तकें चाहिए।
- बच्चों **के वास्ते** मिठाई चाहिए।

## 5. अपादान कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से दूर होने, निकलने, डरने, रक्षा करने, कि सीखने, तुलना करने का भाव प्रकट होता है, उसे अपादान कारक कहते इसका चिह्न **से** है; जैसे—
- मैं अल्मोड़ा **से** आया हूँ।
- मैं जोशी जी **से** आशुलिपि सीखता हूँ।
- आपने मुझे हानि **से** बचाया।
- अंकित ममता **से** छोटा है।
- हिरन शेर **से** डरता है।

### करण कारक और अपादान कारक में अन्तर

करण और अपादान दोनों कारकों में 'से' चिह्न का प्रयोग होता है, किन्तु इन दोनों में मूलभूत अन्तर है। करण क्रिया का साधन या उपकरण है। कर्ता कार्य सम्पन्न करने के लिए जिस उपकरण या साधन का प्रयोग करता है, उसे करण कहते हैं; जैसे–'मैं कलम से लिखता हूँ।' यहाँ कलम लिखने का उपकरण है।

अतः कलम शब्द का प्रयोग करण कारक में हुआ है। अपादान में अलगाव का भाव निहित है; जैसे–'पेड़ से पत्ता गिरा।' यहाँ अपादान कारक पेड़ में है, पत्ते में नहीं, जो अलग हुआ है उसमें अपादान कारक नहीं माना जाता, अपितु जहाँ से अलग हुआ है, उसमें अपादान कारक होता है। पेड़ तो अपनी जगह स्थित है, पत्ता अलग हो गया। अतः स्थिर वस्तु अपादान कारक होगी।

## 6. सम्बन्ध कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी अन्य शब्द के साथ सम्बन्ध या लगा प्रतीत हो उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। सम्बन्ध कारक में विभक्ति सदै लगाई जाती है। सम्बन्ध कारक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है

(i) एक संज्ञा या सर्वनाम का, दूसरी संज्ञा या सर्वनाम से सम्बन्ध प्रदर्शि करने के लिए सम्बन्ध कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- अनीता सुरेश **की** बहन है।
- अनिल अजय **का** भाई है।
- सुरेन्द्र वीरेन्द्र **का** मित्र है।

(ii) स्वामित्व या अधिकार प्रकट करने के लिए सम्बन्ध कारक का प्रयो होता है; जैसे—
- आप **किस की** आज्ञा से आए हैं।
- नेताजी **का** लड़का बदमाश है।
- यह उमेश **की** कलम है।

(iii) कर्तृत्व प्रकट करने के लिए सम्बन्ध कारक का प्रयोग होता है; जैसे—प्रेमचन्द **के** उपन्यास, शिवानी **की** कहानियाँ, मैथिलीशरण गुप्त **का** साकेत, कबीरदास **के** दोहे इत्यादि।

(iv) परिमाण प्रकट करने के लिए भी सम्बन्ध कारक का प्रयोग होता है; जैसे—पाँच मीटर **की** साड़ी, चार पदों **की** कविता आदि।

(v) मोलभाव प्रकट करने के लिए भी सम्बन्ध कारक का प्रयोग होता है; जैसे—दस रुपए **की** प्याज, बीस रुपए **के** आलू, पचास हजार **की** मोटर साइकिल आदि।

(vi) निर्माण का साधन प्रदर्शित करने के लिए भी सम्बन्ध कारक का प्रयोग होता है; जैसे—ईंटों **का** मकान, चमड़े **का** जूता, सोने **की** अँगूठी आदि।

(vii) सर्वनाम की स्थिति में सम्बन्ध कारक का रूप **रा, रे, री** हो जाता है; जैसे—मेरी पुस्तक, तुम्हारा पत्र, मेरे दोस्त आदि।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## 7. अधिकरण कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया का आधार सूचित होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं, इसके परसर्ग (कारक चिह्न) **में, पर** हैं। अधिकरण कारक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है

(i) स्थान, समय, भीतर या सीमा का बोध कराने के लिए अधिकरण कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- उमेश लखनऊ **में** पढ़ता है।
- उसके हाथ **में** कलम है।
- वह तीन दिन **में** आएगा।
- पुस्तक मेज **पर** है।
- ठीक समय **पर** आ जाना।

(ii) तुलना, मूल्य और अन्तर का बोध कराने के लिए अधिकरण कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- कमल सभी फूलों **में** सुन्दरतम् है।
- यह कलम पाँच रुपए **में** मिलती है।
- कुछ सांसद चार करोड़ **में** बिक गए।
- गरीब और अमीर **में** बहुत अन्तर है।

(iii) निर्धारण और निमित्त प्रकट करने के लिए अधिकरण कारक का प्रयोग होता है; जैसे—
- छोटी-सी बात **पर** मत लड़ो।
- सारा दिन ताश खेलने **में** बीत गया।

## 8. सम्बोधन कारक

संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारने, चेतावनी देने या सम्बोधित करने का बोध होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। सम्बोधन कारक की कोई विभक्ति नहीं होती है। इसे प्रकट करने के लिए हे, अरे, अजी, रे आदि शब्दों का प्रयोग होता है; जैसे—
- हे राम! रक्षा करो।
- अरे मूर्ख! सँभल जा।
- ओ लड़कों! खेलना बन्द करो।

### विभक्तियाँ और विभक्तिबोधक चिह्न

| विभक्ति | कारक का नाम | विभक्तिबोधक चिह्न |
|---|---|---|
| प्रथमा | कर्ता (Nominative) | ने |
| द्वितीया | कर्म (Objective) | को |
| तृतीया | करण (Instrumental) | से, के द्वारा |
| चतुर्थी | सम्प्रदान (Dative) | को, के लिए |
| पंचमी | अपादान (Ablative) | से (अलगाव) |
| षष्ठी | सम्बन्ध (Genitive) | का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी |
| सप्तमी | अधिकरण (Locative) | में, पर |
| सम्बोधन | सम्बोधन (Abdressive) | हे, अजी, अहो, अरे इत्यादि। |

## मध्यान्तर प्रश्नावली

**1.** वाक्य में शब्द का सम्बन्ध किससे होता है?
(a) लिंग (b) वचन
(c) कारक ✓ (d) इनमें से कोई नहीं

**2.** हिन्दी में कितने कारक हैं?
(a) दस (b) नौ
(c) सात (d) आठ ✓

**3.** 'राम ने श्याम को मारा।' वाक्य में कौन-सा कारक है?
(a) कर्ता कारक ✓ (b) कर्म कारक
(c) करण कारक (d) अपादान कारक

**4.** निम्नलिखित में से किस वाक्य में कर्मकारक है?
(a) वह दिन में आएगा (b) भूखों को खाना खिलाओ ✓
(c) पेड़ से पत्ता गिरा (d) मैं घर पर जाता हूँ

**5.** किस वाक्य में अपादान कारक है?
(a) राम ने रावण को तीर से मारा
(b) मोहन से अब नहीं गाया जाता
(c) हिमालय से गंगा निकलती है ✓
(d) चाकू से फल काटो

**6.** के लिए किस कारक का चिह्न है?
(a) कर्म (b) सम्प्रदान ✓
(c) सम्बन्ध (d) करण

**7.** 'प्रत्येक प्रश्न..... चार सम्भावित प्रश्न दिए गए हैं।' रिक्त स्थान में उचित विभक्ति चिह्न भरिए
(a) के लिए (b) में ✓
(c) से (d) के

**8.** 'बालक ने पुस्तक पढ़ी होगी।' वाक्य में प्रयुक्त कारक चिह्न है
(a) कर्म कारण (b) अधिकरण कारक
(c) करण कारक (d) कर्ता कारक ✓

**9.** 'हे राम! रक्षा करो।' वाक्य में कौन-सा कारक है?
(a) कर्ता (b) अपादान
(c) सम्बोधन ✓ (d) अधिकरण

**10.** निम्नलिखित कारकों को उनकी विभक्ति से सुमेलित कीजिए

| | कारक | | विभक्ति चिह्न |
|---|---|---|---|
| (क) | अधिकरण | (i) | को |
| (ख) | कर्ता | (ii) | में, पर |
| (ग) | करण | (iii) | ने |
| (घ) | कर्म | (iv) | से, के द्वारा |

(a) क-(i), ख-(ii), ग-(iii), घ-(iv)
(b) क-(ii), ख-(iii), ग-(iv), घ-(i) ✓
(c) क-(iii), ख-(ii), ग-(iv), घ-(i)
(d) क-(ii), ख-(iii), ग-(i), घ-(iv)

### उत्तरमाला

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **1.** (c) | **2.** (d) | **3.** (a) | **4.** (b) | **5.** (c) |
| **6.** (b) | **7.** (b) | **8.** (d) | **9.** (c) | **10.** (b) |

# सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं। "राजीव देर से घर पहुँचा, क्योंकि उसकी ट्रेन देर से चली थी।" इस वाक्य में 'उसकी' का प्रयोग 'राजीव' के लिए हुआ है, अत: 'उसकी' शब्द सर्वनाम कहा जाएगा। हिन्दी में सर्वनामों की संख्या 11 हैं, जो निम्न हैं—

मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## सर्वनाम के भेद

व्यावहारिक आधार पर सर्वनाम के निम्नलिखित छः भेद है

### 1. पुरुषवाचक सर्वनाम

वक्ता, श्रोता और अन्य (जिसके सम्बन्ध में बात हो) का बोध कराने वाला सर्वनाम, पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते है

#### (i) उत्तम पुरुष

वक्ता या लेखक जिन सर्वनामों का प्रयोग अपने लिए करता है, उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते है; जैसे—**मैं** पढ़ता हूँ। इस वाक्य में वक्ता या लेखक ने अपने लिए 'मैं' सर्वनाम का प्रयोग किया है। अतः यह उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम है। इसी प्रकार, **हम** दिल्ली जाएँगे। वाक्य में 'हम' उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम है।

#### (ii) मध्यम पुरुष

वक्ता या लेखक जिससे अपनी बात कहता है उसके लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते है; जैसे—

- **तू** कहाँ गया था?
- **तुम** अपना कार्य नहीं करते हो।
- **आप** भोजन करें।

इन वाक्यों में तू, तुम और आप मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम है।

#### (iii) अन्य पुरुष

वक्ता या लेखक, श्रोता या पाठक से जिसके विषय में बात करता है उसके लिए प्रयुक्त होने वाला सर्वनाम अन्य पुरुषवाचक कहलाता है; जैसे—

- **वे** कौन हैं?
- **वह** दुष्ट है।
- यह कलम है।
- **ये** बन्दर है।

इन वाक्यों में वे, वह, यह, ये शब्द अन्यपुरुष वाचक सर्वनाम हैं।

### 2. निजवाचक सर्वनाम

वक्ता या लेखक जहाँ अपने लिए 'आप' या 'अपने आप' शब्द का प्रयोग करता है वहाँ निजवाचक सर्वनाम होता है; जैसे—

- मैं तो **अपने आप** ही आता था।
- **मैं अपने आप** काम कर लूँगा।
- **आप** भला तो जग भला

### 3. प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्रश्न पूछने के लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- **कौन** शोर कर रहा है?
- तुझे **क्या** हो गया है?
- तुम **कहाँ** रहते हो?

इन वाक्यों में कौन, क्या और कहाँ प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

### 4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के साथ सम्बन्ध प्रदर्शित करने के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- **जिसकी** लाठी **उसकी** भैंस।
- **जो** देता है **सो** लेता है।
- **जो** कहा गया **वही** करो।

### 5. निश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु का बोध होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। 'यह', 'वह', 'ये', 'वे' निश्चयवाचक सर्वनाम हैं; जैसे—

- **यह** उपयोगी साधन है।
- **ये** भ्रष्टाचार के प्रबल विरोधी हैं।
- **वह** बहुत सुन्दर है।
- **वे** अच्छे लोग नहीं हैं।

### 6. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- **कोई** आ रहा है।
- वह **कुछ** लाया था।

### सर्वनाम के प्रयोग सम्बन्धी निर्देश

*सर्वनाम का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए*

- स्त्रीलिंग और पुल्लिंग के आधार पर सर्वनाम में परिवर्तन नहीं होता; जैसे– 'यह', 'वह', 'मैं', 'तुम' आदि स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों में समान रहते हैं; जैसे–
  - वह खाता है।
  - वह खाती है।
- वचन और कारक के आधार पर सर्वनामों में रूपान्तर होता है; जैसे–मैं-हम, तू-तुम, मेरा-हमारा; आप-आपने, आपसे, आपको, आपके लिए इत्यादि।
- सर्वनाम जिस संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है उसी के अनुसार लिंग और वचन चलते हैं।
- उत्तम पुरुष सम्बन्ध कारक के चिह्न 'का', 'की', 'के' क्रमशः 'रा', 'रे' के रूप में बदल जाते हैं।
- 'मैं', 'तू', 'यह', 'वह' विभक्ति रहित सर्वनाम कर्ता कारक के बहुवचन में क्रमशः 'हम', 'तुम', 'ये', 'वे' के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।

## मध्यान्तर प्रश्नावली

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को क्या कहते हैं?
   (a) विशेषण (b) सर्वनाम ✓
   (c) क्रिया (d) कारक
2. हिन्दी में सर्वनामों की कितनी संख्या है?
   (a) बारह (b) ग्यारह ✓
   (c) तेरह (d) दस
3. मोहन प्रकाशजी ..... हिन्दी पढ़ाते हैं इस वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति अन्यपुरुषवाचक सर्वनाम से करें।
   (a) मुझे (b) तुम्हें
   (c) उन्हें ✓ (d) हमें
4. 'मुझे' शब्द किस प्रकार का सर्वनाम है?
   (a) उत्तम पुरुष ✓ (b) मध्यम पुरुष
   (c) अन्य पुरुष (d) इनमें से कोई नहीं

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

5. निश्चयवाचक सर्वनाम कौन-सा है?
(a) कौन (b) कुछ
(c) कोई (d) यह

6. शायद कमरे में कोई छिपा हुआ है इस वाक्य में रेखांकित शब्द है—
(a) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (b) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(c) प्रश्नवाचक सर्वनाम (d) सम्बन्धबोधक सर्वनाम

7. निम्नलिखित सर्वनाम के भेदों को उनके शब्दों से सुमेलित कीजिए।

| सर्वनाम के भेद | शब्द |
|---|---|
| (क) पुरुषवाचक | (i) कौन, क्या |
| (ख) निजवाचक | (ii) मैं, तू, आप |
| (ग) प्रश्नवाचक | (iii) अपने आप |
| (घ) अनिश्चयवाचक | (iv) कोई, कुछ |

(a) क-(ii), ख-(iii), ग-(i), घ-(iv) (b) क-(ii), ख-(iii), ग-(iv), घ-(i)
(c) क-(iii), ख-(ii), ग-(i), घ-(iv) (d) क-(i), ख-(iii), ग-(ii), घ-(iv)

**उत्तरमाला**

1. (b) 2. (b) 3. (c) 4. (a) 5. (d)
6. (b) 7. (a)

# विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। विशेषण जिसकी विशेषता बताता है उसे विशेष्य कहते हैं। विशेषणों की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं; जैसे—

राम बहुत तेज़ दौड़ता है।
↓ ↓ ↓
विशेष्य प्रविशेषण विशेषण

दिए गए उदाहरण में **राम** संज्ञा शब्द है जिसकी विशेषता **तेज़ दौड़ने** से है। अत: यहाँ **तेज़** विशेषण है।

विशेषण (तेज़), राम की विशेषता बता रहा है। अत: **राम** विशेष्य है। (तेज़) विशेषण की विशेषता (**बहुत**) यहाँ **प्रविशेषण** है।

विशेषण के चार प्रमुख निम्नलिखित भेद हैं

## 1. गुणवाचक विशेषण

जिन शब्दों द्वारा संज्ञा के गुण अथवा दोष का बोध होता है, उन्हें 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं। गुणवाचक विशेषण के प्रमुख रूप निम्नलिखित हैं

(i) **भाव** शूरवीर, कायर, बलवान, दयालु, निर्दयी, अच्छा, बुरा इत्यादि।
(ii) **काल** अगला, पिछला, नया, पुराना इत्यादि।
(iii) **स्थान** ग्रामीण, शहरी, मैदानी, पहाड़ी, पंजाबी, बिहारी इत्यादि।
(iv) **आकार** टेढ़ा-मेढ़ा, सुन्दर, भद्दा, लम्बा, ऊँचा, नीचा, ठिगना, चौड़ा इत्यादि।
(v) **समय** प्रात:कालीन, सायंकालीन, मासिक, त्रैमासिक, साप्ताहिक, दैनिक इत्यादि।
(vi) **दशा** स्वस्थ, अस्वस्थ, रोगी, निरोग, दुबला, कमजोर, बलिष्ठ इत्यादि।
(vii) **रंग** लाल, हरा, पीला, नीला, काला, सफेद, बैंगनी, नारंगी इत्यादि।

## 2. परिमाणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों द्वारा संज्ञा की मात्रा (नाप-तौल) का बोध होता है, उन्हें 'परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं। परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं

(i) **निश्चित परिमाणवाचक** जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा की निश्चित मात्रा का बोध होता है, उन्हें 'निश्चित परिमाणवाचक' विशेषण कहते हैं; जैसे—**एक लीटर** दूध, **दस मीटर** कपड़ा, **एक किलो** आलू आदि।
(ii) **अनिश्चित परिमाणवाचक** जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा की अनिश्चित मात्रा का बोध होता है, उन्हें 'अनिश्चित परिमाणवाचक' विशेषण कहते हैं; जैसे—**थोड़ा** दूध, **कुछ** शहद, **बहुत** पानी, **अधिक** पैसा आदि।

## 3. संख्यावाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—**एक** मेज, **चार** कुर्सियाँ, **दस** पुस्तकें, **कुछ** रुपये इत्यादि। संख्यावाचक विशेषण तीन प्रकार के होते हैं

(i) **निश्चित संख्यावाचक** जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध होता है, उन्हें 'निश्चित संख्यावाचक' विशेषण कहते हैं; जैसे—एक, दो, तीन; पहला, दूसरा, तीसरा; इकहरा, दोहरा; दोनों, तीनों, चारों, पाँचों इत्यादि।
(ii) **अनिश्चित संख्यावाचक** जिन विशेषण शब्दों से अनिश्चित संख्या का बोध होता है, उन्हें 'अनिश्चित संख्यावाचक' विशेषण कहते हैं; जैसे—**थोड़े** आदमी, **कुछ** रुपए आदि।
(iii) **विभागबोधक** जिन विशेषण शब्दों से **विभाग** या **प्रत्येक** का बोध होता है, उन्हें **विभागबोधक** विशेषण कहते हैं; जैसे—प्रत्येक व्यक्ति, पाँच-पाँच हाथी, दस-दस घोड़े आदि।

## 4. सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम शब्द संज्ञा के लिए विशेषण का काम करते हैं, उन्हें 'सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं। 'यह', 'वह', 'जो', 'कौन', 'क्या', 'कोई', 'ऐसा', 'ऐसी', 'वैसा', 'वैसी' इत्यादि ऐसे सर्वनाम हैं, जो संज्ञा शब्दों के पहले प्रयुक्त होकर विशेषण का कार्य करते हैं, इसलिए इन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जब ये सर्वनाम अकेले प्रयुक्त होते हैं तो सर्वनाम होते हैं; जैसे—

- **वह** लड़का बदमाश है।
- **इस** परीक्षार्थी ने नकल की है।
- **वह** नेता विधायक है।

## विशेषण की तुलनावस्था

विशेषण संज्ञा शब्दों की विशेषता बताते हैं। यह विशेषता किसी में सामान्य, किसी में कुछ अधिक और किसी में सबसे अधिक होती है। विशेषणों के इसी उतार-चढ़ाव को तुलना कहा जाता है। इस प्रकार, दो या दो-से-अधिक वस्तुओं या भावों के गुण, मान आदि के मिलान या तुलना करने वाले विशेषण को तुलनात्मक विशेषण कहते हैं। हिन्दी में तुलनात्मक विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं

### 1. मूलावस्था

इसमें तुलना नहीं होती; सामान्य रूप से विशेषता बताई जाती है; जैसे—अच्छा, बुरा, बहादुर, कायर आदि।

### 2. उत्तरावस्था

इसमें दो की तुलना करके एक की अधिकता या न्यूनता दिखाई जाती है; जैसे—**राम श्याम से अधिक बुद्धिमान है।** इस वाक्य में राम की बुद्धिमत्ता श्याम से अधिक बताई गई है। अत: यहाँ तुलनात्मक विशेषण की उत्तरावस्था है।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

### 3. उत्तमावस्था

इसमें दो से अधिक वस्तुओं, भावों की तुलना करके एक को सबसे अधिक या न्यून बताया जाता है; जैसे—**अंकुर कक्षा में सबसे अधिक बुद्धिमान है।** इस वाक्य में अंकुर को कक्षा में सबसे अधिक बुद्धिमान बताया गया है। अतः यहाँ तुलनात्मक विशेषण की उत्तमावस्था है।

### तुलनात्मक विशेषण की दृष्टि से विशेषणों की अवस्थाएँ

| मूलावस्था (Positive Degree) | उत्तरावस्था (Comparative Degree) | उत्तमावस्था (Superlative Degree) |
|---|---|---|
| अधिक | अधिकतर | अधिकतम |
| उच्च | उच्चतर | उच्चतम |
| कोमल | कोमलतर | कोमलतम |
| गुरु | गुरुतर | गुरुतम |
| निकट | निकटतर | निकटतम |
| निम्न | निम्नतर | निम्नतम |
| बृहत् | बृहत्तर | बृहत्तम |
| महत् | महत्तर | महत्तम |
| सुन्दर | सुन्दरतर | सुन्दरतम |
| लघु | लघुतर | लघुतम |

### विशेषण सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण निर्देश

*विशेषण का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए*

- हिन्दी में विशेषण शब्दों के आगे विभक्ति चिह्न नहीं लगते; जैसे–वीर मनुष्य, अच्छे घर का।
- विशेषण के लिंग वचन और कारक वही होते हैं, जो विशेष्य के; जैसे–अच्छे विद्यार्थी, अच्छा विद्यार्थी। आकारान्त विशेषण स्त्रीलिंग में ईकारान्त हो जाते हैं; जैसे–काला घोड़ा, काली घोड़ी, अच्छा लड़का, अच्छी लड़की आदि।
- पुल्लिंग आकारान्त विशेषण का अन्तिम 'आ' कर्ता कारक एकवचन को छोड़कर अन्य सब कारकों में 'ए' हो जाता है; जैसे–अच्छे लड़के को; बुरे लोगों से।
- विशेषणों की विशेषता बताने वाला शब्द भी विशेषण होता है; जैसे–थोड़ा फटा कपड़ा, बहुत सुन्दर घर आदि।
- संस्कृत विशेषणों के रूप हिन्दी में विशेष्य के लिंग के अनुसार कभी नहीं बदलते और कभी बदल जाते हैं; जैसे–सुन्दर काया, सुशील लड़की आदि।

## मध्यान्तर प्रश्नावली

1. जो शब्द संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उन्हें क्या कहते हैं?
(a) अव्यय (b) क्रिया (c) कारक (d) विशेषण ✓

2. निम्नलिखित में से विशेष्य क्या है?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) कारक (d) 'a' और 'b' ✓

3. प्रविशेषण किसे कहते हैं?
(a) विशेषण की विशेषता बताने वाला शब्द ✓
(b) विशेष्य के पहले लगने वाला शब्द
(c) विशेष्य की विशेषता बताने वाला शब्द
(d) विधेय की विशेषता बताने वाला शब्द

4. विशेषण कितने प्रकार के होते हैं?
(a) तीन (b) चार ✓
(c) छः (d) पाँच

5. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द गुणवाचक है?
(a) यह (b) थोड़ा
(c) दस (d) कपटी ✓

6. पिताजी ने दो लीटर दूध खरीदा। रेखांकित पद मे विशेषण का कौ
प्रकार है?
(a) निश्चित परिमाणवाचक ✓ (b) अनिश्चित परिमाणवाचक
(c) अनिश्चित संख्यावाचक (d) निश्चित संख्यावाचक

7. संख्यावाचक विशेषण से सम्बन्धित है
(a) भद्दा (b) सुन्दर
(c) दस मीटर कपड़ा (d) चार कुर्सियाँ ✓

8. वह नेता विधायक है। रेखांकित पद कौन-सा विशेषण प्रकार है?
(a) गुणवाचक (b) सार्वनामिक ✓
(c) संख्यावाचक (d) परिमाणवाचक

9. 'गुरु' शब्द की उत्तमावस्था क्या होगी?
(a) गुरुतम ✓ (b) गुरुजन
(c) गुरुओं (d) गुरुजी

10. सुन्दरतम की मूलावस्था क्या होगी?
(a) सुन्दरता (b) सुन्दरम
(c) सुन्दरी (d) सुन्दर ✓

11. उच्च की उत्तरावस्था क्या होगी?
(a) उच्चतम (b) उच्चतर ✓ (c) ऊँचा (d) उच्चम

12. संस्कृति का विशेषण क्या है?
(a) संस्कृत (b) सांस्कृति
(c) संस्कृतिक (d) सांस्कृतिक ✓

13. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द विशेषण है?
(a) मात्र (b) खर्च (c) नया ✓ (d) मित्र

14. 'प्रिय' विशेषण के साथ प्रयुक्त होने वाली संज्ञा नहीं है
(a) विषय (b) बैरी ✓ (c) कवि (d) मित्र

15. किस वाक्य में 'अच्छा' शब्द का प्रयोग विशेषण के रूप में हुआ है
(a) तुमने अच्छा किया जो आ गए (b) यह स्थान बहुत अच्छा है
(c) अच्छा, तुम घर जाओ (d) अच्छा है वह अभी आ जाए

**उत्तरमाला**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. (d) | 2. (d) | 3. (a) | 4. (b) | 5. (d) |
| 6. (a) | 7. (d) | 8. (b) | 9. (a) | 10. (d) |
| 11. (b) | 12. (d) | 13. (c) | 14. (b) | 15. (b) |

## क्रिया

जिन शब्दों से किसी कार्य का होना या करना समझा जाए, उन्हें 'क्रिया' कहते जैसे—खाना, पीना, पढ़ना, लिखना, चलना, दौड़ना इत्यादि। हिन्दी में क्रिया रूप **लिंग, वचन** और **पुरुष** के अनुसार बदलते हैं।

क्रिया के मूल रूप को **धातु** कहते हैं। धातु के आगे **ना** जोड़ने से क्रिया सामान्य रूप बन जाता है; जैसे—**पढ़** धातु में **ना** जोड़ने से **पढ़ना** बन जाता इसी प्रकार लिख + ना = लिखना; चल + ना = चलना आदि।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## क्रिया के भेद

क्रिया के मुख्य रूप से दो भेद हैं

### 1. सकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं के कार्य का फल कर्ता को छोड़कर **कर्म** पर पड़ता है उन्हें 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे— **अध्यापक ने लड़के को पीटा।** इस वाक्य में अध्यापक (कर्ता) द्वारा 'पीटने' के कार्य का फल लड़के (कर्म) पर पड़ा। अत: इस वाक्य में सकर्मक क्रिया है।

### 2. अकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं के कार्य का फल **कर्ता** में ही रहता है उन्हें 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे—**विद्यार्थी पढ़ता है।** इस वाक्य में 'पढ़ना' क्रिया का फल विद्यार्थी (कर्ता) पर पड़ता है। अत: इस वाक्य में अकर्मक क्रिया है।

**उल्लेखनीय** जिन धातुओं का प्रयोग अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में होता है, उन्हें **उभयविध धातु** कहते हैं।

## क्रियाओं के अन्य भेद

क्रियाओं के छ: अन्य (Secondary) भेद हैं, जो निम्नलिखित हैं

### 1. संयुक्त क्रिया *

दो या दो-से-अधिक क्रियाओं के योग से जो पूर्ण क्रिया बनती है, उसे 'संयुक्त क्रिया' कहते हैं; जैसे— **राम खाना खा चुका।** इस वाक्य में 'खाना' और 'चुकना' दो क्रियाओं के योग से पूर्ण क्रिया बनी है अत: यहाँ संयुक्त क्रिया है। संयुक्त क्रियाएँ अभ्यास, अनिष्टता, अनुमति, अवकाश, आरम्भ, आवश्यकता, इच्छा, निरन्तर, पूर्णता, समाप्ति इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त होती हैं।

### 2. नामधातु क्रिया

जो क्रियाएँ संज्ञा या विशेषण बनती हैं, उन्हें 'नामधातु क्रिया' कहते हैं; जैसे—

**संज्ञा से** बात से बतियाना, हाथ से हथियाना, दु:ख से दु:खाना, लाज से लजाना।

**विशेषण से** गर्म से गरमाना, चिकना से चिकनाना।

### 3. प्रेरणार्थक क्रिया

जिन क्रियाओं से यह बोध होता है कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उन्हें 'प्रेरणार्थक क्रिया' कहते हैं; जैसे—लिखना से लिखवाना, पढ़ना से पढ़वाना, करना से करवाना, जोतना से जितवाना आदि।

### 4. पूर्वकालिक क्रिया

जिन क्रियाओं के पहले कोई अन्य क्रिया आए, उन्हें 'पूर्वकालिक क्रिया' कहते हैं। पूर्वकालिक क्रिया, क्रिया का मूलरूप होती है अथवा उसके साथ 'कर' या 'करके' का प्रयोग होता है; जैसे—

- वह खाना खाकर सो गया।
- अपना पाठ पढ़कर खेलो।

### 5. द्विकर्मक क्रिया

जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहा जाता है; जैसे—अध्यापक ने छात्रों को हिन्दी पढ़ाई। (दो कर्म-छात्रों, हिन्दी), श्याम ने राम को थप्पड़ मारा। (दो कर्म-राम, थप्पड़)

### 6. सहायक क्रिया

सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होकर अर्थ को स्पष्ट एवं पूर्ण करने में सहायक होती है; जैसे—मैं घर जाता हूँ। इस वाक्य में 'जाना' मुख्य क्रिया है और 'हूँ' सहायक क्रिया है।

## क्रियाओं में रूपान्तर

क्रिया विकारी शब्द है, अत: इसके रूप में परिवर्तन होता रहता है। इस परिवर्तन के पाँच आधार हैं—(1) वाच्य (2) अर्थ या भाव (3) काल (4) अव्यय (5) निपात अध्याय में इन सभी आधारों का वर्णन समाहित किया गया है।

### 1. वाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि किसी वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में किसी एक की प्रधानता है, उसे वाच्य कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं

#### (i) कर्तृवाच्य

क्रिया के जिस रूप में कर्ता की प्रधानता रहती है और क्रिया का सीधा तथा प्रधान सम्बन्ध कर्ता से होता है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। इस वाच्य में क्रिया के **लिंग** और **वचन** कर्ता के अनुसार होते हैं; जैसे—

- राम पत्र लिखता है।
- रीता पत्र लिखती है।
- लड़के पत्र लिखते हैं।

इन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता है तथा क्रिया के लिंग और वचन कर्ता के अनुसार हैं। कर्तृवाच्य में सकर्मक क्रिया के भी वाक्य होते हैं और अकर्मक क्रिया के भी; जैसे—

**सकर्मक कर्तृवाच्य**—गोपाल पुस्तक पढ़ता है।

**अकर्मक कर्तृवाच्य**—बालक सोता है।

#### (ii) कर्मवाच्य

क्रिया के जिस रूप में कर्म की प्रधानता होती है और क्रिया का सीधा सम्बन्ध कर्म से होता है उसे कर्मवाच्य कहते हैं। इस वाच्य में क्रिया के **लिंग** और **वचन** कर्म के अनुसार होते हैं; जैसे— **राम से पत्र लिखा जाता है।** इस वाक्य में 'लिखा जाता है।' क्रिया का सीधा सम्बन्ध पत्र (कर्म) से है। अत: यह वाक्य कर्मवाच्य है। इस वाच्य में सकर्मक क्रिया के ही वाक्य होते हैं अकर्मक क्रिया के नहीं।

#### (iii) भाववाच्य

क्रिया के जिस रूप में भाव की प्रधानता होती है और क्रिया का सीधा सम्बन्ध **भाव** से होता है, उसे 'भाववाच्य' कहते हैं। यह केवल अकर्मक क्रिया के ही वाक्यों में प्रयुक्त होता है; जैसे—

- गाया नहीं जाता।
- बैठा नहीं जाता।

इन वाक्यों में भाव की ही प्रधानता है। अत: ये वाक्य भाववाच्य हैं।

### 2. अर्थ या भाव

क्रिया के जिस रूप से वक्ता के भाव का बोध होता है, उसे 'अर्थ या भाव' कहते हैं। इसके तीन रूप हैं—निश्चयार्थ, आज्ञार्थ और सम्भावनार्थ।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

### (i) निश्चयार्थ

क्रिया के जिस रूप से निश्चित सूचना प्राप्त होती है, उसे निश्चयार्थ कहते हैं; जैसे—

- लड़का पढ़ता है।
- राधा नाचती है

### (ii) आज्ञार्थ

क्रिया के जिस रूप से आज्ञा, उपेक्षा, प्रार्थना आदि का बोध होता है, उसे आज्ञार्थ कहते हैं; जैसे—

- रमेश पुस्तक पढ़ो।
- ममता चाय लाओ।

### (iii) सम्भावनार्थ

क्रिया के जिस रूप से अनुमान, इच्छा, कर्त्तव्य, आशीर्वाद, शाप आदि का बोध होता है, उसे सम्भावनार्थ कहते हैं; जैसे—

- शायद यह मुकुल का भाई है।

### क्रिया के प्रयोग सम्बन्धी निर्देश

*क्रियाओं के प्रयोग के समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए*

- क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कहीं **कर्ता** के अनुसार होते हैं, कहीं **कर्म** के अनुसार और कहीं **क्रिया** के अनुसार होते हैं। अतः क्रिया का प्रयोग तीन प्रकार से होता है–
  - (i) **कर्तरि प्रयोग** जिस वाक्य में क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन **कर्ता** के अनुसार होते हैं, क्रिया के इस प्रयोग को 'कर्तरि प्रयोग' कहते हैं; जैसे–राहुल अच्छी पुस्तकें पढ़ता है।
  - (ii) **कर्मणि प्रयोग** जिस वाक्य में क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन **कर्म** के अनुसार होते हैं, तो क्रिया के इस प्रयोग को 'कर्मणि प्रयोग' कहते हैं; जैसे–गीता को पुस्तक पढ़नी पड़ेगी।
  - (iii) **भावे प्रयोग** जिस वाक्य में क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कर्ता के अनुसार न होकर सदैव अन्य पुरुष पुल्लिंग एक वचन में हों, तब 'भावे प्रयोग' होता है; जैसे–मुझसे चला नहीं जाता।

## मध्यान्तर प्रश्नावली

1. क्रिया का रूप किसके अनुसार बदलता है?
   (a) वचन (b) लिंग (c) पुरुष (d) ये तीनों
2. क्रिया का मूल रूप क्या है?
   (a) धातु (b) कारक
   (c) क्रिया-विशेषण (d) इनमें से कोई नहीं
3. मुख्य रूप से क्रिया के कितने भेद हैं?
   (a) तीन (b) दो (c) चार (d) पाँच
4. किस वाक्य में सकर्मक क्रिया है?
   (a) सीता हँसती है। (b) मोहन जाता है।
   (c) राधा दौड़ती है। (d) राम फल खाता है।
5. किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है?
   (a) गीता खाना पकाती है। (b) श्याम पत्र लिखता है।
   (c) सीता गाती है। (d) माता फल काटती हैं।
6. क्रिया के अन्य भेद कितने हैं?
   (a) दो (b) तीन (c) छः (d) सात
7. 'मैं खाना खा चुकी हूँ।' वाक्य में कौन-सा क्रिया भेद है?
   (a) संयुक्त (b) नामधातु
   (c) पूर्णकालिक (d) द्विकर्मक
8. निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा नामधातु क्रिया है?
   (a) पढ़ना (b) बतियाना (c) खेलना (d) सोना
9. 'करना' शब्द से कौन-सा शब्द प्रेरणार्थक क्रिया बनेगा?
   (a) करवाना (b) किया जाना (c) करता है (d) करवाया
10. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य पूर्णकालिक क्रिया से सम्बन्धित है?
    (a) राम खेलता है (b) वह खाना पकाती है
    (c) वह खाना खाकर सो गया (d) राधा ने काम किया

**उत्तरमाला**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. (d) | 2. (a) | 3. (b) | 4. (d) | 5. (c) |
| 6. (c) | 7. (a) | 8. (b) | 9. (a) | 10. (c) |

## 3. काल

'काल' क्रिया के उस रूप को कहते हैं, जिससे उसके करने या होने के समय तथा पूर्णता या अपूर्णता का ज्ञान होता है। काल के तीन भेद हैं

### (i) भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से कार्य की समाप्ति का बोध हो उसे 'भूतकाल' कहते हैं। दूसरे शब्दों में जिस क्रिया से बीते हुए समय में क्रिया का होना पाया जाता है, उसे भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के छः भेद हैं

#### (क) सामान्यभूत

क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का निश्चित ज्ञान न हो, उसे सामान्यभूत कहते हैं; जैसे—

- श्याम गया।
- गीता आई।

#### (ख) आसन्नभूत

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के व्यापार का समय आसन्न (निकट) ही समाप्त समझा जाए, उसे आसन्नभूत कहते हैं; जैसे—

- अंकुर नैनीताल से लौटा है।
- मैं खाना खा चुका हूँ।

#### (ग) अपूर्णभूत

क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि क्रिया भूतकाल में हो रही थी, लेकिन उसकी समाप्ति का पता न चले, उसे 'अपूर्णभूत' कहते हैं; जैसे—सितार बज रहा था।

#### (घ) पूर्णभूत

क्रिया के जिस रूप से बीते समय में कार्य की समाप्ति का पूर्ण बोध होता है, उसे पूर्णभूत कहते हैं; जैसे—मैं खाना खा चुका हूँ।

#### (ङ) संदिग्धभूत

क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में कार्य के पूर्ण होने या न होने में सन्देह होता है, उसे संदिग्धभूत कहते हैं; जैसे—श्याम ने गाया होगा।

#### (च) हेतुहेतुमद्भूत

क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया भूतकाल में होने वाली थी पर किसी कारणवश न हो सकी, उसे हेतुहेतुमद्भूत कहते हैं; जैसे—यदि वह पढ़ता तो परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता।

### (ii) वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय में क्रिया का होना पाया जाए, उसे वर्तमान काल कहते हैं। इसमें क्रिया का आरम्भ हो चुका होता है पर समाप्ति नहीं होती।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

वर्तमान काल के तीन भेद हैं

**(क) सामान्य वर्तमान**

क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान काल में क्रिया का होना पाया जाए, सामान्य वर्तमान कहलाता है; जैसे—लड़का पढ़ता है।

**(ख) संदिग्ध वर्तमान**

क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान काल में क्रिया के होने में सन्देह पाया जाए, उसे संदिग्ध वर्तमान कहते हैं; जैसे—राम पढ़ता होगा।

**(ग) अपूर्ण वर्तमान**

क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल में क्रिया की अपूर्णता का बोध होता है, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं; जैसे—वह पढ़ रहा है।

### (iii) भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से भविष्य में होने वाली क्रिया का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। भविष्यत् काल के तीन भेद हैं

**(क) सामान्य भविष्यत्**

क्रिया के जिस रूप से भविष्य में होने वाले कार्य के सम्बन्ध में जानकारी हो अथवा यह व्यक्त हो कि क्रिया सामान्यत: भविष्य में होगी, उसे सामान्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे—लता गीत गाएगी।

**(ख) सम्भाव्य भविष्यत्**

क्रिया का वह रूप जिससे कार्य होने की सम्भावना का बोध हो, उसे सम्भाव्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे—सम्भव है कि वह कल जाएगा।

**(ग) हेतुहेतुमद् भविष्यत्**

क्रिया का वह रूप जिससे भविष्य में एक समय में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर हो हेतुहेतुमद् भविष्यत् कहलाता है; जैसे—राम गाए तो मैं बजाऊँ।

## मध्यान्तर प्रश्नावली

**1.** काल के बोध का सम्बन्ध किससे है?
(a) वचन (b) क्रिया ✓ (c) संज्ञा (d) अव्यय

**2.** काल के कितने भेद हैं?
(a) तीन ✓ (b) दो (c) चार (d) पाँच

**3.** भूतकाल के कितने भेद हैं?
(a) सात (b) पाँच (c) आठ (d) छः ✓

**4.** 'श्याम ने गाना गाया होगा'। वाक्य में प्रयुक्त है?
(a) आसन्नभूत (b) संदिग्धभूत ✓
(c) पूर्णभूत (d) सामान्य भूत

**5.** हेतुहेतुमद्भूत का उदाहरण है
✓(a) तुम आते तो मेरा काम बन जाता (b) लड़के थक गए थे
(c) श्याम ने खाना खाया
(d) घोड़े के चार पैर और दो कान होते हैं

**6.** वर्तमान काल के कितने भेद हैं?
(a) दो (b) चार (c) तीन ✓ (d) पाँच

**उत्तरमाला**

**1.** (b) **2.** (a) **3.** (d) **4.** (b) **5.** (a) **6.** (c)

## 4. अव्यय

अव्यय का शाब्दिक अर्थ है—'अ + व्यय'; जो व्यय न हो उसे अव्यय कहते हैं, इसे **अविकारी** शब्द भी कहते हैं, क्योंकि इसमें किसी प्रकार का विकार नहीं हो सकता, ये सदैव समान रहते हैं। अव्यय चार प्रकार के होते हैं

### (i) क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया के अर्थ में विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें 'क्रिया विशेषण' कहते हैं। क्रिया विशेषण को **अविकारी विशेषण** भी कहते हैं; जैसे—**धीरे चलो**। वाक्य में 'धीरे' शब्द 'चलो' क्रिया की विशेषता बतलाता है। अत: 'धीरे' शब्द क्रिया विशेषण है। इसके अतिरिक्त क्रिया विशेषण दूसरे क्रिया विशेषण की भी विशेषता बताता है; जैसे—**वह बहुत धीरे चलता है।** इस वाक्य में 'बहुत' क्रिया विशेषण है और यह दूसरे क्रिया विशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है। क्रिया विशेषण के चार भेद हैं

**(क) कालवाचक**

जिन शब्दों से क्रिया में समय सम्बन्धी विशेषता प्रकट हो, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे—अब, कब, तब, जब; आज, कल, परसों; सुबह, दोपहर, शाम; अभी-अभी, कभी-कभी, कभी न कभी, सदा, सर्वदा, सदैव; पहले, पीछे, नित्य, ज्यों ही, त्यों ही, एक बार, पहली बार, आजकल, घड़ी-घड़ी, रातभर, दिनभर, क्षणभर, कितनी देर में, शीघ्र, जल्दी, बार-बार इत्यादि। कालवाचक के तीन भेद माने जाते हैं

(अ) **समयवाचक** आज, कल, अभी, तुरन्त, परसों इत्यादि।
(ब) **अवधिवाचक** अभी-अभी, रातभर, दिनभर, आजकल, नित्य इत्यादि।
(स) **बारम्बारता वाचक** हर बार, कई बार, प्रतिदिन इत्यादि।

**(ख) स्थानवाचक**

जिन शब्दों से क्रिया में स्थान सम्बन्धी विशेषता प्रकट हो, उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे—यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, कहाँ, वहीं, कहीं, हर जगह, सर्वत्र, बाहर-भीतर, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, कहीं-कहीं, अन्यत्र इत्यादि। स्थानवाचक के दो भेद माने जाते हैं

(अ) **स्थितिवाचक** यहाँ, वहाँ, भीतर, बाहर इत्यादि।
(ब) **दिशावाचक** इधर, उधर, दाएँ, बाएँ इत्यादि।

**(ग) परिमाणवाचक**

जिन शब्दों से क्रिया का परिमाण (नाप-तौल) सम्बन्धी विशेषता प्रकट होती है, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे—इतना, उतना, कितना, जितना, थोड़ा-थोड़ा, बारी-बारी, क्रमश:, कम, अधिक, ज्यादा, पर्याप्त, काफी, केवल, जरा, बस, लगभग, कुछ बिल्कुल, कहाँ तक, जहाँ तक, पूर्णतया इत्यादि। परिमाणवाचक के पाँच भेद माने जाते हैं

(अ) **अधिकताबोधक** बहुत, खूब, अत्यन्त, अति इत्यादि
(ब) **न्यूनताबोधक** जरा, थोड़ा, किंचित, कुछ इत्यादि
(स) **पर्याप्ति बोधक** बस, यथेष्ट, काफ़ी, ठीक इत्यादि
(द) **तुलनाबोधक** कम, अधिक, इतना, उतना इत्यादि
(य) **श्रेणी बोधक** बारी-बारी, तिल-तिल, थोड़ा-थोड़ा इत्यादि

**(घ) रीतिवाचक**

जिन शब्दों से क्रिया की रीति सम्बन्धी विशेषता प्रकट होती है, उन्हें रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। रीतिवाचक क्रिया विशेषणों की संख्या बहुत बड़ी है। जिन क्रिया विशेषणों का समावेश दूसरे वर्गों में नहीं हो सकता, उनकी गणना इसी में की जाती है। समावेश क्रिया विशेषण को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है

- **प्रकार** ऐसे, कैसे, वैसे, मानो, अचानक, धीरे-धीरे स्वयं, परस्पर, आपस में, यथाशक्ति, फटाफट, झटपट, आप ही आप इत्यादि।
- **निश्चय** नि:सन्देह, अवश्य, बेशक, सही, सचमुच, जरूर, अलबत्ता, दरअसल, यथार्थ में, वस्तुत: इत्यादि।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

- **अनिश्चय** कदाचित्, शायद, सम्भव है, हो सकता है, प्राय: यथासम्भव इत्यादि।
- **स्वीकार** हाँ, हाँ जी, ठीक, सच आदि।
- **निषेध** न, नहीं, गलत, मत, झूठ आदि।
- **कारण** इसलिए, क्यों, काहे को आदि।'
- **अवधारण** तो, ही, भी, मात्र, भर, तक आदि।

### (ii) सम्बन्धबोधक

जिन अविकारी शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों से प्रकट होता है, उन्हें 'सम्बन्धबोधक अव्यय' कहते हैं; जैसे—**मैं गोपाल के बिना नहीं जाऊँगा।** इस वाक्य में 'बिना' शब्द 'गोपाल' और 'मैं' के बीच सम्बन्ध प्रकट करता है। अत: यह शब्द (बिना) सम्बन्धबोधक अव्यय है। सम्बन्धबोधक अव्ययों का वर्गीकरण तीन आधारों पर किया गया है

**(क) प्रयोग के आधार पर**

सम्बन्धबोधक अव्यय का प्रयोग तीन प्रकार से होता है

(अ) **विभक्ति सहित** जिन अव्यय शब्दों का प्रयोग कारक विभक्तियों (ने, को, से आदि) के साथ होता है; उन्हें विभक्ति सहित सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—यथा, पास, लिए आदि।

(ब) **विभक्ति रहित** जिस अव्यय का प्रयोग बिना कारक विभक्तियों के होता है, उसे विभक्ति रहित सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—रहित, सहित आदि।

(स) **उभयविधि** जिस अव्यय का प्रयोग विभक्ति सहित और विभक्ति रहित दोनों प्रकार से होता है, उसे उभयविधि सम्बन्धबोधक कहते हैं; जैसे—द्वारा, बिना आदि।

**(ख) अर्थ के आधार पर**

सम्बन्धबोधक अव्यय आठ प्रकार के होते हैं

(अ) **कालवाचक** जिन अव्यय शब्दों से **समय** का बोध होता है, उन्हें 'कालवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय' कहते हैं; जैसे—आगे, पीछे, बाद में, पश्चात्, उपरान्त इत्यादि।

(ब) **स्थानवाचक** जिन अव्यय शब्दों से **स्थान** का बोध हो उन्हें स्थानवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, सामने, निकट, भीतर इत्यादि।

(स) **दिशावाचक** जिन अव्यय शब्दों से किसी **दिशा** का बोध होता है, उन्हें दिशावाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—ओर, तरफ, आस-पास, प्रति, आर-पार इत्यादि।

(द) **साधनवाचक** जिन अव्यय शब्दों से किसी **साधन** का बोध होता है, उन्हें साधनवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—माध्यम, मार्फ़त, द्वारा, सहारे, ज़रिए इत्यादि।

(य) **कारणवाचक** जिन अव्यय शब्दों से किसी **कारण** का बोध होता है, उन्हें कारणवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—कारण, हेतु, वास्ते, निमित्त, ख़ातिर इत्यादि।

(म) **सादृश्यवाचक** जिन अव्यय शब्दों से **समानता** का बोध होता है, उन्हें सादृश्यवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—समान, तरह, जैसा, वैसा ही आदि।

(र) **विरोधवाचक** जिन अव्यय शब्दों से प्रतिकूलता या **विरोध** का बोध होता है, उन्हें विरोधवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—विरुद्ध, प्रतिकूल, विपरीत, उल्टा इत्यादि।

(ल) **सीमावाचक** जिन अव्यय शब्दों से किसी **सीमा** का पता चलता है, उन्हें सीमावाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—तक, पर्यन्त, भर, मात्र आदि।

**(ग) व्युत्पत्ति या रूप के आधार पर**

सम्बन्धबोधक अव्यय दो प्रकार के होते हैं, जो निम्न हैं

(अ) **मूल सम्बन्धबोधक** जो अव्यय किसी दूसरे शब्द के योग से नहीं बनते अपितु अपने मूलरूप में ही रहते हैं, उन्हें मूल सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—बिना, समेत, तक आदि।

(ब) **यौगिक सम्बन्धबोधक** जो अव्यय संज्ञा, विशेषण, क्रिया आदि के योग से बनते हैं, उन्हें यौगिक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—पर्यन्त (परि + अन्त)।

### (iii) समुच्चयबोधक

जो अव्यय क्रिया या संज्ञा की विशेषता न बतलाकर शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें 'समुच्चयबोधक अव्यय' कहते हैं। **अखिल और सुहेल कॉलेज को जाते हैं।** इस वाक्य में 'और' शब्द अखिल और सुहेल को क्रिया 'जाते हैं' से जोड़ता है। समुच्चयबोधक अव्यय के दो भेद हैं, जो निम्न हैं

**(अ) समानाधिकरण समुच्चयबोधक**

जो अव्यय दो या दो-से-अधिक पदों, शब्दों या वाक्यों का संयोजन-विभाजन करते हैं; उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं। इसके निम्न भेद हैं

- **संयोजक** तथा, एवं, और, व, या इत्यादि।
- **विभाजक** अथवा, या, वा, किंवा, कि, चाहे, नहीं तो इत्यादि।
- **विरोधदर्शक** वरन्, मगर, किन्तु, परन्तु, लेकिन पर इत्यादि।
- **परिणामदर्शक** अत:, अतएव, इसलिए आदि।

**(ब) व्याधिकरण समुच्चयबोधक**

जो अव्यय मुख्य वाक्य से एक या एक से अधिक आश्रित वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें व्याधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं—

- **कारणवाचक** इसलिए, कि, जो कि, क्योंकि इत्यादि
- **उद्देश्यवाचक** ताकि, जो, इसलिए, कि इत्यादि
- **संकेतवाचक** यदि तो, जो तो, यद्यपि, तथापि इत्यादि
- **स्वरूपवाचक** अर्थात्, मानो, यानि, कि, जो इत्यादि

### (iv) विस्मयादिबोधक

जिन अव्यय शब्दों से हर्ष, विस्मय, शोक, लज्जा, ग्लानि आदि मनोभाव प्रकट होते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे- हाय! वह चल बसा। वाह! क्या मौसम है। विस्मयादिबोधक निम्नलिखित प्रकार के होते हैं

(क) **हर्षबोधक** अहा! वाह! वाह-वाह इत्यादि।
(ख) **शोकबोधक** हाय! हा! ऊँह! उफ! त्राहि-त्राहि आदि।
(ग) **प्रशंसाबोधक** शाबाश! खूब! आदि।
(घ) **घृणा या तिरस्कार बोधक** राम-राम! थू-थू! छि:!-छि:! धत! धिक् आदि।
(ङ) **आश्चर्यबोधक** अरे! हैं! ऐ! ओह! आदि।
(च) **क्रोधबोधक** अबे! पाजी! अजी! आदि।
(छ) **व्यथाबोधक** हाय रे! बाप रे! अरे दादा! ऊँह आदि।
(ज) **विनयबोधक** जी! जी हाँ! हजूर! साहब आदि।
(झ) **स्वीकार बोधक** ठीक! हाँ-हाँ! अच्छा! बहुत अच्छा आदि।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## 5. निपात

मूलतः निपात का प्रयोग अव्ययों के लिए होता है। इनका कोई लिंग, वचन नहीं होता। निपातों का प्रयोग निश्चित शब्द या पूरे वाक्य को अन्य भावार्थ प्रदान करने के लिए होता है। निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य के अंग नहीं होते। निपात का कार्य शब्द समूह को बल प्रदान करना भी है। निपात के निम्नलिखित प्रकार हैं

(i) **स्वीकृतिबोधक** हाँ, जी, जी हाँ।
(ii) **नकारबोधक** जी नहीं, नहीं।
(iii) **निषेधात्मक** मत।
(iv) **प्रश्नबोधक** क्या।
(v) **विस्मयादिबोधक** क्या, काश।
(vi) **तुलनाबोधक** सा।
(vii) **अवधारणाबोधक** ठीक, करीब, लगभग, तकरीबन।
(viii) **आदरबोधक** जी।

### मध्यान्तर प्रश्नावली

1. जिन शब्दों का रूप सदैव समान रहता है उन्हें ····· कहते हैं।
(a) अव्यय (b) वचन
(c) क्रिया (d) लिंग

2. अव्यय कितने प्रकार के होते है?
(a) तीन (b) चार
(c) पाँच (d) दो

3. 'धीरे चलो'-में अव्यय का कौन-सा प्रकार है?
(a) क्रिया विशेषण (b) सम्बन्धबोधक
(c) समुच्चयबोधक (d) विस्मयादिबोधक

4. किस वाक्य में परिमाणवाचक क्रिया विशेषण है?
(a) खेल का मैदान लम्बा है
(b) पंकज अच्छा गायक है।
(c) मैं सफेद कमीज नहीं पहनता।
(d) इस बार बारिश में बहुत ओले पड़े।

5. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द कालवाचक क्रिया विशेषण है?
(a) बार-बार (b) भीतर
(c) आज (d) यथासम्भव

6. वह दिनभर काम करता रहा। रेखांकित पद किस अव्यय के भेद का उदाहरण है?
(a) तुलनाबोधक (b) स्थानबोधक
(c) कालवाचक (d) रीतिवाचक

7. 'सूरज निकला और पक्षी बोलने लगे'। वाक्य में कौन-सा पद समुच्चयबोधक शब्द है?
(a) सूरज (b) पक्षी (c) और (d) निकला

8. 'बहुत, खूब, अत्यन्त, अति' आदि परिमाणवाचक अव्यय हैं
(a) पर्यायबोधक (b) श्रेणीबोधक
(c) तुलनाबोधक (d) अधिकतावाचक

9. 'क्योंकि, जोकि इसलिए कि' आदि समुच्चयबोधक अव्यय हैं
(a) कारणवाचक (b) उद्देश्यवाचक
(c) संकेतवाचक (d) स्वरूपवाचक

10. तिरस्कार सूचक अव्यय है
(a) आह! (b) अरे! (c) छिः! (d) उफ!

**उत्तरमाला**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. (a) | 2. (b) | 3. (a) | 4. (d) | 5. (c) |
| 6. (c) | 7. (c) | 8. (d) | 9. (a) | 10. (c) |

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

1. 'खूँटी' शब्द का बहुवचन बताइए (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) खूँटियाँ (b) खुँटियाँ
(c) खूटियों (d) खूँटिया

2. 'हमारी अध्यापिका आज नहीं आएँगी' इस वाक्य का पुल्लिंग वाक्य कौन-सा है? (निम्न श्रेणी लिपिक स्टेनोग्राफर परीक्षा 2014)
(a) हमारा अध्यापक आज नहीं आएगा।
(b) हमारी अध्यापक आज नहीं आएगी।
(c) हमारे अध्यापक आज नहीं आएगा।
(d) हमारे अध्यापक आज नहीं आएँगे।

3. 'कवि' का स्त्रीलिंग रूप क्या है?
(निम्न श्रेणी लिपिक स्टेनोग्राफर परीक्षा 2014)
(a) कवियित्री (b) कवयित्री
(c) कवियत्री (d) कवयित्रि

4. इनमें से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?
(निम्न श्रेणी लिपिक स्टेनोग्राफर परीक्षा 2014)
(a) क्रोध (b) बुढ़ापा
(c) छाया (d) चयन

5. 'एक' का बहुवचन क्या है? (निम्न श्रेणी लिपिक स्टेनोग्राफर परीक्षा 2014)
(a) बहुत (b) अनेक (c) ज्यादा (d) दो

6. पुस्तक का बहुवचन क्या है? (निम्न श्रेणी लिपिक स्टेनोग्राफर परीक्षा 2014)
(a) पुस्तकें (b) पुस्तकों (c) पुसतकें (d) पुस्तकाएँ

7. 'नौकर आज छुट्टी पर है' इस वाक्य का स्त्रीलिंग वाक्य है।
(निम्न श्रेणी लिपिक स्टेनोग्राफर परीक्षा 2014)
(a) नौकरन आज छुट्टी पर है (b) नौकराइन आज छुट्टी पर है
(c) नौकरानी आज छुट्टी पर है (d) नौकरनी आज छुट्टी पर है

8. आँसू का बहुवचन रूप है
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) आँसूएँ (b) आँसू
(c) आँसुएँ (d) पद ही बहुवचन है

9. चिड़िया का बहुवचन रूप है
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) चिड़ियाँ (b) चिड़ियों
(c) चिड़ियाएँ (d) चिड़िया

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**10.** बालक का स्त्रीवाचक शब्द है
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) बालकी (b) बालिका
(c) बालना (d) बलिका

**11.** बछड़ा का अन्य लिंग रूप है
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) बछड़ी (b) बछिया
(c) बछैया (d) बछड़िया

**12.** निम्नलिखित वाक्यों में से किसमें पूर्व-कालिक क्रिया है?
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) उसने नहाकर भोजन किया (b) वह धीरे-धीरे खा रहा था
(c) उसने मुझे पुस्तक सौंपी (d) वह शाम को पहुँचेगा

**13.** पुल्लिग-स्त्रीलिंग शब्द-युग्म की दृष्टि से कौन-सा युग्म अशुद्ध है?
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) कर्ता-कत्री (b) नेता-नेत्री
(c) धाता-धात्री (d) दाता-दात्री

**14.** निम्नलिखित में कौन-सा शब्द युग्म गलत है?
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) चिड़िया-चिड़ियाँ (b) तिथि-तिथियाँ
(c) नदी-नदियाँ (d) जनता-जनताएँ

**15.** 'नरेश सो रहा था', वाक्य में कौन-सा काल है?
(डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) पूर्ण भूत (b) अपूर्ण भूत
(c) आसन्न भूत (d) सामान्य भूत

**16.** निम्नांकित में कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग नहीं है? (सी.जी.पी.एस.सी 2014)
(a) सन्तान (b) सवारी
(c) बुलबुल (d) भेड़िया ✓

**17.** 'बेटा' शब्द का स्त्रीलिंग बताइए
(इलाहाबाद उच्च न्यायालय भर्ती परीक्षा 2014)
(a) लड़की (b) पुत्री
(c) बेटी (d) कन्या

**18.** 'चाकू' शब्द का बहुवचन होगा। (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) चाकू (b) चाकूएँ
(c) चाकुओं (d) चाकुओ

**19.** 'विद्वान्' शब्द का स्त्रीलिंग क्या होगा? (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) विद्यावंक्ती (b) विदुषी
(c) विद्वन्ती (d) विद्यामती

**20.** 'वह अगले साल आएगा' इस वाक्य में कौन-सा कारक है?
(लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) कर्म कारक (b) अपादान कारक
(c) सम्बन्ध कारक (d) अधिकरण कारक

**21.** निम्नलिखित में से किस वाक्य में भविष्यकाल है?
(लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) मैं आपका आभारी हूँ (b) मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगा
(c) मैंने एक पेड़ काट लिया (d) मैं पुस्तक पढ़ने वाला था

**22.** निम्नलिखित शब्दों में से स्त्रीलिंग शब्द बताइए।
(लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) दही (b) मसि
(c) सिरका (d) आसव

**23.** कौन-सा स्त्रीलिंग शब्द बिना प्रत्यय जुड़े बना है? (लेखपाल भर्ती परीक्षा 20
(a) बहिन (b) बाधिन
(c) हिरनी (d) नातिन

**24.** हिन्दी में कौन-सा शब्द हमेशा बहुवचन में ही रहता है? (अन्वेषण सीधी भर्ती परीक्षा 20
(a) वर्षा (b) पेड़
(c) कथा (d) हस्ताक्षर

**25.** 'चारपाई पर भाई साहब बैठे हैं' इस वाक्य में 'चारपाई' किस क
में है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 20
(a) करण (b) सम्प्रदान
(c) अधिकरण (d) कर्म

**26.** हिन्दी भाषा में वचन कितने प्रकार के होते हैं? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 20
(a) तीन (b) दो
(c) एक (d) चार

**27.** 'लिंग' की दृष्टि से 'दही' शब्द है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 20
(a) स्त्रीलिंग (b) पुल्लिग
(c) नपुंसक लिंग (d) उभयलिंग

**28.** निम्नलिखित में विकारी शब्द कौन-सा है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 20
(a) आज (b) यथा (c) परन्तु (d) लड़का

**29.** नीचे लिखे वाक्यों में से किस वाक्य में सर्वनाम का अशुद्ध प्र
हुआ है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 20
(a) वह स्वयं यहाँ नहीं आना चाहती।
(b) आपके आग्रह पर मैं दिल्ली जा सकता हूँ।
(c) मैं तेरे को एक घड़ी दूँगा।
(d) मुझे इस बैठक की सूचना नहीं थी।

**30.** क्रिया का मूल रूप कहलाता है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 20
(a) धातु (b) कारक
(c) क्रिया-विशेषण (d) इनमें से कोई नहीं

**31.** 'अविकारी' शब्द होता है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 20
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) अव्यय (d) विशेषण

**32.** वाच्य कितने प्रकार के होते हैं? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 20
(a) तीन (b) चार (c) पाँच (d) छः

**33.** निम्नलिखित में से किस वाक्य में सकर्मक क्रिया है?
(सी.जी.पी.एस.सी. 20
(a) राम दौड़ा (b) मैं रुक गया
(c) उसने कार बेच दी (d) राहुल सो गया

**34.** निम्नलिखित में से कर्तृवाच्य का वाक्य बताइए
(सी.जी.पी.एस.सी. 20
(a) तुलसीदास ने रामचरितमानस लिखी।
(b) राम द्वारा रावण को मारा गया।
(c) आज टहलने चला जाए।
(d) छात्रों द्वारा फुटबाल खेली जाती है।

**35.** निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द उभयलिंगी है?
(सी.जी.पी.एस.सी. 20
(a) डॉक्टर ✓ (b) विद्वान्
(c) अभिनेत्री (d) गायक

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**36.** 'परिश्रमी' शब्द में कौन-से विशेषण का बोध होता है?
(उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा 2011)
(a) गुणवाचक ✓ (b) संख्यावाचक
(c) परिमाणवाचक (d) सार्वनामिक

**37.** वह गलत होने से ..... डरती है। वाक्य में उचित क्रिया विशेषण शब्द आएगा।
(केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा 2011, 2010)
(a) बहुत ✓ (b) तेज (c) अचानक (d) धीरे-धीरे

**38.** 'जटिल' विशेषण के लिए निम्नलिखित में से उपयुक्त संज्ञा होगी
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) दृष्टि (b) प्रश्न
(c) समस्या ✓ (d) स्थिति

**39.** 'मानव' शब्द के लिए उपयुक्त 'भाववाचक संज्ञा' का चयन कीजिए।
(उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा 2011)
(a) मनस्वी (b) मानवता ✓
(c) मनुष्यत्व (d) आदमीयत

**40.** रमेश जयपुर से दिल्ली जा रहा है इस वाक्य में कारक है।
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) सम्बन्ध (b) अपादान ✓
(c) करण (d) सम्प्रदान

**41.** निम्न विकल्पों में से सकर्मक क्रिया का चयन कीजिए।
(उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा 2011)
(a) लेटना (b) छूटना
(c) पिघलना (d) तड़पाना ✓

**42.** पीयूष राम को पीट रहा है, इसमें स्थूलांकित शब्द में कारक है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) सम्बन्ध (b) कर्म ✓
(c) कर्ता (d) अपादान

**43.** वह कौन-सा शब्द है जो प्राय: बहुवचन में प्रयुक्त होता है?
(उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा 2011)
(a) देव (b) छात्र
(c) नक्षत्र (d) प्राण ✓

**44.** निम्नांकित में अविकारी शब्द है (यू.पी.टी.ई.टी. परीक्षा 2015)
(a) नारी (b) सरदी
(c) परन्तु ✓ (d) मीठा

**45.** 'कवि' शब्द में कौन-सी संज्ञा है? (यू.पी.टी.ई.टी. परीक्षा 2015)
(a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक ✓
(c) द्रव्यवाचक (d) भाववाचक

**46.** क्रिया से बनाने वाली भाववाचक संज्ञा है (यू.पी.टी.ई.टी. परीक्षा 2015)
(a) थकावट ✓ (b) बुराई
(c) आलस्य (d) बुढ़ापा

**47.** शायद 'कोई' कमरे में छिपा हुआ है। इस वाक्य में रेखांकित शब्द है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) प्रश्नवाचक सर्वनाम (b) सम्बन्धवाचक सर्वनाम
(c) अनिश्चयवाचक सर्वनाम ✓ (d) निजवाचक सर्वनाम

**48.** हमें गरीबों पर दया करनी चाहिए। इसमें रेखांकित शब्द है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) अवस्थासूचक विशेषण (b) संज्ञा ✓
(c) विशेषण (d) क्रिया

**49.** रमेश कल दिल्ली जाएगा। इस वाक्य में रेखांकित शब्द है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) संज्ञा (b) क्रिया विशेषण ✓
(c) संज्ञा विशेषण (d) कर्म

**50.** 'ध्यानपूर्वक' शब्द है (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण (b) कालवाचक क्रिया विशेषण
(c) स्थानवाचक क्रिया विशेषण (d) रीतिवाचक क्रिया विशेषण ✓

**51.** 'राम घर गया और श्याम बाजार गया'। इस वाक्य में रेखांकित शब्द है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) विकल्पसूचक (b) परिणामदर्शक
(c) संयोजक ✓ (d) कारणबोधक

**52.** सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं?
(a) पाँच (b) छः ✓
(c) सात (d) आठ

**53.** निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द क्रिया विशेषण है?
(a) तेज ✓ (b) बुद्धिमान (c) मीठा (d) पहला

**54.** सदा एकवचन में प्रयुक्त होने वाला शब्द है।
(a) पौधा (b) पुस्तक (c) सहायता ✓ (d) लड़का

**55.** 'कोई बच्चा नहीं खेलेगा।' रेखांकित शब्द क्या है?
(उ.प्र. वन विभाग 2015)
(a) परिमाणवाचक विशेषण (b) गुणवाचक विशेषण
(c) सार्वनामिक विशेषण ✓ (d) सर्वनाम

**56.** निम्नलिखित में से कौन-सी भाववाचक संज्ञा है?
(उ.प्र. वन विभाग 2015)
(a) भारत (b) लड़का
(c) मित्रता ✓ (d) पेड़

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** (a) | **2.** (d) | **3.** (b) | **4.** (c) | **5.** (b) | **6.** (a) | **7.** (c) | **8.** (d) | **9.** (a) | **10.** (b) |
| **11.** (b) | **12.** (a) | **13.** (a) | **14.** (d) | **15.** (b) | **16.** (d) | **17.** (c) | **18.** (a) | **19.** (b) | **20.** (d) |
| **21.** (b) | **22.** (b) | **23.** (a) | **24.** (d) | **25.** (c) | **26.** (b) | **27.** (b) | **28.** (d) | **29.** (c) | **30.** (a) |
| **31.** (c) | **32.** (a) | **33.** (c) | **34.** (a) | **35.** (a) | **36.** (a) | **37.** (a) | **38.** (c) | **39.** (b) | **40.** (b) |
| **41.** (d) | **42.** (b) | **43.** (d) | **44.** (c) | **45.** (b) | **46.** (a) | **47.** (c) | **48.** (b) | **49.** (b) | **50.** (d) |
| **51.** (c) | **52.** (b) | **53.** (a) | **54.** (c) | **55.** (c) ✓ | **56.** (c) | | | | |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# 10

# शब्द-रचना

*हिन्दी की शब्द-रचना प्रकृति प्रत्यय पर आधारित है। प्रकृति का प्रकृति से संयोग या प्रकृति का प्रत्यय से संयोग और सम्बन्ध, व्याकरण का प्रमुख विषय है। प्रत्यय आबद्ध पद हैं जो किसी मुक्तपद के साथ सम्बद्ध होकर एक विशेष व्याकरणिक अर्थ प्रकट करते हैं। भारतीय वैयाकरण मुक्तपद को 'प्रकृति' और आबद्ध पद को 'प्रत्यय' कहते हैं। मुक्तपद (प्रकृति) ही भाषा में अर्थतत्त्व को व्यक्त करते हैं, इन्हें स्वतन्त्र या 'पूर्णपद' कहते हैं। आबद्ध पद (प्रत्यय) केवल सम्बन्ध तत्त्व को व्यक्त करते हैं।*

हिन्दी भाषा में यौगिक शब्द-रचना के मुख्य आधार निम्न हैं

1. उपसर्ग 2. प्रत्यय 3. सन्धि 4. समास

इस पाठ के अन्तर्गत इन सभी का विवरण किया गया है।

वर्णों या अक्षरों के मेल से बनने वाले अर्थवान अक्षर समूह को शब्द कहते हैं। नवीन शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया भाषा की सतत चलने वाली प्रक्रिया से जुड़ी है। इसे ही व्याकरण में शब्द-रचना कहा जाता है।

*यह तीन प्रकार से होती है*

1. अर्थवान एवं स्वतन्त्र मूल शब्द के पूर्व में शब्दांश (उपसर्ग) जोड़कर।
2. अर्थवान एवं स्वतन्त्र मूल शब्द के बाद में शब्दांश (प्रत्यय) जोड़कर।
3. दो पृथक्-पृथक् अर्थवान स्वतन्त्र शब्दों के मेल से।

ध्यान रखना चाहिए कि शब्दांश को अर्थात् शब्द के अंश को स्वतन्त्र रूप से वाक्य में प्रयुक्त नहीं किया जाता है। शब्दांश जोड़कर जिस नवीन शब्द की रचना होती है, वही शब्द वाक्य में प्रयुक्त किए जाते हैं।

## उपसर्ग

'उपसर्ग' दो शब्दों (उप + सर्ग) के योग से निर्मित हुआ है। 'उप' का अर्थ 'समीप', 'निकट' या 'पास में' होता है, जबकि 'सर्ग' का अर्थ है—सृष्टि करना। उपसर्ग को 'आदि प्रत्यय' भी कहा जाता है। इसका प्रयोग शब्द के आदि में किया जाता है।

वास्तव में, उपसर्ग किसी भी सार्थक मूल शब्द से पूर्व जोड़े जाने वाले वे अविकारी शब्दांश हैं, जो शब्द के पूर्व जुड़कर उसके अर्थ या भाव में परिवर्तन कर देते हैं अर्थात् शब्द में नवीन विशेषता उत्पन्न कर देते हैं या अर्थ बदल देते हैं, जैसे—'हार' के पहले 'प्र' उपसर्ग लगा दिया जाए, तो नया शब्द 'प्रहार' बन गया, जिसका नया अर्थ हुआ 'मारना'।

*हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले उपसर्ग मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किए जा सकते हैं*

1. संस्कृत के उपसर्ग (तत्सम्)
2. हिन्दी के उपसर्ग (तद्भव)
3. आगत उपसर्ग (विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आए मुख्यतः उर्दू (फ़ारसी-अरबी) अंग्रेज़ी)

### 1. संस्कृत के उपसर्ग (तत्सम्)

संस्कृत के कुल 22 उपसर्ग हैं किन्तु 'निस', 'निर' तथा 'दुस्', 'दुर्' में कोई अन्तर नहीं है, अतः 'संस्कृत' भाषा के 20 उपसर्ग उन तत्सम् शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं जिनका प्र 'हिन्दी' भाषा में होता है, इसलिए इन्हें 'तत्सम्' उपसर्ग भी कहा जाता है।

संस्कृत के उपसर्ग

| उपसर्ग | अर्थ | उदाहरण |
|---|---|---|
| अति | अधिक, सीमा से परे | अतिवृद्धि, अत्युक्ति, अत्याचार |
| अधि | अधिक, ऊपर, श्रेष्ठ समीपता | अधिकृत, अध्यवसाय, अधिकार |
| अनु | पीछे, क्रम, समानता | अनुमान, अनुकूल, अनुप्रास |
| अप् | बुरा, अभाव, विपरीत | अपराध, अपहरण, अपशब्द |
| अपि | निकट | अपिधान, अपिसार, अपिमान |
| अभि | सामने, अधिक, अच्छा | अभिमान, अभिलाषा, अभियान |
| अव | पतन, हीनता | अवनति, अवगुण, अवमानना |
| आ | तक, सब तरफ से, ओर | आदर, आडम्बर, आचरण |
| उत्, उद् | ऊपर, अधिक | उद्भव, उत्संग, उद्गम, उत्पात, उत्पन्न |
| उप | समीप, सहायक, छोटा | उपयुक्त, उपहार, उपद्रव, उपसम्पादक |
| दुः (दुर्, दुस्) | बुरा, दुष्ट, कठिन | दुर्गम, दुष्कर, दुर्लंघ्य, दुर्लभ, दुर्जन |
| नि | बहुत-नीचे, अलावा | निवास, निवेदन, निकट, निबन्ध, निदान |
| निः (निस, निर) | बना, बाहर, निषेध | निर्देश, निराकरण, निर्जीव, निष्काम, निःशब्द |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| उपसर्ग | अर्थ | उदाहरण |
| --- | --- | --- |
| परा | विपरीत, अनादर | पराधीन, पराकाष्ठा, पराजय, परामर्श, पराविद्या |
| परि | चारों ओर, आस पास | परिश्रम, परिमाण, परिवार, परिक्रमा |
| प्र | अधिक, ऊपर, आगे, गति | प्रणाम, प्रस्थान, प्रगति, प्रवेश, प्रयोग |
| प्रति | विपरीत, समान, प्रत्येक परिवर्तन | प्रतिकूल, प्रतिमूर्ति, प्रतिदिन, प्रतिहिंसा |
| वि | विशेष, रहित, विपरीत भिन्न | विहार, विरह, विपक्ष, वियोग, विदेश, विज्ञान, विमर्श |
| सम्, सन् | संयोग, पूर्णता | सम्भोग, संयम, सम्भाषण, सन्देश |
| सु | अच्छा, सरल | स्वागत, सुवासित, सुअवसर, सुकवि |

## 2. हिन्दी के उपसर्ग (तद्भव)

हिन्दी के उपसर्ग मूलतः संस्कृत से ही विकसित हुए हैं। इनकी कुल संख्या 10 है। जो निम्न हैं

### हिन्दी के उपसर्ग

| | | |
| --- | --- | --- |
| अ | निषेध, अभाव | अपढ़, अलग, अनाम, अजान, अथाह |
| अध | आधा | अधखिला, अधपका, अधकचरा |
| अन् | अभाव, निषेध, अनजान | अनपढ़, अनमोल, अनगढ़, अनिच्छा |
| उन | एक कम | उनचास, उनहत्तर, उनतालीस |
| औ (अव) | हीनता, नहीं | औघड़, औघट, अवगुण |
| क, कु | बुरा | कुपात्र, कुलेख कुपूत, कुचाल |
| स, सु | अच्छा, सहित | सुकर्म, सुपूत, सुजान, सुलेख |
| स | साथ, सहित | सगोत्र, सरस, सहित, सजग |
| दु | बुरा, हीन | दुकाल, दुलारा, दुसाध्य |
| नि | नहीं, अभाव | निधड़क, निडर, निकम्मा |

## 3. आगत उपसर्ग (विदेशी)

हिन्दी में विदेशी भाषाओं से आए आगत उपसर्ग मुख्यतः उर्दू एवं अंग्रेजी भाषा से विकसित हुए हैं। जो निम्न हैं

### (i) उर्दू के उपसर्ग

| उपसर्ग | अर्थ | उदाहरण |
| --- | --- | --- |
| कम | थोड़ा, हीन | कमज़ोर, कमअक्ल, कमउम्र |
| खुश | अच्छा | खुशबू, खुशदिल, खुशहाल |
| गैर | नहीं, अभाव | गैरहाजिर, गैर-कानूनी, गैर-सरकारी |
| दर | में | दरअसल, दरमियान, दरकार |
| ना | अभाव | नापसन्द, नासमझ, नाराज़ |
| ब | अनुसार में | बनाम, बदस्तूर, बदौलत |
| बद | बुरा | बदनाम, बदकिस्मत, बदतमीज़ |
| बा | साथ | बाइज़्ज़त, बाकायदा, बाअदब |
| बिला | बिना | बिलाकसूर, बिलावजह |
| बे | बिना | बेईमान, बेचारा |
| ला | बिना | लाचार, लापरवाह |
| सर | मुख्य | सरदार, सरताज |
| हम | बराबर | हमउम्र, हमवतन |
| हर | प्रत्येक | हरदिन, हरएक |

उपर्युक्त तीन विभाजनों के अतिरिक्त अंग्रेजी उपसर्ग तथा गति शब्द का प्रयोग भी हिन्दी में प्रचलित है।

### (ii) अंग्रेज़ी के उपसर्ग

| उपसर्ग | अर्थ | उदाहरण |
| --- | --- | --- |
| सब | अधीन, नीचे | सब-जज, सब-कमेटी |
| डिप्टी | सहायक | डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी रजिस्ट्रार |
| वाइस | सहायक | वाइसराय, वाइस चाँसलर |
| जनरल | प्रधान | जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी |
| चीफ | प्रमुख | चीफ-मिनिस्टर, चीफ-इन्जीनियर |
| हेड | मुख्य | हेड मास्टर, हेड क्लर्क |
| डबल | दुगुना | डबलरोटी, ड बल बेड |
| फुल | पूरा | फुल शर्ट, फुल प्रूफ |
| हाफ | आधा | हाफ शर्ट-हाफ पैंट |

## प्रत्यय

'प्रत्यय' दो शब्दों से बना है– प्रति + अय। 'प्रति' का अर्थ है 'साथ में, पर बाद में; जबकि 'अय' का अर्थ 'चलने वाला' है। अतः 'प्रत्यय' का अर्थ हुआ, 'शब्दों के साथ, पर बाद में चलने वाला या लगने वाला, अतः इसका प्रयोग शब्द के अन्त में किया जाता है।

प्रत्यय किसी भी सार्थक मूल शब्द के पश्चात् जोड़े जाने वाले वे अविकारी शब्दांश हैं, जो शब्द के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ में या भाव में परिवर्तन कर देते हैं अर्थात् शब्द में नवीन विशेषता उत्पन्न कर देते हैं या अर्थ बदल देते हैं।

जैसे– सफल + ता = सफलता

अच्छा + ई = अच्छाई

यहाँ 'ता' और 'आई' दोनों शब्दांश प्रत्यय हैं, जो 'सफल' और 'अच्छा' मूल शब्द के बाद में जोड़ दिए जाने पर 'सफलता' और 'अच्छाई' शब्द की रचना करते हैं।

हिन्दी भाषा के प्रत्यय को चार भागों में विभक्त किया गया है। जो निम्न हैं

1. संस्कृत प्रत्यय 2. हिन्दी प्रत्यय 3. विदेशज प्रत्यय
4. ई प्रत्यय

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## 1. संस्कृत प्रत्यय

(i) **संस्कृत के कृत् प्रत्यय** धातु के साथ उनके अन्त में लगाए जाने वाले प्रत्यय 'कृत्' प्रत्यय कहलाते हैं तथा उनसे निर्मित शब्दों को 'कृदन्त' कहते हैं।

| प्रत्यय | मूल धातु | उदाहरण |
|---|---|---|
| क्तिन् (ति) | दृश्, कृ | दृष्टि, कृति |
| तव्य | गम्, रक्ष् | गन्तव्य, रक्षितव्य |
| क्त | पठ्, दा | पठित, दत्त |
| अनीय | कथ्, रक्ष | कथनीय, रक्षणीय |
| यत् (य) | लभ्, गम् | लभ्य, गम्य |
| तृच् (तृ) | दा, कृ | दातृ, कर्तृ |
| अक् | पाठ्, लेख | पाठक, लेखक |
| धञ् | धृ, भृ | धर, भर |

(ii) **संस्कृत के तद्धित प्रत्यय** सर्वनाम, विशेषण तथा संज्ञा के अन्त में तद्धित प्रत्यय को जोड़कर यौगिक शब्दों की रचना की जाती है।

| प्रत्यय | मूल शब्द | उदाहरण |
|---|---|---|
| अ | मृदु, गुरु | मार्दव, गौरव |
| आयन | तिलक, वत्स | तिलकायन, वात्स्यायन |
| इक | मुख, मातृ | मौखिक, मातृक |
| इत् | पुष्प, तृषा | पुष्पित, तृषित |
| इम् | पश्च, अग्र | पश्चिम, अग्रिम |
| इमा | हरित, महा | हरीतिमा, महिमा |
| इय् | क्षत्र | क्षत्रिय |
| इष्ठ | भूमि, धर्म | भूमिष्ठ, धर्मिष्ठ |
| ई | वसन्त, लोभ | वसन्ती, लोभी |
| ईन् | काल, नव | कालीन, नवीन |
| ईय | मत्, नगर | मदीय, नगरीय |
| एय | राधा, विनिता | राधेय, वैनतेय |
| इका | प्रकाश, काशी | प्रकाशिका, काशिका |
| क | बाल, नीति | बालक, नीतिक |
| तः | वस्तु, मूल | वस्तुतः, मूलतः |
| ता | शिशु, लघु | शिशुता, लघुता |
| त्व | पुरुष, स्त्री | पुरुषत्व, स्त्रीत्व |
| त्र | यत्, कु | यत्र, कुत्र |
| था | सर्व, अन्य | सर्वथा, अन्यथा |
| दा | फल, सर्व | फलदा, सर्वदा |
| धा | द्वि, बहु | द्विधा, बहुधा |
| मान् | शक्ति, श्री | शक्तिमान्, श्रीमान् |
| वान् | श्रद्धा, धन | श्रद्धावान्, धनवान् |
| वत् | पुत्र, ब्राह्मण | पुत्रवत्, ब्राह्मणवत् |
| वी | यश, तेज | यशस्वी, तेजस्वी |
| श | तर्क, कर्क | तर्कश, कर्कश |
| शः | बहु, शत | बहुशः, शतशः |
| सात् | आत्म, भूमि | आत्मसात्, भूमिसात् |
| य | सम, शरण | साम्य, शरण्य |
| ल | वत्स, बहु | वत्सल, बहुल |
| मय | तप, शान्ति | तपोमय, शान्तिमय |

(iii) **संस्कृत के स्त्री प्रत्यय** पुल्लिंगवाची शब्दों में स्त्री प्रत्यय पुल्लिग शब्दों के स्त्रीलिंगवाची शब्द बनाए जाते हैं।

| प्रत्यय | मूल शब्द | उदाहरण |
|---|---|---|
| आ | अश्व, वृद्ध | अश्वा, वृद्धा |
| इका | बालक, अध्यापक | बालिका, अध्यापिका |
| इनी | गृह, भर | गृहिणी, भरिणी |
| ई | दास, बुरा | दासी, बुराई |
| वती | पुत्रवान्, धनवान् | पुत्रवती, धनवती |
| मती | श्रीमान्, आयुष्मान् | श्रीमती, आयुष्मती |
| आनी | भव, मातुल | भवानी, मातुलानी |

## 2. हिन्दी प्रत्यय

(i) **कृत्** (कृदन्त) मूल क्रिया के साथ कृत् प्रत्यय को जोड़ शब्दों की रचना की जाती है।

| प्रत्यय | मूल क्रिया | उदाहरण |
|---|---|---|
| अ | लूट्, खेल् | लूट, खेल |
| अक्कड़ | पी, घूम् | पिअक्कड़, घुमक्कड़ |
| अन्त | लड़, पिट् | लड़न्त, पिटन्त |
| अन | जल्, ले | जलन, लेन |
| अना | पढ़, दे | पढ़ना, देना |
| आ | मेल, बैठ | मेला, बैठा |
| आई | खेल, लिख् | खेलाई, लिखाई |
| आऊ | टिक्, खा | टिकाऊ, खाऊ |
| आन | उठ्, मिल् | उठान, मिलान |
| आव | घुम् , जम् | घुमाव, जमाव |
| आवा | छल्, बहक् | छलावा, बहकावा |
| आवना | सुह्, डर | सुहावना, डरावना |
| आक, आका, आकू | तैर, लड़ा, पढ़ | तैराक, लड़ाका, पढ़ |
| आप, आपा | मिल्, पुज् | मिलाप, पुजापा |
| आवट | बन्, दिख् | बनावट, दिखावट |
| आहट | घबर, झनझन | घबराहट, झनझनाह |
| आस | पी, मीठा | प्यास, मिठास |
| इयल | मर्, अड़ | मरियल, अड़ियल |
| इया | छल, घट | छलिया, घटिया |
| ई | घुड़क्, लग् | घुड़की, लगी |
| ऊ | मार्, काट् | मारू, काटू |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

| प्रत्यय | मूल क्रिया | उदाहरण |
|---|---|---|
| एरा | लूट, बस | लुटेरा, बसेरा |
| ऐया | हँस, बच | हँसैया, बचैया |
| ऐत | लड़, बिगड़ | लड़ैत, बिगड़ैत |
| ओड़, ओड़ा | भाग, हँस, | भगोड़ा, हँसोड़ |
| औता, औती | समझ, चुन | समझौता, चुनौती |
| औना, औनी, आवनी | खेल, मिच, डर | खिलौना, मिचौनी, डरावनी |
| का | छील, फूल | छिलका, फुलका |
| वाला | जा, सो | जाने वाला, सोनेवाला |

(ii) **हिन्दी के तद्धित प्रत्यय** हिन्दी के तद्भव शब्दों में तद्धित प्रत्यय जोड़कर संज्ञा और विशेषण शब्द बनाने वाले कुछ प्रत्यय

| प्रत्यय | मूल शब्द | उदाहरण |
|---|---|---|
| आ | भूख, प्यास | भूखा, प्यासा |
| आई | विदा, ठाकुर | विदाई, ठकुराई |
| आन | ऊँचा, नीचा | ऊँचान, निचान |
| आना | तेलंग, बघेल | तेलंगना, बघेलाना |
| आर | कुम्भ, सोना | कुम्भार, सोनार |
| आरी, आरा | हत्या, घार | हत्यारा, घरियारा |
| आल, आला | ससुर, दया | ससुराल, दयाला |
| आवट | नीम, आम | निमावट, अमावट |
| आस | मीठा, खट्टा | मिठास, खटास |
| आहट | चिकना, कड़ुआ | चिकनाहट, कड़ुवाहट |
| इया | दुःख, भोजपुर | दुखिया, भोजपुरिया |
| ई | खेत, सुस्त | खेती, सुस्ती |
| ईला | रंग, जहर | रंगीला, जहरीला |
| ऊ | गँवार, बाज़ार | गँवारू, बाज़ारू |
| एरा | मामा, चाचा | ममेरा, चचेरा |
| एड़ी | भांग, गाँजा | भँगेड़ी, गँजेड़ी |
| औती | काठ, मान | कठौती, मनौती |
| ओला | साँप, खाट | सँपोला, खटोला |
| क | ढोल, बाल | ढोलक, बालक |
| ऐल | झगड़ा, तोंद | झगड़ैल, तोंदैल |
| त | संग, रंग | संगत, रंगत |
| पन | मैला, लड़का | मैलापन, लड़कपन |
| पा | बहन, बूढ़ा | बहनापा, बुढ़ापा |
| हारा | लकड़ी, पानी | लकड़हारा, पनिहारा |
| स | उमा, तम | उमस, तमस |
| ता | मधुर, मनुज | मधुरता, मनुजता |

| प्रत्यय | मूल शब्द | उदाहरण |
|---|---|---|
| हरा | एक, तीन | एकहरा, तिहरा |
| वाला | टोपी, धन | टोपीवाला, धनवाला |

(iii) **हिन्दी के स्त्री प्रत्यय** पुल्लिंगवाची शब्दों के साथ जुड़ने वाले स्त्रीलिंगवाची प्रत्यय

| प्रत्यय | मूल शब्द | उदाहरण |
|---|---|---|
| आइन | पण्डित, लाला | पण्डिताइन, ललाइन |
| आनी | राजपूत, जेठ | राजपूतानी, जेठानी |
| इन | तेली, दर्जी | तेलिन, दर्जिन |
| इया | चूहा, बेटा | चुहिया, बिटिया |
| ई | घोड़ा, नाना | घोड़ी, नानी |
| नी | शेर, मोर | शेरनी, मोरनी |

## 3. विदेशज प्रत्यय

(उर्दू एवं फ़ारसी के प्रत्यय)

विदेशी भाषा से आए हुए प्रत्ययों से निर्मित शब्द

| प्रत्यय | मूल शब्द | उदाहरण |
|---|---|---|
| कार | पेश, काश्त | पेशकार, काश्तकार |
| खाना | डाक, मुर्गी | डाकखाना, मुर्गीखाना |
| खोर | रिश्वत, चुगल | रिश्वतखोर, चुगलखोर |
| दान | कलम, पान | कलमदान, पानदान |
| दार | फल, माल | फलदार, मालदार |
| आ | खराब, चश्म | खराबा, चश्मा |
| आब | गुल, जूल | गुलाब, जुलाब |
| इन्दा | बरि, चुनि | बसिन्दा, चुनिन्दा |

## 4. ई प्रत्यय

इनके प्रयोग से भाववाचक स्त्रीलिंग शब्द बनते हैं।

| प्रत्यय | मूल शब्द | उदाहरण |
|---|---|---|
| ई | रिश्तेदार, दोस्त | रिश्तेदारी, दोस्ती |
| बाज | अकड़, नशा | अकड़बाज, नशाबाज |
| आना | आशिक, मेहनत | आशिकाना, मेहनताना |
| गर | कार, जिल्द | कारगर, जिल्दगर |
| साज | जिल्द, घड़ी | जिल्दसाज, घड़ीसाज |
| गाह | ईद, कब्र | ईदगाह, कब्रगाह |
| ईना | माह, नग | महीना, नगीना |
| बन्द, बन्दी | मेंड़, हद | मेंड़बन्द, हदबन्दी |

Download From: https://sarkaripot.in/
Scanned by CamScanner

## मध्यान्तर प्रश्नावली

1. शब्द-रचना कितने प्रकार की होती है?
(a) दो (b) चार (c) तीन (d) पाँच

2. उपसर्ग को कहते हैं
(a) अन्त्य प्रत्यय (b) आदि प्रत्यय
(c) मध्य प्रत्यय (d) इनमें से कोई नहीं

3. उपसर्ग शब्द की व्युत्पत्ति है
(a) उपर्स + ग (b) उप + सर्ग
(c) उ + पसर्ग (d) उपस + र्ग

4. उपसर्ग के नहीं किए जा सकते हैं
(a) खण्ड (b) सार्थक खण्ड
(c) निरर्थक खण्ड (d) इनमें से कोई नहीं

5. उपसर्ग का प्रयोग कहाँ होता है?
(a) शब्द के आदि में (b) शब्द के मध्य में
(c) शब्द के अन्त में (d) इनमें से कोई नहीं

6. 'उत्कर्ष' शब्द में उपसर्ग है
(a) उत (b) उत्
(c) उतक (d) इनमें से कोई नहीं

7. 'निष्कपट' शब्द में उपसर्ग है
(a) निष (b) निष् (c) निस् (d) निस

8. 'जय' शब्द में कौन-सा उपसर्ग लगाने से वह 'जय' का विलोमार्थक हो जाता है?
(a) वि (b) परि (c) परा (d) अ

9. किस शब्द में उपसर्ग का प्रयोग हुआ है?
(a) उपकार (b) लाभदायक (c) अपनापन (d) समझदार

10. निम्नलिखित में से कौन-सा उपसर्ग रहित शब्द है?
(a) संयोग (b) विदेश (c) अत्यधिक (d) सुरेश

11. 'अत्यन्त' में कौन-सा उपसर्ग है?
(a) 'अ' (b) 'अति' (c) अन्त (d) अ

12. इन्दिरा गाँधी के मन्त्रिमण्डल में मोरारजी देसाई उप-प्रधानमन्त्री भी रह चुके थे। 'उप-प्रधानमन्त्री' में प्रयुक्त उपसर्ग है
(a) तत्सम उपसर्ग (b) तद्भव उपसर्ग
(c) विदेशज उपसर्ग (d) देशज उपसर्ग

13. 'प्रत्यय' शब्द निर्मित है
(a) प्रत् + अय (b) प्रत्य + य (c) प्रति + अय (d) प्रति + य

14. 'प्रत्यय' लगाए जाते हैं
(a) शब्द के आदि में (b) शब्द के मध्य में
(c) शब्द के अन्त में (d) इनमें से कोई नहीं

15. जो शब्द के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ या भाव में परिवर्तन कर देते हैं, उसे क्या कहते हैं?
(a) समास (b) अव्यय (c) उपसर्ग (d) प्रत्यय

16. 'कृत्' प्रत्यय किन शब्दों के साथ जुड़ते हैं?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम (c) विशेषण (d) क्रिया

17. निम्नलिखित में कौन-सा पद 'इक' प्रत्यय से नहीं बना है?
(a) दैविक (b) सामाजिक
(c) भौमिक (d) इनमें से कोई नहीं

18. 'अनुज' शब्द को स्त्रीवाचक बनाने के लिए किस प्रत्यय का प्रयोग जाता है?
(a) आङ् (b) ईयत् (c) आ (d) ई

19. 'सनसनाहट' में कौन-सा प्रत्यय है?
(a) सन (b) सनसन (c) हट (d) आहट

20. 'दासत्व' में प्रत्यय है
(a) त्व (b) सत्व
(c) य (d) तव

### उत्तरमाला

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. (b) | 2. (b) | 3. (b) | 4. (b) | 5. (a) |
| 6. (b) | 7. (c) | 8. (c) | 9. (a) | 10. (d) |
| 11. (b) | 12. (a) | 13. (c) | 14. (c) | 15. (d) |
| 16. (d) | 17. (d) | 18. (c) | 19. (d) | 20. (a) |

## सन्धि

दो वर्णों या ध्वनियों के संयोग से होने वाले विकार (परिवर्तन) को सन्धि कहते हैं। सन्धि करते समय कभी-कभी एक अक्षर में, कभी-कभी दोनों अक्षरों में परिवर्तन होता है और कभी-कभी दोनों अक्षरों के स्थान पर एक तीसरा अक्षर आ जाता है। इस सन्धि पद्धति द्वारा भी शब्द-रचना होती है; जैसे—सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र, विद्या + आलय = विद्यालय, सत् + आनन्द = सदानन्द।

इन शब्द खण्डों में प्रथम खण्ड का अन्त्याक्षर और दूसरे खण्ड का प्रथम मिलकर एक भिन्न वर्ण बन गया है, इस प्रकार के मेल को सन्धि कहते हैं। सन्धियाँ तीन प्रकार की होती हैं

1. स्वर सन्धि 2. व्यंजन सन्धि 3. विसर्ग सन्धि

### 1. स्वर सन्धि

स्वर के साथ स्वर का मेल होने पर जो विकार होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि के पाँच भेद हैं

(i) **दीर्घ सन्धि** सवर्ण ह्रस्व या दीर्घ स्वरों के मिलने से उनके स्थान में दीर्घ स्वर हो जाता है। वर्णों का संयोग चाहे ह्रस्व + ह्रस्व हो या ह्रस्व + दीर्घ और चाहे दीर्घ + दीर्घ हो, यदि सवर्ण स्वर है तो दीर्घ हो जाएगा। इस सन्धि को दीर्घ सन्धि कहते हैं; जैसे—

| सन्धि | उदाहरण |
|---|---|
| अ + अ = आ | पुष्प + अवली = पुष्पावली |
| अ + आ = आ | हिम + आलय = हिमालय |
| आ + अ = आ | माया + अधीन = मायाधीन |
| आ + आ = आ | विद्या + आलय = विद्यालय |
| इ + इ = ई | कवि + इच्छा = कवीच्छा |
| इ + ई = ई | हरी + ईश = हरीश |
| ई + इ = ई | मही + इन्द्र = महीन्द्र |
| इ + ई = ई | नदी + ईश = नदीश |
| उ + उ = ऊ | सु + उक्ति = सूक्ति |
| उ + ऊ = ऊ | सिन्धु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि |
| ऊ + उ = ऊ | वधू + उत्सव = वधूत्सव |
| ऊ + ऊ = ऊ | भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व |
| ऋ + ऋ = ॠ | मातृ + ऋण = मातॄण |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

(ii) **गुण सन्धि** जब अ अथवा आ के आगे 'इ' अथवा 'ई' आता है तो इनके स्थान पर ए हो जाता है। इसी प्रकार अ या आ के आगे उ या ऊ आता है तो **ओ** हो जाता है तथा अ या आ के आगे ऋ आने पर **अर्** हो जाता है। दूसरे शब्दों में, हम इस प्रकार कह सकते हैं कि जब अ, आ के आगे इ, ई या 'उ', 'ऊ' तथा 'ऋ' हो तो क्रमशः **ए, ओ** और **अर्** हो जाता है, इसे गुण सन्धि कहते हैं; जैसे—

(i) अ, आ + ई, ई = ए (ii) अ, आ + उ, ऊ = ओ

(iii) अ, आ + ऋ = अर्

| सन्धि | उदाहरण |
|---|---|
| अ + इ = ए | उप + इन्द्र = उपेन्द्र |
| अ + ई = ए | गण + ईश = गणेश |
| आ + इ = ए | महा + इन्द्र = महेन्द्र |
| आ + ई = ए | रमा + ईश = रमेश |
| अ + उ = ओ | चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय |
| अ + ऊ = ओ | समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि |
| आ + उ = ओ | महा + उत्साह = महोत्साह |
| आ + ऊ = ओ | गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि |
| अ + ऋ = अर् | देव + ऋषि = देवर्षि |
| आ + ऋ = अर् | महा + ऋषि = महर्षि |

(iii) **वृद्धि सन्धि** जब अ या आ के आगे 'ए' या 'ऐ' आता है तो दोनों का **ऐ** हो जाता है। इसी प्रकार अ या आ के आगे 'ओ' या 'औ' आता है तो दोनों का **औ** हो जाता है, इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं; जैसे—

| सन्धि | उदाहरण |
|---|---|
| अ + ए = ऐ | पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा |
| अ + ऐ = ऐ | मत + ऐक्य = मतैक्य |
| आ + ए = ऐ | सदा + एव = सदैव |
| आ + ऐ = ऐ | महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य |
| अ + ओ = औ | जल + ओकस = जलौकस |
| अ + औ = औ | परम + औषध = परमौषध |
| आ + ओ = औ | महा + ओषधि = महौषधि |
| आ + औ = औ | महा + औदार्य = महौदार्य |

(iv) **यण् सन्धि** जब इ, ई, उ, ऊ, ऋ के आगे कोई भिन्न स्वर आता है तो ये क्रमशः य्, व्, र्, ल् में परिवर्तित हो जाते हैं, इस परिवर्तन को यण् सन्धि कहते हैं; जैसे—

(i) इ, ई + भिन्न स्वर = व (ii) उ, ऊ + भिन्न स्वर = व

(iii) ऋ + भिन्न स्वर = र

| सन्धि | उदाहरण |
|---|---|
| इ + अ = य् | अति + अल्प = अत्यल्प |
| ई + अ = य् | देवी + अर्पण = देव्यर्पण |
| उ + अ = व् | सु + आगत = स्वागत |
| ऊ + आ = व् | वधू + आगमन = वध्वागमन |
| ऋ + अ = र् | पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा |

(v) **अयादि सन्धि** जब ए, ऐ, ओ और औ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है तो 'ए' का **अय्**, 'ऐ' का **आय्**, 'ओ' का **अव्** और 'औ' का **आव्** हो जाता है; जैसे—

(i) ए + भिन्न स्वर = अय्

(ii) ऐ + भिन्न स्वर = आय्

(iii) ओ + भिन्न स्वर = अव्

(iv) औ + भिन्न स्वर = आव्

| सन्धि | उदाहरण |
|---|---|
| ए + अ = अय् | ने + अयन = नयन |
| ऐ + अ = आय् | नै + अक = नायक |
| ओ + अ = अव् | पो + अन = पवन |
| औ + अ = आव् | पौ + अक = पावक |

## 2. व्यंजन सन्धि

व्यंजन के साथ व्यंजन या स्वर का मेल होने से जो विकार होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं। व्यंजन सन्धि के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं

(क) यदि स्पर्श व्यंजनों के प्रथम अक्षर अर्थात् क्, च्, ट्, त्, प् के आगे कोई स्वर अथवा किसी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व आए तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा अक्षर अर्थात् क के स्थान पर ग, च के स्थान पर ज, ट के स्थान पर ड, त के स्थान पर द और प के स्थान पर 'ब' हो जाता है; जैसे—

दिक् + अम्बर = दिगम्बर
वाक् + ईश = वागीश
अच् + अन्त = अजन्त
षट् + आनन = षडानन
सत् + आचार = सदाचार
सुप् + सन्त = सुबन्त
उत् + घाटन = उद्घाटन
तत् + रूप = तद्रूप

(ख) यदि स्पर्श व्यंजनों के प्रथम अक्षर अर्थात् क्, च्, ट्, त्, प् के आगे कोई अनुनासिक व्यंजन आए तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो जाता है; जैसे—

वाक् + मय = वाङ्मय
षट् + मास = षण्मास
उत् + मत्त = उन्मत्त
अप् + मय = अम्मय

(ग) जब किसी ह्रस्व या दीर्घ स्वर के आगे छ् आता है तो छ् के पहले च् बढ़ जाता है; जैसे—

परि + छेद = परिच्छेद
आ + छादन = आच्छादन
लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया
पद + छेद = पदच्छेद
गृह + छिद्र = गृहच्छिद्र

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

(घ) यदि म् के आगे कोई स्पर्श व्यंजन आए तो म् के स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है; जैसे—

शम् + कर = शङ्कर या शंकर
सम् + चय = संचय
घम् + टा = घण्टा
सम् + तोष = सन्तोष
स्वयम् + भू = स्वयंभू

(ङ) यदि म के आगे कोई अन्तस्थ या ऊष्म व्यंजन आए अर्थात् य, र, ल, व, श, ष, स, ह आए तो म अनुस्वार में बदल जाता है; जैसे—

सम् + सार = संसार
सम् + योग = संयोग
स्वयम् + वर = स्वयंवर
सम् + रक्षा = संरक्षा

(च) यदि त् और द् के आगे ज् या झ् आए तो 'ज्', 'झ', 'ज' में बदल जाते हैं; जैसे—

उत् + ज्वल = उज्ज्वल
विपद् + जाल = विपज्जाल
सत् + जन = सज्जन
सत् + जाति = सज्जाति

(छ) यदि त्, द् के आगे श् आए तो त्, द् का **च्** और श् का **छ्** हो जाता है। यदि त्, द् के आगे ह आए तो त् का **द्** और ह का **ध** हो जाता है; जैसे—

सत् + चित = सच्चित
तत् + शरीर = तच्छरीर
उत् + हार = उद्धार
तत् + हित = तद्धित

(ज) यदि च् या ज् के बाद न् आए तो न् के स्थान पर या **याञ्ज्ञा** हो जाता है; जैसे—

यज् + न = यज्ञ
याच् + न = याञ्ज्ञा

(झ) यदि अ, आ को छोड़कर किसी भी स्वर के आगे स् आता है तो बहुधा स् के स्थान पर **ष्** हो जाता है; जैसे—

अभि + सेक = अभिषेक
वि + सम = विषम
नि + सेध = निषेध
सु + सुप्त = सुषुप्त

(ञ) ष् के पश्चात् त या थ आने पर उसके स्थान पर क्रमशः ट और ठ हो जाता है; जैसे—

आकृष् + त = आकृष्ट
तुष् + त = तुष्ट
पृष् + थ = पृष्ठ
षष् + थ = षष्ठ

(ट) ऋ, र, ष के बाद 'न' आए और इनके मध्य में कोई स्वर क वर्ग, प वर्ग, अनुस्वार य, व, ह में से कोई वर्ण आए तो 'न' = 'ण' हो जाता है; जैसे—

भर + अन = भरण
भूष + अन = भूषण
राम + अयन = रामायण
परि + मान = परिमाण
ऋ + न = ऋण

## 3. विसर्ग सन्धि

विसर्गों का प्रयोग संस्कृत को छोड़कर संसार की किसी भी भाषा में नहीं होता है। हिन्दी में भी विसर्गों का प्रयोग नहीं के बराबर होता है। कुछ इने-गिने विसर्गयुक्त शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—अतः, पुनः, प्रायः, शनैः, शनैः आदि।

हिन्दी में मनः, तेजः, आयुः, हरिः के स्थान पर मन, तेज, आयु, हरि शब्द चलते हैं, इसलिए यहाँ विसर्ग सन्धि का प्रश्न ही नहीं उठता। फिर भी हिन्दी पर संस्कृत का सबसे अधिक प्रभाव है। संस्कृत के अधिकांश विधि निषेध हिन्दी में प्रचलित हैं। विसर्ग सन्धि के ज्ञान के अभाव में हम वर्तनी की अशुद्धियों से मुक्त नहीं हो सकते। अतः इसका ज्ञान होना आवश्यक है।

**विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के संयोग से जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।** इसके प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं

(क) यदि विसर्ग के आगे श, ष, स आए तो वह क्रमशः श, ष, स, में बदल जाता है; जैसे—

निः + शंक = निश्शंक
दुः + शासन = दुश्शासन
निः + सन्देह = निस्सन्देह
निः + संग = निस्संग
निः + शब्द = निश्शब्द
निः + स्वार्थ = निस्स्वार्थ

(ख) यदि विसर्ग से पहले इ या उ हो और बाद में र आए तो विसर्ग का लोप हो जाएगा और इ तथा उ दीर्घ ई, ऊ में बदल जाएँगे; जैसे—

निः + रव = नीरव
निः + रोग = नीरोग
निः + रस = नीरस

(ग) यदि विसर्ग के बाद 'च-छ', 'ट-ठ' तथा 'त-थ' आए तो विसर्ग क्रमशः 'श्', 'ष्', 'स्' में बदल जाते हैं; जैसे—

निः + तार = निस्तार
दुः + चरित्र = दुश्चरित्र
निः + छल = निश्छल
धनुः + टंकार = धनुष्टंकार
निः + ठुर = निष्ठुर

(घ) विसर्ग के बाद क, ख, प, फ रहने पर विसर्ग में कोई विकार (परिवर्तन) नहीं होता; जैसे—

प्रातः + काल = प्रातःकाल
पयः + पान = पयःपान
अन्तः + करण = अन्तःकरण

(ङ) यदि विसर्ग से पहले 'अ' या 'आ' को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में वर्ग के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण अथवा य, र, ल, व में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग 'र' में बदल जाता है; जैसे—

दुः + निवार = दुर्निवार
दुः + बोध = दुर्बोध
निः + गुण = निर्गुण
निः + आधार = निराधार
निः + धन = निर्धन
निः + झर = निर्झर

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

(च) यदि विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर आए और बाद में कोई भी स्वर आए तो भी विसर्ग र् में बदल जाता है; जैसे—

नि: + आशा = निराशा
नि: + ईह = निरीह
नि: + उपाय = निरुपाय
नि: + अर्थक = निरर्थक

(छ) यदि विसर्ग से पहले अ आए और बाद में य, र, ल, व या ह आए तो विसर्ग का लोप हो जाता है तथा विसर्ग 'ओ' में बदल जाता है; जैसे—

मन: + विकार = मनोविकार
मन: + रथ = मनोरथ
पुर: + हित = पुरोहित
मन: + रम = मनोरम

(ज) यदि विसर्ग से पहले इ या उ आए और बाद में क, ख, प, फ में से कोई वर्ण आए तो विसर्ग 'ष्' में बदल जाता है; जैसे—

नि: + कर्म = निष्कर्म
नि: + काम = निष्काम
नि: + करुण = निष्करुण
नि: + पाप = निष्पाप
नि: + कपट = निष्कपट
नि: + फल = निष्फल

## हिन्दी की कुछ विशेष सन्धियाँ

हिन्दी की कुछ अपनी विशेष सन्धि हैं, इनकी रूपरेखा अभी तक विशेष रूप से स्पष्ट निर्धारित नहीं हुई है, फिर भी इनका ज्ञान हमारे लिए आवश्यक है। हिन्दी की प्रमुख विशेष सन्धियाँ निम्नलिखित हैं

1. जब, तब, कब, सब और अब आदि शब्दों के अन्त में (पीछे) 'ही' आने पर ह का भ हो जाता है और ब का लोप भी हो जाता है; जैसे—

   जब + ही = जभी
   तब + ही = तभी
   कब + ही = कभी
   सब + ही = सभी
   अब + ही = अभी

2. जहाँ, कहाँ, यहाँ, वहाँ आदि शब्दों के बाद 'ही' आने पर ही (स्वर सहित) लुप्त हो जाता है और अन्तिम ई पर अनुस्वार लग जाता है; जैसे—

   यहाँ + ही = यहीं
   कहाँ + ही = कहीं
   वहाँ + ही = वहीं
   जहाँ + ही = जहीं

3. कहीं-कहीं संस्कृत के र् लोप, दीर्घ और यण् आदि सन्धियों के नियम हिन्दी में नहीं लागू होते हैं; जैसे—

   अन्तर् + राष्ट्रीय = अन्तर्राष्ट्रीय
   स्त्री + उपयोगी = स्त्रियोपयोगी
   उपरि + उक्त = उपर्युक्त

### हिन्दी के प्रमुख शब्द एवं उनके सन्धि-विच्छेद

| शब्द | सन्धि-विच्छेद | शब्द | सन्धि-विच्छेद |
|---|---|---|---|
| राष्ट्राध्यक्ष | राष्ट्र + अध्यक्ष | नवांकुर | नव + अंकुर |
| नयनाभिराम | नयन + अभिराम | सहानुभूति | सह + अनुभूति |
| युगान्तर | युग + अन्तर | दीक्षान्त | दीक्षा + अन्त |
| शरणार्थी | शरण + अर्थी | वार्तालाप | वार्ता + आलाप |
| सत्यार्थी | सत्य + अर्थी | पुस्तकालय | पुस्तक + आलय |
| दिवसावसान | दिवस + अवसान | विकलांग | विकल + अंग |
| प्रसंगानुकूल | प्रसंग +अनुकूल | आनन्दातिरेक | आनन्द + अतिरेक |
| विद्यानुराग | विद्या + अनुराग | कामायनी | काम + अयनी |
| परमावश्यक | परम + आवश्यक | दीपावली | दीप +अवली |
| उदयाचल | उदय + अचल | दावानल | दाव + अनल |
| ग्रामांचल | ग्रामा + अंचल | महात्मा | महा + आत्मा |
| ध्वंसावशेष | ध्वंस + अवशेष | हिमालय | हिम + आलय |
| हस्तान्तरण | हस्त + अन्तरण | देशान्तर | देश + अन्तर |
| परमानन्द | परम + आनन्द | सावधान | स + अवधान |
| रत्नाकर | रत्न + आकर | तीर्थाटन | तीर्थ + अटन |
| देवालय | देव + आलय | विचाराधीन | विचार + अधीन |
| धर्मात्मा | धर्म + आत्मा | मुरारि | मुर + अरि |
| आग्नेयास्त्र | आग्नेय + अस्त्र | कुशासन | कुश + आसन |
| मर्मान्तक | मर्म + अन्तक | उत्तमांग | उत्तम + अंग |
| रामायण | राम + अयन | सावयव | स + अवयव |
| सुखानुभूति | सुख + अनुभूति | भग्नावशेष | भग्न + अवशेष |
| आज्ञानुपालन | आज्ञा + अनुपालन | धर्माधिकारी | धर्म + अधिकारी |
| देहान्त | देह + अन्त | जनार्दन | जन + अर्दन |
| गीतांजलि | गीत + अंजलि | अधिकांश | अधिक + अंश |
| मात्राज्ञा | मातृ + आज्ञा | गौरीश | गौरी + ईश |
| भयाकुल | भय + आकुल | लक्ष्मीश | लक्ष्मी + ईश |
| त्रिपुरारि | त्रिपुर + अरि | पृथ्वीश्वर | पृथ्वी + ईश्वर |
| आयुधागार | आयुध + आगार | अनूदित | अनु + उदित |
| स्वर्गारोहण | स्वर्ग + आरोहण | मंजूषा | मंजु + उषा |
| प्राणायाम | प्राण + आयाम | गुरूपदेश | गुरु + उपदेश |
| कारागार | कारा + आगार | साधूपदेश | साधु + उपदेश |
| शाकाहारी | शाक् + आहारी | बहूद्देशीय | बहु + उद्देशीय |
| फलाहार | फल + आहार | वधूपालम्भ | वधु + उपालम्भ |
| गदाघात | गदा + आघात | भानूदय | भानु + उदय |
| स्थानापन्न | स्थान + आपन्न | मधूत्सव | मधु + उत्सव |
| कंटकाकीर्ण | कंटक + आकीर्ण | बहूर्ज | बहु + उर्ज |
| स्नेहाकांक्षी | स्नेह + आकांक्षी | सिन्धूर्मि | सिन्धु + ऊर्मि |
| महामात्य | महा + अमात्य | चमूत्तम | चमू + उत्तम |
| चिकित्सालय | चिकित्सा + आलय | लघूत्तम | लघु + उत्तम |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

| शब्द | सन्धि-विच्छेद | शब्द | सन्धि-विच्छेद |
|---|---|---|---|
| रचनात्मक | रचना + आत्मक | वधूल्लास | वधू + उल्लास |
| क्षितीन्द्र | क्षिति + इन्द्र | भूर्ध्व | भू + ऊर्ध्व |
| अधीश्वर | अधि + ईश्वर | पितृण | पितृ + ऋण |
| प्रतीक्षा | प्रति + ईक्षा | मातृण | मातृ + ऋण |
| परीक्षा | परि + ईक्षा | योगेन्द्र | योग + इन्द्र |
| गिरीन्द्र | गिरि + इन्द्र | शुभेच्छा | शुभ + इच्छा |
| मुनीन्द्र | मुनि + इन्द्र | मानवेन्द्र | मानव + इन्द्र |
| अधीक्षक | अधि + ईक्षक | गजेन्द्र | गज + इन्द्र |
| हरीश | हरि + ईश | मृगेन्द्र | मृग + इन्द्र |
| अधीन | अधि + इन | जितेन्द्रिय | जित + इन्द्रिय |
| गिरीश | गिरि + ईश | पूर्णेन्द्र | पूर्ण + इन्द्र |
| वारीश | वारि + ईश | सुरेन्द्र | सुर + इन्द्र |
| गणेश | गण + ईश | यथेष्ट | यथा + इष्ट |
| सुधीन्द्र | सुधी + इन्द्र | विवाहेतर | विवाह + इतर |
| महीन्द्र | मही + इन्द्र | हितेच्छा | हित + इच्छा |
| श्रीश | श्री + ईश | साहित्येतर | साहित्य + इतर |
| सतीश | सती + ईश | शब्देतर | शब्द + इतर |
| फणीन्द्र | फणी + इन्द्र | भारतेन्द्र | भारत + इन्द्र |
| रजनीश | रजनी + ईश | उपदेष्टा | उप + दिष्टा |
| नारीश्वर | नारी + ईश्वर | स्वेच्छा | स्व + इच्छा |
| देवीच्छा | देवी + इच्छा | अन्त्येष्टि | अन्त्य + इष्टि |
| लक्ष्मीच्छा | लक्ष्मी + इच्छा | बालेन्दु | बाल + इन्दु |
| परमेश्वर | परम + ईश्वर | राजर्षि | राज + ऋषि |
| परोपकार | पर + उपकार | ब्रह्मर्षि | ब्रह्म + ऋषि |
| नीलोत्पल | नील + उत्पल | प्रियैषी | प्रिय + एषी |
| देशोपकार | देश + उपकार | पुत्रैषणा | पुत्र + एषणा |
| सूर्योदय | सूर्य + उदय | लोकैषणा | लोक + एषणा |
| रोगोपचार | रोग + उपचार | देवौदार्य | देव + औदार्य |
| ज्ञानोदय | ज्ञान + उदय | परमौषध | परम + औषध |
| पुरुषोचित | पुरुष + उचित | हितैषी | हित + एषी |
| दुग्धोपजीवी | दुग्ध + उपजीवी | जलौघ | जल + ओघ |
| अन्त्योदय | अन्त्य + उदय | वनौषधि | वन + ओषधि |
| वेदोक्त | वेद + उक्त | धनैषी | धन + एषी |
| महोदय | महा + उदय | महौदार्य | महा + औदार्य |
| विद्योन्नति | विद्या + उन्नति | विश्वैक्य | विश्व + एक्य |
| महोपदेशक | महा + उपदेशक | स्वैच्छिक | स्व + ऐच्छिक |
| महोपकार | महा + उपकार | महैश्वर्य | महा + ऐश्वर्य |
| दलितोत्थान | दलित + उत्थान | अधरोष्ठ | अधर + ओष्ठ |
| सर्वोपरि | सर्व + उपरि | शुद्धोधन | शुद्ध + ओधन |
| सोद्देश्य | स + उद्देश्य | स्वागत | सु + आगत |
| जनोपयोगी | जन + उपयोगी | अन्वेषण | अनु + एषण |



| शब्द | सन्धि-विच्छेद | शब्द | सन्धि-विच्छेद |
|---|---|---|---|
| शोल्लास | श + उल्लास | अभ्यास | अभि + आस |
| भावोद्रेक | भाव + उद्रेक | पर्यवसान | परि + अवसान |
| धीरोदात्त | धीर + उदात्त | रीत्यनुसार | रीति + अनुसार |
| सर्वोत्तम | सर्व + उत्तम | अभ्यर्थना | अभि + अर्थना |
| मानवोचित | मानव + उचित | प्रत्यभिज्ञ | प्रति + अभिज्ञ |
| कथोपकथन | कथ्य + उपकथन | प्रत्युपकार | प्रति + उपकार |
| रहस्योद्घाटन | रहस्य + उद्घाटन | त्र्यम्बक | त्रि + अम्बक |
| मित्रोचित | मित्र + उचित | अत्यल्प | अति + अल्प |
| नवोन्मेष | नव + उन्मेष | जात्यभिमान | जाति + अभिमान |
| नवोदय | नव + उदय | गत्यानुसार | गति + अनुसार |
| महोर्मि | महा + ऊर्मि | देव्यागमन | देवी + आगमन |
| महोर्जा | महा + ऊर्जा | गुरौदार्य | गुरु + औदार्य |
| सूर्योष्मा | सूर्य + उष्मा | लघ्वोष्ठ | लघु + ओष्ठ |
| महोत्साव | महा + उत्साव | मात्रुपदेश | मातृ + उपदेश |
| नवोढ़ा | नव + ऊढ़ा | पर्यावरण | परि + आवरण |
| क्षुधोत्तेजन | क्षुधा + उत्तेजन | ध्वन्यात्मक | ध्वनि + आत्मक |
| देवर्षि | देव + ऋषि | अभ्यागत | अभि + आगत |
| महर्षि | महा + ऋषि | अत्याचार | अति + आचार |
| राप्तर्षि | राप्त + ऋषि | व्याख्यान | वि + आख्यान |
| व्याकरण | वि + आकरण | ऋग्वेद | ऋक् + वेद |
| प्रत्युत्तर | प्रति + उत्तर | सद्धर्म | सत् + धर्म |
| उपर्युक्त | उपरि + उक्त | जगदाधार | जगत् + आधार |
| उभ्युत्थान | अभि + उत्थान | उद्वेग | उत् + वेग |
| अध्यात्म | अधि + आत्म | अजंत | अच् + अन्त |
| अत्युक्ति | अति + उक्ति | षडंग | षट् + अंग |
| अत्युत्तम | अति + उत्तम | जगदम्बा | जगत् + अम्बा |
| सख्यागमन | सखी + आगमन | जगद्गुरु | जगत् + गुरु |
| स्वच्छ | सु + अच्छ | जगज्जनी | जगत् + जननी |
| तन्वंगी | तनु + अंगी | उज्ज्वल | उत् + ज्वल |
| समन्वय | सम् + अनु + अय | सज्जन | सत् + जन |
| मन्वंतर | मनु + अन्तर | सदात्मा | सत् + आत्मा |
| गुर्वादेश | गुरु + आदेश | सदानन्द | सत् + आनन्द |
| साध्वाचार | साधु + आचार | स्यादवाद | स्यात् + वाद |
| धात्विक | धातु + इक | सद्वेग | सत् + वेग |
| नायक | नै + अक | छत्रच्छाया | छत्र + छाया |
| गायक | गै + अक | परिच्छेद | परि + छेद |
| गायन | गै + अन | सन्तोष | सम् + तोष |
| विधायक | विधै + अक | आच्छादन | आ + छादन |
| पवन | पो + अन | उच्चारण | उत् + चारण |
| हवन | हो + अन | जगन्नाथ | जगत् + नाथ |
| शावक | शौ + अक | जगन्मोहिनी | जगत् + मोहिनी |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

| शब्द | सन्धि-विच्छेद | शब्द | सन्धि-विच्छेद |
|---|---|---|---|
| श्रावण | श्रौ + अन | उन्नयन | उत् + नयन |
| नाविक | नौ + इक | सन्मान | सत् + मान |
| विश्वामित्र | विश्व + अमित्र | सन्निकट | सम् + निकट |
| प्रतिकार | प्रति + कार | दण्ड | दम् + ड |
| दिवारात्र | दिवा + रात्रि | सन्त्रास | सम् + त्रास |
| षड्दर्शन | षट् + दर्शन | सच्चिदानन्द | सत् + चित + आनन्द |
| वागीश | वाक् + ईश | यावज्जीवन | यावत् + जीवन |
| उन्मत् | उत् + मत | तज्जन्य | तद् + जन्य |
| दिग्ज्ञान | दिक् + ज्ञान | परोक्ष | पर + उक्ष |
| वाग्दान | वाक् + दान | सारंग | सार + अंग |
| वाग्व्यापार | वाक् + व्यापार | अनुषंगी | अनु + संगी |
| दिग्दिगन्त | दिक् + दिगन्त | सुषुप्त | सु + सुप्त |
| सम्यग्दर्शन | सम्यक् + दर्शन | प्रतिषेध | प्रति + सेध |
| दिग्विजय | दिक् + विजय | दुस्साहस | दुः + साहस |
| निस्सहाय | निः + सहाय | तपोभूमि | तपः + भूमि |
| निस्सार | निः + सार | नभोमण्डल | नभः + मण्डल |
| निश्चल | निः + चल | तमोगुण | तमः + गुण |
| निष्कलुष | निः + कलुष | तिरोहित | तिरः + हित |
| निष्काम | निः + काम | दिवोज्योति | दिवः + ज्योति |
| निष्कासन | निः + कासन | यशोदा | यशः + दा |
| निश्चय | निः + चय | शिरोभूषण | शिरः + भूषण |
| दुश्चरित्र | दुः + चरित्र | मनोवांछा | मनः + वांछा |
| निष्प्रयोजन | निः + प्रयोजन | पुरोगामी | पुरः + गामी |
| निष्प्राण | निः + प्राण | मनोग्राह्य | मनः+ ग्राह्य |
| निष्प्रभ | निः + प्रभ | निर्मम | निः + मम |
| निष्पालक | निः + पालक | दुर्जन | दुः + जन |
| निष्पाप | निः + पाप | निराशा | निः + आशा |
| प्राणिविज्ञान | प्राणि + विज्ञान | निष्ठुर | निः + ठुर |
| योगीश्वर | योगी + ईश्वर | धनुष्टंकार | धनुः + टंकार |
| स्वामिभक्त | स्वामी + भक्त | दुश्शासन | दुः + शासन |
| युववाणी | युव + वाणी | शिरोरेखा | शिरः + रेखा |
| मनीष | मन + ईष | यजुर्वेद | यजुः + वेद |
| दुर्दशा | दुः + दशा | नमस्कार | नमः + कार |
| दुर्लभ | दुः + लभ | शिरस्त्राण | शिरः + त्राण |
| निर्भय | निः + भय | चतुस्सीमा | चतुः + सीमा |
| यशोगान | यशः + भूमि | आविष्कार | आविः + कार |

## मध्यान्तर प्रश्नावली

**1.** अ, आ के बाद
(i) इ, ई आए तो ई ई = ए
(ii) उ, ऊ आए तो ऊ ऊ = ओ
(iii) ऋ आए तो 'अर्' हो जाता है। इसे कहते हैं
(a) वृद्धि सन्धि (b) गुण सन्धि
(c) अयादि सन्धि (d) दीर्घ सन्धि

**2.** 'मतैक्य' का सन्धि-विच्छेद है
(a) मत् + एक्य (b) मति + एक्य (c) मत् + ऐक्य (d) मत + एक्य

**3.** इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ऌ के बाद (आगे) कोई स्वर आए तो ये क्रमशः य, व, र, ल में बदल जाते हैं। इस परिवर्तन को कहते हैं
(a) गुण (b) अयादि (c) वृद्धि (d) यण्

**4.** 'बध्वागमन' का सन्धि-विच्छेद है
(a) बधु + आगमन (b) बध्व + आगमन
(c) बधू + आगमन (d) बध्वा + गमन

**5.** उ, ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो ए = अय, ऐ = आय, ओ = अव, औ = आव हो जाता है। इस परिवर्तन को कहते हैं
(a) अयादि (b) गुण (c) दीर्घ (d) वृद्धि

**6.** 'हिमालय' शब्द का सन्धि-विच्छेद है
(a) हिमा + लय (b) हिमा + अलय (c) हिमा + आलय (d) हिम + आलय

**7.** 'वागीश' शब्द का सन्धि-विच्छेद है
(a) वाक् + ईश (b) वाक + ईश (c) वाग + ईश (d) वाग + इश

**8.** 'वाक् + मय'-का सन्धि पद होगा
(a) वाग्मय (b) वागमय
(c) वाङ्मय (d) वाकमय

**9.** 'पद + छेद' विग्रह पद का सन्धि शब्द होगा
(a) पदछेद (b) पदछैद
(c) पदच्छेद (d) पदच्छैद

**10.** 'संयोग' शब्द का सन्धि-विच्छेद है
(a) सम् + योग (b) सम + योग
(c) सं + योग (d) सम्म + योग

**11.** 'धनुष्टंकार' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा
(a) धनुः+ टंकार (b) धनूः+ टंकार
(c) धनुष् + टंकार (d) धनुस् + टंकार

**12.** 'यहीं' शब्द की सन्धि है
(a) यहाँ + ही (b) याहाँ + ही (c) यहा + ही (d) यह + ही

### उत्तरमाला

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **1.** (b) | **2.** (d) | **3.** (d) | **4.** (c) | **5.** (a) |
| **6.** (d) | **7.** (a) | **8.** (c) | **9.** (c) | **10.** (a) |
| **11.** (a) | **12.** (a) | | | |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

## समास

'संक्षिप्तिकरण' को समास कहते हैं। दूसरे शब्दों में समास संक्षेप करने की एक प्रक्रिया है। दो या दो से अधिक शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा कारक चिह्नों का लोप होने पर उन दो अथवा दो से अधिक शब्दों के मेल से बने एक स्वतन्त्र शब्द को समास कहते हैं।

उदाहरण 'दया का सागर' का सामासिक शब्द बनता है 'दयासागर'। इस उदाहरण में 'दया' और 'सागर' इन दो शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले 'का' प्रत्यय का लोप होकर एक स्वतन्त्र शब्द बना 'दयासागर'। समासों के परम्परागत छः भेद हैं

### 1. द्वन्द्व समास

जिस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों ही प्रधान हों अर्थात् अर्थ की दृष्टि से दोनों का स्वतन्त्र अस्तित्व हो और उनके मध्य संयोजक शब्द का लोप हो तो द्वन्द्व समास कहलाता है; जैसे—

माता-पिता = माता और पिता
राम-कृष्ण = राम और कृष्ण
भाई-बहन = भाई और बहन
पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
सुख-दुःख = सुख और दुःख

### 2. द्विगु समास

जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, द्विगु समास कहलाता है; जैसे—

नवरत्न = नौ रत्नों का समूह
सप्तदीप = सात दीपों का समूह
त्रिभुवन = तीन भुवनों का समूह
सतमंजिल = सात मंजिलों का समूह

### 3. तत्पुरुष समास

जिस समास में पूर्वपद गौण तथा उत्तरपद प्रधान हो, तत्पुरुष समास कहलाता है। दोनों पदों के बीच परसर्ग का लोप रहता है। परसर्ग लोप के आधार पर तत्पुरुष समास के छः भेद हैं

(i) **कर्म तत्पुरुष** ('को' का लोप) जैसे—

मतदाता = मत को देने वाला
गिरहकट = गिरह को काटने वाला

(ii) **करण तत्पुरुष** जहाँ करण-कारक चिह्न का लोप हो; जैसे—

जन्मजात = जन्म से उत्पन्न
मुँहमाँगा = मुँह से माँगा
गुणहीन = गुणों से हीन

(iii) **सम्प्रदान तत्पुरुष** जहाँ सम्प्रदान कारक चिह्न का लोप हो; जैसे—

हथकड़ी = हाथ के लिए कड़ी
सत्याग्रह = सत्य के लिए आग्रह
युद्धभूमि = युद्ध के लिए भूमि

(iv) **अपादान तत्पुरुष** जहाँ अपादान कारक चिह्न का लोप हो; जैसे—

धनहीन = धन से हीन
भयभीत = भय से भीत
जन्मान्ध = जन्म से अन्धा

(v) **सम्बन्ध तत्पुरुष** जहाँ सम्बन्ध कारक चिह्न का लोप हो; जैसे—

प्रेमसागर = प्रेम का सागर
दिनचर्या = दिन की चर्या
भारतरत्न = भारत का रत्न

(vi) **अधिकरण तत्पुरुष** जहाँ अधिकरण कारक चिह्न का लोप हो; जैसे—

नीतिनिपुण = नीति में निपुण
आत्मविश्वास = आत्मा पर विश्वास
घुड़सवार = घोड़े पर सवार

### 4. कर्मधारय समास

जिस समास में पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य हो, कर्मधारय समास कहलाता है। इसमें भी उत्तरपद प्रधान होता है; जैसे—

कालीमिर्च = काली है जो मिर्च
नीलकमल = नीला है जो कमल
पीताम्बर = पीत (पीला) है जो अम्बर
चन्द्रमुखी = चन्द्र के समान मुख वाली
सद्गुण = सद् हैं जो गुण

### 5. अव्ययीभाव समास

जिस समास में पूर्वपद अव्यय हो, अव्ययीभाव समास कहलाता है। यह वाक्य में क्रिया-विशेषण का कार्य करता है; जैसे—

यथास्थान = स्थान के अनुसार
आजीवन = जीवन-भर
प्रतिदिन = प्रत्येक दिन
यथासमय = समय के अनुसार

### 6. बहुव्रीहि समास

जिस समास में दोनों पदों के माध्यम से एक विशेष (तीसरे) अर्थ का बोध होता है, बहुव्रीहि समास कहलाता है; जैसे—

महात्मा = महान् आत्मा है जिसकी अर्थात् ऊँची आत्मा वाला।
नीलकण्ठ = नीला कण्ठ है जिनका अर्थात् शिवजी।
लम्बोदर = लम्बा उदर है जिनका अर्थात् गणेशजी।
गिरिधर = गिरि को धारण करने वाले अर्थात् श्रीकृष्ण।
मक्खीचूस = बहुत कंजूस व्यक्ति

## मध्यान्तर प्रश्नावली

1. किस समास में शब्दों के मध्य में संयोजक शब्द का लोप होता है?
(a) द्विगु (b) तत्पुरुष (c) द्वन्द्व (d) अव्ययीभाव

2. पूर्वपद संख्यावाची शब्द है
(a) अव्ययीभाव (b) द्वन्द्व (c) कर्मधारय (d) द्विगु

3. 'जन्मान्ध' शब्द है
(a) कर्मधारय (b) तत्पुरुष (c) बहुव्रीहि (d) द्विगु

4. 'यथास्थान' सामासिक शब्द का विग्रह होगा
(a) यथा और स्थान (b) स्थान के अनुसार
(c) यथा का स्थान (d) स्थान का यथा

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

5. जिस समास में दोनों पदों के माध्यम से एक विशेष (तीसरे) अर्थ का बोध होता है, उसे कहते हैं
(a) अव्ययीभाव (b) द्विगु (c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि

6. 'सप्तदीप' सामासिक पद का विग्रह होगा
(a) सप्त द्वीपों का स्थान (b) सात दीपों का समूह
(c) सप्त दीप (d) सात दीप

7. 'मतदाता' सामासिक शब्द का विग्रह होगा
(a) मत को देने वाला (b) मत का दाता
(c) मत के लिए दाता (d) मत और दाता

8. 'आत्मविश्वास' में समास है
(a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि
(c) तत्पुरुष (d) अव्ययीभाव

9. 'नीलकमल' का विग्रह होगा
(a) नीला है जो कमल (b) नील है कमल
(c) नीला कमल (d) नील कमल

10. 'लम्बोदर' का विग्रह पद होगा
(a) लम्बा उदर है जिसका अर्थात् गणेशजी
(b) लम्बा ही है उदर जिसका
(c) लम्बे उदर वाले गणेश जी
(d) लम्बे पेट वाला

11. जिस समास में पूर्वपद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य हो, वह है
(a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि
(c) तत्पुरुष (d) अव्ययीभाव

12. अव्ययीभाव समास का पूर्वपद होता है
(a) अव्यय (b) उपसर्ग
(c) विशेषण (d) क्रिया

13. 'सत्याग्रह' शब्द का विग्रह होगा
(a) सत्य का आग्रह (b) सत्य के लिए आग्रह
(c) सत्य का ग्रह (d) सत्य को आग्रह

14. 'घोड़े पर सवार' का सामासिक पद होगा
(a) घूड़सवार (b) घोड़सवार
(c) घुड़सवार (d) घोड़ेसवार

15. 'पाप-पुण्य' सामासिक पद का विग्रह होगा
(a) पाप और पुण्य (b) पाप का पुण्य
(c) पाप से पुण्य (d) पाप ही पुण्य

**उत्तरमाला**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. (c) | 2. (d) | 3. (b) | 4. (b) | 5. (d) |
| 6. (b) | 7. (a) | 8. (c) | 9. (a) | 10. (a) |
| 11. (a) | 12. (a) | 13. (b) | 14. (c) | 15. (a) |

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

1. 'रीत्यनुसार' का सही सन्धि-विच्छेद है (उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा)
(a) रीत्य + अनुसार (b) रीत – अनुसार
(c) रीति + अनुसार (d) रीत्य – अनुसार

2. 'अनुरूप' समस्त पद में कौन-सा समास है?
(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय (c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहि

3. 'देशान्तर' में कौन-सा समास है? (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) बहुव्रीहि (b) द्विगु (c) द्वन्द्व (d) कर्मधारय

4. 'निर्धन' में कौन-सी सन्धि है? (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) यण् सन्धि (b) व्यंजन सन्धि
(c) विसर्ग सन्धि (d) अयादि सन्धि

5. 'व्याख्यान' में कौन-सी सन्धि है? (स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा 2014)
(a) गुण (b) दीर्घ (c) यण् (d) विसर्ग

6. 'अत्युत्तम' के सन्धि-विच्छेद का सही विकल्प चुनिए (स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा 2014)
(a) अति + युतम (b) अत्य + उत्तम
(c) अत्यु + उत्तम (d) अति + उत्तम

7. 'हिमांशु' शब्द का सन्धि-विच्छेद कीजिए (स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा 2014)
(a) हिम + अंशु (b) हिमा + अंशु
(c) हिम + आंशु (d) हिमांश + उ

8. सप्त + ऋषि इससे बनी सन्धि है (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) दीर्घ (b) यण् (c) व्यंजन (d) गुण

9. 'षट् + रिपु' इससे बनी सन्धि है (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) व्यंजन (b) यण (c) आदेश (d) विसर्ग

10. किस शब्द में 'हार' प्रत्यय नहीं है? (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) लुहार (b) खेवनहार (c) जाननहार (d) पालनहार

11. 'प्रौढ़' का सही सन्धि-विच्छेद है
(a) प्रा + उढ़ (b) प्र + ऊढ़
(c) प्रौ + ढ़ (d) प्र + औढ़

12. 'चौमासा' में समास है (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) द्वन्द्व (b) कर्मधारय (c) द्विगु (d) तत्पुरुष

13. 'उल्लंघन' में कौन-सा उपसर्ग है? (सी.जी.पी.एस.सी परीक्षा 2014)
(a) उल् (b) उ (c) उत् (d) न

14. 'साहित्यिक' में कौन-सा प्रत्यय है? (सी.जी.पी.एस.सी परीक्षा 2014)
(a) इक (b) इत्यिक (c) सा (d) क

15. 'पंचामृत' में कौन-सा समास है? (सी.जी.पी.एस.सी परीक्षा 2014)
(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व (c) कर्मधारय (d) द्विगु

16. 'रीत्यनुसार' शब्द का सन्धि-विच्छेद क्या होगा? (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) रीत + अनुसार (b) रीति + अनुसार
(c) रीत्य + अनुसार (d) रीतु + अनुसार

17. 'त्रिवेणी' शब्द में कौन-सा समास है? (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) द्वन्द्व (b) कर्मधारय (c) बहुव्रीहि (d) द्विगु

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**18.** 'कवीश्वर' शब्द का सही सन्धि विच्छेद बताइए (अधीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) कवि + ईश्वर (b) कविश + वर
(c) कवि + इश्वर (d) कवी + ईश्वर

**19.** कौन से शब्द में व्यंजन सन्धि है? (अधीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) देवर्षि (b) जानकीश (c) वागीश (d) कवीश

**20.** 'पंजाब' शब्द का सही सन्धि विच्छेद क्या है? (अधीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) पंज + आब (b) पंजा + ब (c) पंच + आब (d) पंचा + ब

**21.** व्यंजन सन्धि के उदाहरण है (बिहार पुलिस भर्ती परीक्षा 2012)

(a) उल्लास, संगम, तथास्तु (b) सम्भावना, सद्भावना, बहिष्कार
(c) वातावरण, उल्लास, संस्कृत (d) उल्लास, संगम, सम्भावना

**22.** 'देव जो महान् है" यह किस समास का उदाहरण है? (यू.पी.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)

(a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव (c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

**23.** 'योगदान' में कौन-सा समास है? (यू.पी.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)

(a) बहुव्रीहि (b) अव्ययीभाव (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय

**24.** 'उच्छ्वास' का सही सन्धि-विच्छेद है? (यू.पी.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)

(a) उत् + श्वास (b) उद् + छ्वास
(c) उच् + श्वास (d) उम् + छ्वास

**25.** 'बहिर्मुखी' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है? (यू.पी.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)

(a) बहिरा (b) बहि (c) बहिर् (d) बहिर

**26.** दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार को कहते हैं? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) सन्धि (b) समास (c) उपसर्ग (d) प्रत्यय

**27.** सन्धि के प्रकार होते हैं (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) एक (b) दो (c) तीन (d) चार

**28.** 'राकेश' का सही सन्धि-विच्छेद है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) राके + ईश (b) राक + एश (c) राका + ईश (d) राका + इश

**29.** 'भानूदय' में प्रयुक्त सन्धि का नाम है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) गुण सन्धि (b) दीर्घ सन्धि (c) व्यंजन सन्धि (d) वृद्धि सन्धि

**30.** 'अति + आचार' सन्धि-विच्छेद है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) अतिचार का (b) अत्याचार का
(c) अत्यचार का (d) इनमें से कोई नहीं

**31.** 'अ + इ = ए' स्वर सन्धि के किस भेद को व्यक्त करता है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) दीर्घ सन्धि (b) गुण सन्धि (c) वृद्धि सन्धि (d) यण् सन्धि

**32.** 'प्रत्युत्तर' का सही सन्धि-विच्छेद है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) प्र + त्युत्तर (b) प्रति + उत्तर (c) प्रत + उत्तर (d) प्रत्यु + त्तर

**33.** निम्नलिखित में कर्मधारय समास किसमें है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) चक्रपाणि (b) चतुर्युग (c) नीलोत्पल (d) माता-पिता

**34.** 'चतुरानन' में समास है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि (c) द्विगु (d) द्वन्द्व

**35.** कौन-सा शब्द बहुव्रीहि समास का सही उदाहरण है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) निशिदिन (b) त्रिभुवन (c) पंचानन (d) पुरुषसिंह

**36.** 'चौराहा' में कौन-सा समास है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)

(a) बहुव्रीहि (b) तत्पुरुष (c) अव्ययीभाव (d) द्विगु

**37.** 'भाई-बहन' में कौन-सा समास है?

(a) द्वन्द्व (b) बहुव्रीहि (c) द्विगु (d) तत्पुरुष

**38.** मीना तभी जायेगी जब उसे पूरे पैसे मिलेंगे, इस वाक्य में रेखांकित शब्द की रचना हुई है (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2001)

(a) तब + भी (b) तब + ही (c) तम + ई (d) तब + ई

**39.** 'गवैया' किस प्रत्यय का शुद्ध रूप है? (उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा 2011)

(a) कर्तृवाच्य (b) कर्मवाचक कृत प्रत्यय
(c) करणवाचक कृत प्रत्यय (d) भाववाचक कृत प्रत्यय

**40.** 'स्वर्णघट' का विग्रह है (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2001)

(a) स्वर्ण से घट (b) घट में स्वर्ण
(c) स्वर्ण का घट (d) घट के लिए स्वर्ण

**41.** अव्ययीभाव समास का उदाहरण है (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2001)

(a) लवकुश (b) भरपेट (c) त्रिभुवन (d) छत्रधारी

**42.** शताब्दी में समास है (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2001)

(a) द्वन्द्व (b) द्विगु (c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष

**43.** पीताम्बर में समास है (उ.प्र. बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010)

(a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव (c) बहुव्रीहि (d) द्विगु

**44.** तत्पुरुष समास है (हरियाणा मास्टर/मिस्ट्रेस परीक्षा 2009)

(a) शताब्दी (b) चौमासा (c) भाई-बहन (d) पद प्राप्त

**45.** 'गर्व शून्य' शब्द में समास है (उ.प्र. बी. एड. प्रवेश परीक्षा 2010)

(a) कर्म तत्पुरुष (b) करण तत्पुरुष
(c) सम्प्रदान तत्पुरुष (d) अपादान तत्पुरुष

**46.** 'रसपूर्ण' में कौन-सा समास है? (हरियाणा मास्टर/मिस्ट्रेस पात्रता परीक्षा 2009)

(a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि (c) अव्ययीभाव (d) द्विगु

**47.** निम्नलिखित में से किस शब्द में समास और सन्धि दोनों हैं? (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)

(a) यज्ञशाला (b) स्वधर्म (c) जलोष्मा (d) पंकज

**48.** किस शब्द में 'अन्' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है? (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)

(a) अनिच्छा (b) अनुचित (c) अनुपम (d) अनुगमन

**49.** एक से अधिक उपसर्गों से बना शब्द है (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2001)

(a) असुरक्षित (b) अत्याचार (c) अधकचरा (d) पर्यावरण

**50.** 'अप्रत्याशित' शब्द में मूल शब्द है (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)

(a) प्रत्याशित (b) आशा (c) आशित (d) प्रत्य

**51.** निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द प्रत्यय से बना है? (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)

(a) देहदान (b) पीकदान (c) जीवनदान (d) धनदान

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

**52.** कौन-सा शब्द प्रत्यय से नहीं बना है?
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) नवल (b) मृदुल (c) बहुत (d) निगल

**53.** किस शब्द में प्रत्यय नहीं है?
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) गन्तव्य (b) वैधव्य (c) ज्ञातव्य (d) द्रष्टव्य

**54.** किस शब्द में प्रत्यय है?
(स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा 2014)
(a) ननिहाल (b) बेहाल
(c) खुशहाल (d) बहाल

**55.** 'स्वयंवर' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?
(उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा 2011)
(a) स्व (b) स (c) स्वयं (d) सम्

**56.** 'उच्छिष्ट' शब्द का विच्छेद है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) उच् + छिष्ट (b) उत् + छिष्ट
(c) उत् + शिष्ट (d) उच् + शिष्ट

**57.** सच्चिदानन्द का विच्छेद है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) सत् + चित् + आनन्द (b) सच्चिद् + आनन्द
(c) सच्चि + दानन्द (d) सत् + चिद् + आनन्द

**58.** 'अन्वेषण' का सन्धि-विच्छेद होगा
(उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा 2011)
(a) अन + वेषण (b) अनु + एषण
(c) अनु + ऐषण (d) अनव + एषण

**59.** व्यंजन सन्धि का उदाहरण है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) उद्यत (b) परमौषध (c) दुरुपयोग (d) तपोवन

**60.** गुण सन्धि का उदाहरण है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) महर्षि (b) पावक (c) अभ्युदय (d) मतैक्य

**61.** विसर्ग सन्धि का उदाहरण है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) हरिश्चन्द्र (b) हरिशचन्द्र (c) हरीशचन्द्र (d) दिनेशचन्द्र

**62.** अधिकरण तत्पुरुष में
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) पहला पद प्रधान होता है (b) दूसरा पद प्रधान होता है
(c) दोनों पद प्रधान होते हैं (d) प्रथम एवं तृतीय पद प्रधान होते हैं

**63.** 'राजपुत्र' कौन-सा समास है?
(a) बहुव्रीहि (b) तत्पुरुष (c) द्विगु (d) कर्मधारय

**64.** इनमें से एक उपसर्ग नहीं है
(हिमाचल प्रदेश (इलेक्शन कानूनगो) परीक्षा 2010)
(a) अ (b) स (c) कु (d) ता

**65.** उपसर्ग युक्त शब्द है (म.प्र. शिक्षक/पर्यवेक्षक/अनुदेशक पात्रता परीक्षा 2008)
(a) आहार-विहार (b) चढ़ावा-चढ़ाई
(c) भुलावा-छलावा (d) डूबता-बहता

**66.** क्रिया के अन्त में लगकर बने यौगिक शब्दों को कहते हैं
(a) प्रत्यय (b) स्त्री प्रत्यय
(c) तद्धितान्त (d) कृदन्त

**67.** संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि के साथ लगने वाले प्रत्यय कहलाते हैं
(a) तद्धित (b) कृत
(c) स्त्री (d) ये सभी

**68.** 'हाथोंहाथ' शब्द में प्रयुक्त समास है
(आर.आर.बी.टी.सी./ई.ई.सी.सी. परीक्षा
हिमाचल प्रदेश (इलेक्शन कानूनगो) परीक्षा 2010)
(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष (c) द्वन्द्व (d) द्विगु

**69.** 'धुंधला' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है (बी. एड. 2004)
(a) धु (b) धुंध
(c) ला (d) इनमें से कोई नहीं

**70.** 'निर्वासित' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है (रेलवे 1997)
(a) इक (b) नि (c) सित (d) इत

**71.** 'उन्नीस' शब्द में उपसर्ग है (उ.प्र. वन विभाग 2015)
(a) उत् (b) उत (c) उस (d) उन

**72.** 'अभ्यागत' शब्द में उपसर्ग है (उ.प्र. वन विभाग 2015)
(a) अभि (b) अ (c) अभ्य (d) अभ

**73.** निम्नलिखित में से किस शब्द में प्रत्यय नहीं है? (उ.प्र. वन विभाग 2015)
(a) गुणवान (b) दूजा
(c) इकहरा (d) दुबला

**74.** 'इक' प्रत्यय लगाने पर 'सप्ताह' का रूप क्या होगा?
(उ.प्र. वन विभाग 2015)
(a) सप्ताहिक (b) साप्ताहिक
(c) साप्ताहिक (d) सप्तहिक

**75.** 'पंचानन' में कौन-सा समास है? (उ.प्र. वन विभाग 2015)
(a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि
(c) कर्मधारय (d) द्विगु

**76.** 'सतसई' शब्द में समास का भेद बताइए (उ.प्र. वन विभाग 2015)
(a) कर्मधारय (b) द्विगु
(c) तत्पुरुष (d) द्वन्द्व

**77.** 'गंगाजल' शब्द में समास का भेद बताइए (उ.प्र. वन विभाग 2015)
(a) तत्पुरुष (c) द्वन्द्व
(c) अव्ययीभाव (d) कर्मधारय

**निर्देश** *(प्र. सं. 78-80) दिए गए सन्धि-विच्छेद में सही विकल्प चुनिए*

**78.** रूपान्तरण (उ.प्र. वन विभाग 2015)
(a) रूप + अन्तरण (b) रुप + आन्तरण
(c) रुपा + अन्तारण (d) रुपा + आतरण

**79.** मनोयोग (उ.प्र. वन विभाग 2015
(a) मनो: + योग (b) मन : + योग
(c) मन: + आयोग (d) इनमें से कोई नहीं

**80.** 'दुराशा' (उ.प्र. वन विभाग 201
(a) दुरा + आशा (b) दुरा + शा
(c) दु: + आशा (d) दुर + आशा

**81.** 'रौद्र' रस का स्थायी भाव क्या है?
(यू.पी.एस.एस.एस.सी. चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा 20
(a) क्रोध (b) भय
(c) उत्साह (d) विस्मय

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**82.** 'जुगुप्सा' किस रस का स्थायी भाव है?
(यू.पी.एस.एस.एस.सी. चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) अद्‌भुत (b) भयानक
(c) बीभत्स (d) रौद्र

**83.** 'वाचस्पति' किस समास का समस्तपद है?
(यू.पी.एस.एस.एस.सी. चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) नञ् तत्पुरुष (b) अलुक तत्पुरुष
(c) सम्बन्ध तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि

**84.** 'सच्छास्त्र' का उचित विच्छेद निम्न में से कौन-सा है?
(यू.पी.एस.एस.एस.सी. चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) सत् + छास्त्र (b) राच् + छास्त्र
(c) सच् + शास्त्र (d) सत् + शास्त्र

**85.** 'निः+कलंक' का सही सन्धि शब्द कौन-सा है?
(यू.पी.एस.एस.एस.सी.चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) निस्कलंक (b) निश्कलंक
(c) निष्कालंक (d) निष्कलंक

**86.** 'पवन' का सन्धि-विच्छेद कौन-सा है?
(यू.पी.एस.एस.एस.सी. चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) पब + अन (b) पो + अन
(c) पव + न (d) पो + अन

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. (c) | 2. (c) | 3. (d) | 4. (c) | 5. (c) | 6. (d) | 7. (a) | 8. (d) | 9. (a) | 10. (a) |
| 11. (b) | 12. (c) | 13. (c) | 14. (a) | 15. (d) | 16. (b) | 17. (d) | 18. (a) | 19. (c) | 20. (c) |
| 21. (d) | 22. (c) | 23. (d) | 24. (a) | 25. (c) | 26. (a) | 27. (c) | 28. (c) | 29. (b) | 30. (b) |
| 31. (b) | 32. (b) | 33. (c) | 34. (b) | 35. (c) | 36. (d) | 37. (a) | 38. (b) | 39. (b) | 40. (c) |
| 41. (b) | 42. (b) | 43. (c) | 44. (d) | 45. (b) | 46. (a) | 47. (c) | 48. (d) | 49. (d) | 50. (b) |
| 51. (b) | 52. (d) | 53. (b) | 54. (c) | 55. (c) | 56. (c) | 57. (a) | 58. (b) | 59. (a) | 60. (a) |
| 61. (a) | 62. (b) | 63. (b) | 64. (d) | 65. (a) | 66. (d) | 67. (a) | 68. (a) | 69. (c) | 70. (d) |
| 71. (d) | 72. (a) | 73. (b) | 74. (b) | 75. (d) | 76. (b) | 77. (a) | 78. (a) | 79. (b) | 80. (c) |
| 81. (a) | 82. (c) | 83. (c) | 84. (d) | 85. (d) | 86. (b) | | | | |

## अभ्यासार्थ प्रश्नावली

**1.** निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग को पृथक् कीजिए।
सदाचार, दुराचरण, अध्यक्ष, पराजय, समादर, प्रख्यात, प्रत्युत्पन्नमति

**2.** निम्नलिखित शब्दों के संविग्रह समास निर्दिष्ट कीजिए।
सेनानायक, कालापानी, बारहसिंगा, वनमानुष, अधमरा, अन्नजल, रोकड़ बही

**3.** निम्नलिखित शब्दों के सन्धि-विच्छेद कीजिए।
पवन, उद्‌घाटन, वाङ्मय, नयन, अत्यल्प, परिच्छेद, महोत्सव, रमेश चन्द्रोदय।

**4.** कॉलम A के शब्दों को कॉलम B के शब्दों के साथ उचित मिलान कीजिए।

| A | B |
|---|---|
| (क) उद्धार | (i) अयादि सन्धि |
| (ख) नाविक | (ii) व्यंजन सन्धि |
| (ग) षडानन | (iii) यण् सन्धि |
| (घ) संख्यागमन | (iv) व्यंजन सन्धि |

**5.** निम्नलिखित सामासिक पदों का समास के दिए गए भेदों के साथ उचित मिलान कीजिए।

| A | B |
|---|---|
| (क) चवन्नी | (i) कर्मधारय |
| (ख) चन्द्रवदन | (ii) द्विगु |
| (ग) चिड़ीमार | (iii) बहुव्रीहि |
| (ख) जलज | (iv) तत्पुरुष |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# 11

# वाक्य (वर्गीकरण और वाक्यान्तरण)

*भाषा हमारे भावों-विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा की रचना वर्णों, शब्दों और वाक्यों से होती है। दूसरे शब्दों में-वर्णों से शब्द, शब्दों से वाक्य और वाक्यों से भाषा का निर्माण हुआ है। इस प्रकार वाक्य शब्दों के समूह का नाम है, लेकिन सभी प्रकार के शब्दों को एक स्थान पर रखकर वाक्य नहीं बना सकते हैं।*

## वाक्य की परिभाषा

शब्दों का वह व्यवस्थित रूप जिसमें एक पूर्ण अर्थ की प्रतीति होती है, वाक्य कहलाता है। आचार्य विश्वनाथ ने अपने 'साहित्यदर्पण' में लिखा है

**"वाक्यं स्यात् योग्यताकांक्षासक्तियुक्तः पदोच्चयः।"**

अर्थात् *योग्यता, आकांक्षा, आसक्ति से युक्त पद समूह को वाक्य कहते हैं।*

### वाक्य के तत्त्व

वाक्य के तत्त्व निम्न हैं

1. **सार्थकता** सार्थकता वाक्य का प्रमुख गुण है। इसके लिए आवश्यक है कि वाक्य में सार्थक शब्दों का ही प्रयोग हो, तभी वाक्य भावाभिव्यक्ति के लिए सक्षम होगा; जैसे—**राम रोटी पीता है।**

   *यहाँ 'रोटी पीना' सार्थकता का बोध नहीं कराता, क्योंकि रोटी खाई जाती है। सार्थकता की दृष्टि से यह वाक्य अशुद्ध माना जाएगा।*

   सार्थकता की दृष्टि से सही वाक्य होगा—**राम रोटी खाता है।**

   *इस वाक्य को पढ़ते ही पाठक के मस्तिष्क में वाक्य की सार्थकता उपलब्ध हो जाती है। कहने का आशय है कि वाक्य का यह तत्त्व वाक्य रचना की दृष्टि से अनिवार्य है। इसके अभाव में अर्थ का अनर्थ सम्भव है।*

2. **क्रम** क्रम से तात्पर्य है—पदक्रम। सार्थक शब्दों को भाषा के नियमों के अनुरूप क्रम में रखना चाहिए। वाक्य में शब्दों के अनुकूल क्रम के अभाव में अर्थ का अनर्थ हो जाता है; जैसे—**नाव में नदी है।**

   *इस वाक्य में सभी शब्द सार्थक हैं, फिर भी क्रम के अभाव में वाक्य गलत है। सही क्रम करने पर **नदी में नाव है** वाक्य बन जाता है, जो शुद्ध है।*

3. **योग्यता** वाक्य में सार्थक शब्दों के भाषानुकूल क्रमबद्ध होने के साथ-साथ उसमें योग्यता अनिवार्य तत्त्व है। प्रसंग के अनुकूल वाक्य में भावों का बोध कराने वाली योग्यता या क्षमता होनी चाहिए। इसके अभाव में वाक्य अशुद्ध हो जाता है; जैसे—**हिरण उड़ता है।**

   *यहाँ पर **हिरण** और **उड़ने** की परस्पर योग्यता नहीं है, अतः यह वाक्य अशुद्ध है। यहाँ पर **उड़ता** के स्थान पर **चलता** या **दौड़ता** लिखें तो वाक्य शुद्ध हो जाएगा।*

4. **आकांक्षा** आकांक्षा का अर्थ है—श्रोता की जिज्ञासा। वाक्य भाव की दृष्टि से इतना पूर्ण होना चाहिए कि भाव को समझने के लिए कुछ जानने की इच्छा या आवश्यकता न हो, दूसरे शब्दों में, किसी ऐसे शब्द या समूह की कमी न हो जिसके बिना अर्थ स्पष्ट न होता हो।

   *उदाहरण के लिए* कोई व्यक्ति हमारे सामने आए और हम केवल उससे 'तुम' कहें तो वह कुछ भी नहीं समझ पाएगा। यदि कहें कि अमुक कार्य करो तो वह पूरी बात समझ जाएगा। इस प्रकार वाक्य का आकांक्षा तत्त्व अनिवार्य है।

5. **आसक्ति** आसक्ति का अर्थ है—समीपता। एक पद सुनने के बाद उच्चारित अन्य पदों के सुनने के समय में सम्बन्ध, आसक्ति कहलाता है।

   यदि उपरोक्त सभी बातों की दृष्टि से वाक्य सही हो, लेकिन किसी वाक्य का एक शब्द आज, एक कल और एक परसों कहा जाए तो उसे वाक्य नहीं कहा जाएगा। अतएव वाक्य के शब्दों के उच्चारण में समीपता होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, पूरे वाक्य को एक साथ कहा जाना चाहिए।

6. **अन्वय** अन्वय का अर्थ है कि पदों में व्याकरण की दृष्टि से लिंग, पुरुष, वचन, कारक आदि का सामंजस्य होना चाहिए। अन्वय के अभाव में भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है। अतः अन्वय भी वाक्य का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है; जैसे—**नेताजी का लड़का का हाथ में बन्दूक था।**

   *इस वाक्य में भाव तो स्पष्ट है लेकिन व्याकरणिक सामंजस्य नहीं है। अतः यह वाक्य अशुद्ध है।यदि इसे **नेताजी के लड़के के हाथ में बन्दूक थी,** कहें तो वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध होगा।*

### वाक्य के अंग

वाक्य के अंग निम्न प्रकार हैं

1. **उद्देश्य** वाक्य में जिसके बारे में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे—
   - **राम** खेलता है। (राम-उद्देश्य)
   - **श्याम** दौड़ता है। (श्याम-उद्देश्य)

   उपरोक्त वाक्यों में **राम** और **श्याम** के विषय में बताया गया है। अतः **राम** और **श्याम** यहाँ उद्देश्य रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

2. **विधेय** वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं; जैसे—
   - बच्चे **फल खाते हैं।** (फल खाते हैं-विधेय)
   - राहुल **क्रिकेट मैच देख रहा है।** (क्रिकेट मैच देख रहा है-विधेय)

   उपरोक्त वाक्यों में **फल खाते हैं** और **क्रिकेट मैच देख रहा है** वाक्यांश क्रमशः **बच्चे** तथा **राहुल** के बारे में कहे गए हैं। अतः स्थूलांकित वाक्यांश विधेय रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## वाक्यों का वर्गीकरण

वाक्यों का वर्गीकरण दो आधारों पर किया गया है

### 1. रचना के आधार पर

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं

(i) **सरल वाक्य** वे वाक्य जिनमें एक उद्देश्य तथा एक विधेय हो। सरल या साधारण वाक्य कहलाते हैं।

जैसे—**श्याम खाता है।** इस वाक्य में एक ही कर्ता (उद्देश्य) तथा एक ही क्रिया (विधेय) है। अत: यह वाक्य सरल या साधारण वाक्य है।

(ii) **मिश्र वाक्य** वे वाक्य, जिनमें एक साधारण वाक्य हो तथा उसके अधीन या आश्रित दूसरा उपवाक्य हो, मिश्र वाक्य कहलाते हैं।

जैसे—**श्याम ने लिखा है, कि वह कल आ रहा है।** वाक्य में **श्याम ने लिखा है**—प्रधान उपवाक्य, **वह कल आ रहा है** आश्रित उपवाक्य है तथा दोनों समुच्चयबोधक अव्यय 'कि' से जुड़े हैं, अत: यह मिश्र वाक्य है।

(iii) **संयुक्त वाक्य** वे वाक्य, जिनमें एक से अधिक प्रधान उपवाक्य हों (चाहे वह मिश्र वाक्य हों या साधारण वाक्य) और वे संयोजक अव्ययों द्वारा जुड़े हों, संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।

जैसे—**वह लखनऊ गया और शाल ले आया।** इस वाक्य में दोनों ही प्रधान उपवाक्य हैं तथा **और** संयोजक द्वारा जुड़े हैं। अत: यह संयुक्त वाक्य है।

रचना के आधार पर वाक्य के भेद एवं उनकी पहचान नीचे दी गई तालिकानुसार समझी जा सकती है।

| वाक्य के भेद | पहचान | उदाहरण |
|---|---|---|
| सरल वाक्य | एक उद्देश्य + एक विधेय = सरल वाक्य | सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।<br>उद्देश्य — विधेय<br>सरल वाक्य |
| मिश्र वाक्य | प्रधान उपवाक्य + आश्रित उपवाक्य = मिश्र वाक्य<br>**मिलाने वाले शब्द**<br>(कि, जो वह, जितना ... उतना,)<br>(जैसे... वैसे..., जब... तब... ,)<br>(जहाँ... वहाँ... अगर, यदि आदि) | जैसे ही सूर्योदय हुआ वैसे ही कुहासा जाता रहा।<br>प्रधान उपवाक्य — आश्रित उपवाक्य<br>जैसे - - - वैसे (प्रधान उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य को मिलाने वाले शब्द) |
| संयुक्त वाक्य | सरल वाक्य + सरल वाक्य = संयुक्त वाक्य<br>**जोड़ने वाले शब्द**<br>(और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, फिर, भी, किंतु, परन्तु, लेकिन, पर, अत:, तो, नहीं तो आदि।) | सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।<br>सरल वाक्य — योजक शब्द — सरल वाक्य |

### 2. अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं

(i) **विधिवाचक वाक्य** वे वाक्य जिनसे किसी बात या कार्य के होने का बोध होता है, विधिवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—

- श्याम आया।
- तुम लोग जा रहे हो।

(ii) **निषेधवाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी बात या कार्य के न होने अथवा इनकार किए जाने का बोध होता है, निषेधवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—

- राम नहीं पढ़ता है।
- मैं यह कार्य नहीं करूँगा आदि।

(iii) **आज्ञावाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी प्रकार की आज्ञा का बोध होता है, आज्ञावाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—

- श्याम पानी लाओ।
- यहीं बैठकर पढ़ो आदि।

(iv) **विस्मयवाचक वाक्य** वे वाक्य जिनसे किसी प्रकार का विस्मय, हर्ष, दु:ख, आश्चर्य आदि का बोध होता है, विस्मयवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—

- अरे! वह उत्तीर्ण हो गया।
- अहा! कितना सुन्दर दृश्य है आदि।

(v) **सन्देहवाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी प्रकार के सन्देह या भ्रम का बोध होता है, सन्देहवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—

- वह अब जा चुका होगा।
- महेश पढ़ा-लिखा है या नहीं आदि।

(vi) **इच्छावाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी प्रकार की इच्छा या कामना का बोध होता है, इच्छावाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—

- ईश्वर आपकी यात्रा सफल करे।
- आप जीवन में उन्नति करें।
- आपका भविष्य उज्ज्वल हो आदि।

(vii) **संकेतवाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी प्रकार के संकेत या इशारे का बोध होता है, संकेतवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—

- जो परिश्रम करेगा वह सफल होगा।
- अगर वर्षा होगी तो फसल भी अच्छी होगी आदि।

(viii) **प्रश्नवाचक वाक्य** वे वाक्य, जिनसे किसी प्रश्न के पूछे जाने का बोध होता है, प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—

- आपका क्या नाम है?
- तुम किस कक्षा में पढ़ते हो? आदि।

## उपवाक्य

जिन क्रियायुक्त पदों से आंशिक भाव व्यक्त होता है, उन्हें उपवाक्य कहते हैं; जैसे—

- यदि वह कहता
- यदि मैं पढ़ता
- यद्यपि वह अस्वस्थ था आदि।

### उपवाक्य के भेद

उपवाक्य के दो भेद होते हैं जो निम्न हैं

#### 1. प्रधान उपवाक्य

जो उपवाक्य पूरे वाक्य से पृथक् भी लिखा जाए तथा जिसका अर्थ किसी दूसरे पर आश्रित न हो, उसे **प्रधान उपवाक्य** कहते हैं।

#### 2. आश्रित उपवाक्य

आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के बिना पूरा अर्थ नहीं दे सकता। यह स्वतंत्र लिखा भी नहीं जा सकता; जैसे—**यदि सोहन आ जाए तो मैं उसके साथ चलूँ।** यहाँ **यदि सोहन आ जाए**-आश्रित उपवाक्य है तथा **मैं उसके साथ चलूँ**-प्रधान उपवाक्य है।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

आश्रित उपवाक्यों को पहचानना अत्यन्त सरल है। जो उपवाक्य कि, जिससे कि, ताकि, ज्यों ही, जितना, ज्यों, क्योंकि, चूँकि, यद्यपि, यदि, जब तक, जब, जहाँ तक, जहाँ, जिधर, चाहे, मानो, कितना भी आदि शब्दों से आरम्भ होते हैं वे आश्रित उपवाक्य हैं। इसके विपरीत, जो उपवाक्य इन शब्दों से आरम्भ नहीं होते वे प्रधान उपवाक्य हैं।

आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं। जिनकी पहचान निम्न प्रकार से की जा सकती है

(i) **संज्ञा उपवाक्य** संज्ञा उपवाक्य का प्रारम्भ **कि** से होता है।

(ii) **विशेषण उपवाक्य** विशेषण उपवाक्य का प्रारम्भ **जो** अथवा इसके किसी रूप (जिसे, जिसको, जिसने, जिनको आदि) से होता है।

(iii) **क्रिया विशेषण उपवाक्य** क्रिया-विशेषण उपवाक्य का प्रारम्भ 'जब', 'जहाँ', 'जैसे' आदि से होता है।

## वाक्यों का रूपान्तरण

किसी वाक्य में अर्थ परिवर्तन किए बिना उसकी संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया वाक्यों का रूपान्तरण कहलाती है। एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्यों में बदलना वाक्य परिवर्तन या वाक्य रचनान्तरण कहलाता है।

वाक्य परिवर्तन की प्रक्रिया में इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य का केवल प्रकार बदला जाए, उसका अर्थ या काल आदि नहीं।

### वाक्य परिवर्तन करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

*वाक्य परिवर्तन करते समय निम्नलिखित बातें ध्यान रखनी चाहिए*

- केवल वाक्य रचना बदलनी चाहिए, अर्थ नहीं।
- सरल वाक्यों को मिश्र या संयुक्त वाक्य बनाते समय कुछ शब्द या सम्बन्धबोधक अव्यय अथवा योजक आदि से जोड़ना।
  जैसे– क्योंकि, कि, और, इसलिए, तब आदि।
- संयुक्त/मिश्र वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलते समय योजक शब्दों या सम्बन्धबोधक अव्ययों का लोप करना

## 1. सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

- लड़के ने अपना दोष मान लिया। *(सरल वाक्य)*
  लड़के ने माना कि दोष उसका है। *(मिश्र वाक्य)*
- राम मुझसे घर आने को कहता है। *(सरल वाक्य)*
  राम मुझसे कहता है कि मेरे घर आओ। *(मिश्र वाक्य)*
- मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूँ। *(सरल वाक्य)*
  मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ खेलूँ। *(मिश्र वाक्य)*
- आप अपनी समस्या बताएँ। *(सरल वाक्य)*
  आप बताएँ कि आपकी समस्या क्या है? *(मिश्र वाक्य)*
- मुझे पुरस्कार मिलने की आशा है। *(सरल वाक्य)*
  आशा है कि मुझे पुरस्कार मिलेगा। *(मिश्र वाक्य)*
- महेश सेना में भर्ती होने योग्य नहीं है। *(सरल वाक्य)*
  महेश इस योग्य नहीं है कि सेना में भर्ती हो सके। *(मिश्र वाक्य)*
- राम के आने पर मोहन जाएगा। *(सरल वाक्य)*
  जब राम जाएगा तब मोहन आएगा। *(मिश्र वाक्य)*
- मेरे बैठने की जगह कहाँ है? *(सरल वाक्य)*
  वह जगह कहाँ है जहाँ मैं बैठूँ? *(मिश्र वाक्य)*
- मैं तुम्हारे साथ व्यापार करना चाहता हूँ। *(सरल वाक्य)*
  मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ व्यापार करूँ। *(मिश्र वाक्य)*
- श्याम ने आगरा जाने के लिए टिकट लिया। *(सरल वाक्य)*
  श्याम ने टिकट लिया ताकि वह आगरा जा सके। *(मिश्र वाक्य)*
- मैंने एक घायल हिरन देखा। *(सरल वाक्य)*
  मैंने एक हिरण देखा जो घायल था। *(मिश्र वाक्य)*
- मुझे उस कर्मचारी की कर्तव्यनिष्ठा पर सन्देह है। *(सरल वाक्य)*
  मुझे सन्देह है कि वह कर्मचारी कर्तव्यनिष्ठ है। *(मिश्र वाक्य)*
- बुद्धिमान व्यक्ति किसी से झगड़ा नहीं करता है। *(सरल वाक्य)*
  जो व्यक्ति बुद्धिमान है वह किसी से झगड़ा नहीं करता है। *(मिश्र वाक्य)*
- यह किसी बहुत बुरे आदमी का काम है। *(सरल वाक्य)*
  वह कोई बुरा आदमी है जिसने यह काम किया है। *(मिश्र वाक्य)*
- न्यायाधीश ने कैदी को हाज़िर करने का आदेश दिया। *(सरल वाक्य)*
  न्यायाधीश ने आदेश दिया कि कैदी हाज़िर किया जाए। *(मिश्र वाक्य)*

## 2. सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन

- पैसा साध्य न होकर साधन है। *(सरल वाक्य)*
  पैसा साध्य नहीं है, किन्तु साधन है। *(संयुक्त वाक्य)*
- अपने गुणों के कारण उसका सब जगह आदर-सत्कार होता था। *(सरल वाक्य)*
  उसमें गुण थे इसलिए उसका सब जगह आदर-सत्कार होता था। *(संयुक्त वाक्य)*
- दोनों में से कोई काम पूरा नहीं हुआ। *(सरल वाक्य)*
  न एक काम पूरा हुआ न दूसरा। *(संयुक्त वाक्य)*
- पंगु होने के कारण वह घोड़े पर नहीं चढ़ सकता। *(सरल वाक्य)*
  वह पंगु है इसलिए घोड़े पर नहीं चढ़ सकता। *(संयुक्त वाक्य)*
- परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो। *(सरल वाक्य)*
  परिश्रम करो और सफलता प्राप्त करो। *(संयुक्त वाक्य)*
- रमेश दण्ड के भय से झूठ बोलता रहा। *(सरल वाक्य)*
  रमेश को दण्ड का भय था, इसलिए वह झूठ बोलता रहा। *(संयुक्त वाक्य)*
- वह खाना खाकर सो गया। *(सरल वाक्य)*
  उसने खाना खाया और सो गया। *(संयुक्त वाक्य)*
- उसने गलत काम करके अपयश कमाया। *(सरल वाक्य)*
  उसने गलत काम किया और अपयश कमाया। *(संयुक्त वाक्य)*

## 3. संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा। *(संयुक्त वाक्य,*
  सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा। *(सरल वाक्य*
- जल्दी चलो, नहीं तो पकड़े जाओगे। *(संयुक्त वाक्य*
  जल्दी न चलने पर पकड़े जाओगे। *(सरल वाक्य*
- वह धनी है पर लोग ऐसा नहीं समझते। *(संयुक्त वाक्य*
  लोग उसे धनी नहीं समझते। *(सरल वाक्*
- वह अमीर है फिर भी सुखी नहीं है। *(संयुक्त वाक*
  वह अमीर होने पर भी सुखी नहीं है। *(सरल वाक*
- बाँस और बाँसुरी दोनों नहीं रहेंगे। *(संयुक्त वा*
  न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। *(सरल वा*
- राजकुमार ने भाई को मार डाला और स्वयं राजा बन गया। *(संयुक्त वा*
  भाई को मारकर राजकुमार राजा बन गया। *(सरल वा*

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## 4. मिश्र वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

- ज्यों ही मैं वहाँ पहुँचा त्यों ही घण्टा बजा। *(मिश्र वाक्य)*
  मेरे वहाँ पहुँचते ही घण्टा बजा। *(सरल वाक्य)*
- यदि पानी न बरसा तो सूखा पड़ जाएगा। *(मिश्र वाक्य)*
  पानी न बरसने पर सूखा पड़ जाएगा। *(सरल वाक्य)*
- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ। *(मिश्र वाक्य)*
  उसने अपने को निर्दोष बताया। *(सरल वाक्य)*
- यह निश्चित नहीं है कि वह कब आएगा? *(मिश्र वाक्य)*
  उसके आने का समय निश्चित नहीं है। *(सरल वाक्य)*
- जब तुम लौटकर आओगे तब मैं जाऊँगा। *(मिश्र वाक्य)*
  तुम्हारे लौटकर आने पर मैं जाऊँगा। *(सरल वाक्य)*
- जहाँ राम रहता है वहीं श्याम भी रहता है। *(मिश्र वाक्य)*
  राम और श्याम साथ ही रहते हैं। *(सरल वाक्य)*
- आशा है कि वह साफ बच जाएगा। *(मिश्र वाक्य)*
  उसके साफ बच जाने की आशा है। *(सरल वाक्य)*

## 5. मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन

- वह उस स्कूल में पढ़ा जो उसके गाँव के निकट था। *(मिश्र वाक्य)*
  वह स्कूल में पढ़ा और वह स्कूल उसके गाँव के निकट था। *(संयुक्त वाक्य)*
- मुझे वह पुस्तक मिल गई है जो खो गई थी। *(मिश्र वाक्य)*
  वह पुस्तक खो गई थी परन्तु मुझे मिल गई है। *(संयुक्त वाक्य)*
- जैसे ही उसे तार मिला वह घर से चल पड़ा। *(मिश्र वाक्य)*
  उसे तार मिला और वह तुरन्त घर से चल पड़ा। *(संयुक्त वाक्य)*
- काम समाप्त हो जाए तो जा सकते हो। *(मिश्र वाक्य)*
  काम समाप्त करो और जाओ। *(संयुक्त वाक्य)*
- मुझे विश्वास है कि दोष तुम्हारा है। *(मिश्र वाक्य)*
  दोष तुम्हारा है और इसका मुझे विश्वास है। *(संयुक्त वाक्य)*
- आश्चर्य है कि वह हार गया। *(मिश्र वाक्य)*
  वह हार गया परन्तु यह आश्चर्य है। *(संयुक्त वाक्य)*
- जैसा बोओगे वैसा काटोगे। *(मिश्र वाक्य)*
  जो जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा। *(संयुक्त वाक्य)*

## 6. संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

- काम पूरा कर डालो नहीं तो जुर्माना होगा। *(संयुक्त वाक्य)*
  यदि काम पूरा नहीं करोगे तो जुर्माना होगा। *(मिश्र वाक्य)*
- इस समय सर्दी है इसलिए कोट पहन लो। *(संयुक्त वाक्य)*
  क्योंकि इस समय सर्दी है, इसलिए कोट पहन लो। *(मिश्र वाक्य)*
- वह मरणासन्न था, इसलिए मैंने उसे क्षमा कर दिया। *(संयुक्त वाक्य)*
  मैंने उसे क्षमा कर दिया, क्योंकि वह मरणासन्न था। *(मिश्र वाक्य)*
- वक्त निकल जाता है पर बात याद रहती है। *(संयुक्त वाक्य)*
  भले ही वक्त निकल जाता है, फिर भी बात याद रहती है। *(मिश्र वाक्य)*
- जल्दी तैयार हो जाओ, नहीं तो बस चली जाएगी। *(संयुक्त वाक्य)*
  यदि जल्दी तैयार नहीं होओगे तो बस चली जाएगी। *(मिश्र वाक्य)*
- इसकी तलाशी लो और घड़ी मिल जाएगी। *(संयुक्त वाक्य)*
  यदि इसकी तलाशी लोगे तो घड़ी मिल जाएगी। *(मिश्र वाक्य)*
- सुरेश या तो स्वयं आएगा या तार भेजेगा। *(संयुक्त वाक्य)*
  यदि सुरेश स्वयं न आया तो तार भेजेगा। *(मिश्र वाक्य)*

## 7. विधानवाचक वाक्य से निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन

- यह प्रस्ताव सभी को मान्य है। *(विधानवाचक वाक्य)*
  इस प्रस्ताव के विरोधाभास में कोई नहीं है। *(निषेधवाचक वाक्य)*
- तुम असफल हो जाओगे। *(विधानवाचक वाक्य)*
  तुम सफल नहीं हो पाओगे। *(निषेधवाचक वाक्य)*
- शेरशाह सूरी एक बहादुर बादशाह था। *(विधानवाचक वाक्य)*
  शेरशाह सूरी से बहादुर कोई बादशाह नहीं था। *(निषेधवाचक वाक्य)*
- रमेश सुरेश से बड़ा है। *(विधानवाचक वाक्य)*
  रमेश सुरेश से छोटा नहीं है। *(निषेधवाचक वाक्य)*
- शेर गुफा के अन्दर रहता है। *(विधानवाचक वाक्य)*
  शेर गुफा के बाहर नहीं रहता है। *(निषेधवाचक वाक्य)*
- मुझे सन्देह हुआ कि यह पत्र आपने लिखा। *(विधानवाचक वाक्य)*
  मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह पत्र आपने लिखा। *(निषेधवाचक वाक्य)*
- मुगल शासकों में अकबर श्रेष्ठ था। *(विधानवाचक वाक्य)*
  मुगल शासकों में अकबर से बढ़कर कोई नहीं था। *(निषेधवाचक वाक्य)*

## 8. निश्चयवाचक वाक्य से प्रश्नवाचक वाक्य में परिवर्तन

- आपका भाई यहाँ नहीं है। *(निश्चयवाचक)*
  आपका भाई कहाँ है? *(प्रश्नवाचक)*
- किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। *(निश्चयवाचक)*
  किस पर भरोसा किया जाए? *(प्रश्नवाचक)*
- गाँधीजी का नाम सबने सुन रखा है। *(निश्चयवाचक)*
  गाँधीजी का नाम किसने नहीं सुना? *(प्रश्नवाचक)*
- तुम्हारी पुस्तक मेरे पास नहीं है। *(निश्चयवाचक)*
  तुम्हारी पुस्तक मेरे पास कहाँ है? *(प्रश्नवाचक)*
- तुम किसी न किसी तरह उत्तीर्ण हो गए। *(निश्चयवाचक)*
  तुम कैसे उत्तीर्ण हो गए? *(प्रश्नवाचक)*
- अब तुम बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो। *(निश्चयवाचक)*
  क्या तुम अब बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो? *(प्रश्नवाचक)*
- यह एक अनुकरणीय उदाहरण है। *(निश्चयवाचक)*
  क्या यह अनुकरणीय उदाहरण नहीं है? *(प्रश्नवाचक)*

## 9. विस्मयादिबोधक वाक्य से विधानवाचक वाक्य में परिवर्तन

- वाह! कितना सुन्दर नगर है! *(विस्मयादिबोधक)*
  बहुत ही सुन्दर नगर है! *(विधानवाचक वाक्य)*
- काश! मैं जवान होता। *(विस्मयादिबोधक)*
  मैं चाहता हूँ कि मैं जवान होता। *(विधानवाचक वाक्य)*
- अरे! तुम फेल हो गए। *(विस्मयादिबोधक)*
  मुझे तुम्हारे फेल होने से आश्चर्य हो रहा है। *(विधानवाचक वाक्य)*
- ओ हो! तुम खूब आए। *(विस्मयादिबोधक)*
  मुझे तुम्हारे आगमन से अपार खुशी है। *(विधानवाचक वाक्य)*
- कितना क्रूर! *(विस्मयादिबोधक)*
  वह अत्यन्त क्रूर है। *(विधानवाचक वाक्य)*
- क्या! मैं भूल कर रहा हूँ! *(विस्मयादिबोधक)*
  मैं तो भूल नहीं कर रहा। *(विधानवाचक वाक्य)*
- हाँ हाँ! सब ठीक है। *(विस्मयादिबोधक)*
  मैं अपनी बात का अनुमोदन करता हूँ। *(विधानवाचक वाक्य)*

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**1.** वाक्यों का वर्गीकरण कितने आधारों पर किया गया है?
(a) दो (b) तीन
(c) चार (d) पाँच

**2.** जिन वाक्यों में एक उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, उसे कहते हैं
(a) एकल वाक्य (b) सरल वाक्य
(c) मिश्र वाक्य (d) संयुक्त वाक्य

**3.** मिश्र वाक्य कहते हैं
(a) जिनमें एक कर्ता और एक ही क्रिया होती है
(b) जिनमें एक से अधिक प्रधान उपवाक्य हों और वे संयोजक अव्यय द्वारा जुड़े हों
(c) जिनमें एक साधारण वाक्य तथा उसके अधीन दूसरा उपवाक्य हो
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

**4.** जिन वाक्यों में एक-से-अधिक प्रधान उपवाक्य हों और वे संयोजक अव्यय द्वारा जुड़े हों, उसे कहते हैं
(a) विधिवाचक (b) सरल वाक्य
(c) मिश्र वाक्य (d) संयुक्त वाक्य

**5.** वाक्य के गुणों में सम्मिलित नहीं है
(a) लयबद्धता (b) सार्थकता
(c) क्रमबद्धता (d) आकांक्षा

**6.** 'नाव में नदी है'—इस वाक्य में किस वाक्य गुण का अभाव है?
(a) आकांक्षा (b) क्रम
(c) योग्यता (d) आसक्ति

**7.** वाक्य गुण 'आकांक्षा' का अर्थ है
(a) भावबोध की क्षमता (b) सार्थकता
(c) श्रोता की जिज्ञासा (d) व्याकरणानुकूल

**8.** वाक्य गुण 'आसक्ति' का अर्थ है
(a) व्याकरणानुकूल (b) क्रमबद्धता
(c) योग्यता (d) समीपता

**9.** अर्थ के आधार पर वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?
(a) आठ (b) दस
(c) तीन (d) चार

**10.** जिन वाक्यों से किसी कार्य या बात करने का बोध होता है, उन्हें कहते हैं
(a) आज्ञावाचक (b) विधानवाचक
(c) इच्छावाचक (d) संकेतवाचक

**11.** जिन वाक्यों से किसी बात या कार्य न होने का बोध होता है, उन्हें कहते हैं
(a) आज्ञावाचक (b) विस्मयवाचक
(c) निषेधवाचक (d) संकेतवाचक

**12.** 'श्याम स्कूल जाओ'-वाक्य है
(a) विधानवाचक (b) निषेधवाचक
(c) संकेतवाचक (d) आज्ञावाचक

**13.** जिस वाक्य से आश्चर्य का बोध हो, उसे कहेंगे
(a) विस्मयवाचक (विस्मयादिबोधक) (b) सन्देहवाचक
(c) इच्छावाचक (d) प्रश्नवाचक

**14.** 'अहा! कितना सुन्दर दृश्य है'—वाक्य किस प्रकार का है?
(a) निषेधवाचक (b) विस्मयवाचक
(c) इच्छावाचक (d) आज्ञावाचक

**15.** 'रमेश पढ़ा-लिखा है या नहीं'—वाक्य है
(a) विधानवाचक (b) इच्छावाचक
(c) सन्देहवाचक (d) आज्ञावाचक

**16.** जिन वाक्यों से किसी प्रकार की इच्छा या कामना का बोध होता है, उसे कहते हैं
(a) संकेतवाचक (b) सन्देहवाचक (c) विधानवाचक (d) इच्छावाचक

**17.** 'आपका भविष्य उज्ज्वल हो'—वाक्य है
(a) इच्छावाचक (b) आज्ञावाचक
(c) विधानवाचक (d) संकेतवाचक

**18.** 'जो पढ़ेगा वह उत्तीर्ण होगा'—वाक्य है
(a) सन्देहवाचक (b) संकेतवाचक
(c) आज्ञावाचक (d) विधानवाचक

**19.** निम्न में से कौन-सा वाक्य मिश्र वाक्य नहीं है?
**(यू.पी.एस.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)**
(a) मैंने एक पुस्तक खरीदी जो नई है।
(b) यह वही बच्चा है जिसे बैल ने मारा।
(c) एक विज्ञान गोष्ठी हुई जिसमें अनेक वक्ता बोले।
(d) वह परिश्रमी ही नहीं वरन् ईमानदार भी है।

**20.** सरल वाक्य है।
(a) उसके आने का समय निश्चित नहीं है।
(b) मुझे बताओ कि तुम कहाँ रहते हो।
(c) वह घर पर मिलेगा तो मैं अवश्य बात करूँगा।
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

**21.** इनमें से मिश्र वाक्य कौन है?
(a) यौवन चरित्र निर्माण का समय है।
(b) जो लोग स्वस्थ रहते हैं उन्हें वैद्य के पास नहीं जाना पड़ता है।
(c) करो या मरो।
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

**22.** संयुक्त वाक्य पहचानिए—
(a) उत्तर देने का यह ढंग ठीक नहीं है
(b) उसे गर्व है कि वह उच्चकुल में पैदा हुआ
(c) दवा लो और बुखार कम हो जाएगा
(d) उपरोक्त सभी

**23.** इनमें से विधानवाचक वाक्य कौन है?
(a) यह एक अनुकरणीय उदाहरण नहीं है।
(b) इस बात से किसी को इनकार नहीं है।
(c) मुझे कौन वोट नहीं देगा?
(d) यह बात सभी को स्वीकार्य है।

**24.** 'शायद' में भी वाक्य है **(केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा 2011)**
(a) सन्देहवाचक
(b) संकेतवाचक
(c) इच्छार्थक
(d) विधानवाचक

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**25.** वाक्य के मुख्य दो अंग होते हैं
(यू.पी.एस.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) उद्देश्य और विधेय (b) कर्ता और क्रिया
(c) कर्म और क्रिया (d) कर्म और विशेषण

**26.** भावप्रधान वाला वाक्य इनमें से कौन-सा है?
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) भारती खाना खाती है
(b) रमेश खाना खा सकता है
(c) हिमेश से दौड़ा नहीं जाता
(d) रमा दौड़ नहीं सकती

**27.** निम्नलिखित में से क्रिया-विशेषण उपवाक्य है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) मेरे पास एक गुड़िया है जो नाचती है
(b) मेरी इच्छा है कि मैं एक उपन्यास लिखूँ
(c) जब बारिश हो रही थी तब मैं घर में था
(d) कविता ने कहा कि सुनीता ने शादी कर ली

**28.** हाथी जंगल में रहते हैं—यह वाक्य है (म.प्र. शिक्षक पात्रता परीक्षा 2011)
(a) विधानवाचक (b) अनिश्चयवाचक
(c) निषेधवाचक (d) प्रश्नवाचक

**29.** वह हार गया परन्तु यह आश्चर्य है—यह वाक्य है
(म.प्र. शिक्षक पात्रता परीक्षा 2011)
(a) मिश्र वाक्य (b) सरल वाक्य
(c) संयुक्त वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं

**30.** निम्नलिखित में से इच्छार्थक वाक्य है
(आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) सौरभ को बुलाओ (b) तुम्हारा मंगल हो
(c) तुमने सुना होगा (d) आज विद्यालय में अवकाश है

**31.** मैं आपसे सहमत नहीं हूँ—वाक्य है
(a) विधानवाचक (b) इच्छावाचक
(c) सन्देहवाचक (d) निषेधवाचक

**32.** जो परिश्रम करेगा वह सफल होगा—वाक्य है
(म.प्र. संविदा शिक्षक पात्रता परीक्षा 2008)
(a) संकेतवाचक (b) सन्देहवाचक
(c) विधानवाचक (d) विस्मयवाचक

**33.** आपके अवकाश का क्या हुआ? कैसा वाक्य है?
(इग्नू बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010)
(a) सन्देहवाचक (b) प्रश्नवाचक
(c) इच्छावाचक (d) विधिवाचक

**34.** राकेश आया होगा—वाक्य है
(a) विस्मयवाचक (b) इच्छावाचक
(c) सन्देहवाचक (d) संकेतवाचक

**35.** 'जो गरीबों की सहायता करते हैं वे धर्मात्मा होते हैं'—वाक्य है
(a) सरल वाक्य (b) मिश्र वाक्य
(c) संयुक्त वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं

**36.** विस्मयवाचक वाक्य का चयन कीजिए
(म.प्र. संविदा शिक्षक पात्रता परीक्षा 2006)
(a) मधुर भाषण वाणी का तप है
(b) कटु वचन मन को आहत करता है
(c) छिः! कितनी गन्दी बात है
(d) गन्दगी सदैव हानिकारक है

**37.** आज्ञावाचक वाक्य को चिह्नित कीजिए (इग्नू बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2011)
(a) उसने दरवाजा खोला (b) उसके द्वारा दरवाजा खोला गया
(c) जल्दी दरवाजा खोलो (d) क्या वह दरवाजा खोल पाएगा?

**38.** मिश्र वाक्य को चिह्नित कीजिए
(हरियाणा विद्यालय अध्यापक पात्रता परीक्षा 2010)
(a) आपने ऐसा क्यों किया?
(b) उसने कहा कि आज छुट्टी हो जाएगी।
(c) वाह! आप एम.पी. हो गए।
(d) बालक आया और मेरे पास बैठ गया।

**39.** संकेतवाचक वाक्य चुनिए (उ.प्र. बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2011)
(a) ईश्वर सर्वशक्तिमान है।
(b) ईश्वर का वास प्रत्येक हृदय में है।
(c) ईश्वर करे आप जल्दी स्वस्थ हो जाएँ।
(d) ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया।

**40.** मयंक सुन्दर है, वह हँसमुख भी है—इस वाक्य का सरल वाक्य में रूपान्तर होगा (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) मयंक सुन्दर है तथा हँसमुख भी है।
(b) मयंक सुन्दर है, लेकिन हँसमुख है।
(c) मयंक सुन्दर और हँसमुख है।
(d) मयंक सुन्दर भी है और हँसमुख भी।

**41.** छात्रों ने परिश्रम किया, वे उत्तीर्ण हो गए—इस वाक्य का 'मिश्र वाक्य' में रूपान्तरण होगा (आर.पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) छात्रों ने परिश्रम किया और उत्तीर्ण हो गए।
(b) परिश्रम करने वाले छात्र उत्तीर्ण हो गए।
(c) जिन छात्रों ने परिश्रम किया वे उत्तीर्ण हो गए।
(d) छात्र परिश्रम करके उत्तीर्ण हो गए।

**42.** "वह लाचार है, क्योंकि वह अन्धा है।" इस वाक्य में कौन-सा अव्यय है? (यू.पी.एस.एस.एस.सी. चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) संकेतवाचक
(b) कारणवाचक
(c) परिणामवाचक
(d) सम्बन्धवाचक

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. (a) | 2. (b) | 3. (c) | 4. (d) | 5. (a) | 6. (b) | 7. (c) | 8. (d) | 9. (a) | 10. (b) |
| 11. (c) | 12. (d) | 13. (a) | 14. (b) | 15. (c) | 16. (d) | 17. (a) | 18. (b) | 19. (d) | 20. (a) |
| 21. (b) | 22. (c) | 23. (d) | 24. (a) | 25. (a) | 26. (c) | 27. (c) | 28. (a) | 29. (c) | 30. (b) |
| 31. (d) | 32. (a) | 33. (b) | 34. (c) | 35. (b) | 36. (c) | 37. (c) | 38. (b) | 39. (c) | 40. (c) |
| 41. (c) | 42. (b) | | | | | | | | |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

17

# रस, छन्द और अलंकार

## काव्यशास्त्र के सिद्धान्त

### संस्कृत

| सिद्धान्त | प्रवर्तक |
|---|---|
| उत्पत्तिवाद | भट्टलोल्लट |
| अनुमतिवाद | आचार्य शंकुक |
| भुक्तिवाद या भोगवाद | भट्टनायक |
| अभिव्यक्तिवाद | अभिनव गुप्त |
| रस सम्प्रदाय | भरतमुनि |
| अलंकार सम्प्रदाय | भामह |
| रीति सम्प्रदाय | आचार्य वामन |
| ध्वनि सम्प्रदाय | आनन्दवर्द्धन |
| वक्रोक्ति सम्प्रदाय | आचार्य कुंतक |
| औचित्य सम्प्रदाय | आचार्य क्षेमेन्द्र |

### संस्कृत ग्रन्थ व उनके लेखक

| ग्रन्थ | लेखक |
|---|---|
| नाट्यशास्त्र | भरतमुनि |
| काव्यालंकार | भामह |
| वक्रोतिजीवितम | कुंतक |
| काव्य प्रकाश | मम्मट |
| साहित्य दर्पण | विश्वनाथ |
| रसगंगाधर | जगन्नाथ |
| औचित्य विचार चर्चा | क्षेमेन्द्र |
| काव्यानुशासन | हेमचन्द्र |
| ध्वन्यालोक | आनन्दवर्द्धन |
| ध्वन्यालोक लोचन | अभिनवगुप्त |
| कुवलयानन्द | अप्पय दीक्षित |
| काव्यादर्श | दण्डी |
| दशरूपक | धनंजय |
| महाभाष्य | पतंजलि |
| रस तरंगिनी | भानुमित्र |
| शृंगार प्रकाश | भोजराज |
| अलंकार सर्वस्व | रुय्यक |
| उज्ज्वल नीलमणि | रूपगोस्वामी |

### हिन्दी

| सिद्धान्त | प्रवर्तक |
|---|---|
| रीतिवाद | केशवदास (रामचन्द्र शुक्ल ने चिन्तामणि को हिन्दी में रीतिवाद का प्रवर्तक माना है।) |
| स्वच्छन्दतावाद | श्रीधर पाठक |
| छायावाद | जयशंकर प्रसाद |
| हालावाद | हरिवंशराय 'बच्चन' |
| मांसलवाद | रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' |
| प्रयोगवाद | अज्ञेय |
| कैप्सूलवाद | ओंकारनाथ त्रिपाठी |
| प्रपद्यवाद (नकेनवाद) | नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार, नरेश कुमार |

### पाश्चात्य

| सिद्धान्त | प्रवर्तक |
|---|---|
| अनुकरण सिद्धान्त | अरस्तू |
| त्रासदी तथा विरेचन सिद्धान्त | अरस्तू |
| औदात्यवाद | लोंजाइनस |
| सम्प्रेषण सिद्धान्त | आई.ए. रिचर्ड्स |
| निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त | टी. एस. इलियट |
| अभिव्यंजनावाद | बेनदेतो क्रोचे |
| अस्तित्ववाद | सॉरेन कीर्केगार्द |
| द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद | कार्ल मार्क्स |
| मार्क्सवाद | कार्ल मार्क्स |
| मनोविश्लेषणवाद | फ्रॉयड |
| विखण्डनवाद | जॉक देरिदा |
| कल्पना सिद्धान्त | कॉलरिज |
| स्वच्छन्दतावाद | विलियम्स वर्ड्सवर्थ |
| प्रतीकवाद | जॉन मोरियस |
| बिम्बवाद | टी.ई. ह्यूम |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

### पाश्चात्य आलोचकों की प्रमुख पुस्तकें व उनके रचनाकार

| पुस्तक | लेखक/रचनाकार |
|---|---|
| इओन, सिंपोसियोन, पोलितेइया, रिपब्लिक, नोमोई | प्लेटो |
| तेखनेस रितोरिकेस, पेरिपोइतिकेस | अरस्तू |
| पेरिइप्सुस | लोंजाइनस |
| बायोग्राफिया लिटरेरिया, द फ्रेंड, एड्सटू रिफ्लेक्शन | कॉलरिज |
| लिरिकल बैलेड्स | विलियम वड्र्सवर्थ |
| एस्थेटिक | बेनदेतो क्रोचे |
| द सेक्रेड वुड, सेलेक्टेड एसेस, एसेस एन्शेंट एंड मॉडर्न | टी.एस. इलियट |
| प्रिंसिपल ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म, कॉलरिज आन इमेजिनेशन | आई.ए. रिचर्ड्स |
| ऐस्से ऑन क्रिटिसिज्म | पोप |
| रिवेल्युएशंस, द कॉमन पर्सूट | एफ. आर. लिविस |
| ग्रामर ऑफ मोटिक्स | केनेथ बर्क |
| क्रिटिक्स एण्ड क्रिटिसिज़्म | आर.एस. क्रेन |

# रस

रस सिद्धान्त भारतीय काव्य-शास्त्र का अति प्राचीन और प्रतिष्ठित सिद्धान्त है। नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक आचार्य भरतमुनि का यह प्रसिद्ध सूत्र 'रस-सिद्धान्त' का मूल है– **विभावानुभावव्याभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः**

*अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। इस रस सूत्र का विवेचन सर्वप्रथम आचार्य भरत मुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में किया।*

साहित्य को पढ़ने, सुनने या नाटकादि को देखने से जो आनन्द की अनुभूति होती है, उसे 'रस' कहते हैं।

रस के मुख्य रुप से चार अंग माने जाते हैं, जो निम्न प्रकार हैं

1. **स्थायी भाव** हृदय में मूलरूप से विद्यमान रहने वाले भावों को स्थायी भाव कहते हैं। ये चिरकाल तक रहने वाले तथा रस रूप में सृजित या परिणत होते हैं। स्थायी भावों की संख्या नौ है—रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय और निर्वेद।
2. **विभाव** जो व्यक्ति वस्तु या परिस्थितियाँ स्थायी भावों को उद्दीपन या जागृत करती हैं, उन्हें विभाव कहते हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं–
   (i) **आलम्बन विभाव** जिन वस्तुओं या विषयों पर आलम्बित होकर **भाव** उत्पन्न होते हैं, उन्हें आलम्बन विभाव कहते हैं; जैसे—नायक-नायिका। आलम्बन के भी दो भेद हैं—
   (अ) **आश्रय** जिस व्यक्ति के मन में रति आदि भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आश्रय कहते हैं।
   (ब) **विषय** जिस वस्तु या व्यक्ति के लिए आश्रय के मन में भाव उत्पन्न होते हैं, उसे विषय कहते हैं।
   (ii) **उद्दीपन विभाव** आश्रय के मन में **भावों** को उद्दीप्त करने वाले विषय की बाह्य चेष्टाओं और बाह्य वातावरण को उद्दीपन विभाव कहते हैं; जैसे—शकुन्तला को देखकर दुष्यन्त के मन में आकर्षण (रति भाव) उत्पन्न होता है। उस समय शकुन्तला की शारीरिक चेष्टाएँ तथा वन का सुरम्य, मादक और एकान्त वातावरण दुष्यन्त के मन में रति भाव को और अधिक तीव्र करता है, अत: यहाँ शकुन्तला की शारीरिक चेष्टाएँ तथा वन का एकान्त वातावरण आदि को उद्दीपन विभाव कहा जाएगा।
3. **अनुभाव** आलम्बन तथा उद्दीपन के द्वारा आश्रय के हृदय में स्थायी भाव जागृत या उद्दीप्त होने पर आश्रय में जो चेष्टाएँ होती हैं, उन्हें **अनुभाव** कहते हैं। अनुभाव चार प्रकार के माने गए हैं—कायिक, मानसिक, आहार्य और सात्विक। सात्विक अनुभाव की संख्या आठ है, जो निम्न प्रकार है
   (i) स्तम्भ (ii) स्वेद
   (iii) रोमांच (iv) स्वर-भंग
   (v) कम्प (vi) विवर्णता (रंगहीनता)
   (vii) अश्रु (viii) प्रलय (संज्ञाहीनता)।
4. **संचारी भाव** आश्रय के चित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। इनके द्वारा स्थायी भाव और तीव्र हो जाता है। संचारी भावों की संख्या 33 है—हर्ष, विषाद, त्रास, लज्जा (व्रीड़ा), ग्लानि, चिन्ता, शंका, असूया, अमर्ष, मोह, गर्व, उत्सुकता, उग्रता, चपलता, दीनता, जड़ता, आवेग, निर्वेद, धृति, मति, विबोध, वितर्क, श्रम, आलस्य, निद्रा, स्वप्न, स्मृति, मद, उन्माद, अवहित्था, अपस्मार, व्याधि, मरण। आचार्य देव कवि ने 'छल' को चौतीसवाँ संचारी भाव माना है।

## रस के प्रकार

आचार्य भरतमुनि ने नाटकीय महत्त्व को ध्यान में रखते हुए आठ रसों का उल्लेख किया—शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स एवं अद्भुत। आचार्य मम्मट और पण्डितराज जगन्नाथ ने रसों की संख्या नौ मानी है—शृंगार, हास, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शान्त।

आचार्य विश्वनाथ ने वात्सल्य को दसवाँ रस माना है तथा रूपगोस्वामी ने 'मधुर' नामक ग्यारहवें रस की स्थापना की, जिसे भक्ति रस के रूप में मान्यता मिली। वस्तुत: रस की संख्या नौ ही हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है—

### 1. शृंगार रस

आचार्य भोजराज ने 'शृंगार' को 'रसराज' कहा है। शृंगार रस का आधार स्त्री-पुरुष का पारस्परिक आकर्षण है, जिसे काव्यशास्त्र में **रति** स्थायी भाव कहते हैं। जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रति स्थायी भाव आस्वाद्य हो जाता है तो उसे शृंगार रस कहते हैं। शृंगार रस में सुखद और दु:खद दोनों प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं; इसी आधार पर इसके दो भेद किए गए हैं—**संयोग शृंगार** और **वियोग शृंगार**।

### (i) संयोग शृंगार

जहाँ नायक-नायिका के संयोग या मिलन का वर्णन होता है, वहाँ संयोग शृंगार होता है। उदाहरण—

"चितवत चकित चहूँ दिसि सीता।
कहँ गए नृप किसोर मन चीता।।
लता ओर तब सखिन्ह लखाए।
श्यामल गौर किसोर सुहाए।।
थके नयन रघुपति छबि देखे।
पलकन्हि हूँ परिहरी निमेषे।।
अधिक सनेह देह भई भोरी।
सरद ससिहिं जनु चितव चकोरी।।
लोचन मग रामहिं उर आनी।
दीन्हें पलक कपाट सयानी।।"

*यहाँ सीता का राम के प्रति जो प्रेम भाव है वही रति **स्थायी भाव** है राम और सीता **आलम्बन विभाव**, लतादि **उद्दीपन विभाव**, देखना, देह का भारी होना आदि **अनुभाव** तथा हर्ष, उत्सुकता आदि **संचारी भाव** हैं, अत: यहाँ पूर्ण संयोग शृंगार रस है।*

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

### (ii) वियोग या विप्रलम्भ शृंगार

जहाँ वियोग की अवस्था में नायक-नायिका के प्रेम का वर्णन होता है, वहाँ वियोग या विप्रलम्भ शृंगार होता है। उदाहरण—

"कहेउ राम वियोग तब सीता।
मो कहँ सकल भए विपरीता।।
नूतन किसलय मनहुँ कृसानू।
काल-निसा-सम निसि ससि भानू।।
कुवलय विपिन कुंत बन सरिसा।
वारिद तपत तेल जनु बरिसा।।
कहेऊ ते कछु दुःख घटि होई।
काहि कहौं यह जान न कोई।।"

*यहाँ राम का सीता के प्रति जो प्रेम भाव है वह रति* ***स्थायी भाव****, राम* ***आश्रय,*** *सीता* ***आलम्बन,*** *प्राकृतिक दृश्य* ***उद्दीपन विभाव****, कम्प, पुलक और अश्रु* ***अनुभाव*** *तथा विषाद, ग्लानि, चिन्ता, दीनता आदि* ***संचारी भाव*** *हैं, अतः यहाँ वियोग शृंगार रस है।*

## 2. हास्य रस

विकृत वेशभूषा, क्रियाकलाप, चेष्टा या वाणी देख-सुनकर मन में जो विनोदजन्य उल्लास उत्पन्न होता है, उसे हास्य रस कहते हैं। हास्य रस का स्थायी भाव **हास** है। उदाहरण—

"जेहि दिसि बैठे नारद फूली।
सो दिसि तेहि न विलोकी भूली।।
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं।
देखि दसा हरिगन मुसकाहीं।।"

*यहाँ* ***स्थायी भाव*** *हास,* ***आलम्बन*** *वानर रूप में नारद,* ***आश्रय*** *दर्शक, श्रोता* ***उद्दीपन*** *नारद की आंगिक चेष्टाएँ; जैसे—उकसना, अकुलाना बार-बार स्थान बदलकर बैठना* ***अनुभाव*** *हरिगण एवं अन्य दर्शकों की हँसी और* ***संचारी भाव*** *हर्ष, चपलता, उत्सुकता आदि हैं, अतः यहाँ हास्य रस है।*

## 3. करुण रस

दुःख या शोक की संवेदना बड़ी गहरी और तीव्र होती है, यह जीवन में सहानुभूति का भाव विस्तृत कर मनुष्य को भोग भाव से धनाभाव की ओर प्रेरित करता है। करुणा से हमदर्दी, आत्मीयता और प्रेम उत्पन्न होता है जिससे व्यक्ति परोपकार की ओर उन्मुख होता है।

इष्ट वस्तु की हानि, अनिष्ट वस्तु का लाभ, प्रिय का चिरवियोग, अर्थ हानि, आदि से जहाँ शोकभाव की परिपुष्टि होती है, वहाँ करुण रस होता है। करुण रस का स्थायी भाव **शोक** है। उदाहरण—

"सोक विकल एब रोवहिं रानी।
रूप सीलु बल तेज बखानी।।
करहिं विलाप अनेक प्रकारा।
परहिं भूमितल बारहिं बारा।।"

*यहाँ* ***स्थायी भाव*** *शोक, दशरथ* ***आलम्बन****, रानियाँ* ***आश्रय,*** *राजा का रूप तेज बल आदि* ***उद्दीपन*** *रोना, विलाप करना* ***अनुभाव*** *और स्मृति, मोह, उद्वेग कम्प आदि* ***संचारी भाव*** *हैं, अतः यहाँ करुण रस है।*

## 4. वीर रस

युद्ध अथवा किसी कठिन कार्य को करने के लिए हृदय में निहित 'उत्साह' स्थायी भाव के जाग्रत होने के प्रभावस्वरूप जो भाव उत्पन्न होता है, उसे वीर रस कहा जाता है।

उत्साह स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भावों में परिपुष्ट होकर आस्वाद्य हो जाता है, तब वीर रस उत्पन्न होता है। उदाहरण—

"मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे।
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा जानो मुझे।।
हे सारथे! हैं द्रोण क्या? आवें स्वयं देवेन्द्र भी।
वे भी न जीतेंगे समर में आज क्या मुझसे कभी।।"

*यहाँ* ***स्थायी भाव*** *उत्साह* ***आश्रय*** *अभिमन्युद्ध* ***आलम्बन*** *द्रोण आदि कौरव पक्ष,* ***अनुभाव*** *अभिमन्यु के वचन और* ***संचारी भाव*** *गर्व, हर्ष, उत्सुकता, कम्प मद, आवेग, उन्माद आदि हैं, अतः यहाँ वीर रस है।*

## 5. रौद्र रस

रौद्र रस का स्थायी भाव **क्रोध** है। विरोधी पक्ष द्वारा किसी व्यक्ति, देश, समाज या धर्म का अपमान या अपकार करने से उसकी प्रतिक्रिया में जो क्रोध उत्पन्न होता है, वह विभाव, अनुभाव और संचारी भावों में परिपुष्ट होकर आस्वाद्य हो जाता है और तब रौद्र रस उत्पन्न होता है। उदाहरण—

"माखे लखन कुटिल भयीं भौहें।
रद-पट फरकत नयन रिसौहैं।।
कहि न सकत रघुबीर डर, लगे वचन जनु बान।
नाइ राम-पद-कमल-जुग, बोले गिरा प्रमान।।"

*यहाँ* ***स्थायी भाव*** *क्रोध,* ***आश्रय*** *लक्ष्मण,* ***आलम्बन*** *जनक के वचन* ***उद्दीपन*** *जनक के वचनों की कठोरता ,****अनुभाव*** *भौंहें तिरछी होना, होंठ फड़कना, नेत्रों का रिसौहैं होना* ***संचारी भाव*** *अमर्ष-उग्रता, कम्प आदि हैं, अतः यहाँ रौद्र रस है।*

## 6. भयानक रस

भयप्रद वस्तु या घटना देखने सुनने अथवा प्रबल शत्रु के विद्रोह आदि से भय का संचार होता है। यही **भय** स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भावों में परिपुष्ट होकर आस्वाद्य हो जाता है तो वहाँ भयानक रस होता है। उदाहरण—

"एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय।
विकल बटोही बीच ही, परयों मूरछा खाय।।"

*यहाँ पथिक के एक ओर अजगर और दूसरी ओर सिंह की उपस्थिति से वह भय के मारे मूर्च्छित हो गया है। यहाँ भय* ***स्थायी भाव,*** *यात्री* ***आश्रय,*** *अजगर और सिंह* ***आलम्बन,*** *अजगर और सिंह की भयावह आकृतियाँ और उनकी चेष्टाएँ* ***उद्दीपन,*** *यात्री को मूर्च्छा आना* ***अनुभाव*** *और आवेग, निर्वेद, दैन्य, शंका, व्याधि, त्रास, अपस्मार आदि* ***संचारी भाव हैं,*** *अतः यहाँ भयानक रस है।*

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

## 7. बीभत्स रस

बीभत्स रस का स्थायी भाव जुगुप्सा या घृणा है। अनेक विद्वान् इसे सहृदय के अनुकूल नहीं मानते हैं, फिर भी जीवन में जुगुप्सा या घृणा उत्पन्न करने वाली परिस्थितियाँ तथा वस्तुएँ कम नहीं हैं। अत: **घृणा** का स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट होकर आस्वाद्य हो जाता है तब बीभत्स रस उत्पन्न होता है। उदाहरण—

"सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत।
खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनन्द उर धारत।।
गीध जाँघ को खोदि खोदि कै मांस उपारत।
स्वान आंगुरिन काटि-काटि कै खात विदारत।।"

*यहाँ राजा हरिश्चन्द्र श्मशान घाट के दृश्य को देख रहे हैं। उनके मन में उत्पन्न जुगुप्सा या घृणा **स्थायी भाव**, दर्शक (हरिश्चन्द्र) **आश्रय**, मुर्दे, मांस और श्मशान का दृश्य **आलम्बन**, गीध, स्यार, कुत्तों आदि का मांस नोचना और खाना **उद्दीपन**, दर्शक/राजा हरिश्चन्द्र का इनके बारे में सोचना **अनुभाव** और मोह, ग्लानि आवेग, व्याधि आदि **संचारी भाव** हैं, अत: यहाँ बीभत्स रस है।*

## 8. अद्भुत रस

अलौकिक, आश्चर्यजनक दृश्य या वस्तु को देखकर सहसा विश्वास नहीं होता और मन में स्थायी भाव **विस्मय** उत्पन्न होता है। यही विस्मय जब विभाव, अनुभाव और संचारी भावों में पुष्ट होकर आस्वाद्य हो जाता है, तो अद्भुत रस उत्पन्न होता है। उदाहरण—

"अम्बर में कुन्तल जाल देख,
पद के नीचे पाताल देख,
मुट्ठी में तीनों काल देख,
मेरा स्वरूप विकराल देख,
सब जन्म मुझी से पाते हैं,
फिर लौट मुझी में आते हैं।"

*यहाँ **स्थायी भाव** विस्मय, ईश्वर का विराट् स्वरूप **आलम्बन**, विराट् के अद्भुत क्रियाकलाप **उद्दीपन**, आँखें फाड़कर देखना, स्तब्ध, अवाक् रह जाना **अनुभाव** और भ्रम, औत्सुक्य, चिन्ता, त्रास आदि **संचारी भाव** हैं, अत: यहाँ अद्भुत रस है।*

## 9. शान्त रस

अभिनवगुप्त ने शान्त रस को सर्वश्रेष्ठ माना है। संसार और जीवन की नश्वरता का बोध होने से चित्त में एक प्रकार का विराग उत्पन्न होता है परिणामत: मनुष्य भौतिक तथा लौकिक वस्तुओं के प्रति उदासीन हो जाता है, इसी को **निर्वेद** कहते हैं। जो विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट होकर शान्त रस में परिणत हो जाता है। उदाहरण—

"सुत वनितादि जानि स्वारथरत न करु नेह सबही ते।
अन्तहिं तोहि तजेंगे पामर! तू न तजै अबही ते।।
अब नाथहिं अनुराग जाग जड़, त्यागु दुरदसा जीते।
बुझै न काम अगिनि 'तुलसी' कहुँ विषय भोग बहु घी ते।।"

*यहाँ **स्थायी भाव**, निर्वेद **आश्रय**, सम्बोधित सांसारिक जन **आलम्बन**, सुत वनिता आदि **अनुभाव**, सुत वनितादि को छोड़ने को कहना **संचारी भाव** धृति, मति विमर्श आदि हैं, अत: यहाँ शान्त रस है।*

*शास्त्रीय दृष्टि से नौ ही रस माने गए हैं लेकिन कुछ विद्वानों ने सूर और तुलसी की रचनाओं के आधार पर दो नए रसों को मान्यता प्रदान की है—वात्सल्य और भक्ति।*

## 10. वात्सल्य रस

वात्सल्य रस का सम्बन्ध छोटे बालक-बालिकाओं के प्रति माता-पिता एवं सगे-सम्बन्धियों का प्रेम एवं ममता के भाव से है।

हिन्दी कवियों में सूरदास ने वात्सल्य रस को पूर्ण प्रतिष्ठा दी है। तुलसीदास की विभिन्न कृतियों के बालकाण्ड में वात्सल्य रस की सुन्दर व्यंजना द्रष्टव्य है। वात्सल्य रस का स्थायी भाव **वत्सलता** या **स्नेह** है। उदाहरण—

"किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नन्द के आँगन बिम्ब पकरिबे धावत।
कबहुँ निरखि हरि आप छाँह को कर सो पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ पुनि पुनि तिहि अवगाहत।।"

*यहाँ **स्थायी भाव** वत्सलता या स्नेह, **आलम्बन** कृष्ण की बाल सुलभ चेष्टाएँ, **उद्दीपन** किलकना, बिम्ब को पकड़ना, **अनुभाव** रोमांचित होना, मुख चूमना, **संचारी भाव** हर्ष, गर्व, चपलता, उत्सुकता आदि हैं, अत: यहाँ वात्सल्य रस है।*

## 11. भक्ति रस

भक्ति रस शान्त रस से भिन्न है। शान्त रस जहाँ निर्वेद या वैराग्य की ओर ले जाता है वहीं भक्ति **ईश्वर विषयक रति** की ओर ले जाते हैं यही इसका स्थायी भाव भी है। भक्ति रस के पाँच भेद हैं—शान्त, प्रीति, प्रेम, वत्सल और मधुर। ईश्वर के प्रति भक्ति भावना स्थायी रूप में मानव संस्कार में प्रतिष्ठित है, इस दृष्टि से भी भक्ति रस मान्य है। उदाहरण—

"मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।
साधुन संग बैठि बैठि लोक-लाज खोई।
अब तो बात फैल गई जाने सब कोई।।"

*यहाँ **स्थायी भाव** ईश्वर विषयक रति, **आलम्बन** श्रीकृष्ण **उद्दीपन** कृष्ण लीलाएँ, सत्संग, **अनुभाव**-रोमांच, अश्रु, प्रलय, **संचारी भाव** हर्ष, गर्व, निर्वेद, औत्सुक्य आदि हैं, अत: यहाँ भक्ति रस है।*

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

## मध्यान्तर प्रश्नावली

**1.** रस सिद्धान्त के आदि प्रवर्तक कौन हैं?
(a) भरतमुनि (b) भानुदत्त (c) विश्वनाथ (d) भामह

**2.** आचार्य भरत ने कितने रसों का उल्लेख किया है?
(a) सात (b) आठ (c) नौ (d) दस

**3.** काव्यशास्त्र में हास्य के कितने भेद माने गए हैं?
(a) छः (b) सात (c) चार (d) दो

**4.** काव्यशास्त्र के अनुसार रसों की सही संख्या है
(a) आठ (b) नौ (c) दस (d) ग्यारह

**5.** संचारी भावों की संख्या है
(a) 27 (b) 29 (c) 31 (d) 33

**6.** भक्ति रस की स्थापना किसने की?
(a) भरत ने (b) विश्वनाथ ने
(c) रूपगोस्वामी ने (d) मम्मट ने

**7.** सात्विक अनुभाव कितने हैं?
(a) दो (b) चार (c) छः (d) आठ

**8.** निर्जन नटि-नटि पुनि लजियावै।
छिन रिसाई छिन सैन बुलावे।।
इस चौपाई में कौन-सा रस है?
(a) संयोग शृंगार (b) वियोग शृंगार
(c) करुण रस (d) अद्‌भुत रस

**9.** आचार्य भरत ने सर्वाधिक सुखात्मक रस किसे माना है?
(a) शृंगार रस (b) हास्य रस (c) वीर रस (d) शान्त रस

**10.** आलम्बन तथा उद्‌दीपन द्वारा आश्रय के हृदय में स्थायी भाव जागृत होने पर आश्रय में जो चेष्टाएँ होती हैं, उन्हें क्या कहते हैं?
(a) विभाव (b) अनुभाव
(c) उद्‌दीपन (d) संचारी भाव

**11.** मज्जा मांस रुधिर पतनारे।
सूनि मिचली कस होइ निहारे।।
पंक्ति में कौन-सा रस है?
(a) रौद्र (b) अद्‌भुत
(c) बीभत्स (d) भयानक

**12.** वीभत्स रस का स्थायीभाव है
(a) निर्वेद (b) विस्मय (c) क्रोध (d) जुगुप्सा

**13.** सर्वाधिक प्राचीन सम्प्रदाय कौन है?
(a) रीति (b) रस
(c) वक्रोक्ति (d) अलंकार

**14.** जग असार संकट पुनि नाना।
विकल विरत चित साधु समाना।।
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(a) वात्सल्य रस (b) वीर रस
(c) शान्त रस (d) करुण रस

**15.** असूया क्या है?
(a) एक काव्य दोष (b) एक काव्य गुण
(c) एक अलंकार (d) एक संचारी भाव

**16.** अखियाँ हरि दरसन की भूखी। (राजस्व विभाग उ.प्र. लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
कैसे रहें रूप रस राँची, ए बतियाँ सुनि रूखीं।
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(a) संयोग शृंगार रस (b) वीर रस
(c) वियोग शृंगार रस (d) शान्त रस

**17.** करुण रस का स्थायी भाव क्या है? (राजस्व विभाग उ.प्र. लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) शोक (b) रति
(c) हास्य (d) उत्साह

**18.** शान्त रस का स्थायी भाव है (यू.पी.एस.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) शृंगार (b) ग्लानि
(c) निर्वेद (d) रति

**19.** स्थायी भावों की कुल संख्या है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) 12 (b) 13
(c) 14 (d) 09

**20.** विस्मय स्थायी भाव किस रस में होता है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) हास्य (b) शान्त
(c) अद्‌भुत (d) वीर

### उत्तरमाला

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. (a) | 2. (b) | 3. (a) | 4. (b) | 5. (d) |
| 6. (c) | 7. (d) | 8. (a) | 9. (b) | 10. (b) |
| 11. (c) | 12. (d) | 13. (b) | 14. (c) | 15. (d) |
| 16. (c) | 17. (a) | 18. (c) | 19. (d) | 20. (c) |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# छन्द

जिस रचना में मात्राओं और वर्णों की विशेष व्यवस्था तथा संगीतात्मक लय और गति की योजना रहती है, उसे 'छन्द' कहते हैं। ऋग्वेद के पुरुषसूक्त के नवम् छन्द में 'छन्द' की उत्पत्ति ईश्वर से बताई गई है। लौकिक संस्कृत के छन्दों का जन्मदाता वाल्मीकि को माना गया है। आचार्य पिंगल ने 'छन्दसूत्र' में छन्द का सुसम्बद्ध वर्णन किया है, अत: इसे छन्दशास्त्र का आदि ग्रन्थ माना जाता है। छन्दशास्त्र को 'पिंगलशास्त्र' भी कहा जाता है। हिन्दी साहित्य मे छन्दशास्त्र की दृष्टि से प्रथम कृति 'छन्दमाला' है। छन्द के संघटक तत्त्व आठ हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है—

1. **चरण** छन्द कुछ पंक्तियों का समूह होता है और प्रत्येक पंक्ति में समान वर्ण या मात्राएँ होती हैं। इन्हीं पंक्तियों को 'चरण' या 'पाद' कहते हैं। प्रथम व तृतीय चरण को 'विषम' तथा दूसरे और चौथे चरण को 'सम' कहते हैं।
2. **वर्ण** ध्वनि की मूल इकाई को 'वर्ण' कहते हैं। वर्णों के सुव्यवस्थित समूह या समुदाय को 'वर्णमाला' कहते हैं। छन्दशास्त्र में वर्ण दो प्रकार के होते हैं—'लघु' और 'गुरु'।
3. **मात्रा** वर्णों के उच्चारण में जो समय लगता है, उसे 'मात्रा' कहते हैं। लघु वर्णों की मात्रा एक और गुरु वर्णों की मात्राएँ दो होती हैं। लघु को '।' तथा गुरु को ऽ द्वारा व्यक्त करते हैं।
4. **क्रम** वर्ण या मात्रा की व्यवस्था को 'क्रम' कहते हैं; जैसे—यदि "राम कथा मन्दाकिनी चित्रकूट चित चारु" दोहे के चरण को 'चित्रकूट चित चारु, रामकथा मन्दाकिनी' रख दिया जाए तो सारा क्रम बिगड़कर सोरठा का चरण हो जाएगा।
5. **यति** छन्दों को पढ़ते समय बीच-बीच में कुछ रुकना पड़ता है। इन्हीं विराम स्थलों को 'यति' कहते हैं। सामान्यत: छन्द के चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण के अन्त में 'यति' होती है।
6. **गति** 'गति' का अर्थ 'लय' है। छन्दों को पढ़ते समय मात्राओं के लघु अथवा दीर्घ होने के कारण जो विशेष स्वर लहरी उत्पन्न होती है, उसे ही 'गति' या 'लय' कहते हैं।
7. **तुक** छन्द के प्रत्येक चरण के अन्त में स्वर-व्यंजन की समानता को 'तुक' कहते हैं। जिस छन्द में तुक नहीं मिलता है, उसे 'अतुकान्त' और जिसमें तुक मिलता है, उसे 'तुकान्त' छन्द कहते हैं।
8. **गण** तीन वर्णों के समूह को 'गण' कहते हैं। गणों की संख्या आठ है—यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण। इन गणों के नाम रूप 'यमातराजभानसलगा' सूत्र द्वारा सरलता से ज्ञात हो जाते हैं। उल्लेखनीय है कि इन गणों के अनुसार मात्राओं का क्रम वार्णिक वृत्तों या छन्दों में होता है, मात्रिक छन्द इस बन्धन से मुक्त हैं। गणों के नाम, सूत्र चिह्न और उदाहरण इस प्रकार हैं—

| गण | सूत्र | चिह्न | उदाहरण |
|---|---|---|---|
| यगण | यमाता | ।ऽऽ | बहाना |
| मगण | मातारा | ऽऽऽ | आज़ादी |
| तगण | ताराज | ऽऽ। | बाज़ार |
| रगण | राजभा | ऽ।ऽ | नीरजा |
| जगण | जभान | ।ऽ। | महेश |
| भगण | भानस | ऽ।। | मानस |
| नगण | नसल | ।।। | कमल |
| सगण | सलगा | ।।ऽ | ममता |

## छन्द के प्रकार

छन्द चार प्रकार के होते हैं—(i) वर्णिक (ii) मात्रिक (iii) उभय (iv) मुक्तक या स्वच्छन्द। मुक्तक छन्द को छोड़कर शेष-वर्णिक, मात्रिक और उभय छन्दों के तीन-तीन उपभेद हैं, ये तीन उपभेद निम्न प्रकार है—

(i) **सम** छन्द के चार चरण होते हैं और चारों की मात्राएँ या वर्ण समान ही होते हैं; जैसे—चौपाई, इन्द्रवज्रा आदि

(ii) **अर्द्धसम** छन्द के पहले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे चरणों की मात्राओं या वर्णों में परस्पर समानता होती है जैसे—दोहा, सोरठा आदि।

(iii) **विषम** नाम से ही स्पष्ट है। इसमें चार से अधिक, छ: चरण होते हैं और वे एक समान (वजन के) नहीं होते; जैसे—कुण्डलियाँ, छप्पय आदि।

## छन्दों का विवेचन

### वर्णिक छन्द

जिन छन्दों की रचना वर्णों की गणना के आधार पर की जाती है उन्हें वर्णवृत्त या वर्णिक छन्द कहते हैं। प्रतियोगिता परीक्षाओं की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वर्णिक छन्दों का विवेचन इस प्रकार है—

#### 1. इन्द्रवज्रा

इसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं, पाँचवें या छठे वर्ण पर यति होती है। इसमें दो तगण (ऽऽ।, ऽऽ।), एक जगण (।ऽ।) तथा अन्त में दो गुरु (ऽऽ) होते हैं; जैसे—

ऽ ऽ ।ऽ ऽ। ।ऽ।। ऽ
"जो मैं नया ग्रन्थ विलोकता हूँ,
भाता मुझे सो नव मित्र सा है।
देखूँ उसे मैं नित सार वाला,
मानो मिला मित्र मुझे पुराना।"

#### 2. उपेन्द्रवज्रा

इसके भी प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं, पाँचवें व छठे वर्ण पर यति होती है। इसमें जगण (।ऽ।), तगण (ऽऽ।), जगण (।ऽ।) तथा अन्त में दो गुरु (ऽऽ) होते हैं; जैसे—

।ऽ । ऽऽ ।। ऽ। ऽऽ
"बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजै।
परन्तु पूर्वापर सोच लीजै।।
बिना विचारे यदि काम होगा।
कभी न अच्छा परिणाम होगा।।"

**विशेष** *इन्द्रवज्रा का पहला वर्ण गुरु होता है, यदि इसे लघु कर दिया जाए तो 'उपेन्द्रवज्रा' छन्द बन जाता है।*

#### 3. वसन्ततिलका

इस छन्द के प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण होते हैं। वर्णों के क्रम में तगण (ऽऽ।), भगण (ऽ।।), दो जगण (।ऽ।,।ऽ।) तथा दो गुरु (ऽऽ) रहते हैं; जैसे—

ऽ ऽ ।ऽ ।।। ऽ ।।ऽ।ऽ ऽ
"भू में रमी शरद की कमनीयता थी।
नीला अनंत नभ निर्मल हो गया था।।"

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

## 4. मालिनी मञ्जुमालिनी

इस छन्द में 15 वर्ण होते हैं तथा आठवें व सातवें वर्ण पर यति होती है। वर्णों के क्रम में दो नगण (।।।, ।।।), एक मगण (ऽऽऽ) तथा दो यगण (।ऽऽ, ।ऽऽ) होते हैं; जैसे—

।। ।। ।। ऽऽ ऽ। ऽऽ ।ऽ ऽ
"प्रिय पति वह मेरा, प्राण प्यारा कहाँ है?
दुःख जलधि में डूबी, का सहारा कहाँ है?
अब तक जिसको मैं, देख के जी सकी हूँ;
वह हृदय हमारा, नेत्र-तारा कहाँ है?"

## 5. मन्दाक्रान्ता

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक मगण (ऽऽऽ), एक भगण (ऽ।। ), एक नगण (।।। ), दो तगण (ऽऽ।,ऽऽ।) तथा दो गुरु (ऽऽ) मिलाकर 17 वर्ण होते हैं। चौथे, छठवें तथा सातवें वर्ण पर यति होती है; जैसे—

ऽऽ ऽऽ ।। ।। ।ऽ ऽ ।ऽ ऽ। ऽऽ
"तारे डूबे तम टल गया छा गई व्योम लाली।
पंछी बोले तमचुर जगे ज्योति फैली दिशा में ।।"

## 6. शिखरिणी

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक यगण (।ऽऽ), एक मगण (ऽऽऽ), एक नगण (।।।), एक सगण (।।ऽ), एक भगण (ऽ।।), एक लघु (।) एवं एक गुरु (ऽ) होता है। इसमें 17 वर्ण तथा छः वर्णों पर यति होता है; जैसे—

।ऽऽ ऽऽ ऽ ।।। ।।ऽ ऽ ।।। ऽ
"अनूठी आभा से, सरस सुषमा से सुरस से।
बना जो देती थी, वह गुणमयी भू विपिन को।।
निराले फूलों की, विविध दल वाली अनुपम।
जड़ी-बूटी हो बहु फलवती थी विलसती।।"

## 7. वंशस्थ

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक जगण (।ऽ।), एक तगण (ऽऽ।), एक जगण (।ऽ।) और एक रगण (ऽ।ऽ) के क्रम में 12 वर्ण होते हैं; जैसे—

। ऽ।ऽ ऽ ।।ऽ ।ऽ। ऽ
"न कालिमा है मिटती कपाल की।
न बाप को है पड़ती कुमारिका।
प्रतीति होती यह थी विलोक के,
तपोमयी सी तनया तमारि की।।"

## 8. द्रुतविलम्बित

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक नगण (।।।), दो भगण (ऽ।।, ऽ।।) और एक रगण (ऽ।ऽ) के क्रम से 12 वर्ण होते हैं, चार-चार वर्णों पर यति होती है; जैसे—

।।। ऽ ।।ऽ। ।ऽ। ऽ
"दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरुशिखा पर थी अब राजती,
कमलनी कुल वल्लभ की प्रभा।।"

## 9. मत्तगयन्द (मालती)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में सात भगण (ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।) और अन्त में दो गुरु (ऽऽ) के क्रम से 23 वर्ण होते हैं; जैसे—

ऽ। ।ऽ। ।ऽ। ।ऽ। ।ऽ।। ऽ। ।ऽ।। ऽऽ
"शेष महेश गनेश सुरेश, दिनेशहु जाहि निरन्तर गावै।
नारद से शुक व्यास रटैं, पचि हारे तऊ पुनि पार न पावै।।"

## 10. सुन्दरी सवैया

इस छन्द के प्रत्येक चरण में आठ सगण (।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ) और अन्त में एक गुरु (ऽ) मिलाकर 25 वर्ण होते हैं; जैसे—

।। ऽ।। ऽ।। ऽ। ।ऽ।। ऽ।। ऽ। ।ऽ। ।ऽऽ
"पद कोमल स्यामल गौर कलेवर राजत कोटि मनोज लजाए।
कर बान सरासन सीस जटासरसीरुह लोचन सोन सहाए।
जिन देखे रखी सतभायहु तै, तुलसी तिन तो मह फेरि न पाए।
यहि मारग आज किसोर वधू, बैसी समेत सुभाई सिधाए।"

## मात्रिक छन्द

यह छन्द मात्रा की गणना पर आधृत रहता है, इसलिए इसका नामक मात्रिक छन्द है। जिन छन्दों में मात्राओं की समानता के नियम का पालन किया जाता है किन्तु वर्णों की समानता पर ध्यान नहीं दिया जाता, उन्हें मात्रिक छन्द कहा जाता है। मात्रिक छन्दों का विवेचन इस प्रकार है

## 1. चौपाई

यह सममात्रिक छन्द है, इसमें चार चरण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। चरण के अन्त में दो गुरु होते हैं; जैसे—

ऽ।। ।। ।। ।।। ।।ऽ ।।। ।ऽ। ।।। ।।ऽऽ = 16 मात्राएँ
"बंदउँ गुरु पद पदुम परागा, सुरुचि सुवास सरस अनुरागा
अमिय मूरिमय चूरन चारू, समन सकल भवरुज परिवारू

## 2. रोला (काव्यछन्द)

यह चार चरण वाला मात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं तथा 11 व 13 मात्राओं पर 'यति' होती है। इसके चारों चरणों की ग्यारहवीं मात्रा लघु रहने पर, इसे काव्यछन्द भी कहते हैं; जैसे—

ऽ ऽऽ ।। ।।। ।ऽ ऽ ।ऽ ।।। ऽ = 24 मात्राएँ
है दबा यह नियम, सृष्टि में सदा अटल है।
रह सकता है वही, सुरक्षित जिसमें बल है।।
निर्बल का है नहीं, जगत् में कहीं ठिकाना।
रक्षा साधक उसे, प्राप्त हो चाहे नाना।।

## 3. हरिगीतिका

यह चार चरण वाला सममात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं अन्त में लघु और गुरु होता है तथा 16 व 12 मात्राओं पर यति होती है; जैसे—

।। ऽ। ऽ।। ।।। ऽ।। ।।। ऽ।। ऽ।ऽ = 28 मात्राएँ
"मन जाहि राँचेउ मिलहि सोवर सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेह जानत रावरो।।
इहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषित अली।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।"

**अथवा**

'हरिगीतिका' शब्द चार बार लिखने से उक्त छन्द का एक चरण बन जाता है। जैसे— ।।ऽ।ऽ ।।ऽ।ऽ ।।ऽ।ऽ ।।ऽ।ऽ = 28 मात्राएँ
हरिगीतिका, हरिगीतिका, हरिगीतिका, हरिगीतिका

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

### 4. दोहा

यह अर्द्धसममात्रिक छन्द है। इसमें 24 मात्राएँ होती हैं। इसके विषम चरण (प्रथम व तृतीय) में 13-13 तथा सम चरण (द्वितीय व चतुर्थ) में 11-11 मात्राएँ होती हैं; जैसे—

SS II SS IS SS SII SI = 24 मात्राएँ
"मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे, स्याम हरित दुति होय।।"

### 5. सोरठा

यह भी अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। यह दोहा का विलोम है, इसके प्रथम व तृतीय चरण में 11-11 और द्वितीय व चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं; जैसे—

II SII S SI SI ISS IIIS = 24 मात्राएँ
"मुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहँसे करुना ऐन, चितइ जानकी लखन तन।।"

### 6. उल्लाला

इसके प्रथम और तृतीय चरण में 15-15 मात्राएँ होती हैं तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं; जैसे-

हे शरणदायिनी देवि तू, करती सबका त्राण है।
हे मातृभूमि! संतान हम, तू जननी, तू प्राण है।

### 7. छप्पय

यह छः चरण वाला विषम मात्रिक छन्द है। इसके प्रथम चार चरण **रोला** के तथा अन्तिम दो चरण **उल्लाला** के होते हैं; जैसे—

"नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारा मण्डल हैं।
बन्दी जन खगवृन्द शेष फन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद हैं बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।।"

### 8. बरवै

बरवै के प्रथम और तृतीय चरण में 12 तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 7 मात्राएँ होती हैं, इस प्रकार इसकी प्रत्येक पंक्ति में 19 मात्राएँ होती हैं; जैसे—

IIS SI SI II SI I SI = 19 मात्राएँ
तुलसी राम नाम सम मीत न आन।
जो पहुँचाव रामपुर तनु अवसान।।

### 9. गीतिका

गीतिका में 26 मात्राएँ होती हैं, 14-12 पर यति होती है। चरण के अन्त में लघु-गुरु होना आवश्यक है; जैसे—

SI SS S ISS SIS IIS IS = 26 मात्राएँ
साधु-भक्तों में सुयोगी, संयमी बढ़ने लगे।
सभ्यता की सीढ़ियों पै, सूरमा चढ़ने लगे।।
वेद-मन्त्रों को विवेकी, प्रेम से पढ़ने लगे।
बंचकों की छातियों में शूल-से गड़ने लगे।

### 10. वीर (आल्हा)

वीर छन्द के प्रत्येक चरण में 16, 15 पर यति देकर 31 मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में गुरु-लघु होना आवश्यक है; जैसे—

II II S SSI III II SI IS S SII SI = 31 मात्राएँ
"हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह।
एक पुरुष भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय-प्रवाह।।"

### 11. कुण्डलिया

यह छः चरण वाला विषम मात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। इसके प्रथम दो चरण **दोहा** और बाद के चार चरण **रोला** के होते हैं। ये दोनों छन्द कुण्डली के रूप में एक दूसरे से गुँथे रहते हैं, इसीलिए इसे कुण्डलिया छन्द कहते हैं; जैसे—

"पहले दो दोहा रहैं, रोला अन्तिम चार।
रहें जहाँ चौबीस कला, कुण्डलिया का सार।
कुण्डलिया का सार, चरण छः जहाँ बिराजे।
दोहा अन्तिम पाद, सुरोला आदिहि छाजे।
पर सबही के अन्त शब्द वह ही दुहराले।
दोहा का प्रारम्भ, हुआ हो जिससे पहले।"

## मध्यान्तर प्रश्नावली

**1.** हिन्दी साहित्य में छन्दशास्त्र की दृष्टि से पहली कृति कौन है?
(a) छन्दमाला (b) छन्दसार
(c) छन्दोर्णव पिंगल (d) छन्दविचार

**2.** छन्द पढ़ते समय आने वाले विराम को कहते हैं
(a) गति (b) यति (c) तुक (d) गण

**3.** गणों की सही संख्या है
(a) छः (b) आठ (c) दस (d) बारह

**4.** दोहा और सोरठा किस प्रकार के छन्द हैं?
(a) समवर्णिक (b) सममात्रिक
(c) अर्द्धसममात्रिक (d) विषम मात्रिक

**5.** दोहा और रोला के संयोग से बनने वाला छन्द है
(पी.जी.टी. हिन्दी परीक्षा 2011)
(a) पीयूष वर्ष (b) तोटक (c) छप्पय (d) कुण्डलिया

**6.** बन्दउँ गुरुपद कंज कृपा सिन्धु नररूप हरि।
महामोहतम पुंज, जासु वचन रविकर निकर।।
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है (टी.जी.टी. परीक्षा 2011)
(a) सोरठा (b) दोहा (c) बरवै (d) रोला

**7.** "कहते हुए यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।।
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है
(a) बरवै (b) चौपाई (c) गीतिका (d) सोरठा

**8.** सेस महेश गणेश सुरेश, दिनेसहु जाहि निरन्तर गावैं।
नारद से सुक व्यास रटैं, पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।।
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है
(a) मालती (b) वंशस्थ (c) शिखरिणी (d) मन्दाक्रान्ता

**9.** शिल्पगत आधार पर दोहे का उल्टा छन्द है
(उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) रोला (b) चौपाई (c) सोरठा (d) बरवै

**10.** चौपाई के प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती हैं
(उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) 11 (b) 13 (c) 15 (d) 16

**उत्तरमाला**

**1.** (a) **2.** (b) **3.** (b) **4.** (c) **5.** (d) **6.** (a) **7.** (c) **8.** (a) **9.** (c) **10** (d

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# अलंकार

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को **अलंकार** कहते हैं। अलंकार के चार भेद हैं—(i) शब्दालंकार, (ii) अर्थालंकार, (iii) उभयालंकार और (iv) पाश्चात्य अलंकार।

## अलंकार का विवेचन

### शब्दालंकार

काव्य में शब्दगत चमत्कार को शब्दालंकार कहते हैं। शब्दालंकार मुख्य रुप से सात हैं, जो निम्न प्रकार हैं—अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्तिप्रकाश, पुनरुक्तिवदाभास और वीप्सा आदि।

### 1. अनुप्रास अलंकार

एक या अनेक वर्णों की पास-पास तथा क्रमानुसार आवृत्ति को 'अनुप्रास अलंकार' कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं—

(i) **छेकानुप्रास** जहाँ एक या अनेक वर्णों की एक ही क्रम में एक बार आवृत्ति हो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है; जैसे—

"इस करुणा कलित हृदय में,
अब विकल रागिनी बजती"।

यहाँ करुणा कलित में छेकानुप्रास है।

(ii) **वृत्यानुप्रास** काव्य में पाँच वृत्तियाँ होती हैं—मधुरा, ललिता, प्रौढ़ा, परुषा और भद्रा। कुछ विद्वानों ने तीन वृत्तियों को ही मान्यता दी है—उपनागरिका, परुषा और कोमला। इन वृत्तियों के अनुकूल वर्ण साम्य को वृत्यानुप्रास कहते हैं; जैसे—

'कंकन, किंकिनि, नूपुर, धुनि, सुनि'

यहाँ पर 'न' की आवृत्ति पाँच बार हुई है और कोमला या मधुरा वृत्ति का पोषण हुआ है। अत: यहाँ वृत्यानुप्रास है।

(iii) **श्रुत्यनुप्रास** जहाँ एक ही उच्चारण स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है, वहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार होता है; जैसे—

'तुलसीदास सीदति निसिदिन देखत तुम्हार निठुराई'

यहाँ 'त', 'द', 'स', 'न' एक ही उच्चारण स्थान (दन्त्य) से उच्चरित होने वाले वर्णों की कई बार आवृत्ति हुई है, अत: यहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार है।

(iv) **अन्त्यानुप्रास अलंकार** जहाँ पद के अन्त के एक ही वर्ण और एक ही स्वर की आवृत्ति हो, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है; जैसे—

"जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर"।।

यहाँ दोनों पदों के अन्त में 'आगर' की आवृत्ति हुई है, अत: अन्त्यानुप्रास अलंकार है।

(v) **लाटानुप्रास** जहाँ समानार्थक शब्दों या वाक्यांशों की आवृत्ति हो परन्तु अर्थ में अन्तर हो, वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है; जैसे—

"पूत सपूत, तो क्यों धन संचय?
पूत कपूत, तो क्यों धन संचय"?

यहाँ प्रथम और द्वितीय पंक्तियों में एक ही अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग हुआ है परन्तु प्रथम और द्वितीय पंक्ति में अन्तर स्पष्ट है, अत: यहाँ लाटानुप्रास अलंकार है।

### 2. यमक अलंकार

जहाँ एक शब्द या शब्द समूह अनेक बार आए किन्तु उनका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है; जैसे—

"जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे हैं"

यहाँ पर 'तारे' शब्द दो बार आया है। प्रथम का अर्थ 'तारण करना' या 'उद्धार करना' है और द्वितीय 'तारे' का अर्थ 'तारागण' है, अत: यहाँ यमक अलंकार है।

### 3. श्लेष अलंकार

जहाँ एक ही शब्द के अनेक अर्थ निकलते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है; जैसे—

"रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।।"

यहाँ 'पानी' के तीन अर्थ हैं—'कान्ति', 'आत्मसम्मान' और 'जल', अत: यहाँ श्लेष अलंकार है।

### 4. वक्रोक्ति अलंकार

जहाँ पर वक्ता द्वारा भिन्न अभिप्राय से व्यक्त किए गए कथन का श्रोता 'श्लेष' या 'काकु' द्वारा भिन्न अर्थ की कल्पना कर लेता है, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है। इसके दो भेद हैं—श्लेष वक्रोक्ति और काकु वक्रोक्ति।

(i) **श्लेष वक्रोक्ति** जहाँ शब्द के श्लेषार्थ के द्वारा श्रोता वक्ता के कथन से भिन्न अर्थ अपनी रुचि या परिस्थिति के अनुकूल अर्थ ग्रहण करता है, वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है; जैसे—

'गिरजे तुव भिक्षु आज कहाँ गयो,
जाइ लखौ बलिराज के द्वारे।
व नृत्य करै नित ही कित है,
ब्रज में सखि सूर-सुता के किनारे।
पशुपाल कहाँ? मिलि जाइ कहूँ,
वह चारत धेनु अरण्य मँझारे।।"

(ii) **काकु वक्रोक्ति** जहाँ किसी कथन का कण्ठ की ध्वनि के कारण दूसरा अर्थ निकलता है, वहाँ काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है; जैसे—

"मैं सुकुमारि, नाथ वन जोगू।
तुमहिं उचित तप मो कहँ भोगू।।"

### 5. पुनरुक्तिप्रकाश

इस अलंकार में कथन के सौन्दर्य के बहाने एक ही शब्द की आवृत्ति को पुनरुक्तिप्रकाश कहते हैं; जैसे—

"ठौर-ठौर विहार करती सुन्दरी
सुरनारियाँ।"

यहाँ 'ठौर-ठौर' की आवृत्ति में पुनरुक्तिप्रकाश है। दोनों 'ठौर' का अर्थ एक ही है परन्तु पुनरुक्ति से कथन में बल आ गया है।

### 6. पुनरुक्तिवदाभास

जहाँ कथन में पुनरुक्ति का आभास होता है, वहाँ पुनरुक्तिवदाभास अलंकार होता है; जैसे—"पुनि फिरि राम निकट सो आई।"

यहाँ 'पुनि' और 'फिरि' का समान अर्थ प्रतीत होता है, परन्तु पुनि का अर्थ-पुन: (फिर) है और 'फिरि' का अर्थ-लौटकर होने से पुनरुक्तिवदाभास अलंकार है।

### 7. वीप्सा

जब किसी कथन में अत्यन्त आदर के साथ एक शब्द की अनेक बार आवृत्ति होती है तो वहाँ वीप्सा अलंकार होता है; जैसे—

"हा! हा!! इन्हें रोकन को टोक न लगावो तुम।"

यहाँ 'हा!' की पुनरुक्ति द्वारा गोपियों का विरह जनित आवेग व्यक्त होने से वीप्सा अलंकार है।

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

## अर्थालंकार

साहित्य में अर्थगत चमत्कार को अर्थालंकार कहते हैं। प्रमुख अर्थालंकार मुख्य रूप से तेरह हैं—उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रान्तिमान, सन्देह, दृष्टान्त, अतिशयोक्ति, विभावना, अन्योक्ति, विरोधाभास, विशेषोक्ति, प्रतीप, अर्थान्तरन्यास आदि।

### 1. उपमा

समान धर्म के आधार पर जहाँ एक वस्तु की समानता या तुलना किसी दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उपमा के चार अंग हैं—

(i) **उपमेय** वर्णनीय वस्तु जिसकी उपमा या समानता दी जाती है, उसे 'उपमेय' कहते हैं; जैसे—उसका मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है। वाक्य में 'मुख' की चन्द्रमा से समानता बताई गई है, अत: मुख उपमेय है।

(ii) **उपमान** जिससे उपमेय की समानता या तुलना की जाती है उसे उपमान कहते हैं; जैसे—उपमेय (मुख) की समानता चन्द्रमा से की गई है, अत: चन्द्रमा उपमान है।

(iii) **साधारण धर्म** जिस गुण के लिए उपमा दी जाती है, उसे साधारण धर्म कहते हैं। उक्त उदाहरण में सुन्दरता के लिए उपमा दी गई है, अत: सुन्दरता साधारण धर्म है।

(iv) **वाचक** शब्द जिस शब्द के द्वारा उपमा दी जाती है, उसे वाचक शब्द कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरण में समान शब्द वाचक है। इसके अलावा 'सी', 'सम', 'सरिस' सदृश शब्द उपमा के वाचक होते हैं। उपमा के तीन भेद हैं—पूर्णोपमा, लुप्तोपमा और मालोपमा।

(क) **पूर्णोपमा** जहाँ उपमा के चारों अंग विद्यमान हों वहाँ पूर्णोपमा अलंकार होता है; जैसे—

"हरिपद कोमल कमल से"

(ख) **लुप्तोपमा** जहाँ उपमा के एक या अनेक अंगों का अभाव हो वहाँ लुप्तोपमा अलंकार होता है; जैसे—

"पड़ी थी बिजली-सी विकराल।
लपेटे थे घन जैसे बाल"।।

(ग) **मालोपमा** जहाँ किसी कथन में एक ही उपमेय के अनेक उपमान होते हैं वहाँ मालोपमा अलंकार होता है; जैसे—

"चन्द्रमा-सा कान्तिमय, मृदु कमल-सा कोमल महा।
कुसुम-सा हँसता हुआ, प्राणेश्वरी का मुख रहा।।"

### 2. रूपक

जहाँ उपमेय में उपमान का निषेधरहित आरोप हो अर्थात् उपमेय और उपमान को एक रूप कह दिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है; जैसे—

"बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डुबो रही तारा-घट ऊषा-नागरी"।

यहाँ अम्बर-पनघट, तारा-घट, ऊषा-नागरी में उपमेय उपमान एक हो गए हैं, अत: रूपक अलंकार है।

### 3. उत्प्रेक्षा

जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना व्यक्त की जाए वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें जनु, मनु, मानो, जानो, इव, जैसे वाचक शब्दों का प्रयोग होता है। उत्प्रेक्षा के तीन भेद हैं—वस्तूत्प्रेक्षा, हेतूत्प्रेक्षा और फलोत्प्रेक्षा।

(i) **वस्तूत्प्रेक्षा** जहाँ एक वस्तु में दूसरी वस्तु की सम्भावना की जाए वहाँ वस्तूत्प्रेक्षा होती है; जैसे—

"उसका मुख मानो चन्द्रमा है।"

(ii) **हेतूत्प्रेक्षा** जब किसी कथन में अवास्तविक कारण को कारण मान लिया जाए तो हेतूत्प्रेक्षा होती है; जैसे—

"पिउ सो कहेव सन्देसड़ा, हे भौंरा हे काग।
सो धनि विरही जरिमुई, तेहिक धुवाँ हम लाग"।।

यहाँ कौआ और भ्रमर के काले होने का वास्तविक कारण विरहिणी के विरहाग्नि में जल कर मरने का धुआँ नहीं हो सकता है फिर भी उसे कारण माना गया है अत: हेतूत्प्रेक्षा अलंकार है।

(iii) **फलोत्प्रेक्षा** जहाँ अवास्तविक फल को वास्तविक फल मान लिया जाए, वहाँ फलोत्प्रेक्षा होती है; जैसे—

"नायिका के चरणों की समानता प्राप्त करने के लिए
कमल जल में तप रहा है।"

यहाँ कमल का जल में तप करना स्वाभाविक है। चरणों की समानता प्राप्त करना वास्तविक फल नहीं है पर उसे मान लिया गया है, अत: यहाँ फलोत्प्रेक्षा है।

### 4. भ्रान्तिमान

जहाँ समानता के कारण एक वस्तु में किसी दूसरी वस्तु का भ्रम हो, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है; जैसे—

"पायँ महावर देन को नाइन बैठी आय।
फिरि-फिरि जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाय।।"

यहाँ नाइन को एड़ी की स्वाभाविक लालिमा में महावर की काल्पनिक प्रतीति हो रही है, अत: यहाँ भ्रान्तिमान अलंकार है।

### 5. सन्देह

जहाँ अति सादृश्य के कारण उपमेय और उपमान में अनिश्चय की स्थिति बनी रहे अर्थात् जब उपमेय में अन्य किसी वस्तु का संशय उत्पन्न हो जाए, तो वहाँ सन्देह अलंकार होता है; जैसे—

"सारी बीच नारी है या नारी बीच सारी है,
कि सारी की नारी है कि नारी की ही सारी।"

यहाँ उपमेय में उपमान का संशयात्मक ज्ञान है अत: यहाँ सन्देह अलंकार है।

### 6. दृष्टान्त

जहाँ किसी बात को स्पष्ट करने के लिए सादृश्यमूलक दृष्टान्त प्रस्तुत किया जाता है, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है; जैसे—

"मन मलीन तन सुन्दर कैसे।
विषरस भरा कनक घट जैसे।।"

यहाँ उपमेय वाक्य और उपमान वाक्य में बिम्ब-प्रतिबिम्ब का भाव है अत: यहाँ दृष्टान्त अलंकार है।

### 7. अतिशयोक्ति

जहाँ किसी विषयवस्तु का उक्ति चमत्कार द्वारा लोकमर्यादा के विरुद्ध बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है; जैसे—

"हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
सारी लंका जरि गई, गए निशाचर भाग।"

यहाँ हनुमान की पूँछ में आग लगने के पहले ही सारी लंका का जलना और राक्षसों के भागने का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन होने से अतिशयोक्ति अलंकार है।

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

### 8. विभावना

जहाँ कारण के बिना कार्य के होने का वर्णन हो, वहाँ विभावना अलंकार होता है; जैसे—

"बिनु पग चलइ सुनइ बिनु काना।
कर बिनु करम करै बिधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बानी बकता बड़ जोगी।।"

यहाँ पैरों के बिना चलना, कानों के बिना सुनना, बिना हाथों के विविध कर्म करना, बिना मुख के सभी रस भोग करना और वाणी के बिना वक्ता होने का उल्लेख होने से विभावना अलंकार है।

### 9. अन्योक्ति

जहाँ किसी वस्तु या व्यक्ति को लक्ष्य कर कही जाने वाली बात दूसरे के लिए कही जाए, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है; जैसे—

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवाल।।"

यहाँ पर अप्रस्तुत के वर्णन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया गया है अत: यहाँ अन्योक्ति अलंकार है।

### 10. विरोधाभास

जहाँ वास्तविक विरोध न होने पर भी विरोध का आभास हो वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है; जैसे—

"या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय।
ज्यों ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों त्यों उज्ज्वल होय।।"

यहाँ पर श्याम (काला) रंग में डूबने से उज्ज्वल होने का वर्णन है अत: यहाँ विरोधाभास अलंकार है।

### 11. विशेषोक्ति

जहाँ कारण के रहने पर भी कार्य नहीं होता है वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है; जैसे—

"पानी बिच मीन पियासी।
मोहि सुनि सुनि आवै हासी।।"

### 12. प्रतीप

प्रतीप का अर्थ है—'उल्टा या विपरीत'। जहाँ उपमेय का कथन उपमान के रूप में तथा उपमान का उपमेय के रूप में किया जाता है, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है; जैसे— "उतरि नहाए जमुन जल, जो शरीर सम स्याम"

यहाँ यमुना के श्याम जल की समानता रामचन्द्र के शरीर से देकर उसे उपमेय बना दिया है, अत: यहाँ प्रतीप अलंकार है।

### 13. अर्थान्तरन्यास

जहाँ किसी सामान्य बात का विशेष बात से तथा विशेष बात का सामान्य बात से समर्थन किया जाए, वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है; जैसे—

"सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सुहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय।।"

## उभयालंकार

जो शब्द और अर्थ दोनों में चमत्कार की वृद्धि करते हैं, उन्हें उभयालंकार कहते हैं। इसके दो भेद हैं

(i) **संकर** जहाँ पर दो या अधिक अलंकार आपस में 'नीर-क्षीर' के समान सापेक्ष रूप से घुले-मिले रहते हैं, वहाँ 'संकर' अलंकार होता है; जैसे—

"नाक का मोती अधर की कान्ति से,
बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से।
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,
सोचता है अन्य शुक यह कौन है?"

(ii) **संसृष्टि** जहाँ दो अथवा दो से अधिक अलंकार परस्पर मिलकर भी स्पष्ट रहें, वहाँ 'संसृष्टि' अलंकार होता है; जैसे—

तिरती गृह वन मलय समीर,
साँस, सुधि, स्वप्न, सुरभि, सुखगान।
मार केशर-शर, मलय समीर,
हृदय हुलसित कर पुलकित प्राण।

## पाश्चात्य अलंकार

हिन्दी साहित्य पर पाश्चात्य प्रभाव पड़ने के फलस्वरूप पाश्चात्य अलंकारों का समावेश हुआ है। प्रमुख पाश्चात्य अलंकार है—मानवीकरण, भावोक्ति, ध्वन्यात्मकता और विरोध चमत्कार। परीक्षा की दृष्टि से मानवीकरण अलंकार ही महत्त्वपूर्ण है, इसलिए यहाँ उसी का विवरण दिया गया है।

**मानवीकरण** जहाँ प्रकृति पदार्थ अथवा अमूर्त भावों को मानव के रूप में चित्रित किया जाता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे—

"दिवसावसान का समय, मेघमय आसमान से उतर
रही है।
वह संध्या-सुन्दरी परी-सी, धीरे-धीरे-धीरे।"

यहाँ संध्या को सुन्दर परी के रूप में चित्रित किया गया है, अत: यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## मध्यान्तर प्रश्नावली

1. 'सन्देसनि मधुबन-कूप भरे' में कौन-सा अलंकार है?
(उत्तराखण्ड समूह-ग भर्ती परीक्षा 2014)
(a) उपमा (b) अतिशयोक्ति
(c) अनुप्रास (d) इनमें से कोई नहीं

2. 'काली घटा का घमण्ड घटा' उपरोक्त पंक्ति
(राजस्व विभाग उ.प्र. लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) रूपक (b) यमक
(c) उपमा (d) उत्प्रेक्षा

3. "अम्बर-पनघट में डुबो रही, तारा-घट ऊषा-नागरी" में कौन-सा अलंकार है? (राजस्व विभाग, उ.प्र. लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) श्लेष (b) रूपक (c) उपमा (d) अनुप्रास

4. 'उदित उदय-गिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग' में कौन-सा अलंकार है?
(छत्तीसगढ़ सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा 2013)
(a) उपमा (b) रूपक (c) उत्प्रेक्षा (d) भ्रान्तिमान

5. 'खिली हुई हवा आई फिरकी सी आई, चली गई' पंक्ति में अलं
(यू.पी.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) सम्भावना (b) उत्प्रेक्षा (c) उपमा (d) अनुप्रास

6. "पापी मनुज भी आज मुख से, राम नाम निकालते" इस काव्य पंक्ति में अलंकार है (यू.पी.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) विभावना (b) उदाहरण (c) विरोधाभास (d) दृष्टान्त

7. "दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुन्दरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे।"
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है (उप-निरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) उपमा (b) रूपक
(c) यमक (d) इनमें से कोई नहीं

8. "तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।"
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(उप-निरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) यमक (b) उत्प्रेक्षा
(c) उपमा (d) अनुप्रास

9. 'अब रही गुलाब में अपत कटीली डार।'
उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है (उप-निरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) रूपक (b) यमक
(c) अन्योक्ति (d) पुनरुक्ति

10. "पट-पीत मानहुँ तड़ित रुचि, सुचि नौमि जनक सुतावरं।"
उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है (उप-निरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) उपमा (b) रूपक (c) उत्प्रेक्षा (d) उदाहरण

11. 'राम सों राम सिया सों सिया।'
उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है (उप-निरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) रूपक (b) उत्प्रेक्षा (c) उपमा (d) यमक

12. 'जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे हैं।'
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है
(a) विरोधाभास (b) विशेषोक्ति (c) विभावना (d) यमक

13. 'नवजीवन दो घनश्याम हमें' में अलंकार है
(a) यमक (b) श्लेष (c) वीप्सा (d) अनुप्रास

14. 'केकी रव की नुपूर ध्वनि सुन जगती जगती की मूक प्यास' में अलंकार है
(a) अन्योक्ति (b) श्लेष (c) यमक (d) दृष्टान्त

15. 'बिरमौ-बिरमौ। तात तनिक, अब सुनन हेतु बल नाहिं' में अलंकार है
(a) यमक (b) श्लेष (c) वीप्सा (d) अनुप्रास

16. 'रघुपति राघव राजाराम' में अलंकार है
(a) वीप्सा (b) पुनरुक्ति (c) विरोधाभास (d) अनुप्रास

17. कै कै कारन रोवै बाला। जनु टूटै मोतिन्ह कै माला।।
उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है
(a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा (c) रूपक (d) सन्देह

18. जहाँ देखने सुनने में तो निन्दा-सी प्रतीत होती है पर होती है प्रशंसा, वह कौन-सा अलंकार होता है?
(a) असंगत (b) व्याजस्तुति
(c) पर्यायोक्ति (d) वक्रोक्ति

19. 'उल्का सी रानी दिशा दीप्त करती थी' वाक्य में उपमान है
उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है
(a) उल्का (b) रानी
(c) सी (d) दीप्त

20. "अधरों पर अलि मँडराते, केशों पर मुग्ध पपीहा"
(a) सन्देह (b) भ्रान्तिमान
(c) वीप्सा (d) उत्प्रेक्षा

### उत्तरमाला

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. (a) | 2. (b) | 3. (b) | 4. (a) | 5. (c |
| 6. (c) | 7. (d) | 8. (d) | 9. (c) | 10. (c |
| 11. (d) | 12. (d) | 13. (b) | 14. (c) | 15. (c |
| 16. (d) | 17. (b) | 18. (d) | 19. (a) | 20. (b |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**1.** 'चरर मरर खुल गए अरर रवस्फुटों से' में कौन-सा अलंकार है?
(a) अनुप्रास (b) यमक
(c) श्लेष (d) उत्प्रेक्षा

**2.** कोई भी छन्द विभक्त रहता है
(a) यति में (b) चरणों में
(c) 'a' और 'b' दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

**3.** शृंगार रस का स्थायी भाव है
(a) शोक (b) उत्साह
(c) रति (d) हास

**4.** जिस छन्द में चारों चरणों में समान मात्राएँ हों उसे कहते हैं
(a) विषम मात्रिक छन्द (b) सम मात्रिक छन्द
(c) अर्द्धसम मात्रिक छन्द (d) इनमें से कोई नहीं

**5.** 'किलक झरे मैं नेह निहारूँ/इन दाँतों पर मोती वारूँ।।'
इन पंक्तियों में रस है
(a) वीर (b) वात्सल्य
(c) शान्त (d) शृंगार

**6.** 'बड़े न हुजे गुनन बिनु विरद बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सों कनक, गहनों गढ़ो न जाय।।'
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है
(a) श्लेष (b) विरोधाभास
(c) अर्थान्तरन्यास (d) वक्रोक्ति

**7.** 'चरण कमल बन्दौ हरि राई' में कौन-सा अलंकार है?
(a) रूपक (b) श्लेष
(c) अतिशयोक्ति (d) उपमा

**8.** वात्सल्य रस की सर्वप्रथम चर्चा किसने की?
(a) भरत (b) मम्मट
(c) अभिनवगुप्त (d) विश्वनाथ

**9.** छन्द कितने प्रकार के होते हैं? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) एक (b) दो
(c) तीन (d) चार

**10.** 'विस्मय' कौन-सा भाव है? (दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड परीक्षा 2015)
(a) संचायी (b) स्थायी
(c) विभाव (d) अनुभाव

**11.** निम्नलिखित में सम मात्रिक छन्द है
(a) सोरठा (b) दोहा
(c) चौपाई (d) ये सभी

**12.** 'बिटपी बिटपी बँधी पड़ी रह गई मोह के पाश में'
इस पंक्ति में अलंकार है
(a) वृत्यानुप्रास (b) श्रुत्यानुप्रास
(c) अन्त्यानुप्रास (d) लाटानुप्रास

**13.** 'दीप सा हिय जल रहा है, कह दो तुम्हीं कैसे बुझाऊँ' में अलंकार है
(a) लुप्तोपमा (b) मालोपमा
(c) पूर्णोपमा (d) उपमेयोपमा

**14.** 'मूक होई वाचाल, पंगु चढ़ै गिरिवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल, द्रवहूँ सकल कलिगाल दहन।।'
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा छन्द है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2
(a) दोहा (b) सोरठा
(c) सवैया (d) चौपाई

**15.** उत्साह स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भावों में पुष्ट होकर आस्वाद्य हो जाता है, तब कौन-सा रस होता है?
(a) शृंगार रस (b) रौद्र रस
(c) वीर रस (d) करुण रस

**16.** "तन्त्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रतिरंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग।"
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है
(a) परिसंख्या (b) विभावना
(c) विरोधाभास (d) असंगति

**17.** "तीन बरस तक कुत्ता जीवे, सौ तेरह तक जीयै सियार।
बरस अठारह छत्री जीवे, आगे जीवन को धिक्कार।"
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2
(a) सवैया (b) आल्हा
(c) छप्पय (d) घनाक्षरी

**18.** "मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।"
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(a) शान्त (b) शृंगार
(c) करुण (d) हास्य

**19.** जहाँ सामान्य बात का विशेष बात से तथा विशेष बात का सामान्य से समर्थन किया जाए वहाँ होता है
(a) तद्गुण (b) संकर
(c) अर्थान्तरन्यास (d) श्लेष

**20.** 'सुनु सिय सत्य असीस हमारी।
पूजहिं मन कामना तुम्हारी।।'
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 20
(a) बरवै (b) सोरठा
(c) दोहा (d) चौपाई

**21.** जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाए, वहाँ अलंकार होता
(a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा
(c) रूपक (d) भ्रान्तिमान

**22.** "शोभित कर नवनीत लिए
घुटरुनि चलत रेनु तन मण्डित मुख दधि लेप किए।"
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(a) वात्सल्य (b) करुण
(c) शृंगार (d) शान्त

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**23.** "रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरे, मोती मानुष चून।।"
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है
**(उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा/दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड परीक्षा 2015)**
(a) सोरठा (b) दोहा
(c) चौपाई (d) बरवै

**24.** 'दीप-सा मन जल चुका।'
इस पंक्ति में वाचक शब्द है
(a) दीप (b) मन
(c) सा (d) जल चुका

**25.** माधुर्य गुण का किस रस में प्रयोग होता है?
(a) शान्त (b) शृंगार
(c) रौद्र (d) भयानक

**26.** शिल्पगत आधार पर दोहे से उल्टा छन्द है
(a) रोला (b) चौपाई
(c) सोरठा (d) बरवै

**27.** छन्दशास्त्र में वर्ण होते हैं
(a) तीन प्रकार के (b) दो प्रकार के
(c) चार प्रकार के (d) इनमें से कोई नहीं

**28.** शिखरिणी छन्द है
(a) वार्णिक (b) अर्द्ध मात्रिक
(c) सम मात्रिक (d) विषम मात्रिक

**29.** 'उसका मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है।' इस वाक्य में साधारण धर्म है
(a) मुख (b) चन्द्रमा
(c) के समान (d) सुन्दरता

**30.** जहाँ एक शब्द या शब्द समूह अनेक बार आए किन्तु उनका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो वहाँ अलंकार है
(a) यमक (b) श्लेष
(c) वीप्सा (d) अनुप्रास

**31.** अर्द्धसम मात्रिक जाति का छन्द है
(a) रोला (b) दोहा
(c) चौपाई (d) कुण्डलिया

**32.** 'प्रिय पति व मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दुःख जलनिधि-डूबी का सहारा कहाँ है?'
इन पंक्तियों में कौन-सा स्थायी भाव है?
(a) विस्मय (b) रति
(c) शोक (d) क्रोध

**33.** जहाँ एक ही शब्द के अनेक अर्थ निकलते हैं, वहाँ अलंकार है
(a) यमक (b) अनुप्रास
(c) पुनरुक्ति प्रकाश (d) श्लेष

**34.** "कनक-कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाएँ बौराय नर, या पाए बौराय।।"
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है
(a) उपमा (b) अनुप्रास
(c) श्लेष (d) यमक

**35.** जहाँ सममात्रिक छन्द और चार चरण होते हैं, वहाँ छन्द है
(a) दोहा (b) सोरठा (c) गीतिका (d) चौपाई

**36.** रौद्र रस का स्थायी भाव है
(a) भय (b) घृणा (c) क्रोध (d) उत्साह

**37.** "तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती हैं" में अलंकार है
(a) अनुप्रास (b) श्लेष (c) यमक (d) अन्योक्ति

**38.** "अति मलीन वृषभानुकुमारी।
'अधोमुख रहति, उरध नहि' चितवत, ज्यों गथ हारे थकित जुआरी।
छूटे चिहुर बदन कुम्हिलानो, ज्यों नलिनी हिमकट की मारी।।'
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है
(a) अनुप्रास (b) उत्प्रेक्षा
(c) रूपक (d) उपमा

**39.** उधो मोहि ब्रज विसरत नाहीं।
हंससुता की सुन्दर कमरी और द्रुमन की छाँही।।
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(a) शृंगार रस (b) हास्य रस
(c) वीर रस (d) करुण रस

**40.** "नहीं पराग नहि' मधुर मधु, नहिं' विकास इहि काल।
अली कली ही सों बिंध्यौ, आगे कौन हवाल।।"
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है?
(a) रूपक (b) श्लेष
(c) अन्योक्ति (d) उत्प्रेक्षा

**41.** "उस काल मारे क्रोध के, तन काँपने उसका लगा।
मानों हवा के जोर से, सोता हुआ सागर जगा।"
उपरोक्त पंक्तियों में रस है
(a) वीर (b) रौद्र (c) अद्‌भुत (d) करुण

**42.** चार चरण वाला सममात्रिक छन्द जिसमें 28 मात्राएँ होती हैं, वह है
(a) सोरठा (b) कुण्डलिया
(c) हरगीतिका (d) रोला

**43.** "सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
विहँसे करुना नैन, चितइ जानकी लखन तन।।"
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है
(a) दोहा (b) बरवै (c) छप्पय (d) सोरठा

**44.** 'एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय।
बिकल बटोही बीच ही, परयों मूरछा खाय।।'
उपरोक्त पंक्तियों में रस है
(a) शान्त (b) रौद्र
(c) भयानक (d) अद्‌भुत

**45.** "रहिमन जो गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारै लगै, बढ़े अँधेरो होय।।"
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है
(a) उपमा (b) रूपक (c) यमक (d) श्लेष

**46.** "ध्वनि मयी कर के गिरि-कन्दरा,
कलित-कानन-केलि-निकुंज को।"
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है।
(a) छेकानुप्रास (b) वृत्यानुप्रास
(c) लाटानुप्रास (d) यमक

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**47.** 'अवधि शिला का उर पर था गुरु भार।
तिल-तिल काट रही थी दृग जल धार।।'
उपरोक्त पंक्तियों में छन्द है
(a) दोहा (b) सोरठा (c) रोला (d) बरवै

**48.** "सोक बिकल एब रोबहिं रानी।
रूप सीलु बल तेज बखानी।।
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा।
परहिं भूमितल बारहिं बारा।।"
उपरोक्त पंक्तियों में रस है
(a) शान्त (b) वियोग शृंगार
(c) करुण (d) वात्सल्य

**49.** "कुन्द इन्दु सन देह, उमर रमन वरुण अमन" में कौन-सा अलंकार है?
(a) श्लेष (b) उपमा (c) अनुप्रास (d) रूपक

**50.** जहाँ बिना कारण के कार्य का होना पाया जाए वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?
(a) विरोधाभास (b) विशेषोक्ति
(c) विभावना (d) भ्रान्तिमान

**51.** "हम जो कुछ देख रहें है, सुन्दर है सत्य नहीं है।
यह दृश्य जगत भासित है, बिन कर्म शिवत्व नहीं है।"
उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कौन-सा छन्द है?
(a) 14-14 मात्राओं की यति से 28 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द
(b) 10-10 वर्णों की यति से 20 वर्णों वाला वार्णिक छन्द
(c) 13-13 मात्राओं की यति से 26 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द
(d) 15-15 मात्राओं की यति से 30 मात्राओं वाला मात्रिक छन्द

**52.** जहाँ उपमेय में अनेक उपमानों की शंका होती है। वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?
(a) यमक (b) श्लेष (c) सन्देह (d) भ्रान्तिमान

**53.** 'पूत कपूत तो क्यों धन संचय।
पूत सपूत तो क्यों धन संचय।।
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(a) छेकानुप्रास (b) लाटानुप्रास
(c) वृत्यानुप्रास (d) अन्त्यानुप्रास

**54.** वीर या आल्हा किस जाति का छन्द है?
(a) वार्णिक (b) मात्रिक
(c) अर्द्धसम मात्रिक (d) इनमें से कोई नहीं

**55.** वीर रस का स्थायी भाव क्या होता है?
(a) रति (b) उत्साह
(c) हास्य (d) क्रोध

**56.** किस रस को रसराज कहा जाता है?
(a) हास्य (b) शृंगार
(c) वीर (d) शान्त

**57.** "उसी तपस्वी से लम्बे थे, देवदारु दो चार खड़े"
उपरोक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(a) अनुप्रास (b) प्रतीप
(c) रूपक (d) यमक

**58.** मन्दाक्रान्ता छन्द है
(a) मात्रिक (b) सम मात्रिक
(c) वार्णिक (d) इनमें से कोई नहीं

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** (a) | **2.** (c) | **3.** (c) | **4.** (b) | **5.** (b) | **6.** (c) | **7.** (a) | **8.** (b) | **9.** (b) | **10.** (b) |
| **11.** (c) | **12.** (b) | **13.** (c) | **14.** (b) | **15.** (a) | **16.** (c) | **17.** (b) | **18.** (b) | **19.** (c) | **20.** (c) |
| **21.** (b) | **22.** (a) | **23.** (b) | **24.** (c) | **25.** (b) | **26.** (c) | **27.** (b) | **28.** (a) | **29.** (d) | **30.** (a) |
| **31.** (b) | **32.** (c) | **33.** (d) | **34.** (d) | **35.** (d) | **36.** (c) | **37.** (c) | **38.** (b) | **39.** (a) | **40.** (c) |
| **41.** (b) | **42.** (c) | **43.** (d) | **44.** (c) | **45.** (d) | **46.** (c) | **47.** (d) | **48.** (b) | **49.** (d) | **50.** (c) |
| **51.** (b) | **52.** (c) | **53.** (a) | **54.** (c) | **55.** (b) | **56.** (b) | **57.** (b) | **58.** (b) | | |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

23

# हिन्दी साहित्य के स्मरणीय तथ्य

## हिन्दी में सर्वप्रथम

- हिन्दी का प्रथम कवि — सरहपाद (9वीं शताब्दी)
- हिन्दी की प्रथम रचना — श्रावकाचार (देवसेन)
- हिन्दी का प्रथम मौलिक नाटक — नहुष (गोपाल चन्द्र)
- हिन्दी का प्रथम उपन्यास — परीक्षागुरु (श्रीनिवास दास)
- हिन्दी की प्रथम आत्मकथा — अर्द्धकथानक (बनारसी दास जैन)
- हिन्दी की प्रथम जीवनी — दयानन्द दिग्विजय (गोपाल शर्मा)
- हिन्दी का प्रथम रिपोर्ताज — लक्ष्मीपुरा (शिवदान सिंह चौहान)
- हिन्दी का प्रथम यात्रा संस्मरण — लन्दन यात्रा (महादेवी वर्मा)
- हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी — इन्दुमती (किशोरी लाल गोस्वामी)
- हिन्दी की प्रथम वैज्ञानिक कहानी — चन्द्रलोक की यात्रा (केशव प्रसाद सिंह)
- हिन्दी का प्रथम गद्य काव्य — साधना (रायकृष्ण दास)
- हिन्दी खड़ी बोली का प्रथम काव्य ग्रन्थ — एकांतवासी योगी (श्रीधर पाठक)
- हिन्दी की प्रथम अतुकान्त रचना — प्रेमपथिक (जयशंकर प्रसाद)
- हिन्दी छायावाद का प्रथम काव्य-संग्रह — झरना (जयशंकर प्रसाद)
- शुद्ध एवं परिमार्जित खड़ी बोली के प्रथम लेखक — राम प्रसाद निरंजनी
- हिन्दी खड़ी बोली का प्रथम गद्य ग्रन्थ — भाषा योगवाशिष्ठ
- हिन्दी खड़ी बोली के प्रथम प्रतिष्ठित कवि — अमीर खुसरो
- हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्य — पृथ्वीराज रासो (चन्दबरदाई)
- हिन्दी का प्रथम बड़ा महाकाव्य — पद्मावत (जायसी)
- हिन्दी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य — प्रियप्रवास (हरिऔध)
- हिन्दी खड़ी बोली गद्य की प्रथम रचना — चन्द छन्द बरनन की महिमा (गंग कवि)
- दक्षिण भारत में हिन्दी खड़ी बोली में साहित्य-सृजन करने वाले प्रथम साहित्यकार — मुल्ला वजही
- हिन्दी में 'प्रयोगवाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोगकर्ता — नन्द दुलारे वाजपेयी
- हिन्दी का प्रथम गीतिनाट्य — करुणालय (जयशंकर प्रसाद)
- हिन्दी में दोहा-चौपाई का सर्वप्रथम प्रयोगकर्ता — सरहपाद
- हिन्दी रीतिकाव्य का प्रथम ग्रन्थ — हिततरंगिनी (कृपाराम)
- हिन्दी का प्रथम अभिनीत नाटक — जानकी-मंगल (शीतला प्रसाद त्रिपाठी)
- गीति काव्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग — 'कुसुममाला' की भूमिका में (लोचन प्रसाद पाण्डेय)
- हिन्दी की प्रथम एकांकी — 'एक घूँट' (जयशंकर प्रसाद)
- हिन्दी काव्यशास्त्र की प्रथम पुस्तक — साहित्य लहरी (सूरदास)
- हिन्दी में सूफी प्रेमाख्यान का प्रथम काव्य — 'चन्दायन' (मुल्ला दाऊद)
- हिन्दी में छन्दशास्त्र की प्रथम रचना — छन्दमाला
- हिन्दी में रीति सिद्धान्त के प्रथम प्रस्तोता — आचार्य केशवदास
- हिन्दी में प्रथम गीत रचनाकार — विद्यापति
- प्रथम विश्व हिन्दी-सम्मेलन — (1975 ई. नागपुर)
- हिन्दी में 'स्वच्छन्दतावाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोगकर्ता — मुकुटधर पाण्डेय
- हिन्दी में 'नई कविता' शब्द का सर्वप्रथम नामकरणकर्ता — अज्ञेय
- हिन्दी का प्रथम रेखाचित्र संकलन — 'पद्मपराग' (पद्मसिंह शर्मा)
- हिन्दी आलोचना की प्रथम पुस्तक — हिन्दी कालिदास की आलोचना
- हिन्दी में प्रथम तुलनात्मक आलोचना — बिहारी और सादी की तुलनात्मक आलोचना (पद्मसिंह शर्मा)
- हिन्दी के प्रथम मार्क्सवादी आलोचक — डॉ. शिवदान सिंह चौहान
- प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम सभापति — मुन्शी प्रेमचन्द
- राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष — बाल गंगाधर खरे
- हिन्दी का प्रथम साप्ताहिक पत्र — उदन्त मार्तण्ड
- हिन्दी का प्रथम दैनिक पत्र — समाचार सुधावर्षण
- हिन्दी की प्रथम पत्रिका — संवाद कौमुदी
- हिन्दी साहित्य परिषद् के प्रथम अध्यक्ष — पुरुषोत्तम दास टण्डन
- हिन्दी नाटक का प्रथम सैद्धान्तिक ग्रन्थ — 'रूपक रहस्य' (श्यामसुन्दर दास)
- हिन्दी साहित्य के लिए प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार — सुमित्रानन्दन पन्त (विदम्बरा)
- हिन्दी साहित्य के लिए प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार — माखनलाल चतुर्वेदी (हिमतरंगिणी)
- हिन्दी साहित्य के लिए प्रथम व्यास सम्मान — डॉ. रामविलास शर्मा (भारत के भाषा परिवार और हिन्दी)
- हिन्दी के लिए प्रथम सरस्वती सम्मान — डॉ. हरिवंश राय बच्चन (आत्मकथा)
- मुन्शी प्रेमचन्द का प्रथम उपन्यास — प्रेमा (1907 ई.)
- मुन्शी प्रेमचन्द की प्रथम कहानी — पंच परमेश्वर (1916 ई.)
- जयशंकर प्रसाद की प्रथम कहानी — ग्राम (1911 ई.)
- जयशंकर प्रसाद का प्रथम ऐतिहासिक नाटक — राज्यश्री (1915 ई.)
- महादेवी वर्मा का प्रथम काव्य-संग्रह — नीहार (1930 ई.)
- निराला की प्रथम काव्य रचना — जूही की कली (1918 ई.)
- हिन्दी का प्रथम व्याकरण — 'हिन्दुस्तानी ग्रामर' (1698 ई.) लेखक जे.जे. केटेलर (डच भाषा में)
- हिन्दी भाषा में लिखा गया प्रथम व्याकरण — 'हिन्दी व्याकरण' (1827 ई.) लेखक-पादरी एम.टी. आदम
- हिन्दी का प्रथम व्यवस्थित व्याकरण — 'भाषा चन्द्रोदय' (1855) लेखक-पं. श्रीलाल
- हिन्दी की प्रथम कवयित्री — मीराबाई
- तार सप्तक की एक मात्र महिला कवयित्री — शकुन्तला माथुर
- रामचन्द्र शुक्ल की प्रथम सैद्धान्तिक आलोचनात्मक कृति — 'काव्य में रहस्यवाद'
- जैनेन्द्र का प्रथम उपन्यास — परख (1929 ई.)
- फणीश्वरनाथ 'रेणु' का प्रथम उपन्यास — 'मैला आँचल'
- अज्ञेय का प्रथम उपन्यास — शेखर : एक जीवनी
- इलाचन्द्र जोशी का प्रथम उपन्यास — घृणामयी
- अज्ञेय का प्रथम काव्य संग्रह — भग्नदूत (1933 ई.)
- भगवती चरण वर्मा का प्रथम उपन्यास — चित्रलेखा (1939 ई.)
- हिन्दी में साधारणीकरण के सम्बन्ध में प्रथम चिन्तनकर्ता — रामचन्द्र शुक्ल

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## हिन्दी साहित्य के इतिहास व उनके लेखक

| | पुस्तक का नाम | लेखक | पुस्तक का संक्षिप्त विवरण |
|---|---|---|---|
| 1. | इस्त्वार द-ला लिटेरात्यूर ऑ ऐंद ऑ इंदी स्तानी-ईं-तासी (हिन्दी कवियों का इतिहास-दो भागों में) | फ्रेंच लेखक | पहला भाग 1839 में तथा दूसरा भाग 1846 में छपा। सन् 1871 में दूसरा संस्करण तीन भागों में छपा। इसमें हिन्दू मुसलमान कवियों और कवयित्रियों का अंग्रेजी वर्णक्रम से विवरण दिया गया। उनका जीवन वृत्त और रचनाएँ-विवरण तीनों भागों की पृष्ठ संख्या 1834 थी, 70 के लगभग हिन्दी कवियों का विवरण। |
| 2. | भाषा काव्य संग्रह | पं. महेश दत्त शुक्ल | सन् 1873 में नवल किशोर प्रैस, लखनऊ से प्रकाशित। इसमें कुछ प्राचीन कवियों की कविताओं का संग्रह और उनकी संक्षिप्त जीवनियाँ थीं। |
| 3. | शिव सिंह सरोज | शिव सिंह सेंगर | सन् 1881 में उन्नाव जिले के सेंगर द्वारा लिखित। एक हजार के लगभग हिन्दी कवियों और उनकी रचनाओं का परिचय। इसी ग्रंथ के आधार पर सर जार्ज ग्रियर्सन ने 'मार्डन वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान' लिखा। |
| 4. | हिन्दी-कोविद-ग्रंथ-माला (भाग 2) | बाबू श्यामसुन्दर दास | भारतेन्दु कालीन 80 कवियों का रचना-संकेतों सहित परिचय। 1909 तथ 1914 में प्रकाशित। |
| 5. | मिश्र बन्धु-विनोद | श्याम बिहारी मिश्र शुक देव बिहारी मिश्र | सन् 1913 में तीन भागों तथा 1934 में चौथे भाग का प्रकाशन। हिन्दी कवियों का प्रथम विराट् एवं व्यवस्थित इतिवृत्तात्मक ग्रन्थ। कवियों के विवरण के साथ साहित्य के विविध अंगों पर प्रकाश डाला। लगभग 5000 कवियों का विवरण। प्राचीन काव्य परम्परा के आदर्शों पर वर्गीकरण। |
| 6. | नवरत्न | श्याम बिहारी मिश्र शुक देव बिहारी मिश्र | सन् 1910 में प्रकाशित; संशोधित-परिवर्द्धत संसकरण-1934। इसमें तुलसी, सूर, देव, बिहारी, भूषण, मतिराम, केशव, कबीर, चन्द, हरिश्चन्द्र—इन दस कवियों की विस्तृत समालोचना थी। |
| 7. | कविता कौमुदी (भाग 2) | पं. रामनरेश त्रिपाठी | सन् 1917 में प्रकाशित। प्रथम भाग भाग में भारतेन्दु से पूर्व के 89 कवियों और रचनाओं का परिचय दूसरे में 49 आधुनिक कवियों और उनकी रचनाओं का। |
| 8. | ए स्कैच ऑफ हिन्दी 'लिटरेचर' | एडविन ग्रीव्स | सन् 1918 में प्रकाशित। इसमें 112 पृष्ठ हैं और 5 भागों में विभक्त है। |
| 9. | ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर | एफ.आई. के | सन् 1920 में प्रकाशित हुई, 116 पृष्ठ हैं, हिन्दी साहित्य का परिचय मात्र है। |
| 10. | हिन्दी साहित्य का इतिहास | पं. रामचन्द्र शुक्ल | सन् 1929 में प्रकाशित |
| 11. | हिन्दी भाषा और साहित्य | डॉ. श्यामसुन्दर दास | सन् 1930 में प्रकाशित। कवियों का विवरण मात्र व भाषा विज्ञान। |
| 12. | भारतीय इतिहास पर हिन्दी का प्रभाव | पं. शुकदेव बिहारी मिश्र | सन् 1930-31 (भाषण जो बाद में पुस्तकार प्रकाशित) |
| 13. | हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का विकास | पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' | सन् 1929-30 (भाषण जो पुस्तकार छपे, 719 पृष्ठ भाषा और साहित्य पर अच्छी आलोचना)। |
| 14. | हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास | डॉ. सूर्यकांत शास्त्री | सन् 1930 में प्रकाशित हिन्दी साहित्य की विश्वजनीन भावनाओं की दृष्टि से तुलना |
| 15. | हिन्दी का इतिहास | पं. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' | सन् 1931 में प्रकाशितकेवल उपलब्ध सामग्री का संग्रह किया। |
| 16. | आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास | कृष्ण शंकर शुक्ल | सन् 1934 में प्रकाशित। आधुनकि कवियों और साहित्यकारों का साहित्यिक परिचय दिया। |
| 17. | हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास | डॉ. रामकुमार वर्मा | सन् 1938 में प्रकाशित। चारण और धार्मिक काल का वर्णन है। |
| 18. | हिन्दी साहित्य का इतिहास | मिश्र बन्धु | सन् 1939 में प्रकाशित। आंगल प्रभाव से पूव्र का व्यवस्थित इतिहास। |
| 19. | हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास | रामनरेश त्रिपाठी | सन् 1923 इन सभी ग्रन्थों में साहित्य को ललित साहित्य |
| 20. | हिन्दी का साहित्य विमर्श | पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी | सन् 1924 तक ही सीमित रखा गया। |
| 21. | हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास | डॉ. श्यामसुन्दर दास | सन् 1931 उस व्यापक अर्थ में नहीं लिया गया। |
| 22. | हिन्दी साहित्य का इतिहास | ब्रज रत्न दास | जिसमें जीवन चरित, इतिहास, भूगोल, विज्ञान। |
| 23. | हिन्दी साहित्य का गद्यकाल | पं. गणेश प्रसाद द्विवेदी | देशदर्शन, भाषा-शास्त्र, ललित कला। |
| 24. | हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास | बाबू गुलाब राय एम.ए. | सन् 1938 उपयोगी कला, शरीर रक्षा, प्राणि शास्त्र। |
| 25. | हिन्दी साहित्य की भूमिका | पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी | सन् 1940 समाज शास्त्र, शिक्षा धर्म, समालोचना। |
| 26. | हिन्दी के निर्माता | डॉ. श्याम सुंदर दास | सन् 1941 और अन्य भाषाओं के साहित्य का। |
| 27. | खड़ी बोली हिन्दी का इतिहास | ब्रज रत्न दास | सन् 1941 अध्ययन शामिल है। |
| 28. | हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास | आचार्य चतुरसेन | सन् 1946 में प्रकाशित सर्वतोभावेन व्यापक अर्थों में प्रकाशित परिपूर्ण हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम इतिहास, सब विषयों को लिया है, भाषा और लिपि के प्रसंग भी हैं। |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## अष्टछाप के कवि

| कवि | गुरु | कवि | गुरु |
|---|---|---|---|
| 1. सूरदास | वल्लभाचार्य | 5. छीतस्वामी | विट्ठलनाथ |
| 2. कुम्भनदास | वल्लभाचार्य | 6. गोविन्दस्वामी | विट्ठलनाथ |
| 3. परमानन्द दास | वल्लभाचार्य | 7. चतुर्भुजस्वामी | विट्ठलनाथ |
| 4. कृष्णदास | वल्लभाचार्य | 8. नन्ददास | विट्ठलनाथ |

## भक्ति सम्प्रदाय

| सम्प्रदाय | प्रवर्तक |
|---|---|
| 1. 'श्री' सम्प्रदाय | रामानुज |
| 2. सनक सम्प्रदाय | निम्बार्क |
| 3. रुद्र सम्प्रदाय | विष्णुस्वामी |
| 4. ब्राह्म सम्प्रदाय | मध्वाचार्य |
| 5. रामावत सम्प्रदाय | रामानन्द |
| 6. विस्नुई सम्प्रदाय | जम्भनाथ |
| 7. उदासी सम्प्रदाय | श्रीचन्द |
| 8. स्मार्त सम्प्रदाय | शंकराचार्य |
| 9. राधावल्लभी सम्प्रदाय | हितहरिवंश |
| 10. हरिदासी (सखी) सम्प्रदाय | स्वामी हरिदास |
| 11. चैतन्य या गौड़ीय सम्प्रदाय | चैतन्य महाप्रभु |
| 12. दास्यभावभक्ति या शरणागतिपरक भक्ति | रामानुजाचार्य |
| 13. पुष्टि मार्ग | वल्लभाचार्य |

## प्रमुख दर्शन

| दर्शन | प्रवर्तक |
|---|---|
| 1. अद्वैतवाद | शंकराचार्य |
| 2. विशिष्टाद्वैतवाद | रामानुजाचार्य |
| 3. द्वैतवाद | मध्वाचार्य |
| 4. द्वैताद्वैतवाद | निम्बार्क |
| 5. शुद्धाद्वैतवाद | वल्लभाचार्य |
| 6. मीमांसा दर्शन | जैमिनी |
| 7. सांख्य दर्शन | कपिलमुनि |
| 8. योग दर्शन | पतंजलि |
| 9. न्याय दर्शन | अक्षपाद गौतम |
| 10. वैशेषिक दर्शन | कणाद |
| 11. लोकायत/बार्हस्पत्य या चार्वाक दर्शन | चार्वाक |
| 12. जैन दर्शन (स्याद्वाद) | पार्श्वनाथ |
| 13. संघातवाद (क्षणिकवाद) | गौतम बुद्ध |
| 14. वेदान्त दर्शन या उत्तर मीमांसा | बादरायण |

## प्रमुख गुरु-शिष्य

| गुरु | शिष्य |
|---|---|
| 1. गोविन्द योगी | शंकराचार्य |
| 2. मत्स्येन्द्रनाथ/मछन्दरनाथ | गोरखनाथ |
| 3. यादव प्रकाश | रामानुजाचार्य |
| 4. नारद मुनि | निम्बार्काचार्य |
| 5. राघवानन्द | रामानन्द |
| 6. रामानन्द | अनन्तादास, सुखानन्द, सुरसुरानन्द, नरहर्यानन्द, भावानन्द, पीपा, कबीर, सेना, धन्ना, रैदास, पद्मावती, सुरसरी |
| 7. विष्णुस्वामी | वल्लभाचार्य |
| 8. रैदास | मीराबाई |
| 9. नरहरिदास (नरहर्यानन्द) | तुलसीदास |
| 10. अग्रदास | नाभादास |
| 11. शेख मोहिदी | जायसी |
| 12. हाजी बाबा | उसमान |
| 13. महावीर प्रसाद द्विवेदी | मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचन्द, निराला |

## रीतिकालीन कवियों का वर्गीकरण

| | |
|---|---|
| 1. रीतिबद्ध कवि | केशवदास, चिन्तामणि, मतिराम, देव, रसलीन, मुबारक बिलग्रामी, जान (नियामत खाँ), तोष, यशवन्त सिंह, भूषण, कुलपति मिश्र, याकूब खाँ, पद्माकर, सुरति मिश्र, सोमनाथ, भिखारीदास, दूलह, ग्वाल, प्रताप साही इत्यादि |
| 2. रीतिसिद्ध कवि | सेनापति, बिहारी, बेनी, कृष्णकवि, रसनिधि, पजनेस, द्विजदेव इत्यादि। |
| 3. रीतिमुक्त कवि | घनानन्द, आलम, शेख, ठाकुर बुन्देलखण्डी, बुद्धिसेन या बोधा इत्यादि। |

## आधुनिक काव्य

| | |
|---|---|
| 1. भारतेन्दु युगीन कवि | भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास, अम्बिका दत्त व्यास आदि। |
| 2. द्विवेदी युगीन कवि | महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, नाथूराम शर्मा 'शंकर', जगन्नाथदास 'रत्नाकर', गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' इत्यादि। |
| 3. छायावादी कवि | जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्ट 'वियोगी', लक्ष्मीनारायण मिश्र, जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' इत्यादि। |
| 4. राष्ट्रवादी सांस्कृतिक कवि | माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सोहनलाल द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय आदि। |
| 5. उन्मुक्त प्रेममार्गी कवि | हरिवंशराय बच्चन (हालावाद), भगवती चरण वर्मा, नरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल अंचल (मांसलवाद)। |
| 6. प्रगतिवादी कवि | केदारनाथ अग्रवाल, रामविलास शर्मा, नागार्जुन, रांगेय राघव, शिव मंगल सिंह 'सुमन', त्रिलोचन इत्यादि। |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## तारसप्तक के कवि

| | |
|---|---|
| तारसप्तक (1943 ई.) | गजानन माधव 'मुक्तिबोध', नेमिचन्द जैन, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, डॉ. रामविलास शर्मा और अज्ञेय |
| दूसरा सप्तक (1951 ई.) | रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर और हरिनारायण व्यास |
| तीसरा सप्तक (1959 ई.) | कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदारनाथ सिंह, कुँवरनारायण, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और मदन वात्स्यायन |
| चौथा सप्तक (1979 ई.) | राजेन्द्र किशोर, श्रीराम वर्मा, सुमन राजे, नन्दकिशोर आचार्य, स्वदेश भारती, राजकुमार अम्बुज और अवधेश कुमार |
| प्रतिपद्यवादी (नकेनवादी) कवि | नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार, नरेश कुमार |
| युयुत्सावादी कवि | शलभ श्रीराम |
| प्रतिबद्ध कविता के कवि | परमानन्द श्रीवास्तव |

## साहित्य अकादमी पुरस्कार

| क्र. | रचना | रचनाकार | वर्ष |
|---|---|---|---|
| 1. | हिमतरंगिनी (काव्य) | माखनलाल चतुर्वेदी | 1955 ई. |
| 2. | पद्मावत संजीवनी व्याख्या | वासुदेवशरण अग्रवाल | 1956 ई. |
| 3. | बौद्धधर्म दर्शन | आचार्य नरेन्द्रदेव | 1957 ई. |
| 4. | मध्य एशिया का इतिहास | राहुल सांकृत्यायन | 1958 ई. |
| 5. | संस्कृति के चार अध्याय | रामधारी सिंह 'दिनकर' | 1959 ई. |
| 6. | कला और बूढ़ा चाँद (काव्य) | सुमित्रानन्दन पन्त | 1960 ई. |
| 7. | भूले बिसरे चित्र (उपन्यास) | भगवतीचरण वर्मा | 1961 ई. |
| 8. | कलम का सिपाही (जीवनी) | अमृतराय | 1963 ई. |
| 9. | आँगन के पार द्वार (काव्य) | अज्ञेय | 1964 ई. |
| 10. | रससिद्धान्त (समीक्षा) | डॉ. नगेन्द्र | 1965 ई. |
| 11. | मुक्तिबोध (उपन्यास) | जैनेन्द्र | 1966 ई. |
| 12. | अमृत और विष (उपन्यास) | अमृतलाल नागर | 1967 ई. |
| 13. | दो चट्टानें (काव्य) | हरिवंशराय 'बच्चन' | 1968 ई. |
| 14. | रागदरबारी (उपन्यास) | श्रीलाल शुक्ल | 1969 ई. |
| 15. | निराला की साहित्य साधना (आलोचना) | डॉ. रामविलास शर्मा | 1970 ई. |
| 16. | कविता के नए प्रतिमान (आलोचना) | डॉ. नामवर सिंह | 1971 ई. |
| 17. | बूनी हुई रस्सी (काव्य) | भवानी प्रसाद मिश्र | 1972 ई. |
| 18. | आलोक पर्व (निबन्ध) | हजारी प्रसाद द्विवेदी | 1973 ई. |
| 19. | मिट्टी की बारात (काव्य) | शिवमंगल सिंह सुमन | 1974 ई. |
| 20. | तमस (उपन्यास) | भीष्म साहनी | 1975 ई. |
| 21. | तेरी मेरी उसकी बात (उपन्यास) | यशपाल | 1976 ई. |
| 22. | चुका भी नहीं हूँ मैं (काव्य) | शमशेर | 1977 ई. |
| 23. | उतना वह सूरज है (काव्य) | भारत भूषण अग्रवाल | 1978 ई. |
| 24. | कल सुनना मुझे (काव्य) | धूमिल | 1979 ई. |
| 25. | ज़िन्दगीनामा ज़िन्दारुख (उपन्यास) | कृष्णा सोबती | 1980 ई. |
| 26. | ताप के ताए हुए दिन (काव्य) | त्रिलोचन | 1981 ई. |
| 27. | विकलांग श्रद्धा का दौर (व्यंग्य) | हरिशंकर परसाई | 1982 ई. |
| 28. | खूँटियों पर टँगे लोग (काव्य) | सर्वेश्वर दयाल सक्सेना | 1983 ई. |
| 29. | लोग भूल गए हैं (काव्य) | रघुवीर सहाय | 1984 ई. |
| 30. | कौवे और काला पानी (काव्य) | निर्मल वर्मा | 1985 ई. |
| 31. | अपूर्व (काव्य) | केदारनाथ अग्रवाल | 1986 ई. |
| 32. | मगध (काव्य) | श्रीकान्त वर्मा | 1987 ई. |
| 33. | अरण्य (काव्य) | नरेश मेहता | 1988 ई. |
| 34. | अकाल में सारस (काव्य) | केदारनाथ सिंह | 1989 ई. |
| 35. | नीला चाँद (उपन्यास) | शिवप्रसाद सिंह | 1990 ई. |
| 36. | मैं वक्त के हूँ सामने (काव्य) | गिरिजाकुमार माथुर | 1991 ई. |
| 37. | ढाई घर (उपन्यास) | गिरिराज किशोर | 1992 ई. |
| 38. | अर्द्धनारीश्वर (उपन्यास) | विष्णु प्रभाकर | 1993 ई. |
| 39. | कहीं नहीं वहीं (काव्य) | अशोक वाजपेयी | 1994 ई. |
| 40. | कोई दूसरा नहीं (काव्य) | कुँवरनारायण | 1995 ई. |
| 41. | मुझे चाँद चाहिए (उपन्यास) | सुरेन्द्र वर्मा | 1996 ई. |
| 42. | अनुभव के आकाश में चाँद (काव्य) | लीलाधर जगूड़ी | 1997 ई. |
| 43. | नए इलाके में (काव्य) | अरुण कमल | 1998 ई. |
| 44. | दीवार में एक खिड़की रहती थी (उपन्यास) | विनोद कुमार शुक्ल | 1999 ई. |
| 45. | हम जो देखते हैं (काव्य) | मंगलेश डबराल | 2000 ई. |
| 46. | कलिकथा : वायाँ बाईपास (उपन्यास) | अलका सरावगी | 2001 ई. |
| 47. | दो पंक्तियों के बीच (काव्य) | राजेश जोशी | 2002 ई. |
| 48. | कितने पाकिस्तान (उपन्यास) | कमलेश्वर | 2003 ई. |
| 49. | दुष्चक्र में स्रष्टा (काव्य) | वीरेन डंगवाल | 2004 ई. |
| 50. | क्याप (उपन्यास) | मनोहर श्याम जोशी | 2005 ई. |
| 51. | संशयात्मा (काव्य) | ज्ञानेन्द्रपति | 2006 ई. |
| 52. | इन्हीं हथियारों से | अमरकान्त | 2007 ई. |
| 53. | कोहरे में कैद रंग (उपन्यास) | गोविन्द मिश्र | 2008 ई. |
| 54. | हवा में हस्ताक्षर (काव्य) | कैलाश वाजपेयी | 2009 ई. |
| 55. | मोहनदास (महाकाव्यात्मक कहानी) | उदय प्रकाश | 2010 ई. |
| 56. | रेहन पर रग्घू (उपन्यास) | काशीनाथ सिंह | 2011 ई. |
| 57. | पत्थर फेंक रहा हूँ (कविता संग्रह) | चन्द्रकान्त देवताले | 2012 ई. |
| 58. | मिलजुल मन (उपन्यास) | मृदुला गर्ग | 2013 ई. |
| 59. | विनायक (उपन्यास) | रमेश चन्द्र साह | 2014 ई. |

## व्यास सम्मान

| क्र. | रचना | रचनाकार | वर्ष |
|---|---|---|---|
| 1. | भारत के भाषा परिवार और हिन्दी | डॉ. रामविलास शर्मा | 1991 ई. |
| 2. | नीलाचाँद (उपन्यास) | शिवप्रसाद सिंह | 1992 ई. |
| 3. | मैं वक्त के हूँ सामने (काव्य) | गिरिजाकुमार माथुर | 1993 ई. |
| 4. | सपना अभी भी (काव्य) | धर्मवीर भारती | 1994 ई. |
| 5. | आत्मजयी (काव्य) | कुँवरनारायण | 1995 ई. |
| 6. | हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास | डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी | 1996 ई. |
| 7. | उत्तर कबीर व अन्य कविताएँ (काव्य) | केदारनाथ सिंह | 1997 ई. |
| 8. | पाँच आँगनों वाला घर (उपन्यास) | गोविन्द मिश्र | 1998 ई. |
| 9. | विश्रामपुर का सन्त (उपन्यास) | श्रीलाल शुक्ल | 1999 ई. |
| 10. | पहला गिरमिटिया (उपन्यास) | गिरिराज किशोर | 2000 ई. |

Download From: https://sarkaripot.in/
Scanned by CamScanner

| क्र. | रचना | रचनाकार | वर्ष |
|---|---|---|---|
| 11. | आलोचना का पक्ष (आलोचना) | रमेश चन्द्र शाह | 2001 ई. |
| 12. | पृथ्वी का कृष्ण पक्ष (काव्य) | कैलाश वाजपेयी | 2002 ई. |
| 13. | आवाँ (उपन्यास) | चित्रा मुद्गल | 2003 ई. |
| 14. | कठगुलाब (उपन्यास) | मृदुला गर्ग | 2004 ई. |
| 15. | कथा सतीसर (उपन्यास) | चन्द्रकान्ता | 2005 ई. |
| 16. | कविता का अर्थात् (आलोचना) | परमानन्द श्रीवास्तव | 2006 ई. |
| 17. | समय सरगम (उपन्यास) | कृष्णा सोबती | 2007 ई. |
| 18. | एक कहानी यह भी (आत्मकथा) | मन्नू भण्डारी | 2008 ई. |
| 19. | इन्हीं हथियारों से (उपन्यास) | अमरकान्त | 2009 ई. |
| 20. | फिर भी कुछ रह जाएगा (काव्य) | विश्वनाथ तिवारी | 2010 ई. |
| 21. | आम के पत्ते (कविता संग्रह) | रामदरश मिश्र | 2011 ई. |
| 22. | न भूतो न भविष्यति (उपन्यास) | नरेन्द्र कोहली | 2012 ई. |
| 23. | व्योमकेश दरवेश (संस्मरण) | विश्वनाथ त्रिपाठी | 2013 ई. |
| 24. | प्रेमचन्द की कहानियों का कालक्रमानुसार अध्ययन | कमल किशोर गोयनका | 2014 ई. |

## ज्ञानपीठ पुरस्कार

(वर्ष 1984 ई. के बाद से यह पुरस्कार लेखक के समग्र योगदान पर दिया जाता है)

| क्र. | रचना | रचनाकार | वर्ष |
|---|---|---|---|
| 1. | चिदम्बरा | सुमित्रानन्दन पन्त | 1968 ई. |
| 2. | उर्वशी | रामधारी सिंह 'दिनकर' | 1972 ई. |
| 3. | कितनी नावों में कितनी बार | अज्ञेय | 1978 ई. |
| 4. | यामा | महादेवी वर्मा | 1982 ई. |
| 5. | सम्पूर्ण साहित्य | नरेश मेहता | 1992 ई. |
| 6. | सम्पूर्ण साहित्य | निर्मल वर्मा (पंजाबी लेखक गुरदयाल सिंह के साथ संयुक्त रूप से) | 1999 ई. |
| 7. | सम्पूर्ण साहित्य | कुँवरनारायण | 2005 ई. |
| 8. | सम्पूर्ण साहित्य | श्रीलाल शुक्ल और अमरकान्त (संयुक्त रूप से) | 2009 ई. |
| 9. | आकाल में सारस | केदारनाथ सिंह | 2013 ई. |
| 10. | मराठी साहित्य | भालचन्द नेमाड़े | 2014 ई. |
| 11. | गुजराती साहित्य | रघुवीर चौधरी | 2015 ई. |

## प्रमुख साहित्यिक सूक्तियाँ एवं कथन

- जहँ मन पवन न संचरइ, रवि ससि नाहिं पवेस — *सरहपा*
- अवधू रहिया हाटे वाटे रूप विरष की छाया।
  तजिबा काम क्रोध लोभ मोह संसार की माया।। — *गोरखनाथ*
- पुस्तक जल्हण हत्थ दै, चलि गज्जन नृप काज — *चन्दबरदाई*
- मनहु कला ससभान कला सोलह सो बन्निय — *चन्दबरदाई*
- बारह बरष लै कूकुर जीवै, अरु तेरह लै जिए सियार।
  बरस अठारह छत्री जिए, आगे जीवन को धिक्कार।। — *जगनिक*
- देसिल बअना सब इन मिट्ठा तैसन जपऔं अवहट्ठा। — *विद्यापति*
- गोरी सोवै सेज पर, मुख पर डारे केश।
  चल खुसरो घर आपने, रैनि भई चहुँ देश।। — *अमीर खुसरो*
- माधव हम परिनाम निरासा — *विद्यापति*
- भक्ति द्राविड़ी ऊपजी, लाए रामानन्द। — *कबीर*
  परगट किया कबीर ने, सात दीप नौ खण्ड।। — *कबीर*
- मोको कहाँ ढूँढे बंदे मैं तो तेरे पास में — *कबीर*
- दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना, रामनाम का मरम है आना। — *कबीर*
- जाको राखै साइयाँ मारि सकै ना कोय। — *कबीर*
- मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। — *कबीर*
- साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। — *कबीर*
- रस गगन गुफा में अजर झरै। — *कबीर*
- हेत प्रीति से जो मिले, तासों मिलिए धाय। — *कबीर*
- करम गति टारै नाहिं टरै।
- प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी। — *सन्त रैदास (रविदास)*
- अजगर करै ना चाकरी पंछी करै न काम। — *मलूकदास*
- निरगुन ब्रह्म को कियो समाधु, तब ही चले कबीरा साधु। — *सन्त दादूदयाल*
- अपना मस्तक काटि कै बीर हुआ कबीर — *सन्त दादू*
- मो सम कौन कुटिल खल कामी। — *सूरदास*
- भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो। — *सूरदास*
- 'मानुस प्रेम भयउ बैकुंठी'। — *जायसी*
- "हिन्दू मग पर पाँव न राखेउँ, का जो बहुतै हिन्दी भाखेउँ"। — *नूरमोहम्मद*
- होनहार बलवान इसे कोई मत मानो झूठी। — *नानकदेव*
- करम प्रधान बिस्व करि राखा। — *तुलसी*
- परहित सरिस धरम नहिं भाई,
  परपीड़ा सम नहिं अधमाई। — *तुलसी*
- केशव कहि न जाइ का कहिए। — *तुलसी*
- गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग। — *तुलसी*
- सब मम प्रिय सब मम उपजाए,
  सब ते अधिक मनुज मोहि भाए। — *तुलसी*
- बिक्रम धँसा प्रेम का बारा, सपनावती कहँ गयउ पतारा। — *मंझन (मधुमालती से)*
- रुकमन पुनि वैसहि मरि गई, कुलवंती सत सो सति भई। — *कुतुबन*
- जानत है वह सिरजनहारा, जो कछु है मन मरम हमारा। — *नूरमोहम्मद*
- काह करौं बैकुण्ठइ जाय।
  जहँ नहिं नन्द, जहाँ न जसोदा,
  जहँ नहिं गोपी ग्वाल न गाय। — *परमानन्द दास*
- सन्त को काह सीकरी सो काम।
  आवत जात पनहियां टूटी, बिसरी गयो हरिनाम। — *कुम्भनदास*
- मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई । — *मीराबाई*
- भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित्त। — *केशवदास*
- अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
  अधम व्यंजना रस बिरस, उलटी कहत नवीन।। — *देव*
- अमिय हलाहल मद भरे, सेत स्याम रतनार।
  जियत मरत झुकि-झुकि परत, जेहि चितवत एक बार। — *रसलीन*
- भले-बुरे हैं एक सम, जब लौं बोलत नाहिं।
  जानि परत हैं काक-पिक, ऋतु वसन्त के माहिं।। — *वृन्द*
- अति सूधो सनेह को मारग है, जहँ नेकु सयानप बांक नहीं। — *घनानन्द*
- काव्य की रीति सीखी सुकवीन सों,
  देखी सुनी बहु लोक की बातें। — *भिखारीदास*
- निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
  बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।। — *भारतेन्दु*
- जामे रस कुछ होते हैं, ताहि पढ़त सब कोय।
  बात अनूठी चाहिए, भाषा कोऊ होय।। — *भारतेन्दु*
- हा! हा! भारत दुर्दशा देखी न जाई। — *भारतेन्दु*
- साहित्य जन-समूह के हृदय का विकास है। — *बालकृष्ण भट्ट*
- हमारे मत में हिन्दी और उर्दू दो बोली न्यारी-न्यारी हैं। — *राजा लक्ष्मणसिंह*
- जो विषया सन्तन तजी, ताहि मूढ़ लपटाति। — *राधाकृष्ण दास*
- खुश रहो अहले वतन, हम तो सफ़र करते हैं। — *प्रताप नारायण मिश्र*

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

- कौन करेजो नहिं कसकत सुनि विपति बाल विधवन की। *प्रताप नारायण मिश्र*
- जैसे कंता घर रहे, तैसे रहे विदेश। *प्रताप नारायण मिश्र*
- प्रयोगवाद बैठे ठाले का धन्धा है। *आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी*
- प्रसाद के काव्य में 'भावतीव्र भूमि', निराला के काव्य में 'बुद्धि तत्त्व' और पंत के काव्य में 'कल्पना' की प्रधानता है। *डॉ. नगेन्द्र*
- छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। *डॉ. नगेन्द्र*
- साहित्य दमित इच्छाओं की अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट साधन है। *फ्रॉयड*
- हो जाने दो गर्क नशे में, मत पड़ने दो फर्क नशे में। *बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'*
- हम दीवानों की क्या हस्ती है, आज यहाँ कल वहाँ चले। *भगवतीचरण वर्मा*
- आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है। *सरदार पूर्णसिंह*
- बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है। *रामचन्द्र शुक्ल*
- निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमज़ोरी से होता है। *हरिशंकर परसाई*
- परमात्मा की छाया आत्मा में पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा में, यही 'छायावाद' है। *डॉ. रामकुमार वर्मा*
- काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है। *जयशंकर प्रसाद*
- दुःख की पिछली रजनी बीच, विकसता सुख का नवल प्रभात। *जयशंकर प्रसाद*
- भक्तिआन्दोलन भारतीय चिन्ताधारा का स्वाभाविक विकास है। *पं. हजारीप्रसाद द्विवेदी*
- भक्ति धर्म का रसात्मक रूप है। *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल*
- भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। *पं. हजारीप्रसाद द्विवेदी*
- बुद्धदेव के बाद भारत के सर्वाधिक बड़े लोकनायक तुलसीदास हैं। *जॉर्ज ग्रियर्सन*
- हिन्दी रीति ग्रन्थों की परंपरा चिन्तामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरम्भ उन्हीं से मानना चाहिए। *रामचन्द्र शुक्ल*
- ज्ञान राशि के संचित कोश का नाम साहित्य है। *महावीर प्रसाद द्विवेदी*
- साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है। *बालकृष्ण भट्ट*
- साहित्य का उद्देश्य दबे-कुचले हुए वर्ग की मुक्ति का होना चाहिए। *प्रेमचन्द*
- हिन्दी नयी चाल में ढली। *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र*
- साहित्यकार देश भक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। *प्रेमचन्द*
- कबीर में जैसे सामाजिक विद्रोह का तीखापन और प्रणयानुभूति की कोमलता एक साथ मिलती है, कुछ वैसा ही रचाव मुक्तिबोध में है। *डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी*
- अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने ही होंगे।
  तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब। *मुक्तिबोध*
- दुःख सबको माँजता है। *अज्ञेय*
- मैंने उसको जब-जब देखा लोहा देखा
  लोहा जैसे तपता देखा, गलते देखा ढलते देखा। *केदारनाथ अग्रवाल*
- कर्म का भोग, भोग का कर्म, यही जड़ चेतन का आनन्द। *जयशंकर प्रसाद*
- वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान। *सुमित्रानन्दन पन्त*
- चार दिन सुखद चाँदनी रात और फिर अन्धकार अज्ञात। *सुमित्रानन्दन पन्त*
- मिलन के पल केवल दो-चार, विरह के कल्प अपार। *सुमित्रानन्दन पन्त*
- कविता करने की प्रेरणा सबसे पहले मुझे प्रकृति निरीक्षण से मिली जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश को है। *सुमित्रानन्दन पन्त*
- भावों की मुक्ति छन्दों की भी मुक्ति चाहती है, यहाँ भाषा, भाव और छन्द तीनों स्वच्छन्द हैं। *निराला*
- जो गहन भाव, सीधी भाषा सीधे छन्द में चाहता है, वह धोखेबाज है। *निराला*
- मुझे प्रोफेसरों के बीच छायावाद सिद्ध करना पड़ेगा। *निराला*
- दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो कही नहीं। *निराला*
- तोड़ दो यह क्षितिज, मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है। *महादेवी वर्मा*
- पंथ रहने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला *महादेवी वर्मा*
- तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा, तुममें ढूँढूँगी पीड़ा। *महादेवी वर्मा*
- प्रगतिवाद समाजवाद की ही साहित्यिक अभिव्यक्ति है। *डॉ. नगेन्द्र*
- सुख-दुःख की भावावेशमयी अवस्था विशेष का गिने-चुने शब्दों में स्वर साधना का उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है। *महादेवी वर्मा*
- मैंने आहुति बनकर देखा, यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है। *अज्ञेय*
- आनन्द में विलीन हो जाना ही मानव जीवन का परम् उद्देश्य है। *डॉ. श्याम सुन्दरदास*
- इंग्लैण्ड का पेट कभी यों ही खाली था, उसने एक हाथ से अपना पेट भरा और दूसरे हाथ से उन्नति के काँटों को साफ किया। *भारतेन्दु*
- राष्ट्रगीत में भला कौन वह भारत भाग्य विधाता है।
  फटा सुथन्ना पहने जिसका गुन हरचरना गाता है।। *रघुवीर सहाय*
- संरचनावाद एक चक्रव्यूह है इसमें फँसकर समीक्षा तो मरती ही है, अपने साथ साहित्यिक कृति को भी ले डूबती है। *बच्चन सिंह*
- कविता के लिए शाब्दिक प्रतीक होना एक आधारभूत शर्त है, पर हर शाब्दिक प्रतीक 'कविता' नहीं होती। *रामस्वरूप चतुर्वेदी*
- तू अब तक सोई है आली, आँखों में भरी विहाग री। *जयशंकर प्रसाद*
- आह! वेदना मिली विदाई। *जयशंकर प्रसाद*
- छायावाद व्यक्तिवाद की कविता है जिसका आरम्भ व्यक्ति के महत्त्व को स्वीकार करने और करवाने से हुआ। *नामवर सिंह*

# हिन्दी रचनाकार और उनकी रचनाएँ

## आदि काल

| रचनाकार | रचनाएँ | रचनाकाल | विषय |
|---|---|---|---|
| चन्दबरदाई | पृथ्वीराज रासो | बारहवीं शती | पृथ्वीराज चौहान की वीरता का वर्णन है। |
| दलपति विजय | खुमान रासो | नवीं शती | चित्तौड़ नरेश खुमान की वीरता का वर्णन है। |
| नल्हसिंह भाट | विजयपाल रासो (अप्राप्त) | ग्यारहवीं शती | विजयगढ़ के शासक विजयपाल के शौर्य एवं पराक्रम का वर्णन है। |
| नरपति नाल्ह | बीसलदेव रासो | बारहवीं शती | लौकिक विरह सन्देश काव्य, अजमेर के चौहान राजा बीसलदेव तथा रानी राजमती के प्रेम और विरह का वर्णन है। |
| शार्ङ्गधर | हम्मीर रासो (अप्राप्त) | अनुपलब्ध | अनुमानतः इसमें हम्मीर और अलाउद्दीन के युद्धों का वर्णन तथा हम्मीर की प्रशंसा का चित्रण है। |
| जगनिक | परमाल रासो (आल्हाखण्ड) | तेरहवीं शती | महोबा के राजा परमालदेव के सामन्त आल्हा और ऊदल की वीरता का वर्णन है। |
| भट्ट केदार | जयचन्द प्रकाश (अप्राप्त) | बारहवीं शती | महाराज जयचन्द की वीरता का वर्णन है। |
| मधुकर | जयमयंक जसचन्द्रिका (अप्राप्त) | बारहवीं शती | महाराज जयचन्द के पराक्रम का वर्णन है। |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

| रचनाकार | रचनाएँ | रचनाकाल | विषय |
|---|---|---|---|
| कुशललाभ | ढोला मारू-रा-दूहा | पन्द्रहवीं शती | लौकिक विरह सन्देश-काव्य |
| अज्ञात कवि | वसन्त विलास | तेरहवीं-चौदहवीं शती के मध्य | शृंगारपरक सरस ब्रजभाषा काव्य जिसमें स्त्रियों पर वसन्त के प्रभाव का वर्णन है। |
| अमीर खुसरो | खालिकबारी | तेरहवीं शती | हिन्दी-फ़ारसी शब्दकोश |
| अमीर खुसरो | नूहसिपहर | तेरहवीं शती | भारतीय बोलियों का वर्णन |
| अमीर खुसरो | पहेलियाँ, मुकरियाँ, दोसखुने | तेरहवीं शती | लोकरंजक और शिक्षाप्रद |
| अमीर खुसरो | आशिक़-ए-खुसरवी | तेरहवीं शती | संगीत प्रधान है। |
| विद्यापति | पदावली | चौदहवीं शती | राधा-कृष्ण के लौकिक प्रेम का वर्णन है। |
| विद्यापति | कीर्तिलता | चौदहवीं शती | ऐतिहासिक महत्त्व का प्रबन्ध-काव्य, इसमें कीर्ति सिंह की वीरता का वर्णन है। |
| विद्यापति | कीर्तिपताका | चौदहवीं शती | अभी तक सूचना मात्र है। |
| रौडा कवि | राउरवेल | दसवीं शती | गद्य-पद्य मिश्रित चम्पू काव्य, नायिका राउरवेल के नखशिख सौन्दर्य का शृंगारिक वर्णन है। |
| अब्दुरहमान | संदेश रासक | तेरहवीं शती | यह तीन उक्रमों में विभाजित 223 हंदों का सन्देश काव्य है। |
| दामोदर शर्मा | उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण | बारहवीं शती | गद्य-पद्य मिश्रित व्याकरण ग्रन्थ |
| ज्योतिरीश्वर ठाकुर | वर्ण रत्नाकर | चौदहवीं शती | हिन्दू दरबार और भारतीय जीवन पद्धति का चित्रण है। |
| स्वयंभू | पउमचरिउ | | रामकथा महाकाव्य |

## भक्ति काल (सन्तकाव्य)

| रचनाकार | रचनाएँ | वर्ण्य विषय |
|---|---|---|
| नामदेव | अभंगपद | डॉ. भगीरथ मिश्र ने 'सन्त नामदेव की हिन्दी पदावली' (1964 ई.) तथा रामचन्द्र मिश्र ने 'सन्त रामदेव और हिन्दी पदसाहित्य' नाम से सम्पादन किया है। |
| कबीर | बीजक (साखी, सबद और रमैनी) | कबीर के काव्य का संकलन सबसे पहले उनके शिष्य धरम दास ने 'बीजक' नाम से किया था। इसके उपरान्त डॉ. श्यामसुन्दर दास ने 'कबीर-ग्रन्थावली', डॉ. पारसनाथ तिवारी ने 'कबीर ग्रन्थावली' (1961 ई.), अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध ने 'कबीर वचनावली' (1946 ई.) नाम से कबीर की रचनाओं का सम्पादन किया है। |
| गुरु नानकदेव | जपुजी, असादीवार, रहिरास, सोहिला, नरसीहतनामा | गुरु नानकदेव की रचनाओं का संकलन डॉ. जयराम मिश्र ने 'नानकवाणी', डॉ. मनमोहन सहगल ने 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' (पहली, दूसरी सैंची) (1978, 1980) नाम से सम्पादित किया है। |
| रैदास (रविदास) | रविदास की बानी, रविदास के पद | |
| धरमदास | अमरसुखनिधान | |
| स्वामी प्राणनाथ | कुलजमस्वरूप | |
| दरिया साहब | दरियासागर, ज्ञानदीपक | |
| मलूकदास | ज्ञानबोध, रामावतार लीला, ध्रुवचरित | ज्ञानबोध में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का तथा रामावतार लीला में रामवन की कथा का विस्तुत वर्णन है। |
| दादूदयाल | हरडेबानी | दादूदयाल की रचनाओं का संकलन रज्जबदास तथा जगन्नाथ ने 'हरडेबानी' नाम से किया। बाद में परशुराम चतुर्वेदी ने 'दादू ग्रन्थावली' नाम से सम्पादन किया। |
| सुन्दरदास | सुन्दरविलास, सुन्दर ग्रन्थावली (भाग 1, 2) | सुन्दरदास की रचनाओं का संकलन है। |
| जगजीवनदास | ज्ञानप्रकाश, महाप्रलय, प्रथम ग्रन्थ | |
| नारायणदास | शब्दावली, दोहावली, रविरतन, पंचरतन | |
| दयाबाई | दयाबोध, विनयमालिका | |
| सहजोबाई | सहजप्रकाश, सोलह, तत्त्वनिर्माण | |
| अक्षर अनन्य | महिमा समुद्र, सिद्धान्तबोध, प्रेम-दीपिका, ज्ञानयोग, पंचासिका | |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## सूफी काव्य

| रचनाकार | रचना | रचनाकाल | वर्ण्य विषय |
|---|---|---|---|
| असाइत | हंसावली | 1370 ई. | गुजराती मिश्रित पश्चिमी हिन्दी में रचित प्रेमकथा |
| मुल्ला दाऊद | चन्दायन | 1379 ई. | लोरिक और चन्दा की लोककथा के माध्यम से प्रेम के महत्त्व का चित्रण, इसे लोरकहा भी कहते हैं। |
| कुतुबन | मृगावती | 1501 ई. | मृगावती और राजकुँवर की लौकिक प्रेमकथा के द्वारा अलौकिक प्रेम का वर्णन है। |
| ईश्वरदास | सत्यवती कथा | 1500 ई. | सत्यवती कथा सौन्दर्य, प्रेम, विरह निरूपण, तत्कालीन बादशाह का उल्लेख, अवधी भाषा, दोहा-चौपाई शैली आदि की दृष्टि से हिन्दी प्रेमाख्यान परम्परा का उच्चकोटि का काव्य है। |
| मंझन | मधुमालती | 1545 ई. | मधुमालती और मनोहर की प्रेम कथा के द्वारा अलौकिक प्रेम का वर्णन है। |
| मलिक मोहम्मद 'जायसी' | पद्मावत | 1520 ई. (947 हिजरी) | राजा रत्नसेन और पद्मावती की प्रेमकथा के द्वारा अलौकिक प्रेम का चित्रण, अवधी का प्रथम महाकाव्य है। |
| मलिक मोहम्मद 'जायसी' | आखिरी कलाम | 936 हिजरी | इसमें कयामत का वर्णन तथा मोहम्मद साहब के महत्त्व का प्रतिपादन है। |
| मलिक मोहम्मद 'जायसी' | अखरावट | — | इसमें देवनागरी वर्णमाला के एक-एक वर्ण (अक्षर) को लेकर सैद्धान्तिक बातें कही गई हैं। |
| उसमान | चित्रावली | 1613 ई. | सुजान और चित्रावली की प्रेम कथा के माध्यम से प्रेम और विरह के महत्त्व का प्रतिपादन है। |
| कासिम शाह | हंस जवाहिर | 1736 ई. | हंस और रानी जवाहिर की प्रेम कथा का वर्णन है। |
| नूर मोहम्मद | अनुराग बाँसुरी | 1764 ई. | प्रेमकथा के माध्यम से इस्लामी धर्म का प्रचार (दोहे की जगह बरवै छन्द का प्रयोग) किया गया है। |
| नूर मोहम्मद | इन्द्रावती | 1707 ई. | सभी पात्रों का प्रतीक रूप में चित्रण करते हुए आध्यात्मिक संकेत दिया गया है। |
| शेखनबी | ज्ञानदीप | 1619 ई. | ज्ञानदीप और देवयानी की प्रेमकथा का वर्णन है। |
| निसार | यूसुफ जुलेखा | — | शामी परम्परा से कथानक लेकर प्रेम के महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है। |
| नसीर | प्रेमदर्पण | — | यूसुफ जुलेखा की ही प्रेमकथा वर्णित है। |

## राम काव्य

| रचनाकार | रचना | रचनाकाल | वर्ण्य विषय |
|---|---|---|---|
| रामानन्द | रामरक्षास्तोत्र | अज्ञात | हिन्दी में रामभक्ति परम्परा का आरम्भ है। |
| विष्णुदास | रामायण कथा | 1442 ई. | हिन्दी में लिखा गया प्रथम रामकथा काव्य है। |
| अग्रदास | ध्यानमंजरी | अज्ञात | राम तथा अन्य भाइयों के सौन्दर्य वर्णन के साथ सरयू और अयोध्या का वर्णन है। |
| ईश्वरदास | भरतमिलाप | 1444 ई. | राम को वनवास होने पर भरत और राम के मिलन का प्रसंग वर्णित है। |
| ईश्वरदास | अंगद पैज | 1444 ई. | रावण के दरबार में अंगद का पैर जमाने का चित्रण है। |
| तुलसीदास | रामचरितमानस | 1574 ई. | भगवान राम का सम्पूर्ण जीवन चरित्र वर्णित है। यह हिन्दी का सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ है। |
| तुलसीदास | रामलला नहछू | 1586 ई. | रामविवाह के समय यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर नहछू का वर्णन है। |
| तुलसीदास | वैराग्य संदीपनी | 1612 ई. | तुलसीदास ने इस कृति को 'अखिल ज्ञान का सार' कहा है। इसमें सन्त स्वभाव, सन्त महिमा का व [cut off] तथा नीति, भक्ति, रामनाम महात्म्य सम्बन्धी दोहे हैं। |
| तुलसीदास | दोहावली | 1583 ई. | नीति, भक्ति, रामनाम महात्म्य सम्बन्धी दोहे संगृहीत हैं। |
| तुलसीदास | बरवै रामायण | 1612 ई. | रामकथा सम्बन्धी मार्मिक प्रसंगों का वर्णन है। |
| तुलसीदास | पार्वती मंगल | 1586 ई. | शिव-पार्वती के विवाह का वर्णन है। |
| तुलसीदास | जानकी मंगल | 1586 ई. | राम-सीता के विवाह का वर्णन है। |
| तुलसीदास | रामाज्ञा प्रश्न | 1612 ई. | शुभ-अशुभ शकुन विचार हेतु लिखा राम काव्य है। |
| तुलसीदास | कृष्णगीतावली | 1571 ई. | श्रीकृष्ण का बालचरित्र, गोपिका-प्रेम और मथुरा गमन का चित्रण है। |
| तुलसीदास | गीतावली | 1571 ई. | मुक्तकों में रामकथा वर्णित है। कथा सात काण्डों में विभक्त है। |
| तुलसीदास | कवितावली | 1612 ई. | कवित्त छन्द में रामकथा का वर्णन है। रामकथा सात काण्डों में विभक्त है। |
| तुलसीदास | विनय-पत्रिका | 1585 ई. | व्यक्तिगत एकांतिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से 'विनय-पत्रिका' भक्ति काव्य में अनू [cut off] इसमें 280 पद, भाषा ब्रज और शान्त रस की प्रधानता है। |
| नाभादास | भक्तमाल | 1585 ई. | दो सौ भक्तों का चरित्र-वर्णन है। |
| नाभादास | अष्टयाम | 1585 ई. | रामभक्ति विषयक माधुर्य उपासना के पद संगृहीत हैं। |
| केशवदास | रामचन्द्रिका | 1601 ई. | वाल्मीकि रामायण के आधार पर रामकथा वर्णित है। |
| प्राणचन्द चौहान | रामायण महानाटक | 1610 ई. | संवाद शैली में रामकथा का चित्रण है। |
| हृदयराम | हनुमन्नाटक | 1623 ई. | संस्कृत के हनुमन्नाटक के आधार पर सवैया छन्द में रचित नाटक है। |
| लालदास | अवधविलास | 1643 ई. | रामजन्म से वन-गमन तक की कथा वर्णित है। |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

| रचनाकार | रचना | रचनाकाल | वर्ण्य विषय |
|---|---|---|---|
| सेनापति | कवित्त रत्नाकर | 1649 ई. | इस ग्रन्थ की चौथी पाँचवीं तरंगों में रामकथा का वर्णित है। |
| भावदास | अध्यात्म रामायण | 1624 ई. | संस्कृत की अध्यात्म रामायण पर आधारित रामकथा का वर्णन है। |
| भावदास | रामरासो | 1618 ई. | रामकथा की मुख्य घटनाओं, जीवन-प्रसंगों और चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन है। |
| रामप्रिया शरण दास | सीतायन | 1703 ई. | सीताजी को प्रधानता देकर रामकथा का वर्णन है। |

## कृष्ण काव्य

| रचनाकार | रचना | रचनाकाल | वर्ण्य विषय |
|---|---|---|---|
| सूरदास | सूरसागर | 1530-1547 ई. | श्रीमद्भागवत की पद्धति पर द्वादश स्कन्धों में कृष्ण भक्ति का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। |
| सूरदास | सूरसारावली | 1548 ई. | सूरसागर की विषयानुक्रमणिका |
| सूरदास | साहित्यलहरी | 1550 ई. | सुप्रसिद्ध दृष्टकूट पदों का संकलन (नायिका भेद सम्बन्धी शृंगार ग्रन्थ) |
| परमानन्द दास | परमानन्द सागर | 1550 ई. | कृष्ण के मथुरागमन से भँवर गीत तक के प्रसंग का चित्रण है। |
| नन्ददास | अनेकार्थ मन्जरी | 1553-1583 ई. | पर्यायकोश ग्रन्थ |
| नन्ददास | मानमन्जरी | 1553-1583 ई. | अमरकोश के आधार पर पर्यायवाची शब्दों का संकलन है। |
| नन्ददास | रसमन्जरी | 1553-1583 ई. | नायिका भेद सम्बन्धी शृंगार ग्रन्थ |
| नन्ददास | भँवरगीत | 1553-1583 ई. | भ्रमरगीत परम्परा का उच्चकोटि का काव्यग्रन्थ है। |
| नन्ददास | रासपंचाध्यायी | 1553-1583 ई. | श्रीकृष्ण की रासलीला का वर्णन कोमल संगीतात्मक पदावली में किया गया है। इसे हिन्दी का गीत गोविन्द कहा जाता है। यह खण्ड काव्य है। |
| नन्ददास | रूपमंजरी | 1553-1583 ई. | रूपमंजरी और कृष्ण की प्रेमगाथा |
| नन्ददास | विरहमंजरी | 1553-1583 ई. | विरह के भेदों का काव्यशास्त्रीय विवेचन |
| नन्ददास | श्याम सगाई | 1553-1583 ई. | राधा-कृष्ण की सगाई का रोचक चित्रण |
| नन्ददास | सुदामा चरित | 1553-1583 ई. | सुप्रसिद्ध कृष्ण और सुदामा की कथा का वर्णन |
| नन्ददास | रुक्मणि मंगल | 1553-1583 ई. | रुक्मणि हरण और कृष्ण के साथ उनके विवाह का वर्णन |
| नन्ददास | सिद्धान्तपंचाध्यायी | 1553-1583 ई. | कृष्ण और गोपियों की रासलीला का आध्यात्मिक वर्णन |
| नन्ददास | दशम् स्कन्धभाषा | 1553-1583 ई. | श्रीमद्भागवत के स्कन्ध का दोहा-चौपाई में रूपान्तरण |
| नन्ददास | गोवर्धन लीला | 1553-1583 ई. | श्रीकृष्ण की विविध लीलाओं एवं कृष्ण चरित का गुणगान |
| नन्ददास | नन्ददास पदावली | 1553-1583 ई. के मध्य | बारह प्रकरणों में राधा-कृष्ण सम्बन्धी विविध प्रकरण |
| कृष्णदास | जुगलमान चरित | 1553-1583 ई. के मध्य | राधा-कृष्ण के प्रेम का शृंगारपरक चित्रण |
| निम्बार्काचार्य | वेदान्त पारिजात सौरभ | 1553-1583 ई. के मध्य | ब्रह्मसूत्र पर वृत्ति |
| निम्बार्काचार्य | दशश्लोकी | 1553-1583 ई. के मध्य | दस श्लोकों में भक्ति सिद्धान्त प्रतिपादक रचना |
| श्रीभट्ट | युगलशतक | 1553-1583 ई. के मध्य | राधा-कृष्ण की युगल लीलाओं का वर्णन |
| हितहरिवंश | हितचौरासी | 1553-1583 ई. के मध्य | राधा-कृष्ण का प्रेम, नित्य विहार, रासलीला आदि का शृंगारिक वर्णन |
| हितहरिवंश | स्फुटवाणी | 1553-1583 ई. के मध्य | राधा-भक्ति, जीवनोद्देश्य आदि विषयों पर स्फुट रचनाएँ |
| ध्रुवदास | बयालीस लीला | 1603-1643 ई. के मध्य | राधा-कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का वर्णन |
| ध्रुवदास | सिद्धान्त विचार | 1603-1643 ई. के मध्य | भक्ति-सिद्धान्त विवेचन |
| ध्रुवदास | भक्तनामावली | 1603-1643 ई. के मध्य | संक्षेप में अनेक भक्तों का परिचयात्मक वर्णन |
| स्वामी हरिदास | सिद्धान्त के पद | 1603-1643 ई. के मध्य | भक्ति के सिद्धान्तों का वर्णन |
| स्वामी हरिदास | केलिमाल | 1603-1643 ई. के मध्य | श्री श्यामाकुंज विहारी की विविध लीलाओं का 110 पदों में सुन्दर चित्रण |
| मीराबाई | नरसीजी का मायरा | 1528-1543 ई. के मध्य | नरसीजी की भक्ति का वर्णन |
| मीराबाई | गीतगोविन्द टीका | 1528-1543 ई. के मध्य | गीतगोविन्द की भाषा टीका |
| मीराबाई | राग सोरठ पद-संग्रह | 1528-1543 ई. के मध्य | मीरा, कबीर, नानकदेव के पद |
| मीराबाई | स्फुट पद | 1528-1543 ई. के मध्य | मीरा के कृष्ण-भक्ति परक पद ('मीरा पदावली' नाम से प्रकाशित) |
| नरोत्तमदास | सुदामाचरित | – | भागवतम् में वर्णित सुदामा प्रसंग पर आधारित रचना |
| रसखान | सुजान रसखान | 1583 ई. | राधा-कृष्ण की रूपमाधुरी लीला सम्बन्धी, भक्ति, प्रेम-परक प्रसंग |
| रसखान | दानलीला | 1583-1626 ई. के मध्य | राधा-कृष्ण के पौराणिक प्रसंग पर आधारित 11 छन्दों की रचना है |
| रसखान | अष्टयाम | 1583-1626 ई. के मध्य | श्रीकृष्ण के प्रातः जागरण से रात्रिशयन पर्यन्त दिनचर्या का वर्णन |
| रसखान | प्रेम-वाटिका | 1614 ई. | राधा-कृष्ण को मालिन-माली मानकर प्रेम के गूढ़ तत्त्व का सूक्ष्म निरूपण |
| रहीम | दोहावली | 1583-1626 ई. के मध्य | नीति सम्बन्धी दोहों का संकलन |
| रहीम | शृंगार सोरठ | 1583-1626 ई. के मध्य | कृष्ण के रूप सौन्दर्य तथा गोपी-विरह का निरूपण |
| रहीम | बरवै नायिका भेद | 1583-1626 ई. के मध्य | |
| रहीम | मदनाष्टक | 1583-1626 ई. के मध्य | कृष्ण का रूपलावण्य, मुरली का सम्मोहक प्रभाव, गोपियों की विरह वेदना का चित्रण |
| गंग कवि | गंग कवित्त | 1583-1626 ई. के मध्य | शृंगार, भक्ति, नीति, राजप्रशस्तिपरक रचनाएँ |

Download From: https://sarkaripot.in/
Scanned by CamScanner

| रचनाकार | रचना/रचनाकाल | वर्ण्य विषय |
|---|---|---|
| 1. कृपाराम | हिततरंगिणी (1541 ई.) | नायिका भेद विवेचन |
| 2. केशवदास | कविप्रिया (1601 ई.) | काव्यदोष, कवियों के गुण-दोष, अलंकार, बारहमासा आदि |
| | रसिक प्रिया (1591 ई.) | रस एवं नायिका भेद |
| | वीरदेव सिंह चरित (1607 ई.) | ओरछा नरेश राजवीर सिंह देव बुन्देल का चरित्र |
| | रतनबावनी (1607 ई.) | मधुकरशाह के पुत्र रत्नसेन के वीरोत्साह का वर्णन |
| | जहाँगीर जस-चन्द्रिका (1612 ई.) | जहाँगीर की प्रशस्ति |
| | विज्ञानगीता (1610 ई.) | संस्कृत 'प्रबोधचन्द्रोदय' का पद्यानुवाद |
| 3. चिन्तामणि | रसविलास (1630-80 ई.) | भानुदत्त की 'रसमंजरी' और 'रसतरंगिणी' तथा विश्वनाथ के साहित्य दर्पण का प्रभाव है। |
| | शृंगारविलास (1630-80 ई.) | नायिका भेद विवेचन |
| | कविकुल कल्पतरु (1630-80 ई.) | सर्वांगनिरूपक विवेचन |
| | रामायण (1630-80 ई.) | रामकथा वर्णन |
| | रामाश्वमेध (1630-80 ई.) | रामकथा का अश्वमेध प्रसंग |
| | छन्दविचार पिंगल (1630-80 ई.) | कृष्ण चरित्र के माध्यम से छन्द-विवेचन |
| 4. सुखदेव मिश्र | रस रत्नाकर (1633-1703 ई.) | रसविवेचन |
| | रसार्णव (1633-1703 ई.) | नवरस वर्णन |
| | वृत्त विचार (1633-1703 ई.) | छन्द-विवेचन |
| | अध्यात्म प्रकाश (1633-1703 ई.) | शंकाराचार्य के आध्यात्मिक विचारों का विवेचन |
| 5. कुलपति मिश्र | रस रहस्य (1660-1700 ई.) | सर्वांगनिरूपण |
| | संग्राम सार (1660-1700 ई.) | महाभारत के द्रोण पर्व का पद्यबद्ध अनुवाद |
| 6. कविवर देव | भाव विलास (1689 ई.) | नवरस और अलंकार विवेचन |
| | शब्द रसायन (1689-1767 ई.) काव्य रसायन | काव्य रूप, शब्द शक्ति, रस, नायक-नायिका भेद रीति, गुण आदि विवेचन |
| | सुख सागर तरंग (1689-1767 ई.) | नायक-नायिका भेद, शृंगार रस के कवित्त सवैया |
| | अष्टयाम (1689-1767 ई.) | नायक-नायिकाओं के आठों पहर के विलासों का वर्णन |
| 7. मतिराम | ललित ललाम (1661-64 ई.) | अलंकार विवेचन |
| | रसराज (1633-43 ई.) | शृंगार रस विवेचन |
| | मतिराम सतसई (1681 ई.) | शृंगार रस विषयक दोहा ग्रन्थ |
| | अलंकार पंचाशिका (1690 ई.) | अलंकार विवेचन |
| | छन्दसार संग्रह (वृत्तकौमुदी) (1701 ई.) | छन्द विवेचन |
| 8. तोष कवि | सुधानिधि (1634 ई.) | सर्वरस निरूपण |
| 9. जसवन्त सिंह | भाषा भूषण (1650-85 ई.) | अलंकार, रस, नायिका भेद विवेचन |
| | प्रबन्ध चन्द्रोदय (1650-85 ई.) नाटक | संस्कृत के प्रबन्धचन्द्रोदय नाटक का ब्रजभाषा में पद्यानुवाद |
| 10. सोमनाथ | रस पीयूष निधि (1737 ई.) | सर्वांग निरूपण |
| | शृंगार विलास (1725-60 ई.) | शृंगार रस, नायक-नायिका भेद का विवेचन |
| | सुजान विलास (1730 ई.) | सिंहासन बत्तीसी का पद्यानुवाद |
| | पंचाध्यायी | प्रबन्धकाव्य |
| | माधव विनोद (नाटक) (1752 ई.) | मालती माधव के आधार पर रचित प्रेम प्रबन्ध |
| 11. भिखारीदास | काव्य निर्णय (1725-60 ई.) | काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, शब्दशक्ति, गुण-दोष आदि का विवचेन |
| | रससारांश (1725-60 ई.) | नवरस विवेचन |
| | शृंगारनिर्णय (1725-60 ई.) | नायक-नायिका भेद |
| | छन्दोर्णवपिंगल (1725-60 ई.) | छन्द निरूपण ग्रन्थ |
| | शब्दनाम कोश (1725-60 ई.) | शब्दकोश |
| | विष्णुपुराण (1725-60 ई.) | विष्णुपुराण का भाषानुवाद |
| | शतरंज शतिका (1725-60 ई.) | शतरंज खेल सम्बन्धी |
| 12. भूषण | शिवराज भूषण (1673 ई.) | शिवाजी की प्रशस्ति एवं अलंकार निरूपण |
| | शिवाबावनी | शिवाजी की प्रशस्ति |
| | छत्रसाल दशक | छत्रसाल की प्रशस्ति |
| 13. पद्माकर | पद्माभरण (1810 ई.) | अलंकारों का विवेचन |
| | जगद्विनोद (1803-21 ई.) | नवरस विवेचन, नायक-नायिका भेद |
| | प्रबोधपचासा (1803-21 ई.) | संसार की जटिलता और क्षणभंगुरता का वर्णन |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| रचनाकार | रचना/रचनाकाल | वर्ण्य विषय |
|---|---|---|
| | गंगालहरी (1803-21 ई.) | गंगाजी पर स्तुति |
| | राम-रसायन (1803-21 ई.) | रामकथा पर आधारित ग्रन्थ |
| | हिम्मत बहादुर विरुदावली (1792 ई.) | आश्रयदाता हिम्मत बहादुर की वीरता का ओजपूर्ण वर्णन |
| | प्रताप सिंह विरुदावली (1803-21 ई.) | राज प्रताप सिंह की वीरता का वर्णन |
| 14. कुलपति मिश्र | छन्दोहृदय प्रकाश (1666 ई.) | विस्तृत एवं व्यवस्थित छन्द-विवेचन |
| 15. कालिदास त्रिवेदी | वरवधू विनोद (1662 ई.) | नखशिख तथा नायिका-भेद विवेचन |
| 16. कुमारमणि | रसिकरंजन (1708 ई.) | संस्कृत काव्य का सूक्ति संग्रह |
| | रसिकरसाल (1719 ई.) | काव्यांग विवेचन |
| 17. लाल कवि | छत्रप्रकाश | राजा छत्रसाल का जीवन-चरित्र दोहा-चौपाई में |
| 18. कुलपति | कविकुल कण्ठाभरण | 115 अलंकारों का विवेचन |
| 19. रसलीन | अंग दर्पण (1737 ई.) | नखशिख वर्णन |
| | रसप्रबोध (1742 ई.) | रस के अंगों का विस्तृत वर्णन |
| 20. रसिक गोविन्द | गोविन्दानन्दघन (1801 ई.) | रस के लक्षण, नायक-नायिका भेद, गुण, दोष, अलंकार-विवेचन |
| | पिंगल | छन्द-विवेचन |
| 21. जगत सिंह | साहित्य सुधानिधि | काव्य का सर्वांगनिरूपण |
| 22. जनराज | कविता रस विनोद | काव्य का सर्वांगनिरूपण |
| 23. गोप कवि | रामचन्द्रभूषण | अलंकार-विवेचन |
| | रामचन्द्राभरण | ओरछा नरेश पृथ्वी सिंह के आश्रय में अलंकार निरूपण |
| 24. प्रताप साही | व्यंग्यार्थ कौमुदी (1825 ई.) | व्यंग्यार्थ महत्त्व, शब्द-शक्ति, अलंकार, नायक-नायिका भेद |
| | काव्य विलास (1829 ई.) | काव्य लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु, काव्य भेद, शब्द-शक्ति, गुण-दोष निरूपण |
| 25. ग्वाल कवि | साहित्यानन्द (1824 ई.) | काव्य का सर्वांगनिरूपण |
| | कवि दर्पण | काव्य-दोष |
| | रसिकानन्द (1847 ई.) | नायक-नायिका भेद, रस विवेचन |
| | प्रस्तार प्रकाश | छन्द-निरूपण |
| | यमुना लहरी (1822 ई.) | यमुना की स्तुति |
| | गोपी पच्चीसी | प्रबन्ध काव्य |
| | विजय विनोद | प्रबन्ध काव्य |
| | हम्मीर हठ (1824 ई.) | हम्मीर की वीरता का वर्णन |
| | भक्त भावन (1862 ई.) | भक्ति, शृंगार और नीति सम्बन्धी रचनाओं का संग्रह |
| 26. बेनी प्रवीन | नवरस तरंग (1817 ई.) | नवरस विवेचन |
| 27. अमीरदास | ब्रजविलास सतसई (1832 ई.) | शृंगार, भक्ति, नीति विषयक 701 दोहों का संकलन |
| | सभामंडन (1827 ई.) | काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु, काव्य भेद, शब्दार्थ-वृत्ति, ध्वनि, भाव, रस, गुण, नायक-नायिका भेद निरूपण |
| | वृत्त चन्द्रोदय (1830 ई.) | 40 मात्रिक और 61 वार्णिक छन्दों का निरूपण |
| | श्रीकृष्ण साहित्य सिन्धु | पाँच तरंगों में काव्य स्वरूप, शब्द-शक्ति, ध्वनि भेद, रस, नायक-नायिका भेद, दोष, अलंकार आदि का निरूपण |
| | शेर सिंह प्रकाश (1840 ई.) | पाँच शब्दालंकार और 65 अर्थालंकारों के विवेचन में शेरसिंह की प्रशस्ति |
| 28. याकूब खाँ | रसभूषण | नायक-नायिका भेद, नवरस विवेचन |
| 29. सूदन | सुजान चरित | भरतपुर नरेश सुजान सिंह की वीर प्रशस्ति |
| 30. जोधराज | हम्मीर रासो (1818 ई.) | महाराजा हम्मीर के चरित्र का छप्पय पद्धति में वर्णन |
| 31. हरिनाथ | अलंकार दर्पण | 86 दोहों में अलंकारों के लक्षण और 40 छन्दों में सभी लक्षणों के उदाहरण |
| 32. चन्द्रशेखर बाजपेयी | हम्मीर हठ | हम्मीर की शौर्यगाथा |
| | रसिक विनोद (1886 ई.) | नवरस विवेचन |
| | नखशिख | राधाजी के नख-शिख का रूप वर्णन |
| 33. माखन कवि | छन्द विलास (1702 ई.) | छन्द विवेचन |
| 34. बिहारी | बिहारी सतसई (1662 ई.) | अलंकार, रस, भाव, नायिका भेद आदि को ध्यान में रखकर दोहों की रचना |
| 35. सेनापति | कवित्त रत्नाकर (1649 ई.) | श्लेष अलंकार, शृंगार, ऋतु वर्णन, रामचरित और रामभक्ति वर्णन। इसमें पाँच तरंग और सौ चौरानवें छन्द हैं। |
| | काव्यकल्पद्रुम | यह ग्रन्थ अप्राप्य है। अनेक विद्वान 'काव्यकल्पद्रुम' और 'कवित्त-रत्नाकर' को एक ही क मानते हैं। |
| 36. रसनिधि | रतन हजारा | बिहारी सतसई के अनुकरण पर शृंगार, भक्ति, नीति विषयक दोहे |
| 37. कृष्ण कवि | सतसई की टीका (1725 ई.) | कवित्त सवैया छन्द में सतसई की टीका |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| रचनाकार | रचना/रचनाकाल | वर्ण्य विषय |
|---|---|---|
| 38. नेवाज | शकुन्तला नाटक | यह नाटक न होकर काव्य ग्रन्थ है। इसमें भावों का मार्मिक चित्रण है। |
| 39. हठीजी | श्रीराधा सुधाशतक (1780 ई.) | राधा के वर्णन में राजसी ठाठ-बाट और विलास का वर्णन |
| 40. द्विजदेव | शृंगार लतिका | रस अलंकार, नायिका भेद के लक्षणों को ध्यान में रखकर उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं |
| | शृंगार बत्तीसी | " |
| 41. घनानन्द | सुजानहित | कवित्त-सवैयों में लौकिक शृंगार-वर्णन |
| | इश्कलता | पंजाबी और उर्दू शब्दों का आधिक्य, प्रेम के उदात्त रूप का वर्णन, विषय-विप्रलम्भ, शृंगार, एवं वियोग |
| | वियोगवेलि | शृंगार की सभी अवस्थाओं का चित्रण |
| | प्रीतिपावस | वर्षा-वर्णन |
| | यमुनायश | यमुना महात्म्य |
| | वृन्दावनसत | वृन्दावन महात्म्य |
| | प्रेम-पत्रिका | श्रीकृष्ण के नाम पद्यबद्ध पत्र |
| | सरसवसन्त | एक लम्बी कविता है |
| | पदावली | श्रीकृष्ण-विनय-भक्ति के पद, गो-चारण, वंशीवादन, होली, रास सम्बन्धी पद |
| | कृष्णकौमुदी | श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन |
| 42. आलम | माधवानलकामकन्दकला | प्रेमाख्यानक प्रबन्ध काव्य |
| | आलमकेलि | लौकिक प्रेम की भावनात्मक और परम्परामुक्त अभिव्यक्ति। इसका मूल वर्ण्य शृंगार और भक्ति है। |
| | श्यामसनेही | प्रबन्ध काव्य, रुक्मिणी के विवाह का वर्णन |
| | सुदामाचरित | कृष्णभक्तिपरक काव्य |
| 43. बोधा | विरहवारीश | माधवानल कामकन्दला की प्रेमकथा बोधा और सुभान के संवाद के रूप में है। |
| | विरही सुभान दम्पति विलास (इश्कनामा) | प्रेम विषयक मुक्तक-संग्रह |
| 44. ठाकुर | ठाकुर ठसक | प्रेम के पंथ को वर्ण्य विषय बनाकर उसका स्वछन्द वर्णन |
| | ठाकुर शतक | प्रेम का स्वछन्द वर्णन |
| 45. द्विजदेव | शृंगारलतिका | वसन्त पर रचित 33 पद्यों में हृदय की अन्तर्दशाओं का मार्मिक उद्‌घाटन |
| | शृंगारबत्तीसी | शृंगार और प्रकृति वर्णन |
| 46. गिरिधर कविराय | कुण्डलियाँ (1743 ई.) | नीति विषयक कुण्डलियाँ |
| 47. वृन्द | वृन्दसतसई (1704 ई.) | नीतिपरक दोहे |
| | भावपंचशिका (1680 ई.) | शृंगार के विभिन्न भावों के अनुसार सरस छन्द |
| | बारहमासा (1668 ई.) | बारह महीनों का सुन्दर वर्णन |
| | शृंगार शिक्षा (1691 ई.) | आभूषण और शृंगार के साथ नायिका वर्णन |
| | नयनपचीसी (1686 ई.) | नेत्रों द्वारा विभिन्न भावों का चित्रण |
| | पवनपचीसी (1691 ई.) | षड्ऋतुओं का स्वरूप और प्रभाव |
| | यमकसतसई (1706 ई.) | शृंगार और भक्तिपरक छन्दों में यमक अलंकार का विवेचन |
| 48. रामसहायदास | रामसतसई | 'बिहारी सतसई' के अनुकरण पर सतसई ग्रन्थ |
| 49. दीनदयाल गिरि | अन्योक्तिकल्पद्रुम | लौकिक विषयों पर अन्योक्तियाँ |
| | अनुराग बाग | कृष्ण वियोग में श्लेषमय षड्ऋतुओं का वर्णन |
| | दृष्टान्त तरंगिणी | पंचतन्त्र पर आधारित नीतिपरक छन्द |
| 50. बैताल | विक्रमसतसई | नीतिपरक कुण्डलियाँ |
| 51. रहीम | बरवै नायिक-भेद | बरवै छन्द में नायिका भेद |
| | नगरशोभा | विभिन्न जाति की नायिकाओं का वर्णन |
| 52. विश्वनाथ सिंह | आनन्द रघुनन्दन | ब्रजभाषा का प्रथम नाटक |
| 53. रघुराज सिंह | रामस्वयंवर | रामकथा पर आधारित प्रबन्ध-काव्य |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

## आधुनिक काल एवं रचनाएँ

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | प्रेममालिका, प्रेम सरोवर, गीत गोविन्दानन्द, वर्षा विनोद, प्रेम विनय पचासा, प्रेम फुलवारी, वेणुगीत आदि |
| श्रीधर पाठक | भारतोत्थान, भारत प्रशंसा, जॉर्जवन्दना, बालविधवा, वनाष्टक, कश्मीर सुषमा (1904), देहरादून (1915), भारतगीत (1928) |
| अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' | प्रियप्रवास (1914), पद्यप्रसून (1925), रसकलश (1931), चुभते चौपदे, चोखे चौपदे (1932), बोलचाल, वैदेही वनवास (1940) |
| मैथिलीशरण गुप्त | रंग में भंग (1905), जयद्रथ वध (1910), भारत भारती (1912), पंचवटी (1925), झंकार (1929), साकेत (1931), यशोधरा (1932), द्वापर (1936), जयभारत (1952), विष्णुप्रिया (1957) |
| रामनरेश त्रिपाठी | मिलन (1917), पथिक (1920), मानसी (1927), स्वप्न (1929) |
| मुकुटधर पाण्डेय | पूजा फूल, कानन-कुसुम |
| जगन्नाथ दास रत्नाकर | उद्धवशतक (1929), गंगावतरण (1923), शृंगार लहरी, हरिश्चन्द्र, हिंडोला, रत्नाष्टक |
| बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' | उर्मिला (1957), कुंकुम (1939), अपलक, रश्मि रेखा, क्वासि, हम विषपायी जनम के |
| सुभद्रा कुमारी चौहान | 'त्रिधारा' और 'मुकुल' (1930) में कविताएँ संकलित हैं, 'वीरों का कैसा हो वसन्त' और 'झाँसी की रानी कविता' अति प्रसिद्ध हैं, 'मेरा नया बचपन', 'बालिका का परिचय' और 'इसका रोना' कविताओं में घरेलू जीवन के मनोरम दृश्य हैं। |
| जयशंकर प्रसाद | उर्वशी (1909), वनमिलन (1909), प्रेमराज्य (1909), अयोध्या का उद्धार (1910), शोकोच्छ्वास (1910), बभ्रुवाहन (1911), कानन कुसुम (1913), प्रेम पथिक (1913), करुणालय (1913), महाराणा का महत्त्व (1914), झरना (1918), आँसू (1925), लहर (1933), कामायनी (1935), |
| सुमित्रानन्दन पन्त | छायावादी–गिरजे का घण्टा (1916), उच्छ्वास (1920), ग्रन्थि (1920), वीणा (1918), पल्लव (1926), गुंजन (1932)<br>प्रगतिवादी–युगान्त (1936), युगवाणी (1939), ग्राम्या (1940)<br>आध्यात्मवादी या दार्शनिक–स्वर्णकिरण (1947), स्वर्णधूलि (1947), युगान्तर (1948), उत्तरा (1949), रजत शिखर (1951), शिल्पी (1952), अतिमा (1955), सौवर्ण (1957), वाणी (1958), कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन (1964) |
| सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' | अनामिका (1923), परिमल (1929), तुलसीदास (1934), गीतिका (1936), कुकुरमुत्ता (1942), अणिमा (1943), बेला (1943), अपरा (1946), नए पत्ते (1946), अर्चना (1950), आराधना (1953), गीतगुंज (1954), सांध्य-काकली (मरणोपरान्त) 1954 से 1958 तक की रचनाओं का संकलन, 'राम की शक्ति पूजा', 'शिवाजी का पत्र', 'वन बेला', सरोज-स्मृति लम्बी कविताएँ हैं। मास्कोडायलाग्स, गर्म पकौड़ी, प्रेम संगीत व्यंग्य कविताएँ हैं। 'तुलसीदास', 'खण्ड काव्य' तथा 'पंचवटी प्रसंग' काव्य नाटक है। |
| महादेवी वर्मा | नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1935), सांध्यगीत (1936), यामा (1936), दीपशिखा (1942), सप्तपर्णा (1960) |
| माखनलाल चतुर्वेदी | हिमकिरीटिनी (1943), हिमतरंगिनी (1949), माता (1951), युगचरण (1956), समर्पण, वेणुलो गूंजे धरा (1960), मरण-ज्वार (1963), बीजुरी काजल आँज रही आदि कविता संग्रह हैं। |
| रामधारी सिंह 'दिनकर' | रेणुका (1935), हुंकार, सामधेनी, कलिंग विजय, मेरे स्वदेश, रसवन्ती, द्वन्द्वगीत, कुरुक्षेत्र, उर्वशी, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा, इतिहास के आँसू, धूप और धुआँ, दिल्ली, नीम के पत्ते, नील कुसुम, नए सुभाषित, कोयला और कवित्व, हारे को हरिनाम इत्यादि। |
| सच्चिदानन्द हीरानन्द | छायावादी–भग्नदूत (1933), चिन्ता (1942) प्रयोगवादी–इत्यलम् (1946) |
| वात्स्यायन 'अज्ञेय' | सावनमेघ, हरी घास पर क्षणभर (1949), बावरा अहेरी (1954), इन्द्रधनुष रौंदे हुए थे (1957), अरी ओ करुणा प्रभामय (1959), आँगन के पार द्वार (1961), कितनी नावों में कितनी बार (1967), सागर मुद्रा, क्योंकि मैं उसे पहले जानता हूँ, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ, महावृक्ष के नीचे, नदी की बांक पर छाया इत्यादि, असाध्यवीणा अज्ञेय की लम्बी कविता है। |
| गजानन माधव 'मुक्तिबोध' | चाँद का मुँह टेढ़ा है (1964), भूरी-भूरी खाकधूल (1980) काव्यसंग्रह हैं। अन्धेरे में, ब्रह्मराक्षस, चम्बल की घाटी, उपकृत हूँ, नक्षत्र खण्ड, मेरे मित्र मेरे सहचर, ओ काव्यात्मन् फणिधर, एक अरूप शून्य के प्रति, विक्षुब्ध बुद्धि के मारक स्वर, एक नीली आग, जिन्दगी बुरादा तो बनेगी ही, लाल सलाम, क्रान्ति, सूखे कठोर नंगे पहाड़ इत्यादि चर्चित कविताएँ हैं। |
| नागार्जुन | युगधारा (1953), सतरंगे पंखों वाली (1959), प्यासी पथराई आँखें (1962), तालाब की मछलियाँ (1975), खिचड़ी, विप्लव देखा हमने (1980), तुमने कहा था (1980), पुरानी जूतियों का कोरस (1983), भस्मांकुर (1971), हजार-हजार बाँहों वाली (1981) इत्यादि। |
| नरेश मेहता | मुक्तक काव्य–दूसरे सप्तक में संकलित कविताएँ, बनपाँखी सुनो (1954), बोलने दो चीड़ को (1962), मेरा समर्पित एकान्त (1963), उत्सव, तुम मेरा मौन हो (1982), 'अरण्या' (1985)<br>खण्ड काव्य–संशय की एक रात (1962), महाप्रस्थान (1965), प्रवाद-पर्व (1977), शबरी, प्रार्थना पुरुष (1986) |
| भवानी प्रसाद मिश्र | गीत फरोश (1930-45), चकित है दुःख (65 कविताएँ), अन्धेरी कविताएँ (1968), गाँधी पंचशती (1969), बुनी हुई रस्सी (1971), खुशबू के शिलालेख (1973), व्यक्तिगत (1974) |
| सर्वेश्वर दयाल सक्सेना | काठ की घंटियाँ (1949-57), बाँस का पुल (1958-63), एक सूनी नाव (1963-66), गर्म हवाएँ (1966-69), कुआनो नदी (1969-73), जंगल का दर्द (1974-76), खूँटियों पर टँगे लोग (1976-81), कोई मेरे साथ चले (1985) |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| सुदामा प्रसाद पाण्डेय 'धूमिल' | संसद से सड़क तक (1972), कल सुनना मुझे (1976), सुदामा पाण्डेय का जनतन्त्र इनके काव्य संकलन हैं। बीस साल बाद, अकाल दर्शन, मोचीराम, कवि (1970), कुत्ता, मुनारिब कार्रवाई, प्रौढ़ शिक्षा, मकान, भाषा की रात, पटकथा, शहर का व्याकरण, सच्ची बात, हत्यारी-सम्भावनाओं के बीच इनकी ख्याति प्राप्त कविताएँ हैं। |
| धर्मवीर भारती | अन्धा युग (1954), कनुप्रिया (1959), ठण्डा लोहा (1946), सात गीत वर्ष (1996) |
| हरिवंश राय 'बच्चन' | मधुशाला (1935), मधुबाला, मधुकलश, निशा निमन्त्रण (1938), एकान्त संगीत, आकुल अन्तर, सतरंगिनी, नीड़ का निर्माण फिर-फिर, आज कितनी, प्रणय-पत्रिका (1955), वासनामय चाँदनी है, बंगाल का काल (1946), खादी के फूल, सूत की माला, बुद्ध और नाचघर (1958), त्रिभंगिमा (1961), चार खेमे चौंसठ खूँटे, रंग बरसे भीगे चुनरवाली |
| केदारनाथ अग्रवाल | फूल नहीं रंग बोलते हैं (1965), आग का आइना (1970), देश-देश की कविताएँ (1978), गुलमेंहदी (1978), पंख और पतझर (1979), हे मेरी तुम (1981), मार प्यार की थापें (1981), कहें केदार खरी-खरी (1983), बम्बई का रक्त स्नान (1983), जमुनजल तुम (1984), अपूर्वा (1984), बोल-बोल अबोल (1985), जो शिलाएँ तोड़ते हैं (1985) |
| शमशेर बहादुर सिंह | 'दूसरा सप्तक' में संकलित (21 कविताएँ), कुछ कविताएँ (1959), कुछ और कविताएँ (1961), चुका भी नहीं हूँ मैं (1975), बात बोलेगी (1981), इतने पास अपने (1985), काल तुझसे होड़ है मेरी (1988) |
| गिरिजाकुमार माथुर | मंजीर (1941), भाषा और निर्माण (1946), धूप के धान (1956), शिलापंख चमकीले (1961), जो बँध नहीं सका (1968), छाया मत छूना मन (1978), जन्म-कैद (रेडियो काव्य नाटक 1957), पृथ्वीकल्प आदि। |
| रघुवीर सहाय | सीढ़ियों पर धूप में (1960), आत्महत्या के विरुद्ध (1967), हँसो जल्दी हँसो (1975), बड़ी हो रही है लड़की, काला नंगा पैदल बच्चा, आज का पाठ है, लोग भूल गए हैं (1982), कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ (1989), एक समय था (1994) |
| विजयदेव नारायण साही | मछलीघर (1966), साखी |
| कुँवर नारायण | चक्रव्यूह (1956), परिवेशः हम-तुम (1961), आत्मजयी (आख्यानक खण्डकाव्य 1965), कोई दूसरा नहीं (1993) |
| केदारनाथ सिंह | जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, बाघ, रोटी या बैल, |
| डॉ. रामदरश मिश्र | 'पक गई धूप, कन्धे पर सूरज, दिन तक नदी बन गया' |
| आलोक धन्वा | जनता का आदमी गोली दागो पोस्टर |
| मंगलेश डबराल | घर का रास्ता, पहाड़ पर लालटेन |

## निबन्ध

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | कश्मीर कुसुम, बादशाह दर्पण, उदयपुरोदय, तदीय सर्वस्व, सूर्योदय, ईश्वर बड़ा विलक्षण है, एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न, स्वर्ग में सभा विचार |
| प्रतापनारायण मिश्र | निबन्ध नवनीत, प्रताप पीयूष, खुशामद, माता का स्नेह, आँसू, लक्ष्मी, कालचक्र का चक्कर, आत्मगौरव इत्यादि। |
| महावीरप्रसाद द्विवेदी | म्युनिसपैलिटी के कारनामे, आत्म निवेदन, प्रभात, सुतापराधे जनकस्य दण्ड, रसज्ञरंजन, संचयन, साहित्य सीकर, विचार-विमर्श कवि और कविता |
| सरदार पूर्णसिंह | आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम, सच्ची वीरता, कन्यादान, पवित्रता इत्यादि। |
| बाबू श्यामसुन्दर दास | समाज और साहित्य, कला का विवेचन, कर्त्तव्य और सभ्यता, सहित्यालोचन |
| आचार्य रामचन्द्र शुक्ल | भय और क्रोध, ईर्ष्या, घृणा, उत्साह, श्रद्धाभक्ति, करुणा, लज्जा और ग्लानि, लोभ और प्रीति इत्यादि चिन्तामणि (तीन भागों में संकलित) |
| गुलाबराय | ठलुआ क्लब, फिर निराश क्यों, मेरी असफलताएँ, मन की बातें, मेरा मकान, मेरे नपिताचार्य, मेरी दैनिकी का एक पृष्ठ, प्रीति-भोज इत्यादि |
| पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी | अतीत स्मृति, उत्सव, श्रद्धांजलि के दो फूल आदि। |
| माखनलाल चतुर्वेदी | अमीर इरादे गरीब इरादे (1960), साहित्य देवता |
| रामवृक्ष बेनीपुरी | माटी की मूरतें (1941-45), वन्दे वाणी विनायकौ (1953-54), गेहूँ और गुलाब (1950) आदि। |
| इलाचन्द्र जोशी | साहित्य सर्जना (1938), विवेचना (1943), विश्लेषण (1953), साहित्य चिन्तन (1934), देखा-परखा (1957) |
| यशपाल | न्याय का संघर्ष (1940), बात-बात में बात (1950), देखा-सोचा-समझा (1951) आदि। |
| हजारीप्रसाद द्विवेदी | अशोक के फूल (1948), कल्पलता (1951), मध्यकालीन धर्मसाधना (1952), विचार और वितर्क (1957), विचार प्रवाह (1959), कुटज (1964), साहित्य सहचर (1965), आलोकपर्व (1972) इत्यादि। |
| जैनेन्द्र | प्रस्तुत प्रश्न (1936), जड़ की बात (1945), पूर्वोदय (1951), साहित्य का श्रेय और प्रेय (1953), मन्थन (1953), सोचविचार (1953), काम प्रेम और परिवार (1953), इतस्ततः (1963), समय और हम (1964), परिप्रेक्ष (1977), साहित्य और संस्कृति (1979) |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी | हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी (1942), आधुनिक साहित्य (1950), नया साहित्य नए प्रश्न (1955), राष्ट्रभाषा की समस्याएँ (1961), नई कविता (1976), रस सिद्धान्त (1977), हिन्दी साहित्य का आधुनिक युग (1978), आधुनिक साहित्य : सृजन और समीक्षा (1978), रीति और शैली (1979) |
| कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' | नई पीढ़ी नए विचार (1950), जिन्दगी मुस्कराई (1954), बाजे पायलिया के घुंघरू (1957), माटी हो गई सोना (1957), महके आँगन चहके द्वार, क्षण बोले कण मुस्काए, अनुशासन की राह में, जिन्दगी लहलहायी आदि प्रसिद्ध निबन्ध संग्रह हैं। |
| महादेवी वर्मा | शृंखला की कड़ियाँ (1942), क्षणदा (1957), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध (1964), सम्भाषण (1975), भारतीय संस्कृति के स्वर (1984), संकल्पिता (1968), आदि निबन्ध संग्रह हैं। |
| रामधारी सिंह 'दिनकर' | मिट्टी की ओर (1946), अर्द्धनारीश्वर (1952), रेती के फूल (1954), हमारी सांस्कृतिक एकता (1956), वेणुवन (1958), उजली आग (1956), राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता (1956), धर्म नैतिकता और विज्ञान (1959), वटपीपल (1961), साहित्यमुखी (1968), आधुनिकता बोध (1973) |
| अज्ञेय | त्रिशंकु (1945), सबरंग कुछ राग (1956), आत्मनेपद (1960), आलबाल (1971), लिखि कागद कोरे (1972), अद्यतन (1977), जोग लिखी (1977), स्रोत और सेतु (1978), युग सन्धियों पर (1982), धार और किनारे (1982), कहाँ है द्वारका (1982), छाया का जंगल (1984), स्मृति छन्दा (1989), अर यायावर रहेगा याद। |
| डॉ. रामविलास शर्मा | प्रगति और परम्परा (1949), साहित्य और संस्कृति (1949), भाषा साहित्य और संस्कृति (1954), प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ (1954), लोक जीवन और साहित्य (1955), स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य (1956), आस्था और सौन्दर्य (1961), साहित्य-स्थायी मूल्य और मूल्यांकन (1981), भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा (1985), परम्परा का मूल्यांकन (1981), भाषा युगबोध और कविता (1981), कथा विवेचन और गद्यशिल्प (1982), विरामचिन्ह (1985) |
| डॉ. विजयेन्द्र स्नातक | चिन्तन के क्षण (1966), विचार के क्षण (1970), विमर्श के क्षण (1979) |
| डॉ. नगेन्द्र | विचार और अनुभूति (1949), आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ (1951), विचार-विश्लेषण (1955), विचार और विवेचन (1959), अनुसंधान और आलोचना (1961), आलोचक की आस्था (1966), आस्था के चरण (1968) |
| प्रभाकर माचवे | सन्तुलन (1954), खरगोश के सींग (1951), बेरंग (1955) |
| हरिशंकर परसाई | पगडंडियों का जमाना (1966), जैसे उनके दिन फिरे (1963), सदाचार का तावीज (1967), अपनी-अपनी बीमारी (1972), वैष्णव की फिसलन (1976), विकलांग श्रद्धा का दौर (1980), बेईमानी की परत (1983), आवारा भीड़ के खतरे (1998), पाखण्ड का अध्यात्म (1998), ठिठुरता हुआ गणतंत्र (1970) |
| नामवर सिंह | बकलमखुद (1951), वाद-विवाद संवाद (1989) |
| विद्यानिवास मिश्र | छितवन की छाँह (1953), हल्दी दूब (1955), कदम की फूली डाल (1956), तुम चन्दन हम पानी (1957), आँगन का पंछी और बंजारा मन (1963), मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (1974), कौन तू फुलवा बीननिहारि (1980), नैरन्तर्य और चुनौती (1988), भाव पुरुष श्रीकृष्ण (1990), सोऽहम् (1991), पीपल के बहाने (1994), भारतीय चिन्तनधारा (1995), लोक और लोक का स्वर (2000), थोड़ी-सी जगह दें (2004) |
| धर्मवीर भारती | ठेले पर हिमालय (1958), पश्यन्ती (1969), कहनी-अनकहनी (1970), कुछ चेहरे कुछ चिन्तन (1995), शब्दिता (1997) |
| विवेकी राय | किसानों का देश (1956), गाँवों की दुनिया (1957), त्रिधारा (1958), फिर बैतलवा डाल पर (1962), जुलूस रुका है (1977), गँवई गन्ध गुलाब (1980), नया गाँव नाम (1984), आम रास्ता नहीं है (1988), आस्था और चिन्तन (1991), जगत तपोवन सो कियो (1995), वनतुलसी की गन्ध (2002), जीवन अज्ञात गणित है (2004) |
| शिवप्रसाद सिंह | शिखरों के सेतु (1962), कस्तूरी मृग (1972), चतुर्दिक (1972), मानसी गंगा (1986), किस-किस को नमन करूँ (1987), क्या कहूँ कुछ कहा न जाए (1995), खालिस मौज में (1998) |
| कुबेरनाथ राय | प्रिया-नीलकण्ठी (1968), आखेटक (1970), गन्धमादन (1972), विषाद योग (1973), निषाद बाँसुरी (1974), पर्ण मुकुट (1978), महाकवित की तर्जनी (1979), कामधेनु (1980), मन पवन की नौका (1982), किरात नदी में चन्द्रमधु (1983), दृष्टि अनिसार (1984), मराल (1993), उत्तर कुरु (1994), वाणी का क्षीर सागर (1998), अन्धकार में अग्नि शिखा (1998), आगम की नाव (2002) |
| डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र | बेहया का जंगल (1981), मकान उठ रहे हैं (1990), सम्बुद्धि (1997), आँगन की तलाश (1999) |
| रमेश चन्द्र शाह | रचना के बदले (1967), शैतान के बहाने (1980), आडू का पेड़ (1984), सबद निरन्तर (1987), भूलने के विरुद्ध (1990), पढ़ते-पढ़ते (1990), स्वाधीन देश में (1995), स्वधर्म और कालगति (1996) |
| रवीन्द्रनाथ त्यागी | खुली धूप में नाव पर (1963), भित्तिचित्र (1966), मल्लिनाथ की परम्परा (1969), कृष्णवाहन की कथा (1971), देवदारु के पेड़ (1973), इतिहास का शव (1993), पूरब खिले पलाश (1998), कबूतर, कौए और तोते (2001) |
| शरद जोशी | जीप पर सवार इल्लियाँ (1971), हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे (1971), रहा किनारे बैठ (1972), तिलस्म (1973), दूसरी सतह (1975), यत्र तत्र सर्वत्र (2000) |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| नरेन्द्र कोहली | एक और लाल तिकोन (1970), जगाने का अपराध (1973), आधुनिक लड़की की पीड़ा (1978), परेशानियाँ (1987), गणतन्त्र का गणित (1997) |
| गोपाल चतुर्वेदी | अफसर की मौत (1985), दुम की वापसी (1987), फाइल पदि-पदि (1991), दाँत में फँसी कुर्सी (1996), राम झरोखा बैठि के (2001), भारत और भैंस (2003), फार्म हाउस के लोग (2004), जुगाड़पुर के जुगाड़ू (2005) |
| ज्ञान चतुर्वेदी | दंगे में मुर्गा (1998), प्रेत कथा, बिसात बिछी है, खामोश/नंगे हमाम में हैं (2003), जो घर फूँके (2006) |

## नाटक

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| महाराज विश्वनाथ सिंह | आनन्द रघुनन्दन (1833-45 के मध्य) |
| अमानत | इन्दरसभा (1853) |
| गिरिधर दास | नहुष (1857) |
| राजा लक्ष्मण सिंह | शकुन्तला (1862) |
| श्रीनिवास दास | तप्तासंवरण, (1883) रणधीर प्रेममोहिनी (1878), संयोगिता स्वयंवर (1885) |
| भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | अनूदित नाटक–विद्यासुन्दर (1868), रत्नावली, पाखण्ड विडम्बन (1872), धनंजय-विजय (1837), कर्पूरमंजरी (1875), भारत-जननी (1877), मुद्राराक्षस (1878), दुर्लभबन्धु (1880),<br>मौलिक नाटक–वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (1883), सत्यहरिश्चन्द्र, श्रीचन्द्रावली (1876), विषस्य-विषमौषधम् (1876), भारत-दुर्दशा (1880), नीलदेवी (1881), अन्धेर नगरी (1881), सती प्रताप (1883),<br>प्रेम-जोगिनी (1875) |
| प्राणचन्द चौहान | रामायण महानाटक |
| शीतला प्रसाद त्रिपाठी | जानकीमंगल (प्रथम अभिनीत नाटक) |
| राधाकृष्णदास | दुःखिनीबाला (1880), महारानी पद्मावती (1882), धर्मालाप (1885), महाराणा प्रताप (1897) |
| किशोरीलाल गोस्वामी | मयंक मंजरी(1891), प्रणयिनी-प्रणय |
| शिवनन्दन सहाय | कृष्ण-सुदामा नाटक |
| प्रतापनारायण मिश्र | संगीत शाकुन्तल |
| बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' | भारत सौभाग्य (1889) |
| बालकृष्ण भट्ट | दमयन्ती स्वयंवर (1892), नल-दमयन्ती (1897), जैसा काम वैसा परिणाम (1877), आचार विडम्बन |
| अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' | प्रद्युम्न विजय (1893), रुक्मिणी परिणय (1894) |
| राधाचरण गोस्वामी | अमरसिंह राठौर (1895) |
| देवकीनन्दन खत्री | सीताहरण, रामलीला (1879) |
| नारायणप्रसाद 'बेताब' | कृष्ण-सुदामा, गोरखधन्धा, मीठा जहर, रामायण नाटक, सम्पूर्ण नाटक, महाभारत |
| आगा हश्र काश्मीरी | अछूता दामन, असीरे हिर्स, खूबसूरत बला, चण्डीदास नाटक, जहरी साँप, भीष्म प्रतिज्ञा, बिल्व-मंगल, यहूदी की लड़की |
| आनन्द प्रकाश कपूर | कलियुग नाटक (1912), संसार स्वप्न (1913), सुनहरा विष (1919) |
| माखनलाल चतुर्वेदी | कृष्णार्जुन युद्ध (1918) |
| जयशंकर 'प्रसाद' | सज्जन (1910), कल्याणी परिणय, प्रायश्चित्त (1913), करुणालय (1913), राज्यश्री (1914), विशाख (1921), अजातशत्रु (<br>कामना (1927), जनमेजय का नागयज्ञ (1926), स्कन्दगुप्त (1928), एक घूँट (1930), चन्द्रगुप्त (1931), ध्रुवस्वामिनी (193 |
| हरिकृष्ण 'प्रेमी' | स्वर्ण विहान (1930), रक्षाबन्धन (1934), पाताल विजय (1936), प्रतिशोध (1937), शिवसाधना (1937), आहुति, स्वप्नभंग, |
| लक्ष्मीनारायण मिश्र | अशोक (1927), संन्यासी (1929), मुक्ति का रहस्य (1932), राक्षस का मन्दिर (1932), राजयोग (1934), सिन्दूर की होल<br>(1934), आधीरात (1934), अपराजित, चक्रव्यूह (1954), वितस्ता की लहरें (1953), गंगा द्वार (1974) |
| परिपूर्णानन्द वर्मा | वीर अभिमन्यु नाटक |
| वियोगी हरि | छद्मयोगिनी, प्रबुद्ध यामुन अथवा यमुनाचार्य चरित (1929) |
| सेठ गोविन्द दास | कर्त्तव्य (1936), स्नेह या स्वर्ग (1946), कर्ण (1942), शशिगुप्त (1942), हिंसा और अहिंसा |
| किशोरीदास बाजपेयी | सुदामा (1934) |
| रामनरेश त्रिपाठी | सुभद्रा (1924), जयन्त (1934) |
| प्रेमचन्द | कर्बला (1928), संग्राम (1922) |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| उपेन्द्रनाथ 'अश्क' | अन्जो दीदी (1954), अन्धीगली, पैंतरे, सूखी डाली, तौलिए, कस्बे के क्रिकेट-क्लब का उद्घाटन, कैद, उड़ान, लौटता हुआ दिन, जय-पराजय, छठा बेटा, स्वप्न |
| विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' | अत्याचार का परिणाम (1921), हिन्दू विधवा नाटक (1935) |
| गोविन्दबल्लभ पन्त | कंजूस की खोपड़ी (1923), नरमाला (1925), अंगूर की बेटी (1937), सुहाग बिन्दी (1940), ययाति (1951) |
| बेचन शर्मा 'उग्र' | चुम्बन (1937), डिक्टेटर (1937) |
| मैथिलीशरण गुप्त | अनघ (1928), गीतिनाट्य |
| हरिकृष्ण प्रेमी | स्वर्ण विहान (1930), रक्षाबंधन (1934), पातालविजय (1936), शिवसाधना (1937), प्रतिशोध (1937) |
| भगवतीचरण वर्मा | तारा |
| उदयशंकर भट्ट | मत्स्यगन्धा (1937), विश्वामित्र (1938) |
| जी.पी. श्रीवास्तव | उलटफेर (1918), दुमदार आदमी (1919), मरदानी औरत (1920), विवाह विज्ञापन (1927), मिस अमेरिकन (1929), गड़बड़झाला (1919), नाक में दम उर्फ जवानी बनाम बुढ़ापा उर्फ मियाँ की जूती मियां के सिर (1926), भूलचूक (1928), चोर के घर छिछोर (1933), चाल बेढब (1934), साहित्य का सपूत (1934), स्वामी चौखटानन्द (1936) |
| विष्णु प्रभाकर | डॉक्टर (1958), समाधि, कुहासा और किरण (1915), अब और नहीं (1981), युगे-युगे क्रान्ति (1969), टूटते परिवेश (1974), श्वेत कमल (1984) |
| जगदीश चन्द्र माथुर | कोणार्क (1951), शारदीया (1959), पहला राजा (1969), दशरथ नन्दन (1974), रघुकुलरीति (1985), |
| धर्मवीर भारती | अन्धा युग (1955) |
| डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल | अन्धा कुआँ (1955), मादा कैक्टस (1959), तीन आँखों वाली मछली (1960), सुन्दर रस, सूखा-सरोवर (1960), रक्तकमल (1962), रातरानी (1962), दर्पण (1963), सूर्यमुख (1968), कलंकी (1969), मिस्टर अभिमन्यु (1971), कर्फ्यू (1972), अब्दुल्ला दीवाना (1973), राम की लड़ाई (1979) सगुन पक्षी (1977), पंच पुरुष (1978), गंगा माटी |
| मोहन राकेश | आषाढ़ का एक दिन (1958), लहरों के राजहंस (1963), आधे-अधूरे (1969) |
| अमृतराय | चिंदियों की एक झालर (1969), शताब्दी, हम लोग |
| सुमित्रानन्दन पन्त | रजतशिखर, शिल्पी, सौवर्ण |
| दुष्यन्त कुमार | एक कण्ठ विषपायी (1963) |
| चन्द्रगुप्त विद्यालंकार | अशोक (1935), रेवा (1935) |
| विनोद रस्तोगी | आजादी के बाद, नया हाथ, जनतन्त्र ज़िन्दाबाद |
| नरेश मेहता | सुबह के घण्टे, खण्डित यात्राएँ |
| मन्नू भण्डारी | बिना दीवार का घर (1965) |
| शिव प्रसाद सिंह | घाटियाँ गूँजती हैं |
| ज्ञानदेव अग्निहोत्री | नेफा की एक शाम, शुतुरमुर्ग |
| विपिन कुमार | तीन अपाहिज (1963) |
| गिरिराज किशोर | नरमेघ |
| सुरेन्द्र वर्मा | द्रौपदी (1970), सूर्य की अन्तिम किरण से पहली किरण तक (1975), सेतुबन्ध (1972), आठवाँ सर्ग (1976), छोटे सैयद बड़े सैयद (1982) |
| सर्वेश्वरदयाल सक्सेना | बकरी (1974), लड़ाई, कल भात आएगा, अब गरीबी हटाओ |
| भीष्म साहनी | हानुश, कबिरा खड़ा बाजार में |
| मणिमधुकर | रसगन्धर्व (1975), बुलबुल सराय (1978), खेला पोलमपुर (1979), दुलारी बाई (1978), इकतारे की आँख (1980) |
| मुद्राराक्षस | मरजीवा, तेन्दुआ, तिलचट्टा, गुफाएँ, योर्स फेथफुली, आला अफसर (1979), संतोला (1980) |
| सुशील कुमार सिंह | सिंहासन खाली है, चार यारों की यार, नागपाश |
| शंकर शेष | एक और द्रोणाचार्य (1977), खजुराहो का शिल्पी, फन्दी, बन्धन अपने-अपने, घरौंदा (1978), अरे मायावी सरोवर (1980) |
| मृदुला गर्ग | एक और अजनबी (1978), जादू का कालीन (1939) |
| बृजमोहन शाह | त्रिशंकु |
| बलराज पण्डित | पाँचवाँ सवार |
| कमलेश्वर | अधूरी आवाज |
| शरद जोशी | एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ (1980), अन्धों का हाथी (1980) |
| हमीदुल्ला | दरिन्दे, उत्तर उर्वशी |
| हबीब तनवीर | आगरा बाजार, राजा चम्बा और चार भाई, गाँव के नांव ससुरार मोर नांव दामाद, ख्याल ठाकुर पृथ्वीपाल सिंह, चरनदास चोर |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## एकांकी नाटक

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| भुवनेश्वर | कारवाँ (1935), श्यामा, एक साम्यहीन साम्यवादी, शैतान, प्रतिमा का विवाह, स्ट्राइक, लॉटरी, ऊसर, पतित, ताँबे के कीड़े, सिकन्दर, आजादी की नींद, रोशनी, आग तथा खामोशी |
| रामकुमार वर्मा | बादल की मृत्यु (1930), पृथ्वीराज की आँखें, औरंगजेब की आखिरी रात, रेशमी टाई, चारुमित्रा, रूपरंग, सप्तकिरण, कौमुदी महोत्सव, ऋतुराज, रजतरश्मि, दस मिनट, मयूरपंख, दीपदान, कामकंदला, बापू, इन्द्रधनुष |
| उपेन्द्रनाथ 'अश्क' | देवताओं की छाया में, चरवाहे, तूफान से पहले, कैद और उड़ान, अधिकार का रक्षक, स्वर्ग की झलक, साहब को जुकाम है, जोंक, पर्दा उठाओ : पर्दा गिराओ, सूखी डाली, भँवर, लक्ष्मी का स्वागत, पापी, बतरिया, जीवन साथी, आँधी, अन्धी भली |
| उदयशंकर भट्ट | एक ही कब्र में (1936), आदिम युग, समस्या का अन्त, आज का आदमी, स्त्री का हृदय, पर्दे के पीछे, दस हजार |
| सेठ गोबिन्ददास | स्पर्धा (1935), बुद्ध की शिष्या, नानक की नमाज, मैत्री, मानवमन, ईद और होली, हंगर स्ट्राइक, सच्चा कांग्रेसी कौन? बन्द नोट |
| जगदीश चन्द्र माथुर | मेरी बाँसुरी (1936), भोर का तारा, कलिंग विजय, रीढ़ की हड्डी, मकड़ी का जाला, खण्डहर, कबूतरखाना, ओ मेरे सपने |
| डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल | मड़वे का भोर, अन्धा कुआँ, ताजमहल के आँसू, पर्वत के पीछे, नाटक बहुरंगी और दूसरा दरवाजा |
| विष्णु प्रभाकर | लिपस्टिक की मुस्कान, दृष्टि की खोज, बीमार |
| वृन्दावन लाल वर्मा | लो भाई पंचो लो, कश्मीर का काँटा |
| भगवती चरण वर्मा | चौपाल, सबसे बड़ा आदमी |
| नरेश मेहता | सुबह के घण्टे |
| जैनेन्द्र कुमार | टकराहट |
| हरिकृष्ण 'प्रेमी' | मातृ मन्दिर, राष्ट्र मन्दिर, मान मन्दिर, न्याय मन्दिर, वाणी मन्दिर |
| धर्मवीर भारती | नदी प्यासी थी |
| मोहन राकेश | अण्डे के छिलके |

## उपन्यास

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| श्रद्धाराम फुल्लौरी | भाग्यवती (1877 ई.) |
| श्रीनिवास दास | परीक्षागुरु (1882 ई.) |
| भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | पूर्णप्रकाश, चन्द्रप्रभा |
| बालकृष्ण भट्ट | रहस्य कथा, नूतन ब्रह्मचारी (1886), सौ अजान एक सुजान (1892) |
| राधाकृष्ण दास | निःसहाय हिन्दू (1890) |
| देवदत्त | सच्चा मित्र |
| लोचन प्रसाद पाण्डेय | दो मित्र |
| लज्जाराम शर्मा | आदर्श दम्पति, धूर्त रसिक लाल (1890) |
| गोपाल राम गहमरी | अद्‌भुत लाश (1896), गुप्तचर (1899), बेकसूर की फाँसी (1900), खूनी कौन (1900), मायाविनी (1901), जासूस की भूल (1901), चक्करदार चोरी (1901), किले में खून (1910), भोजपुर की ठगी (1911), गुप्तभेद (1913) |
| अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' | अधखिला फूल, ठेठ हिन्दी का ठाठ |
| किशोरीलाल गोस्वामी | सौभाग्यश्री (1890), लवंगलता (1890), गुलबहार का आदर्श भ्रातृप्रेम, सुल्तान रजिया बेगम वा रंगमहल में हलाल, नवलखाहार, कनक-कुसुम वा मस्तानी, तारा व क्षत्रकुल कमलिनी, हीराबाई वा बेहया का बुर्का, लखनऊ के कब्र वा शाही महलसरा, सोना और सुगन्ध वा पन्नाबाई, तिलस्मी शीशमहल, राजकुमारी |
| देवकीनन्दन खत्री | चन्द्रकान्ता (1882), चन्द्रकान्ता सन्तति 24 भाग (1896), नरेन्द्रमोहिनी (1893), वीरेन्द्र वीर (1895), कुसुम कुमारी (1899), भूतनाथ (1906) |
| ठाकुर जगमोहन सिंह | श्यामास्वप्न (1888) |
| हरिकृष्ण जौहर | कुसुमलता, कमलकुमारी, भयानक खून, मयंक मोहिनी, निराला नकाबपोश |
| ब्रजनन्दन सहाय | सौन्दर्योपासक, राजेन्द्रमालती, अरण्यबाला |
| रामलाल वर्मा | पुतलीमहल (1908) |
| मुंशी प्रेमचन्द | सेवासदन (1918), प्रेमाश्रम (1922), रंगभूमि (1925), कायाकल्प (1926), निर्मला (1927), गबन (1931), कर्मभूमि (1933), गोदान (1935), वरदान (1921), प्रतिज्ञा (1929), कायाकल्प (1926), मंगलसूत्र (अपूर्ण) |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| जयशंकर 'प्रसाद' | कंकाल (1929), तितली (1934), इरावती (अपूर्ण) |
| विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' | माँ (1929), भिखारिनी (1929) |
| चतुरसेन शास्त्री | हृदय की परख (1918), व्यभिचार (1924), हृदय की प्यास (1932), अमर अभिलाषा (1933), आत्मदाह (1936), पूर्णाहुति, रक्त की प्यास, अपराजिता, वयंरक्षामः, वैशाली की नगरवधू, सोमनाथ, आलमगीर आदि |
| शिवपूजन सहाय | देहाती दुनिया (1926) |
| देवन शर्मा 'उग्र' | चन्द हसीनों के खतूत (1927), दिल्ली का दलाल (1927), बुधुवा की बेटी (1928), शराबी (1930), सरकार तुम्हारी आँखों में (1937), जीजाजी (1943), घण्टा (1945) |
| ऋषभचरण जैन | मास्टर साहब, गदर, चाँदनी रात, वेश्यापुत्र, मन्दिरदीप, चम्पाकली |
| भगवती प्रसाद बाजपेयी | मीठी चुटकी, अनाथ पत्नी, प्रेमपथ, लालिमा, पतिता की साधना, पिपासा, दो बहनें, त्यागमयी, निमन्त्रण, गुप्तधन, चलते-चलते, पतदार, यथार्थ के आगे, सूनी राह, उनसे कहना, दरार और धुआँ, टूटा टी सेट इत्यादि |
| जैनेन्द्र कुमार | परख (1929), सुनीता (1935), त्यागपत्र (1937), कल्याणी, सुखदा, विवर्त, जयवर्धन, मुक्तिबोध |
| भगवतीचरण वर्मा | पतन (1927), चित्रलेखा (1934), तीन वर्ष (1936), टेढ़े-मेढ़े रास्ते, आखिरी दांव, भूले-बिसरे चित्र (1959), सामर्थ्य और सीमा, रेखा, सबहि नचावत राम गुसाईं |
| उपेन्द्रनाथ 'अश्क' | गिरती दीवारें (1947), गर्मराख (1952), बड़ी-बड़ी आँखें (1954), पत्थर अल पत्थर (1957) |
| सुमित्रानन्दन पन्त | हार |
| सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' | अप्सरा (1931), अलका (1933), प्रभावती (1936), निरुपमा (1936) |
| सियारामशरण गुप्त | गोद (1932), अन्तिम आकांक्षा (1934), नारी (1937) |
| अज्ञेय | शेखर : एक जीवनी (1941), नदी के द्वीप (1951), अपने-अपने अजनबी (1961) |
| इलाचन्द्र जोशी | घृणामयी (1929), संन्यासी (1941), पर्दे की रानी (1941), प्रेत और छाया, निर्वासित (1946), मुक्तिपथ (1950), जिप्सी, जहाज का पंछी (1955), ऋतुचक्र, भूत का भविष्य (1973) |
| यशपाल | दादा कामरेड (1941), देशद्रोही (1943), पार्टी कामरेड (1946), मनुष्य के रूप (1949), झूठा-सच (दो भागों में 1958), दिव्य (1945) |
| रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' | चढ़ती धूप (1945), नई इमारत (1946), उल्का (1947), मरुप्रदीप (1951) |
| अमृतलाल नागर | नवाबी मसनद, सेठ बाँकेमल, महाकाल (1946), बूँद और समुद्र (1956), अमृत और विष (1966), शतरंज के मोहरे (1959), सुहाग के नूपुर (1960), एकदा नैमिषारण्ये (1972), मानस का हंस (1972) |
| वृन्दावन लाल वर्मा | विराटा की पद्मिनी (1936), झाँसी की रानी (1946), कचनार (1948), मृगनयनी (1950), अहिल्याबाई (1955), माधोजी सिंधिया (1957), भुवनविक्रम (1957) |
| आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी | बाणभट्ट की आत्मकथा (1946), चारुचन्द्र लेख (1963), पुनर्नवा (1973), अनामदास का पोथा (1976) |
| राहुल सांकृत्यायन | सिंह सेनापति, जय यौधेय, वोल्गा से गंगा तक |
| रांगेय राघव | मुर्दों का टीला (1948), कब तक पुकारूँ, (1957) मेरी भवबाधा हरो, विषादमठ, लखिमा की आँखें, देवकी का बेटा, यशोधरा जीत गई, अन्धेरे के जुगनूँ |
| मुक्तिबोध | विपात्र |
| नागार्जुन | बलचनमा (1952), रतिनाथ की चाची, नई पौध, बाबा बटेसर नाथ, दुःखमोचन, वरुण के बेटे, कुम्भीपाक, उग्रतारा |
| फणीश्वरनाथ 'रेणु' | मैला आँचल (1954), परती परिकथा, दीर्घतपा, जुलूस, कितने चौराहे, कलंक-मुक्ति, पतिव्रता, पल्टू बाबू रोड |
| उदयशंकर भट्ट | सागर लहरें और मत्स्य (1956) |
| शानी | काला जल, साँप और सीढ़ी, नदियाँ और सीपियाँ |
| भैरव प्रसाद गुप्त | सती मैया का चौरा, मशाल, गंगा मैया |
| राही मासूम रजा | आधा गाँव, टोपी शुक्ला, नीम का पेड़, नीन-75, असन्तोष के दिन, ओस की बूँद, कटरा बी आरजू |
| शिवप्रसाद सिंह 'रुद्र' | अलग-अलग वैतरणी, बहती गंगा, गली आगे मुड़ती है |
| रामदरश मिश्र | पानी की प्राचीर, जल टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब |
| राजेन्द्र अवस्थी | जंगल के फूल, जाने कितनी आँखें, बीमार शहर |
| धर्मवीर भारती | गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा |
| देवराज | पथ की खोज, बाहर-भीतर, रोड़े और पत्थर, अजय की डायरी, मैं वे और आप |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| मन्मथनाथ गुप्त | बहता पानी (1955) |
| काशीनाथ सिंह | अपना मोर्चा, काशी का अस्सी |
| अमृतराय | बीज, नागफनी का देश, हाथी के दाँत |
| लक्ष्मीनारायण लाल | मनवृन्दावन, धरती की आँखें, काले फूलों का पौधा, हरा समन्दर गोपी चन्दर, रूपाजीवा, प्रेम, अपवित्र नदी, बड़ी चम्पा छोटी चम्पा |
| राजेन्द्र यादव | उखड़े हुए लोग, प्रेत बोलते हैं, शह और मात, अनदेखे अनजाने पुल |
| मन्नू भण्डारी | आपका बन्टी, महाभोज, एक इंच मुस्कान (सहयोगी लेखक राजेन्द्र यादव) |
| गिरिधर गोपाल | चाँदनी रात के खण्डहर |
| सर्वेश्वर दयाल सक्सेना | सोया हुआ जल, पागल कुत्तों का मसीहा, अन्धेरे पर अन्धेरा, उड़ते हुए रंग |
| नरेश मेहता | डूबते मस्तूल, प्रथम फाल्गुन, धूमकेतु, नदी यशस्वी है, यह पथ बन्धु था, उत्तरकथा |
| मोहन राकेश | अन्धेरे बन्द कमरे (1961), न आने वाला कल, नीली बाँहों की रोशनी में, काँपता हुआ दरिया, कई एक अकेले, अन्तराल |
| निर्मल वर्मा | लाल टीन की छत, रात का रिपोर्टर, वे दिन, एक चिथड़ा सुख |
| श्रीलाल शुक्ल | रागदरबारी, विश्रामपुर का सन्त, सीमाएँ टूटती हैं, आदमी का जहर, अज्ञातवास |
| भीष्म साहनी | तमस, झरोखे, कड़ियाँ, बसन्ती |
| गिरिराज किशोर | जुगलबन्दी, ढाई घर, यथा प्रस्तावित, चिड़ियाघर, साहब, मात्राएँ, पहला गिरमिटिया |
| कृष्णा सोबती | सूरजमुखी अंधेरे के, डार से बिछुड़ी, मित्रोमरजानी, यारों के यार, दिलोदानिश, हम हशमत, जिन्दगीनामा |
| उषा प्रियंवदा | पचपन खम्भे लाल दीवार |
| रमेश बख्शी | अठारह सूरज के पौधे |
| विष्णु प्रभाकर | निशिकान्त, तट के बन्धन, अर्द्धनारीश्वर, स्वप्नमयी |
| राजकमल चौधरी | मछली मरी हुई |
| श्रीकान्त वर्मा | दूसरी बार |
| महेन्द्र भल्ला | एक पति के नोट्स |
| जगदम्बा प्रसाद दीक्षित | मुरदाघर |
| देवराज | दोहरी आग की लपट |
| मुद्राराक्षस | अचला एक मनःस्थिति |
| कान्ता भारती | रेत की मछली |
| मृदुला गर्ग | चितकोबरा, उसके हिस्से की धूप, वंशज, कठगुलाब, मैं और मैं |
| मधुकर सिंह | सबसे बड़ा छल |
| गोविन्द मिश्र | लाल पीली जमीन |
| जगदीशचन्द्र | मुट्ठीभर कांकर |
| शरतचन्द्र | श्रीकान्त, देवदास, चरित्रहीन, गृहदाह, परिणीता |
| कमलेश्वर | डाक बँगला, काली आँधी, समुद्र में सोता हुआ आदमी, सुबह दोपहर शाम, एक सड़क सत्तावन गलियाँ |
| शैलेश मटियानी | आकाश कितना अनन्त है, मुठभेड़, सर्पगन्धा, डेरेवाले, बावन नदियों का संगम, चन्द औरतों का शहर, किस्सा नर्मदा बेन गंगूबाई, बोरीबली से बोरीवन्दर तक, उगते सूरज की कृपा |
| विमल मित्र | मुजरिम हाजिर है, कैसे-कैसे सच, मन क्यों उदास है, हम चाकर रघुनाथ के |
| ममता कालिया | दुक्खम-सुक्खम (2009), बेघर (1971), नरक दर नरक (1975), प्रेम कहानी (1980) |
| प्रभा खेतान | आओ पें पें घर चलें (1990), तालाबन्दी (1991), छिन्नमस्ता (1993), अपने-अपने चेहरे (1993), पीली आँधी (1996) |
| नासिरा शर्मा | सात नदियाँ एक समुन्दर (1984), शाल्मली (1987), ठीकरे की मँगनी (1989), जिन्दा-मुहावरे (1993), अक्षयवट (2003), कुइयांजान (2003) |
| मृणाल पाण्डेय | पटरंग पुराण (1983), रास्तों पर भटकते हुए (2000) |
| लता शर्मा | सही नाम के जूते (2009) |
| विभूतिनारायण राय | घर (1982), शहर के कर्फ्यू (1986), किस्सा लोकतन्त्र (1983), तबादला (2001), प्रेम की भूतकथा (2009) |
| अलका सरावगी | कलिकथा वाया बाईपास (1998), शेष कादम्बरी (2001) |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

## कहानी

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| इंशाअल्ला खाँ | रानी केतकी की कहानी (1872) |
| किशोरीलाल गोस्वामी | इन्दुमती (1900), गुलबहार, चन्द्रिका |
| माधवराव सप्रे | एक टोकरी भर मिट्टी (1901) |
| भगवानदास | प्लेग की चुड़ैल (1902) |
| रामचन्द्र शुक्ल | ग्यारह वर्ष का समय (1903) |
| गिरिजादत्त बाजपेयी | पंडित और पंडितानी (1903) |
| राजेन्द्रबाला घोष (बंग महिला) | दुलाईवाली (1907) |
| चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' | उसने कहा था (1915) |
| विश्वम्भर शर्मा 'कौशिक' | रक्षाबन्धन (1912), ताई, चित्रशाला, गल्पमन्दिर, मंगली, प्रेम प्रतिमा, मणिमाला कल्लोल |
| जयशंकर प्रसाद | ग्राम (1911), प्रतिध्वनि (1926), आकाशदीप (1929), आँधी (1931), इन्द्रजाल (1936), खण्डहर की लिपि, पत्थर की पुकार, उस पार का योगी, प्रतिमा, कला, देवदासी, मधुआ, सालवती, देवरथ, पुरस्कार, गुण्डा, विराम-चिन्ह, पाप की पराजय, स्वर्ग के खण्डहर, छोटा जादूगर, दासी, वृत्तभंग इत्यादि |
| प्रेमचन्द | सौत (1815), पंचपरमेश्वर (1916), बलिदान (1918), आत्माराम (1920), बूढ़ी काकी (1921), विचित्र होली (1921), गृहदाह (1922), हार की जीत (1922), परीक्षा (1923), आपबीती (1923), उद्धार (1924), सवा सेर गेहूँ (1924), शतरंज के खिलाड़ी (1925), माता का हृदय (1925), कज़ाकी (1926), सुजान भगत (1927), इस्तीफा (1928), अलग्योझा (1929), पूस की रात (1930), तावान (1931), होली का उपहार (1931), ठाकुर का कुआँ (1932), बेटों वाली विधवा (1932), ईदगाह (1933), नशा (1934), बड़े भाई साहब (1934), कफन (1936), दिल की रानी, सारंगा सदावृक्ष, मैकू, नमक का दरोगा, मोटेराम शास्त्री |
| सुदर्शन | हार की जीत, तीर्थयात्रा, सुदर्शन सुधा, पुष्पलता, गल्पमंजरी, सुप्रभात, परिवर्तन, पनघट, कवि की स्त्री |
| चतुरसेन शास्त्री | दुखवा मैं कासों कहूँ मोरी सजनी, प्रबुद्ध, आम्रपाली, भिक्षुराज, बावर्चिन, वाण-वधू, हल्दीघाटी में, ककड़ी की कीमत |
| पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' | चिनगारियाँ (1923), शैतान मण्डली (1924), इन्द्रधनुष (1927), बलात्कार (1927), चाकलेट (1928), दोजख की आग (1929), निर्लज्जा |
| जैनेन्द्र | खेल (1928), फाँसी (1929), वातायन (1930), नीलमदेश की राजकन्या (1933), एक रात (1934), दो चिड़ियाँ (1935), पाजेब (1942), जयसन्धि (1949) |
| यशपाल | पिंजरे की उड़ान (1939), ज्ञानदान (1939), अभिशप्त (1943), तर्क का तूफान (1944), भस्मावृत्त चिंगारी (1946), वो दुनिया (1948), फूलों का कुर्ता (1949), धर्मयुद्ध (1950), उत्तराधिकारी (1951), चित्र का शीर्षक (1951), उत्तमी की माँ (1955), तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ (1954), सच बोलने की भूल (1962), खच्चर और आदमी (1965), भूख के तीन दिन (1968) |
| इलाचन्द्र जोशी | धूपरेखा (1938), दीवाली और होली (1942), रोमांटिक छाया (1943), आहुति (1945), खण्डहर की आत्माएँ (1948), डायरी के नीरस पत्र (1951), कंटीले फूलों के लजीले काँटे (1957) |
| अज्ञेय | विपथगा (1937), परम्परा (1940), कोठरी की बात (1945), शरणार्थी (1948), जयदोल (1951), अमरबल्लरी (1954), ये तेरे प्रतिरूप (1961) |
| उपेन्द्रनाथ 'अश्क' | अंकुर, नासूर, डाची, पिंजरा, गोखरू (1933-36), छींटे (1949), सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ (1958), पलंग (1961), आकाशचारी (1966) |
| विष्णु प्रभाकर | धरती अब भी घूम रही है, साँचे और कला (1962), पुल टूटने से पहले (1977), मेरा वतन (1980), खिलौने (1981), एक और कुन्ती (1985), जिन्दगी एक रिहर्सल (1986) |
| भीष्म साहनी | भाग्यरेखा (1953), पहला पाठ (1957), भटकती राख (1966), पटरियाँ (1973), वाङ्चू (1978), शोभायात्रा (1981), निशाचर (1983), पाली (1989), डायन (1998), चीफ की दावत, अमृतसर आ गया है, ओ हरामजादे, 'वाङ्चू' और त्रास कहानियाँ बहुत प्रसिद्ध हुईं। |
| मुक्तिबोध | काठ का सपना (1967), सतह से उठता आदमी (1971), 'नई जिन्दगी', 'जलना', 'पक्षी और दीमक', 'विपात्र' आदि कहानियाँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। |
| भैरव प्रसाद गुप्त | मुहब्बत की राहें (1945), फरिश्ता (1946), बिगड़े हुए दिमाग (1948), इन्सान (1950), सितार के तार (1951), बलिदान की कहानियाँ (1951), मंजिल (1951), महफिल (1958), सपने का अन्त (1961), आँखों का सवाल (1965), मंगली की टिकुली (1982), आप क्या कर रहे हैं (1983) |
| अमरकान्त | जिन्दगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, मित्र मिलन, कुहासा, एक धनी व्यक्ति का बयान (1997), सुख और दुःख के साथ (2002), 'दोपहर का भोजन', 'डिप्टीकलक्टरी' विशेष चर्चित कहानियाँ हैं। |

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| राजेन्द्र यादव | देवताओं की मूर्तियाँ (1952), खेल खिलौने (1954), जहाँ लक्ष्मी कैद है (1957), अभिमन्यु की आत्महत्या (1959), छोटे-छोटे ताजमहल (1962), किनारे-से-किनारे तक (1963), टूटना (1966), अपने पार (1968), ढोल और अन्य कहानियाँ (1972), हासिल तथा अन्य कहानियाँ (2006) |
| मोहन राकेश | इन्सान के खण्डहर (1950), नए बादल (1957), जानवर और जानवर (1958), एक और जिन्दगी (1961), फौलाद का आकाश (1966) |
| कमलेश्वर | राजा निरबंसिया (1957), कस्बे का आदमी (1958), खोई हुई दिशाएँ (1963), मांस का दरिया (1966), बयान (1973), आजादी मुबारक (2002), 'खोई हुई दिशाएँ', 'जॉर्ज पंचम की नाक', 'अपना एकान्त', 'मानसरोवर के हंस', 'इतने अच्छे दिन', 'कितने पाकिस्तान' कहानियाँ विशेष रूप से चर्चित है। |
| धर्मवीर भारती | मुर्दों का गाँव (1946), स्वर्ग और पृथ्वी (1949), चाँद और टूटे हुए लोग (1955), बन्द गली का आखिरी मकान (1969), नई कहानी के दौर में इनकी 'गुल्कीबन्नो' कहानी चर्चित हुई थी। |
| निर्मल वर्मा | परिन्दे (1960), जलती झाड़ी (1965), पिछली गर्मियों में (1968), बीच बहस में (1973), कव्वे और कालापानी (1983), सूखा तथा अन्य कहानियाँ (1995) |
| फणीश्वरनाथ 'रेणु' | ठुमरी (1959), आदिम रात्रि की महक (1967), अग्निखोर (1973), एक श्रावणी दोपहर की धूप (1984), अच्छे आदमी (1986)। इनकी ख्याति का आधार 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम' रही है। 'रसप्रिया', 'ठुमरी', 'अग्निखोर', 'आदिम रात्रि की महक' कहानियाँ विशेष रूप से चर्चित रहीं हैं। |
| शिवप्रसाद सिंह | आर-पार की माला (1955), कर्मनाशा की हार (1958), इन्हें भी इन्तजार है (1961), मुरदासराय (1966), अन्धेरा हँसता है (1975), भेड़िये (1977) |
| गंगा प्रसाद विमल (अ-कहानी आन्दोलन के पुरस्कारकर्ता) | विध्वंस (1965), शहर में (1966), बीच की दरार (1968), अतीत में कुछ (1972), कोई शुरुआत (1973), खोई हुई थाती (1975) |
| रवीन्द्र कालिया (अ-कहानी आन्दोलन) | नौ साल छोटी पत्नी (1969), काला रजिस्टर (1972), गरीबी हटाओ (1976), चकैया नीम (1979) |
| शेखर जोशी | दाज्यू (1953 ई.), कोसी का घटवार (1957 ई.), अप्रतीक्षित (1958 ई.), सहयात्री (1959 ई.), प्रश्नवाचक आकृतियाँ (1961 ई.), समर्पण (1961 ई.), मृत्यु (1961 ई.), दौड़ (1965 ई.), रास्ते (1965 ई.), बदबू, साथ के लोग (1967 ई.), हलवाहा (1981 ई.), मेरा पहाड़ (1989 ई.), नौरंगी बीमार है (1990 ई.), डांगरी वाले (1994 ई.) |
| ज्ञान रंजन | फेन्स के इधर-उधर (1968 ई.), यात्रा (1971 ई.), क्षणजीवी (1977 ई.), सपना नहीं (1977 ई.), आपकी 'घण्टा', 'बहिर्गमन' और 'अनुभव' चर्चित कहानियाँ हैं। |
| काशीनाथ सिंह (प्रगतिशील चेतना के प्रतिबद्ध लेखक) | लोग बिस्तरों पर (1968 ई.), सुबह का डर (1975 ई.), आदमीनामा (1978 ई.), नई तारीख (1979 ई.), कल की फटेहाल कहानियाँ (1980 ई.), सदी का सबसे बड़ा आदमी (1986 ई.) |
| दूधनाथ सिंह ('अ-कहानी' आन्दोलन के पक्षधर) | सपाट चेहरे वाला आदमी (1967 ई.), सुखान्त (1971 ई.), पहला कदम (1976 ई.), माई का शोकगीत (1992 ई.), नमो अंधकारः (1998 ई.), धर्म क्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे (2002 ई.), निष्कासन (2002 ई.)। इनकी 'विजेता', 'कबन्ध', 'रीछ', 'सुखान्त' और 'प्रतिशोध' कहानियाँ विशेष चर्चित हुईं। |
| गिरिराज किशोर | चार मोती बेआब (1963 ई.), नीम के फूल (1964 ई.), पेपरवेट (1967 ई.), शहर-दर-शहर (1976 ई.), हम प्यार कर लें (1980 ई.), वल्दरोजी (1989 ई.), गाना बड़े गुलाम अली खाँ का (1985 ई.), यह देह किसकी है (1990 ई.), आन्द्रे की प्रेमिका तथा अन्य कहानियाँ (1995 ई.) |
| रमेश चन्द्र शाह | जंगल में आग (1979 ई.), मुहल्ले का रावण (1982 ई.), मानपत्र (1992 ई.), थियेटर (1995 ई.) |
| गोविन्द मिश्र | नए पुराने माँ बाप (1973 ई.), अन्तःपुर (1976 ई.), रगड़ खाती आत्माएँ (1978 ई.), धाँसू (1978 ई.), अपाहिज (1980 ई.), खुद के खिलाफ (1981 ई.), खाक इतिहास (1984 ई.), पगला बाबा (1987 ई.), आसमान कितना नीला (1992 ई.), हवाबाज (1998 ई.), मुझे बाहर निकालो (2004 ई.) |
| महीप सिंह ('सचेतन कहानी' आन्दोलन के पुरस्कारकर्ता) | सुबह के फूल (1932 ई.), उजाले के उल्लू (1964 ई.), घिराव (1968 ई.), कुछ और कितना (1973 ई.), कितने सम्बन्ध (1979 ई.), दिल्ली कहाँ है (1985 ई.) |
| कामतानाथ | छुट्टियाँ (1977 ई.), तीसरी साँस (1977 ई.), सब ठीक हो जाएगा (1983 ई.), शिकस्त (1992 ई.), रिश्ते-नाते (1998 ई.) (1988 ई.), सर्कस (2005 ई.) |
| विवेकी राय | नयी कोयल (1975 ई.), गूँगा जहाज (1977 ई.), बेटे की बिक्री (1981 ई.), कालातीत (1982 ई.), चित्रकूट के घाट पर |
| संजीव | 'अपराध' (पुरस्कृत तथा चर्चित कहानी है), तीस साल का सफरनामा (1981 ई.), प्रेतमुक्ति (1991 ई.), दुनिया की सबसे हसीन औरत (1993 ई.), ब्लैकहोल (1997 ई.), खोज (1999 ई.), गति का पहला सिद्धान्त (2004 ई.), गुफा का आदमी (2006 ई.) |
| राकेश वत्स ('सक्रिय कहानी' आन्दोलन के पुरस्कारकर्ता) | अतिरिक्त तथा अन्य कहानियाँ (1970), अन्तिम प्रजापति (1975 ई.), अभियुक्त (1979 ई.), शुरुआत (1980 ई.), एक बुद्ध और (1986 ई.) |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| लेखक | रचनाएँ |
|---|---|
| से.रा. यात्री ('समान्तर कहानी आन्दोलन के समर्थ कहानीकार) | दूसरे चेहरे (1980 ई.), केवल पिता (1978 ई.), अकर्मक क्रिया (1981 ई.) |
| बादशाह हुसैन रिज़वी | दूटता हुआ भय (1986 ई.), पीड़ा गनेशिया की (1994 ई.), चार मेहरावों वाली दालान (2006 ई.) |
| बदी उज्जमाँ | अनित्य (1970 ई.), पुल टूटते हुए (1973 ई.), चौथा ब्राह्मण (1976 ई.) |
| अब्दुल बिस्मिल्लाह | दूटा हुआ पंख, कितने-कितने सवाल (1984 ई.), रैन बसेरा (1989 ई.), अतिथि देवो भव (1990 ई.), रफ-रफ मेल (2000 ई.) |
| नरेन्द्र कोहली | परिणति (1969 ई.), कहानी का अभाव (1977 ई.), दृष्टि देश में एकाएक (1979 ई.), सम्बन्ध (1980 ई.), शटल (1982 ई.) |
| उदय प्रकाश | दरियाई घोड़ा, तिरिछ (1989 ई.), और अन्त में प्रार्थना (1994 ई.), पाल गोमरा का स्कूटर (1997 ई.), पीली छतरी वाली लड़की (2001 ई.), दत्तात्रेय का दुःख (2002 ई.) |
| शिवमूर्ति | कसाईबाड़ा (1980 ई.), केसर कस्तूरी (1991 ई.) |
| शैलेन्द्र सागर | इस जुनून में (1989 ई.), मकान ढह रहा है (1993 ई.), माटी (2000 ई.), आमीन (2002 ई.), प्रतिरोध (2009 ई.) |
| शिवानी | लाल हवेली (1965 ई.), पुष्पहार (1969 ई.), अपराधिनी (1972 ई.), रथ्या (1976 ई.), स्वयंसिद्धा (1977 ई.), रति विलाप (1977 ई.), पुष्पहार (1978 ई.) |
| कृष्णा सोबती | मित्रोमरजानी (लम्बी कहानी है। अतः इसे लघु उपन्यास भी कहा जा सकता है), बादलों के घेरे में (1980) |
| मन्नू भण्डारी | यही सच है (1966 ई.), मैं हार गई (1957 ई.), एक प्लेट सैलाब (1968 ई.), तीन निगाहों की एक तस्वीर (1968 ई.), त्रिशंकु (1978 ई.) |
| उषा प्रियंवदा | 'वापसी' (कहानी ख्याति का आधार बनी), जिन्दगी और गुलाब के फूल (1961 ई.), फिर वसन्त आया (1961 ई.), एक कोई दूसरा (1966 ई.), कितना बड़ा झूठ (1972 ई.) |
| ममता कालिया | छुटकारा (1969 ई.), सीट नं. (1978 ई.), एक अदद औरत (1979 ई.), प्रतिदिन (1983 ई.), उसका यौवन (1985 ई.), बोलने वाली औरत (2000 ई.), मुखौटा (2000 ई.) |
| मृदुला गर्ग | कितनी कैदें (1975 ई.), टुकड़ा-टुकड़ा आदमी (1977 ई.), डिफोडिल जल रहे हैं (1978 ई.), ग्लेशियर से (1980 ई.), उर्फ सैम (1986 ई.), समागम (1996 ई.), मेरे देश की मिट्टी अहा (2001 ई.) |
| चित्रा मुद्गल | जहर ठहरा हुआ (1980 ई.), लाक्षागृह (1982 ई.), अपनी वापसी (1983 ई.), जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं (1992 ई.), जिनावर (1996 ई.), भूख (2001 ई.), लपटें (2002 ई.) आँवा, इत्यादि |
| राजी सेठ | अन्धे मोड़ के आगे (1979 ई.), तीसरी हथेली (1981 ई.), यात्रामुक्त (1987 ई.), दूसरे देशकाल में (1992 ई.), यह कहानी नहीं (1998 ई.), गमे हयात ने मारा (2006 ई.) |
| मैत्रेयी पुष्पा | चिन्हार (1991 ई.), ललमनियाँ (1996 ई.), गोमा हँसती है (1998 ई.) |
| मेहरुन्निसा परवेज | आदम और हव्वा (1972 ई.), टहनियों पर धूप (1977 ई.), फाल्गुनी (1978 ई.), गलत पुरुष (1978 ई.), अन्तिम चढ़ाई (1982 ई.), अम्मा (1997 ई.), समर (1999 ई.), लाल गुलाब (2006 ई.) |
| नासिरा शर्मा | शामी कागज, पत्थर गली (1986 ई.), संगसार (1993 ई.), इब्नेमरियम (1994 ई.), सबीना के चालीस चोर (1997 ई.), खुदा की वापसी (1998 ई.), इन्सानी नस्ल (2001 ई.), दूसरा ताजमहल (2002 ई.) |

## आत्मकथा

| रचना | रचनाकार | रचना | रचनाकार |
|---|---|---|---|
| अर्द्धकथानक (1643-1698) | बनारसीदास जैन | चाँद सूरज के वीरन | देवेन्द्र सत्यार्थी |
| तरुण के स्वप्न | सुभाष चन्द्र बोस | राख की लपटें | पुरुषोत्तमदास टण्डन |
| मेरी जीवन यात्रा | राहुल सांकृत्यायन | साठ वर्ष : एक रेखांकन | सुमित्रानन्दन पन्त |
| सिंहावलोकन | यशपाल | अर्धकथा | डॉ. नगेन्द्र |
| परिव्राजक की कथा | शान्तिप्रिय द्विवेदी | घर की बात | डॉ. रामविलास शर्मा |
| मेरी आत्मकहानी | चतुरसेन शास्त्री | कहि न जाय का कहिए, संघर्ष और दिशाहीनता, ददुवा हम पै विपदा भारी | भगवतीचरण वर्मा |
| अपनी खबर | पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' | गालिब छुटी शराब | रवीन्द्र कालिया |
| मेरी असफलताएँ | बाबू गुलाब राय | जो मैंने जिया, यादों का चिराग, जलती हुई नदी | कमलेश्वर |
| अपने-अपने पिंजरे | मोहनदास नैमिषराय | फुरसत के दिन | रामदरश मिश्र |
| जूठन | ओमप्रकाश वाल्मीकि | अपनी धरती अपने लोग | रामविलास शर्मा |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## जीवनी

| रचना | रचनाकार | रचना | रचनाकार |
|---|---|---|---|
| भक्तमाल | नाभादास | प्रेमचन्द : कलम का सिपाही | अमृत राय |
| चौरासी वैष्णव की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता | गोकुलनाथ | निराला की साहित्य साधना | रामविलास शर्मा |
| दयानन्द दिग्विजय | गोपालशर्मा शास्त्री | आवारा मसीहा | विष्णु प्रभाकर |
| भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र | राधाकृष्णदास | दिनकर : एक सहज पुरुष | शिवसागर मिश्र |
| बाबू राधाकृष्णदास | रामचन्द्र शुक्ल | बाबूजी (नागार्जुन) | शोभाकान्त |
| मेरे जीवन में गाँधीजी | घनश्याम बिड़ला | महामानव महापण्डित | कमला सांकृत्यायन |
| गाँधीजी कौन हैं? | रामनरेश त्रिपाठी | रांगेय राघव : एक अंतरंग परिचय | सुलोचना रांगेय राघव |
| चम्पारन में महात्मा गाँधी | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद | उत्सव पुरुष : नरेश मेहता | महिमा मेहता |
| गुरु नानक | मन्मथनाथ गुप्त | कमलेश्वर : मेरे हमसफर | गायत्री कमलेश्वर |
| महाप्राण निराला | गंगा प्रसाद पाण्डेय | वटवृक्ष की छाया में | कुमुद नागर |
| प्रेमचन्द घर में | शिवरानी देवी | | |

## रेखाचित्र

| रचना | रचनाकार | रचना | रचनाकार |
|---|---|---|---|
| पद्मपराग (1929) | पद्मसिंह शर्मा | पंचरत्न | डॉ. रामविलास शर्मा |
| बोलती प्रतिमा (1937) | श्रीराम शर्मा | चेतना के बिम्ब (1967) | डॉ. नगेन्द्र |
| अतीत के चलचित्र (1941) | महादेवी वर्मा | रेखा और रंग (1955) | विनय मोहन शर्मा |
| स्मृति की रेखाएँ (1947) | महादेवी वर्मा | रेखाएँ और चित्र | उपेन्द्रनाथ अश्क |
| पथ के साथी | महादेवी वर्मा | रेखाएँ बोल उठीं | देवेन्द्र सत्यार्थी |
| मेरा परिवार | महादेवी वर्मा | दस तस्वीरें | जगदीश चन्द्र माथुर |
| स्मारिका | महादेवी वर्मा | वे दिन वे लोग | शिवपूजन सहाय |
| माटी की मूरतें (1946) | रामवृक्ष बेनीपुरी | स्मृतिकण | सेठ गोबिन्द दास |
| लालतारा | रामवृक्ष बेनीपुरी | हमहशमत | कृष्णा सोबती |
| गेहूँ और गुलाब (1950) | रामवृक्ष बेनीपुरी | विराम चिह्न | डॉ. रामविलास शर्मा |
| मील के पत्थर | रामवृक्ष बेनीपुरी | रेखाचित्र | प्रतापनारायण टण्डन |
| ठलुआ क्लब | गुलाबराय | दहकती भट्ठी | विष्णु प्रभाकर |

## संस्मरण

| रचना | रचनाकार | रचना | रचनाकार |
|---|---|---|---|
| अनुमोदन का अन्त | महावीर प्रसाद द्विवेदी | वन तुलसी की गन्ध | फणीश्वरनाथ 'रेणु' |
| सभा की सत्यता | महावीर प्रसाद द्विवेदी | रस गगन गुफा में | भगवती शरण सिंह |
| विज्ञानाचार्य वसु का मन्दिर | महावीर प्रसाद द्विवेदी | याद हो कि न याद हो | काशीनाथ सिंह |
| हरिऔधजी के संस्मरण | बालमुकुन्द गुप्त | जिनकी याद हमेशा रहेगी | अमृतराय |
| मेरे बचपन की स्मृतियाँ | राहुल सांकृत्यायन | लाहौर से लखनऊ तक | प्रकाशवती पाल |
| मेरे असहयोग के साथी | राहुल सांकृत्यायन | लौट आओ धार | दूधनाथ सिंह |
| मन्टो मेरा दुश्मन | उपेन्द्रनाथ अश्क | सृजन के सहयात्री | रवीन्द्र कालिया |
| ज्यादा अपनी कम परायी | उपेन्द्रनाथ अश्क | चिड़िया रैनबसेरा | विद्यानिवास मिश्र |
| कुछ संस्मरण | इलाचन्द्र जोशी | सेवाग्राम की डायरी | श्रीराम शर्मा |
| मेरे प्रारम्भिक जीवन की स्मृतियाँ | इलाचन्द्र जोशी | मृत्युंजन रवीन्द्र | हजारी प्रसाद द्विवेदी |
| जंजीरें और दीवारें | रामवृक्ष बेनीपुरी | मैंने देखा | भगवत शरण उपाध्याय |
| जिन्दगी मुस्कराई | कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' | आत्मनेपद | अज्ञेय |
| नए पुराने झरोखे | हरिवंशराय बच्चन | अरे यायावर रहेगा याद | अज्ञेय |
| अतीत के गर्त से | भगवतीचरण वर्मा | गाँधी : कुछ स्मृतियाँ | जैनेन्द्र |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

## यात्रावृत्त

| रचना | रचनाकार | रचना | रचनाकार |
|---|---|---|---|
| सरयूपार की यात्रा | भारतेन्दु | उत्तराखण्ड के पथ पर | राहुल सांकृत्यायन |
| मेंहदावल की यात्रा | भारतेन्दु | पैरों में पंख बाँधकर | रामवृक्ष बेनीपुरी |
| लखनऊ यात्रा | भारतेन्दु | उड़ते चलो उड़ते चलो | रामवृक्ष बेनीपुरी |
| गया यात्रा | बालकृष्ण भट्ट | वह दुनिया में | भगवत शरण उपाध्याय |
| विलायत यात्रा | प्रतापनारायण मिश्र | कलकत्ता से पेकिंग | भगवत शरण उपाध्याय |
| लंका यात्रा का विवरण | गोपालराम गहमरी | सागर की लहरों पर | भगवत शरण उपाध्याय |
| यूरोप के छः मास | रामनारायण मिश्र | देश-विदेश | रामधारी सिंह 'दिनकर' |
| मेरी जर्मन यात्रा (1926 ई.) | सत्यदेव परिव्राजक | गोरी नजरों में हम | प्रभाकर माचवे |
| यात्री-मित्र (1936 ई.) | सत्यदेव परिव्राजक | हँसते निर्झर : दहकती भट्ठी | विष्णु प्रभाकर |
| यूरोप की सुखद स्मृतियाँ | सत्यदेव परिव्राजक | अप्रवासी की यात्राएँ | डॉ. नगेन्द्र |
| अमरीका प्रवास की मेरी अद्भुत कहानी | सत्यदेव परिव्राजक | कश्मीर की रात के बाद | कमलेश्वर |
| तिब्बत में सवा वर्ष | राहुल सांकृत्यायन | आँखों देखा पाकिस्तान | कमलेश्वर |
| मेरी यूरोप यात्रा | राहुल सांकृत्यायन | आखिरी चट्टान तक | मोहन राकेश |
| मेरी लद्दाख यात्रा | राहुल सांकृत्यायन | यातना शिविर | हिमांशु जोशी |
| किन्नर देश में | राहुल सांकृत्यायन | कितना अकेला आकाश | नरेश मेहता |
| रूस में पच्चीस मास | राहुल सांकृत्यायन | क्या हाल हैं चीन के | मनोहर श्याम जोशी |

## रिपोर्ताज

| रचना | रचनाकार | रचना | रचनाकार |
|---|---|---|---|
| लक्ष्मीपुरा | शिवदान सिंह चौहान | नेपाली क्रान्ति (1978) | विवेकी राय |
| तूफानों के बीच | रांगेय राघव | श्रुत-अश्रुत पूर्व (1984) | फणीश्वरनाथ 'रेणु' |
| वे लड़ेंगे हजारों साल, देश की मिट्टी बुलाती है | मदन्त आनन्द कौसल्यायन | बंगाल का अकाल | प्रकाशचन्द्र गुप्त |
| युद्धयात्रा (1972 ई.) | धर्मवीर भारती | अल्मोड़े का बाजार | प्रकाशचन्द्र गुप्त |
| क्षण बोले कण मुस्काए | कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' | स्वराज्य भवन | प्रकाशचन्द्र गुप्त |
| प्लाट का मोर्चा | शमशेर बहादुर सिंह | पेकिंग की डायरी | जगदीश चन्द्र जैन |
| जुलूस रुका है (1977 ई.) | विवेकी राय | प्रभाकर जब पाताल गए | प्रभाकर माचवे |
| ऋण जल धन जल (1977 ई.) | विवेकी राय | कागज की किश्तियाँ | लक्ष्मीचन्द्र जैन |

## आलोचना

| रचनाएँ | आलोचक |
|---|---|
| नाटक | भारतेन्दु |
| देव और बिहारी | कृष्ण बिहारी मिश्र |
| काव्य के रूप, नवरस, सिद्धान्त और अध्ययन | बाबू गुलाबराय |
| रूपक रहस्य, भाषा रहस्य, साहित्यालोचन | बाबु श्यामसुन्दर दास |
| भ्रमरगीत सार, तुलसीदास, जायसी ग्रन्थावली की भूमिका, रस-मीमांसा, काव्य में रहस्यवाद, कविता क्या है? | रामचन्द्र शुक्ल |
| हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी, नए प्रश्न, आधुनिक साहित्य | नन्द दुलारे वाजपेयी |
| हमारे साहित्य निर्माता, कविता और काव्य, साहित्यिकी | शान्तिप्रिय द्विवेदी |
| पन्त और पल्लव, रवीन्द्र कविता कानन | निराला |
| कबीर, सूर साहित्य, हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य का आदि काल | हजारी प्रसाद द्विवेदी |
| साहित्य सर्जना, विवेचना, विश्लेषण, देखा-परखा | इलाचन्द्र जोशी |
| भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा, नई कविता और अस्तित्ववाद | रामविलास शर्मा |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

| | |
|---|---|
| प्रगतिवाद, साहित्य की परख, हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष, साहित्यानुशीलन, आलोचना के मान | शिवदान सिंह चौहान |
| अधूरे साहित्यकार, रंग परम्परा, जनान्तिक | नेमिचन्द्र जैन |
| नई समीक्षा, सहचिन्तन, विचारधारा और साहित्य | अमृतराय |
| प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड, काव्य कला और शास्त्र, समीक्षा और आदर्श | रांगेय राघव |
| छायावाद, इतिहास और आलोचना, कविता के नए प्रतिमान, दूसरी परम्परा की खोज, वाद-विवाद संवाद, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ | डॉ. नामवर सिंह |
| साहित्य और इतिहास दृष्टि, शब्द और कर्म, आलोचना और सामाजिकता | डॉ. मैनेजर पाण्डेय |
| दिनकर : कुछ पुनर्विचार, साहित्य और जनसंघर्ष | शम्भुनाथ |
| नई कविता : सीमाएँ और सम्भावनाएँ | गिरिजाकुमार माथुर |
| नए कविता के प्रतिमान | लक्ष्मीकान्त वर्मा |
| छठवाँ दशक, साहित्य क्यों, लघुमानव के बहाने हिन्दी कविता पर एक बहस | विजयदेव नारायण साही |
| हिन्दी नवलेखन, भाषा और संवेदना, कामायनी का पुनर्मूल्यांकन, कविता यात्रा, आधुनिक कविता यात्रा | रामस्वरूप चतुर्वेदी |
| कविता से साक्षात्कार | मलयज |
| नयी कविता का परिप्रेक्ष्य, दूसरा सौन्दर्य शास्त्र क्यों | परमानन्द श्रीवास्तव |
| कविता की तीसरी आँख | प्रभाकर श्रोत्रिय |
| नए साहित्य का तर्कशास्त्र | विश्वनाथ प्रसाद तिवारी |
| कुछ पूर्वाग्रह कविता का गल्प, कवि कह गया है | अशोक बाजपेयी |
| अज्ञेय की काव्य तितीर्षा, साहित्य का स्वभाव | नन्दकिशोर आचार्य |

## प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ और सम्पादक

| पत्रिकाएँ | सम्पादक | पत्रिकाएँ | सम्पादक |
|---|---|---|---|
| उदन्त मार्तंड (1826) | जुगलकिशोर | रूपाभ (1938) | सुमित्रानन्दन पन्त |
| बंगदूत (1829) | राजा राममोहन राय | आलोचना | शिवदान सिंह चौहान, चार सदस्यीय सम्पादक मण्डल (धर्मवीर भारती, रघुवंश, बृजेश्वर वर्मा, विजयदेव नारायण साही), नामवर सिंह |
| बनारस अखबार (1854) | राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' | नयी कविता (1954) | डॉ. जगदीश गुप्त |
| समाचार सुधावर्षण (1854) | श्यामसुन्दर सेन | ज्ञानोदय | कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' |
| प्रजाहितैषी (1855) | राजा लक्ष्मण सिंह | निकष | धर्मवीर भारती |
| कविवचन सुधा (1867) | भारतेन्दु | कृति | नरेन्द्र मेहता, श्रीकान्त वर्मा |
| हरिश्चन्द्र मैगजीन (1873) | भारतेन्दु | समालोचक | डॉ. रामविलास शर्मा |
| बालाबोधिनी (1874) | भारतेन्दु | पहल | ज्ञानरंजन |
| हिन्दी प्रदीप (1877) | बालकृष्ण भट्ट | दस्तावेज | विश्वनाथ प्रसाद तिवारी |
| भारत-मित्र | बालमुकुन्द गुप्त | वर्तमान साहित्य | विभूति नारायण |
| ब्राह्मण (1883) | प्रतापनारायण मिश्र | हंस (पुनर्प्रकाशन) | राजेन्द्र यादव |
| आनन्द कादम्बिनी (1881) | बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' | वागर्थ | प्रभाकर श्रोत्रिय |
| नागरी नीरद (1893) | बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' | साहित्य अमृत | विद्यानिवास मिश्र |
| भारतेन्दु (1883) | राधाचरण गोस्वामी | कथादेश | हरिनारायण |
| इन्दु (1883) | अम्बिका प्रसाद गुप्त, रूपनारायण पाण्डेय | तद्भव | अखिलेश |
| प्रताप (1913) | गणेशशंकर विद्यार्थी | बहुवचन | अशोक बाजपेयी |
| प्रभा (1913) | कालूराम, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखन लाल चतुर्वेदी | कथाक्रम | शैलेन्द सागर |
| कर्मवीर | माखनलाल चतुर्वेदी | परख | कृष्ण मोहन |
| माधुरी (1922) | प्रेमचन्द | पुस्तकवार्ता | राकेश श्रीमान |
| मतवाला (1923) | निराला | नया ज्ञानोदय | रवीन्द्र कालिया |
| सुधा | दुलारे लाल भार्गव, निराला | वाक् | सुधीश पचौरी |
| नया ज्ञानोदय | रवीन्द्र कालिया | | |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

# वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

**1.** 'जयमयंक-जस-चन्द्रिका' के रचयिता का नाम है (उ.प्र. टी.जी.टी. 2005)

(a) भट्ट केदार (b) नरपति नाल्ह
(c) नल्ल सिंह (d) मधुकर कवि

**2.** चन्दबरदाई किसके दरबारी कवि थे? (उ.प्र. पी.जी.टी. 2006)

(a) महाराज हम्मीर के (b) महाराज बीसलदेव के
(c) महाराणा प्रताप के (d) महाराज पृथ्वीराज चौहान के

**3.** 'पृथ्वीराज रासो' किस कवि की रचना है? (उ.प्र. पी.जी.टी. 2006)

(a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) मुल्ला दाऊद (d) इनमें से कोई नहीं

**4.** कवि जगनिक की रचना का नाम है (उ.प्र. पी.जी.टी. 2006)

(a) खुमानरासो (b) मृगावती
(c) आल्हखण्ड (d) पद्मावती

**5.** आदिकालीन काव्यधारा में उपलब्ध नहीं है (उ.प्र. पी.जी.टी. 2004)

(a) जैन साहित्य (b) सिद्ध साहित्य
(c) सिख साहित्य (d) नाथ साहित्य

**6.** साधना की चार अवस्थाओं—शरीअत, तरीकत, मारीफ़त और हकीकत का सम्बन्ध है (उ.प्र. पी.जी.टी. 2004)

(a) ज्ञानमार्गी साधना से (b) सूफी साधना से
(c) इस्लाम-धर्म साधना से (d) रीतिमुक्त काव्य से

**7.** जायसी किस धारा के कवि हैं? (उ.प्र. पी.जी.टी. 2006)

(a) ज्ञानमार्गी काव्यधारा (b) प्रेमाख्यानक काव्यधारा
(c) नाथपंथी काव्यधारा (d) रासक काव्यधारा

**8.** 'पद्मावत' काव्य के रचनाकार का नाम है (उ.प्र. पी.जी.टी. 2006)

(a) अमीर खुसरो (b) अब्दुल रहमान
(c) मुहम्मद इकबाल (d) मलिक मुहम्मद जायसी

**9.** प्रेमाख्यान काव्य परम्परा (सूफी कवियों) का मुख्य दर्शन है (उ.प्र. पी.जी.टी. 2005)

(a) तसव्वुफ (b) हनफी
(c) अहले हदीस (d) अहमदिया

**10.** 'चन्दायन' किस कवि की रचना है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2004)

(a) मलिक मुहम्मद जायसी (b) कुतुबन
(c) मंझन (d) मुल्ला दाऊद

**11.** निम्नलिखित रचनाओं को कवियों के साथ सुमेलित कीजिए

A. मृगावती
B. मधुमालती
C. चन्दायन
D. अखरावट

1. जायसी
2. मुल्ला दाऊद
3. उसमान
4. कुतुबन
5. मंझन

(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2004)

कूट

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 2 | 3 | 5 | 4 |
| (b) | 3 | 2 | 1 | 4 |
| (c) | 4 | 5 | 2 | 1 |
| (d) | 1 | 2 | 3 | 4 |

**12.** निम्नलिखित निर्गुण कवियों का सही कालक्रम कौन-सा है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2004)

(a) दादू, कबीर, सुन्दरदास, मलूकदास
(b) मलूकदास, सुन्दरदास, कबीर, दादू
(c) सुन्दरदास, मलूकदास, दादू, कबीर
(d) कबीर, दादू, सुन्दरदास, मलूकदास

**13.** निम्नलिखित पंक्तियों और कवियों को सुमेलित कीजिए

A. नैया बिच नदिया डूबति जाय
B. अजगर करै न चाकरी पंछी करे न काम
C. गुरु सुआ जेइ पन्थ देखावा
D. तबलग ही जीबो भलो देबौ होय न धीम

1. रहीम
2. कबीर
3. खुसरो
4. जायसी
5. मलूकदास

(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2004)

कूट

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 5 | 1 | 2 | 3 |
| (b) | 2 | 5 | 4 | 1 |
| (c) | 2 | 3 | 5 | 1 |
| (d) | 2 | 1 | 5 | 4 |

**14.** 'बीसलदेव रासो' के रचयिता हैं (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2005)

(a) जगनिक (b) नरपति नाल्ह
(c) चन्दवरदाई (d) शारंगधर

**15.** 'अनुराग बाँसुरी' किसकी रचना है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2005)

(a) रहीम (b) रसखान (c) नूर मुहम्मद (d) छीतस्वामी

**16.** इनमें से कौन-सा कवि अष्टछाप का नहीं है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ., जून 2005)

(a) सूरदास (b) कुम्भनदास
(c) नन्ददास (d) रैदास

**17.** हिन्दी साहित्य के आदिकाल का 'अभिनव जयदेव' किसे कहा जाता है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2006)

(a) चन्दबरदाई (b) विद्यापति (c) पुष्पदन्त (d) जगनिक

**18.** सुमेलित कीजिए

A. मृगावती
B. मधुमालती
C. आखिरी कलाम
D. अनुराग बाँसुरी

1. शेखनबी
2. जायसी
3. मंझन
4. कुतुबन
5. नूर मोहम्मद

(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2004)

कूट

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 1 | 5 | 3 | 2 |
| (b) | 2 | 5 | 4 | 1 |
| (c) | 3 | 1 | 5 | 4 |
| (d) | 4 | 3 | 2 | 5 |

**19.** इनमें से कौन 'अलवार' महिला सन्त है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 200

(a) आन्डाल (b) अक्कामाशी (c) सहजोबाई (d) मीराबाई

**20.** तुलसीकृत कृष्ण-काव्य कौन-सा है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ., दिसम्बर 20

(a) कृष्णायन (b) कृष्णचरित
(c) कृष्ण-चन्द्रिका (d) कृष्णगीतावली

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**21.** मध्वाचार्य किस सम्प्रदाय के संस्थापक हैं?
(a) द्वैत (b) अद्वैत (c) शुद्धाद्वैत (d) विशिष्टाद्वैत
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2007)

**22.** इनमें से कौन वैष्णव भक्ति का आचार्य नहीं है?
(a) बल्लभाचार्य (b) मध्वाचार्य
(c) शंकराचार्य (d) रामानुजाचार्य
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2007)

**23.** 'बरवै नायिका भेद' का रचनाकर कौन है?
(a) रहीम (b) रसखान (c) रसलीन (d) बिहारी
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2007)

**24.** इनमें से किस कवि ने लक्षणग्रन्थ नहीं लिखा?
(a) देव (b) भूषण (c) पद्माकर (d) बिहारी
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2007)

**25.** 'मैथिल कोकिल' किसे कहा जाता है?
(a) विद्यापति (b) अमीर खुसरो
(c) चन्दबरदाई (d) हेमचन्द्र
(बिहार एस.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर 2008)

**26.** कबीर किस काव्यधारा के कवि हैं?
(a) ज्ञानमार्गी (b) प्रेममार्गी (c) कृष्णमार्गी (d) राममार्गी
(बिहार एस.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2008)

**27.** किसके भक्तिपरक गीतों का संकलन 'अभंग' नाम से प्रसिद्ध है?
(a) नामदेव (b) कबीरदास
(c) मीरा (d) शंकरदेव
(बिहार एस.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2008)

**28.** 'भारत-भारती' काव्य के रचयिता का नाम है
(a) मैथिलीशरण गुप्त (b) नागार्जुन
(c) जयशंकर प्रसाद (d) दिनकर
(बिहार एस.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2008)

**29.** 'कवि सम्राट' किसे कहा जाता है?
(a) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (d) जयशंकर प्रसाद
(बिहार एस.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2008)

**30.** निम्नलिखित में से कौन-सी रचना तुलसीदास की नहीं है?
(a) जानकी मंगल (b) रस विलास
(c) रामाज्ञा प्रश्न (d) पार्वती मंगल
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2008)

**31.** 'रामचरितमानस' की शैली है
(a) मुक्तक शैली (b) प्रबन्ध शैली
(c) वर्णात्मक शैली (d) परिमार्जित शैली
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2008)

**32.** 'साहित्य लहरी' की विषयवस्तु क्या है?
(a) नायिका भेद (b) अवतार लीला
(c) निर्गुण का खण्डन (d) नीति
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2008)

**33.** निम्नलिखित में कौन-सा युग्म असंगत है?
(a) बरवै रामायण–तुलसीदास
(b) बरवै नायिका भेद–रहीम
(c) कृष्ण गीतावली–सूरदास
(d) विज्ञान गीता–केशवदास
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2008)

**34.** जायसी कृत 'पद्मावत' है
(a) पुराणकाव्य (b) धर्मकाव्य
(c) रूपककाव्य (d) चम्पूकाव्य
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2010)

**35.** अष्टछाप के कवियों में प्रथम नियुक्त कीर्तनकार कवि कौन है?
(a) नन्ददास (b) कृष्णदास (c) सूरदास (d) कुम्भनदास
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2010)

**36.** इनमें से कौन-सी रचना केशवदास की नहीं है?
(a) रामचन्द्रिका (b) कविप्रिया
(c) ललितललाम (d) रसिकप्रिया
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2010)

**37.** इनमें से कौन-सी रचना अवधी की नहीं है?
(a) रामचरितमानस (b) पद्मावत
(c) विनय पत्रिका (d) चन्दायन
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2010)

**38.** 'प्लाट का मोर्चा' रिपोर्ताज के लेखक का नाम है
(a) रांगेय राघव (b) फणीश्वरनाथ रेणु
(c) शमशेर बहादुर सिंह (d) रामवृक्ष बेनीपुरी
(उ.प्र. पी.जी.टी. 2006)

**39.** 'कसाईबाड़ा' कहानी के लेखक हैं
(a) शिवमूर्ति (b) सतीश जमाली
(c) अखिलेश (d) मंजूर एहतेशाम
(उ.प्र. पी.जी.टी. 2006)

**40.** 'अरे यायावर रहेगा याद' किस विधा की रचना है?
(a) काव्य (b) यात्रा-वृत्तान्त
(c) जीवनी (d) डायरी (उ.प्र. पी.जी.टी. 2006)

**41.** 'संवेदनात्मक ज्ञान' और 'संवेदनात्मक संवेदन' सूत्र के प्रयोक्ता हैं
(a) रमेश कुन्तल मेघ (b) विजय देवनारायण साही
(c) गजानन माधव मुक्तिबोध (d) मनोहर श्याम जोशी
(उ.प्र. पी.जी.टी. 2006)

**42.** 'मुक्तछन्द' के प्रणेता हैं
(a) निराला (b) नागार्जुन
(c) जयशंकर प्रसाद (d) महादेवी वर्मा
(उ.प्र. पी.जी.टी. 2005

**43.** इनमें से कौन-सा उपन्यास जीवनीपरक है?
(a) खंजननयन (b) मृगनयनी
(c) आपका बन्टी (d) कलिकथा वाया बाईपास
(उ.प्र. पी.जी.टी. 200

**44.** 'संसद से सड़क तक' के रचनाकार हैं
(a) मुक्तिबोध (b) धूमिल
(c) सर्वेश्वर (d) लीलस्वर जगूड़ी
(उ.प्र. पी.जी.टी. 20

**45.** 'हानूश' नाटक के रचनाकार हैं
(a) कुसुम कुमार (b) रमेश बख्शी
(c) भीष्म साहनी (d) मोहन राकेश
(उ.प्र. पी.जी.टी. 20

**46.** निम्नांकित में कौन कथाकार नहीं हैं?
(a) कृष्णा सोबती (b) ममता कालिया
(c) निर्मला जैन (d) मृणाल पाण्डेय
(उ.प्र. पी.जी.टी. 20

Download From: https://sarkaripot.in/

Scanned by CamScanner

**47.** 'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे' यह अभिमत किस आलोचक का है? (उ.प्र. पी.जी.टी. 2005)
(a) डॉ. रामकुमार वर्मा (b) डॉ. परशुराम चतुर्वेदी
(c) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

**48.** निबन्ध संग्रह 'शब्दिता' के निबन्धकार हैं (उ.प्र. पी.जी.टी. 2006)
(a) विवेकी राय (b) निर्मल वर्मा
(c) धर्मवीर भारती (d) विद्यानिवास मिश्र

**49.** रीतिकाल का वह कवि जो अपनी मात्र एक कृति से हिन्दी साहित्य में अमर हो गया (उ.प्र. पी.जी.टी. 2006)
(a) रहीम (b) मतिराम
(c) बिहारी ✓ (d) देव

**50.** 'पहल' का सम्पादक कौन है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2005)
(a) राजेन्द्र यादव (b) रवीन्द कालिया
(c) ज्ञानरंजन (d) विश्वनाथ तिवारी

**51.** 'कुटज' के लेखक कौन हैं? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2005)
(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) कुबेरनाथ राय (d) विद्यानिवास मिश्र

**52.** निम्नलिखित रचनाओं का कालक्रमानुसार सही अनुक्रम कौन-सा है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2005)
(a) अन्धेर नगरी, अन्धा युग, संसद से सड़क तक, मगध
(b) मगध, संसद से सड़क तक, अन्धेर नगरी, अन्धा युग
(c) अन्धेर नगरी, मगध, संसद से सड़क तक, अन्धा युग
(d) अन्धा युग, अन्धेर नगरी, मगध, संसद से सड़क तक

**53.** निम्नलिखित नाटकों का रचनाकाल की दृष्टि से सही अनुक्रम कौन-सा है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2005)
(a) लहरों के राजहंस, सिन्दूर की होली, आठवाँ सर्ग, ध्रुवस्वामिनी
(b) सिन्दूर की होली, ध्रुवस्वामिनी, लहरों के राजहंस, आठवाँ सर्ग
(c) ध्रुवस्वामिनी, सिन्दूर की होली, लहरों के राजहंस, आठवाँ सर्ग
(d) आठवाँ सर्ग, लहरों के राजहंस, ध्रुवस्वामिनी, सिन्दूर की होली

**54.** 'अन्धा युग' किसकी रचना है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2005)
(a) नरेश मेहता (b) मोहन राकेश (c) दुष्यन्त कुमार (d) धर्मवीर भारती ✓

**55.** निम्नलिखित उपन्यासों का रचनाकाल की दृष्टि से सही अनुक्रम है (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2005)
(a) त्यागपत्र, सेवासदन, मैला आँचल, आधा गाँव
(b) आधा गाँव, मैला आँचल, सेवासदन, त्यागपत्र
(c) सेवासदन, त्यागपत्र, आधा गाँव, मैला आँचल
(d) सेवासदन, त्यागपत्र, मैला आँचल, आधा गाँव

**56.** 'सखि वे मुझसे कहकर जाते' किस कवि की काव्य पंक्ति है (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2005)
(a) सियाराम शरण गुप्त
(b) मैथिलीशरण गुप्त ✓
(c) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(d) जगदीश गुप्त

**57.** निम्नलिखित रचनाओं में कौन-सा यात्रावृत्त है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2005)
(a) चीड़ों पर चाँदनी ✓ (b) भूले-बिसरे चित्र
(c) अपनी खबर (d) पथ के साथी

**58.** 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका के सम्पादक कौन हैं? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2005)
(a) मृणाल पाण्डेय (b) रवीन्द्र कालिया
(c) प्रभाकर श्रोत्रिय (d) ज्ञानरंजन

**59.** अज्ञेय की कौन-सी रचना यात्रा पर आधारित है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2006)
(a) एक बूँद सहसा उछली (b) आत्मनेपद
(c) बावरा अहेरी (d) जयदोल

**60.** 'हिन्दी प्रदीप' के सम्पादक थे (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2007)
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (d) राधाकृष्ण दास

**61.** 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' के रचनाकार हैं (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2007)
(a) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (b) रामधारी सिंह दिनकर
(c) सुभद्रा कुमारी चौहान (d) जयशंकर प्रसाद

**62.** 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए'—किसकी पंक्ति है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2007)
(a) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
(b) रामनरेश त्रिपाठी
(c) माखनलाल चतुर्वेदी
(d) सोहनलाल द्विवेदी

**63.** 'हरिजन गाथा' किसकी रचना है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2007)
(a) धूमिल (b) नागार्जुन
(c) लीलाधर जंगूड़ी (d) आलोक धन्वा

**64.** 'ताजमहल का टेंडर' किसका नाटक है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2007)
(a) अजय शुक्ल ✓
(b) स्वदेश दीपक
(c) सुशील कुमार सिंह
(d) विभु कुमार

**65.** इनमें से कौन-सी रचना कृष्णा सोबती की है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2007)
(a) विजन
(b) आवां
(c) जिन्दगीनामा
(d) चितकोबरा

**66.** निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म संगत है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2007)
(a) आह! वेदना मिली विदाई – जयशंकर प्रसाद
(b) सखिवे मुझसे कहकर जाते – महादेवी वर्मा
(c) एक बार बस और नाच तू श्यामा – सुमित्रानन्दन पन्त
(d) दुःख सबको माँजता है – निराला

**67.** निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म असंगत है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2007
(a) तिरस्कृत – मोहनदास नैमिष राय
(b) अन्या से अनन्या – प्रभा खेतान
(c) जूठन – ओमप्रकाश वाल्मीकि
(d) हादसे – रमणिका गुप्ता

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**68.** निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए—

| | | | |
|---|---|---|---|
| A. | सजनि मधुर निजत्व दे<br>कैसे मिलूँ अभिमानी मैं | 1. | जयशंकर प्रसाद |
| B. | प्रिय के हाथ लगाए जागी<br>ऐसी मैं सो गई अभागी | 2. | सुमित्रानन्दन पन्त |
| C. | तू अब तक सोई है आली<br>आँखों में भरे विहाग री | 3. | सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला |
| D. | कौन तुम रूपसि कौन<br>व्योम से उतर रही चुपचाप | 4. | महादेवी वर्मा |
| | | 5. | विद्यावती कोकिल |

(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2007)

कूट

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 5 | 3 | 2 | 1 |
| (b) | 4 | 3 | 1 | 2 |
| (c) | 1 | 2 | 3 | 5 |
| (d) | 5 | 2 | 1 | 3 |

**69.** 'बादल राग' कविता के रचयिता हैं (उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2008)

(a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) महादेवी वर्मा
(c) रामधारी सिंह दिनकर (d) निराला

**70.** केशव कहि न जाइ का कहिए।
देखत तव रचना विचित्र अति, समुझि मनहि मन रहिए।—किस कवि की पंक्तियाँ हैं? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2008)

(a) केशवदास (b) तुलसीदास
(c) सूरदास (d) नन्ददास

**71.** 'कोर्ट मार्शल' नाटक समाज की किस समस्या पर आधारित है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2008)

(a) जातिवाद ✓ (b) नारी शोषण
(c) युद्ध की समस्या (d) साम्प्रदायिकता

**72.** 'विजयदेव नारायण साही' की कविताएँ किस सप्तक में संगृहीत हैं? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2008)

(a) तीसरा सप्तक (b) चौथा सप्तक
(c) तारसप्तक (d) दूसरा सप्तक

**73.** 'छायावाद का पतन' किसका ग्रन्थ है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2008)

(a) नामवर सिंह (b) विजयदेव नारायण साही
(c) डॉ. देवराज (d) देवराज उपाध्याय ✓

**74.** "देसिल बयना सब जन मिट्ठा"—किसका कथन है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2008)

(a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) कबीरदास (d) विद्यापति

**75.** 'आधुनिक काल में गद्य का आविर्भाव सबसे प्रधान घटना है'—यह कथन किसका है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2008)

(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) रामविलास शर्मा
(d) नन्द दुलारे वाजपेयी

**76.** 'हालावाद' के प्रवर्तक का नाम है (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2009)

(a) नरेन्द्र शर्मा (b) रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
(c) जगदीश गुप्त (d) हरिवंश राय बच्चन ✓

**77.** 'तुम विद्युत बन आओ पाहुन, मेरे नयनों पर पग धर-धर'—पंक्ति है (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2009)

(a) महादेवी वर्मा की ✓ (b) मीरा की
(c) नरेश मेहता की (d) लीलाधर जंगूड़ी की

**78.** 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता'—निबन्ध के लेखक हैं (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2009)

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) भारतेन्दु

**79.** 'अधिकार सुख कितना मादक किन्तु सारहीन है'—पंक्ति प्रसाद के किस नाटक से है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2009)

(a) ध्रुवस्वामिनी (b) अजातशत्रु
(c) चन्द्रगुप्त (d) स्कन्दगुप्त

**80.** निम्नलिखित पत्रिकाओं का सही अनुक्रम बताइए (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2009)

(a) सरस्वती, हंस, कविवचन सुधा, इन्दु
(b) कविवचन सुधा, सरस्वती, इन्दु, हंस
(c) इन्दु, सरस्वती, हंस, कविवचन सुधा
(d) हंस, सरस्वती, कविवचन सुधा, इन्दु

**81.** कालक्रम की दृष्टि से निम्नांकित उपन्यासों का सही अनुक्रम बताइए (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2009)

(a) कब तक पुकारूँ, अन्तिम अरण्य, भूतनाथ, डूबते मस्तूल
(b) भूतनाथ, डूबते मस्तूल, कब तक पुकारूँ, अन्तिम अरण्य
(c) अन्तिम अरण्य, कब तक पुकारूँ, डूबते मस्तूल, भूतनाथ
(d) डूबते मस्तूल, कब तक पुकारूँ, अन्तिम अरण्य, भूतनाथ

**82.** निम्नलिखित कृतियों तथा कृतिकारों को सुमेलित कीजिए

| | | | |
|---|---|---|---|
| A. | ईश्वर की अध्यक्षता में | 1. | रघुवर सहाय |
| B. | अबूतर कबूतर | 2. | नागार्जुन |
| C. | आत्महत्या के विरुद्ध | 3. | लीलाधर जंगूड़ी |
| D. | जलसाघर | 4. | उदय प्रकाश |
| | | 5. | श्रीकान्त वर्मा |

(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2009)

कूट

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 3 | 4 | 1 | 5 |
| (b) | 2 | 1 | 5 | 4 |
| (c) | 1 | 4 | 3 | 2 |
| (d) | 5 | 1 | 4 | 3 |

**83.** कौन-सा युग्म संगत है? (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2009)

(a) कौन तुम मेरे हृदय में – महादेवी वर्मा
(b) न जाने नक्षत्रों से कौन – प्रसाद
(c) जो घनीभूत पीड़ा थी – पंत
(d) सखि, वे मुझसे कहकर जाते – निराला

**84.** 'तोड़ने होंगे मठ और गढ़ सब'—किसकी पंक्ति है?

(a) निराला (b) रघुवीर सहाय (c) नागार्जुन (d) मुक्तिबोध ✓

**85.** 'ठेले पर हिमालय' किस विधा की रचना है?

(a) उपन्यास (b) कहानी (c) यात्रा-वृत्त (d) निबन्ध ✓

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**86.** पशु-पक्षियों पर लिखित महादेवी वर्मा का रेखाचित्र संकलन है
(a) पथ के साथी (b) मेरा परिवार
(c) स्मृति की रेखाएँ (d) अतीत के चलचित्र

**87.** 'वन्दे वाणी विनायकौ' निबन्ध संकलन के रचयिता कौन है?
(a) विद्यानिवास मिश्र (b) रामवृक्ष बेनीपुरी
(c) गुलाबराय (d) प्रतापनारायण मिश्र

**88.** रामचन्द्र शुक्ल की आलोचनात्मक कृति कौन-सी है?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2010)
(a) रस सिद्धान्त : स्वरूप विश्लेषण (b) काव्यमीमांसा
(c) रसमीमांसा (d) वाङ्मय विमर्श

**89.** मनोविश्लेषणात्मक शैली के उपन्यासकार हैं
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2010)
(a) प्रेमचन्द (b) रांगेय राघव
(c) इलाचन्द्र जोशी (d) वृन्दावन लाल वर्मा

**90.** कालक्रम की दृष्टि से प्रेमचन्द के उपन्यायों का सही अनुक्रम है
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2010)
(a) सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, गोदान
(b) कर्मभूमि, गोदान, रंगभूमि, सेवासदन
(c) गोदान, रंगभूमि, कर्मभूमि, सेवासदन
(d) रंगभूमि, कर्मभूमि, सेवासदन, गोदान

**91.** निम्नलिखित नाटकों का सही अनुक्रम कौन-सा है?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. जून 2010)
(a) अन्धायुग, शारदीया, मादा कैक्टस, कोर्टमार्शल
(b) शारदीया, अन्धायुग, मादा कैक्टस, कोर्टमार्शल
(c) मादा कैक्टस, कोर्टमार्शल, शारदीया, अन्धायुग
(d) कोर्टमार्शल, अन्धायुग, मादा कैक्टस, शारदीया

**92.** हिन्दी में सर्वप्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार किसे मिला?
(a) माखनलाल चतुर्वेदी (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) भारत भूषण अग्रवाल (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

**93.** हिन्दी का सर्वप्रथम हिन्दी दैनिक पत्र कौन-सा है?
(a) उदन्त मार्तण्ड (b) समाचार सुधावर्षण
(c) हिन्दी प्रदीप (d) ब्राह्मण

**94.** निम्नलिखित पंक्तियों को उनके कवियों के साथ सुमेलित कीजिए

| | | | |
|---|---|---|---|
| A. | साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय | 1. | विद्यापति |
| B. | देसिल बयना सब जन मिट्ठा | 2. | कबीर |
| C. | भूषन बिनु न विराजई कविता वनिता मित | 3. | पद्माकर |
| D. | नैन नचाय कही मुसकाय लला फिरि आइयो खेलन होरी | 4. | केशव |
| | | 5. | बिहारी |

(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2010)

कूट

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 4 | 3 | 2 | 1 |
| (b) | 5 | 4 | 1 | 2 |
| (c) | 1 | 2 | 3 | 4 |
| (d) | 2 | 1 | 4 | 3 |

**95.** निम्नलिखित कृतियों को उनके कृतिकारों के साथ सुमेलित कीजिए

| | | | |
|---|---|---|---|
| A. | संसद से सड़क तक | 1. | केदारनाथ अग्रवाल |
| B. | फूल नहीं रंग बोलते हैं | 2. | दुष्यन्त कुमार |
| C. | युगधारा | 3. | धूमिल |
| D. | साए में धूप | 4. | नागार्जुन |
| | | 5. | शमशेर बहादुर सिंह |

(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2010)

कूट

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 3 | 1 | 4 | 2 |
| (b) | 1 | 2 | 3 | 5 |
| (c) | 2 | 3 | 5 | 1 |
| (d) | 5 | 4 | 2 | 3 |

**96.** निम्नलिखित कहानीकारों को उनकी कहानियों के साथ सुमेलित कीजिए

| | | | |
|---|---|---|---|
| A. | उषा प्रियंवदा | 1. | साई |
| B. | अमरकान्त | 2. | वापसी |
| C. | मोहन राकेश | 3. | दोपहर का भोजन |
| D. | विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक | 4. | परमात्मा का कुत्ता |
| | | 5. | जिन्दगी और जोंक |

(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 201

कूट

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 1 | 3 | 2 | 4 |
| (b) | 2 | 3 | 4 | 1 |
| (c) | 3 | 1 | 5 | 4 |
| (d) | 5 | 3 | 2 | 4 |

**97.** निम्नलिखित नाटकों को उनके लेखकों के साथ सुमेलित कीजिए

| | | | |
|---|---|---|---|
| A. | रक्षाबन्धन | 1. | लक्ष्मीनारायण लाल |
| B. | अंधा कुआँ | 2. | सर्वेश्वर दयाल सक्सेन |
| C. | बकरी | 3. | हरिकृष्ण प्रेमी |
| D. | कोर्टमार्शल | 4. | स्वदेश दीपक |
| | | 5. | सुरेन्द्र वर्मा |

(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 20

कूट

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 3 | 1 | 2 | 4 |
| (b) | 5 | 3 | 2 | 1 |
| (c) | 1 | 5 | 2 | 4 |
| (d) | 4 | 2 | 1 | 3 |

**98.** निरालाकृत 'राम की शक्ति पूजा' की रचना का आधार ग्रन्थ है
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2
(a) कम्बन रामायण (b) कृतिवास रामायण
(c) रामचरितमानस (d) रामचन्द्रिका

**99.** 'मैं बोरिशाइल्ला' किसकी रचना है?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2
(a) अनामिका (b) महुआ माजी
(c) मैत्रेयी पुष्पा (d) चित्रा मुद्गल

**100.** प्रकाशनकाल के अनुसार निम्नलिखित हिन्दी पत्रिकाओं का सही अ
बताइए (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर
(a) सरस्वती, कविवचन सुधा, हिन्दी प्रदीप, नागरी प्रचारिणी पत्रिका
(b) हिन्दी प्रदीप, सरस्वती, कविवचन सुधा, नागरी प्रचारिणी पत्रिका
(c) कविवचन सुधा, हिन्दी प्रदीप, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, सरस्वती
(d) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, सरस्वती, कविवचन सुधा, हिन्दी प्रदीप

**101.** निम्नलिखित में से 'ज्ञानदीप' का रचनाकर कौन है?
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर
(a) उसमान (b) कासिमशाह
(c) नूर मुहम्मद (d) शेखनबी

**102.** गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।
यह काव्य पंक्ति किसकी है?(यू.जी.सी. नेट/जे. आर.एफ, दिसम्ब
(a) गोरखनाथ (b) कबीरदास (c) तुलसीदास (d) जायस

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner

**103.** भारतेन्दु ने अपने किस नाटक को नाट्य रासक व लास्य रूपक कहा है? (यू.जी.सी. नेट/जे आर.एफ. दिसम्बर 2015)
(a) विषस्य विषमौषधम् (b) नीलदेवी
(c) अंधेर नगरी ✓ (d) भारत दुर्दशा

**104.** जन्मकाल की दृष्टि से निम्नलिखित कवियों का सही क्रम है? (यू.जी.सी. नेट/जे आर.एफ. दिसम्बर 2015)
(a) जगनिक, खुसरो, श्रीधर, चन्दबरदाई
(b) खुसरो, श्रीधर, चन्दबरदाई, जगनिक
(c) चन्दबरदाई, जगनिक, खुसरो, श्रीधर
(d) श्रीधर, खुसरो, चन्दबरदाई, जगनिक

**105.** जन्मकाल की दृष्टि से निम्नलिखित रचनाकारों का सही क्रम है (यू.जी.सी. नेट/जे. आर.एफ. दिसम्बर 2015)
(a) चिन्तामणि, बिहारी, घनानन्द, मतिराम
(b) बिहारी, चिन्तामणि, मतिराम, घनानन्द
(c) मतिराम, बिहारी, घनानन्द, चिन्तामणि
(d) बिहारी, घनानन्द, मतिराम, चिन्तामणि

**106.** "आज मैं अकेला हूँ, अकेले रहा नहीं जाता
जीवन मिला है यह, रतन मिला है यह"
उपर्युक्त काव्य-पंक्तियाँ किस कवि की हैं? (यू.जी.सी. नेट/जे आर.एफ. दिसम्बर 2015)
(a) त्रिलोचन ✓ (b) केदारनाथ (c) नागार्जुन (d) रघुवीर सहाय

**107.** 'रसकलस' किसकी रचना है?
(a) श्रीधर पाठक (b) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ✓
(c) गयाप्रसादन शुक्ल 'सनेही' (d) मैथिलीशरण गुप्त

**108.** रचनाकाल की दृष्टि से निम्नलिखित कृतियों का सही अनुक्रम है?
(a) दोहाकोष, श्रावकाचार, संदेशरासक, कीर्तिलता
(b) दोहाकोष, संदेशरासक, श्रावकाचार, कीर्तिलता
(c) संदेशरासक, दोहाकोष, कीर्तिलता, श्रावकाचार
(d) दोहाकोष, श्रावकाचार, कीर्तिलता, संदेशरासक

**109.** 'यामा' किसकी रचना है? (उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा 2015)
(a) भवानी प्रसाद मिश्र (b) महादेवी वर्मा ✓
(c) अज्ञेय (d) मुक्तिबोध

**110.** 'मानस का हंस' उपन्यास के लेखक कौन हैं? (उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा 2015)
(a) यशपाल (b) आचार्य चतुरसेन
(c) अमृतालाल नागर ✓ (d) श्रीलाल शुक्ल

**111.** निम्नांकित में हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना कौन-सी है? (उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा 2015)
(a) बाणभट्ट की आत्मकथा (b) चिन्तामणि
(c) कायाकल्प (d) अग्निरथ

**112.** 'राम की शक्तिपूजा' कविता के कवि कौन हैं? (उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा 2015)
(a) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (b) सुमित्रानन्दन 'पन्त'
(c) महादेवी वर्मा (d) जयशंकर प्रसाद

**113.** निम्नलिखित में से कौन 'ब्रह्म सम्प्रदाय' का प्रवर्तक है? (यू.जी.सी. नेट/जे आर.एफ. दिसम्बर 2015)
(a) विष्णु स्वामी (b) निम्बाकचार्य (c) हित हरिवंश (d) मध्वाचार्य

**114.** निम्नलिखित में से कौन 'अष्टछाप' का कवि नहीं है? (यू.जी.सी. नेट/जे आर.एफ. दिसम्बर 2015)
(a) कुम्भनदास (b) कृष्णदास (c) छीतस्वामी (d) ध्रुवदास

**115.** 'प्रेमवाटिका' किसकी काव्यकृति है? (यू.जी.सी. नेट/जे. आर.एफ. दिसम्बर 2014)
(a) रसखान (b) नागरीदास (c) आलम (d) भारतेंदु हरिश्चंद्र

**116.** इनमें से किस उपन्यास के लेखक अमृतलाल नागर नहीं है? (यू.जी.सी. नेट/जे. आर.एफ. दिसम्बर 2014)
(a) सुहाग के नूपुर (b) मानस का हंस
(c) भूले बिसरे चित्र (d) बूँद और समुद्र

**117.** तुलसीदास के गुरू थे (यू.जी.सी. नेट/जे. आर.एफ. दिसम्बर 2014)
(a) रामानंद (b) हनुमत् शास्त्री
(c) नरहयनिन्द ✓ (d) रामानुजाचार्य

**118.** 'छायावाद का पतन' पुस्तक के लेखक कौन है? (यू.जी.सी. नेट/जे. आर.एफ. दिसम्बर 2014)
(a) शांतिप्रिय द्विवेदी (b) रामविलास शर्मा
(c) नंददुलारे वाजपेयी (d) देवराज ✓

**119.** 'विज्ञान गीता' किस आचार्य कवि की कृति है? (यू.जी.सी. नेट/जे. आर.एफ. दिसम्बर 2014)
(a) केशवदास (b) भिखारीदास
(c) पद्माकर (d) सेनापति

**120.** 'बात बोलेगी/हम नहीं/भेद खोलेगी/बात ही' – काव्य-पंक्तियों के रचनाकार हैं— (यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. दिसम्बर 2014)
(a) रामशेर बहादुर सिंह ✓ (b) नागार्जुन
(c) शिवमंगल सिंह सुमन (d) गिलोचन शास्त्री

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. (d) | 2. (d) | 3. (a) | 4. (c) | 5. (c) | 6. (b) | 7. (b) | 8. (d) | 9. (a) | 10. (d) |
| 11. (c) | 12. (d) | 13. (b) | 14. (b) | 15. (c) | 16. (d) | 17. (b) | 18. (d) | 19. (a) | 20. (d) |
| 21. (a) | 22. (c) | 23. (a) | 24. (d) | 25. (a) | 26. (a) | 27. (a) | 28. (a) | 29. (a) | 30. (b) |
| 31. (b) | 32. (a) | 33. (c) | 34. (c) | 35. (c) | 36. (c) | 37. (c) | 38. (c) | 39. (a) | 40. (b) |
| 41. (c) | 42. (a) | 43. (a) | 44. (b) | 45. (c) | 46. (c) | 47. (c) | 48. (c) | 49. (c) | 50. (c) |
| 51. (a) | 52. (a) | 53. (c) | 54. (d) | 55. (d) | 56. (b) | 57. (a) | 58. (b) | 59. (a) | 60. (b) |
| 61. (d) | 62. (a) | 63. (b) | 64. (a) | 65. (c) | 66. (a) | 67. (a) | 68. (b) | 69. (d) | 70. (b) |
| 71. (a) | 72. (a) | 73. (d) | 74. (d) | 75. (b) | 76. (d) | 77. (a) | 78. (c) | 79. (d) | 80. (b) |
| 81. (b) | 82. (a) | 83. (a) | 84. (d) | 85. (d) | 86. (b) | 87. (b) | 88. (c) | 89. (c) | 90. (a) |
| 91. (a) | 92. (a) | 93. (b) | 94. (d) | 95. (a) | 96. (b) | 97. (a) | 98. (b) | 99. (b) | 100. (c) |
| 101. (d) | 102. (c) | 103. (c) | 104. (c) | 105. (a) | 106. (a) | 107. (b) | 108. (a) | 109. (b) | 110. (c) |
| 111. (a) | 112. (a) | 113. (d) | 114. (d) | 115. (a) | 116. (c) | 117. (c) | 118. (d) | 119. (a) | 120. (a) |

Download From: https://sarkaripot.in/ Scanned by CamScanner